

श्री म० यशकर्ति दि० जैन सरस्वती भवन ऋषभदेव का प्रथम पुष्प

श्री महावीरजी -- २५५२०११११

श्री प्राचीन पूजन संग्रह

रचयिता—विविध दिगम्बर जैनाचार्य

सम्पादक -

जैनरत्न धर्मभूषण प्रतिष्ठावर्य

पं. रामचन्द्र जैन

प्रकाशक -

समस्त हि. जैन तरुसिद्धिगुण समाज गुजरात प्रान्त

प्रथमावृत्ति

५००

कीर ति. स० २४८८२

कार्तिक शु. १ रविवार

मूल्य

जित पूजन

श्रीश्री व्यस का विवरण

क्र.सं.)	व्यस	व्यस
१)	त्रिनेपर मंदिर के लिये	
११६०)	छपरा	
२५०)	वाग्जोग व्यस	
५२११)	सुरसिक व्यस	

२२१०)

- ५१) श्रीश्री व्यस दि० न. नरसिंहपुरा
पंच कलोल
- ३०१) श्री गुरु गुरानाथ दि० दिन मंदिर
धनपट्टी गाँव के द्वारे गमान दि०
दिन नरसिंहपुरा पंच जेहेर
- ५०१) श्रीमान् ११० सेठ कानूरचंद भूठभाई
हस्त चन्द्रलाल कस्तूरचंद गाँव कलोल
- ५०१) श्रीमान् ११० सेठ चारचन्द अमथालाल
हस्त भोगीलाल धारचन्द नरसीपुर
- १०१) श्रीमान् सेठ गरीलाल जगजयचंदल
कलोल
- १०१) श्रीमान् सेठ शिवलाल प्रमुदास परोख
हस्त अमृतलाल शिवलाल जहेर
- १०१) श्रीमान् सेठ तापोदास जेठा भाई
दलाल आमोद
- १०१) श्रीमान् सेठ वरजलाल अमोचन्द
परोख जहेर
- ५१) श्रीमती कमला वहिन ध. प० सेठ -
चदुलाल हरिलाल कलोल
- १०१) श्रीमान् सेठ भीत्रलाल मनसुखलाल
हस्त उदयचन्द जीवनलाल नरोडा

२२१०)

विषय सूची

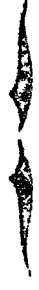


क्रमांक	विषय	पृष्ठ		पृष्ठ	विषय (मड़)	पृष्ठ
१	जलयात्राविधि	१		१८	पंच भेरु पूजा (मड़)	८७
२	सकली करण विधान	६		१६	पुष्पांजली पूजा	१११
३	समुच्चयपंच कल्याणक	१		२०	अष्टदण्डिका पूजा	११५
४	लघु अभिषेक पठ	३		२१	नन्दीश्वर द्वीप	११६
५	प्येष्ठ जिनवर पूजा	१७		२२	रत्नत्रय पूजा	१३२
६	देव पूजा	२०		२३	सप्त ऋषि पूजा	१५४
७	शास्त्र पूजा	२७		२४	अनन्त धत पूजा	१६१
८	गुरु पूजा	३१		२५	महाभिषेक पाठ	२०६
९	सिद्ध पूजा	३५		२६	क्षेत्र पाल पूजा	२४७
१०	विद्यमान बीस तीर्थहर पूजा	४०		२७	भैरवाष्टक स्तोत्र	२५१
११	शीतल नाथ पूजा	४३		२८	पद्मावती देवी पूजा	२५३
१२	शांतिनाथ पूजा	४६		२९	पंचपर मेष्ठी जयमाला	२५८
१	कलिकुण्ड पार्श्वनाथ पूजा	४८		३०	शांतिपाठ	२६०
१४	ऋषि मण्डल पूजा	५४		३१	ऋषभनाथ की आरती	२६२
१५	श्री सम्मैद शिखर पूजा	५७		३२	विसर्जन पाठ	२६३
१६	घोडश कारण भावना पूजा	६०		३३	लघु होम (बज्ञ)	२६४
१७	वस लक्ष्णधर्म पूजा	७०				



प्रस्तुत योजना के प्रमुख संयोजक

जाति भूपण श्रामान् मेठ चन्दुलाल कस्तूर चन्द शाह



१२० सेठ कस्तूरचन्द कुटाभारि शाह कलाल ही १२० वर्ष पत्नी श्रीमता मोतन बाई

की प्रेरणा से उनका पुत्र श्रीमान् सेठ चन्दुलाल कस्तूरचन्द शाह ने प्राचीन

हस्त लिखित गुटकों (चांपडों) से कोपी कराकर संशोधन कराने

का सारा स्वर्ण प्रदान किया था । एत सर्वे प्रथम

५०१) रुपया प्रदान कर इसयोजना को

सफल बनाया है इसके लिये

वे हार्दिक धन्यवाद के

पात्र हैं ।

सम्पादक,

श्रीमती स्व० मोतनबाई



धर्मपत्नी स्व० सेठ कस्तूरचन्द्र

भूटा भाई कलोलः—

केवल फोटो प्रिन्टः—श्री वर्द्धमान प्रि० प्रेस, मन्डी की नाल उदयपुर।

प्रस्तावना



देवाधि देव चरणे, परिचरणं सेवो दुःख निर्हरणम् ।

काम दुहि काम दाहिनी, परिचिनुया दाहवो नित्यम् ॥

जिनेन्द्र भगवान की पूजन करना अत्येक श्रावक का दैनिक कर्तव्य है । इन समाज को यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि जिनेन्द्र पूजा का क्या महत्व है । पूजन के द्वारा परिणामों की निर्मलता बढ़ती है एवं पाप दूर होते हैं । श्रावक के षट्कर्म "देव पूजा गुरुपास्ति" में भी देव पूजा को प्रथम स्थान दिया गया है, अतः जिनेन्द्र भगवान पूजन करना अत्येक श्रावक का प्रधान दैनिक कर्तव्य है । पूजन करने का प्रमुख साधन पूजन की पुस्तकें ही हैं । जैन समाज में पूजन की पुस्तकों की कमी नहीं है । परन्तु प्रस्तुत संग्रह का प्रकाशन कुछ विशेष कारणों को लेकर ही किया गया है । गुजरात प्रान्त में विशेष कर नरसिंहपुरा गद्दी के विद्वान् भट्टारकों द्वारा रचित प्राचीन संस्कृत तथा प्राकृत भाषा की पूजाएँ पढ़ाने की परिपाटी है परन्तु अब तक इन पूजाओं का प्रकाशन नहीं हुआ था ।

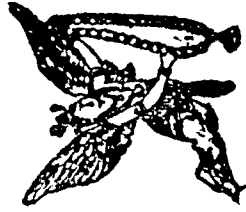
सहायक आवश्यक पाठ सफ़ली करण, जल यात्रा विधि, लघुहवन आदि सरल स्पष्टी करण के साथ लेलिये हैं जिससे यह समग्र समाज के लिये उपयोगी होगा ।

मुझ पर अनेक संस्थाओं के उत्तर दायित्वों का भार होने से इस समग्र के प्रकाशन में विलम्ब हुआ है इसके लिये पाठक मुझे क्षमा करेंगे । श्री जिनेंद्र पूजन जैसे महत्व पूर्ण कार्य में मेरी छद्मस्थता के कारण त्रुटियां रह जाना संभव है इसके लिये भी विज्ञ पाठकों से क्षमाप्रार्थी हूँ ।

पं रामचन्द्र जैन महामंत्री

श्री भ० यशकीर्ति दि० जैन सरस्वती भवन

ऋषभदेव (राजस्थान)

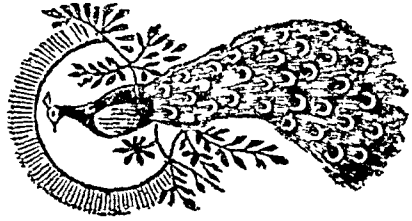


* एक परिचय *

स्वर्गीय वेद परचरचन्द भूटाभाई की धर्मपत्नी मोहन बहिन के स्वर्गवास के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्रों ने मं० २०१५ आषाढ़ शु० ८ से १५ तक श्रीः बृहद् भिद्र चक्र मण्डल विधान सम्पन्न कराने के लिये गुम्फे व संगीत शिरोमणि ५० आरम्भपन्दी जैन को आमंत्रित किये थे। विधान की पूर्णाहृति के अन्तर पर मैंने प्रस्तुत संपन्न के प्रकाशन की योजना प्रदर्शित की थी। उस समय अपनी पूज्य मालाजी के स्वर्गवास के अन्तर पर निकले गये नान में से ५०१) रु० इस पुस्तक के प्रकाशन में प्रदान किये थे।

श्रीमान् स्व० सेठ कस्तूरचन्द भूटाभाई कलोल नरसिंहपुरा समाज के उदीयमान रत्न थे। आप वीं ही निर्भीक शान्त वृत्ता एव सरल स्वभावी होने के साथ साथ गुणानुरागी धर्मत्मा थे। आपका प्लेग की पीमासे से ५३ वर्ष की अवस्था में ही स्वर्गवास हो गया था। आपको धर्म पत्नी मोहन बहिन भी वडी ही धर्मात्मा और भक्ति परायण थी आपकी धार्मिकता और गुण ग्राहकता आपके पांचो ही पुत्रों की पैठक संस्कार के रूपमें प्राप्त हुई थी। यही कारण है कि आपके पुत्रों के सेवानार्थ अपने स्व० पिताजी को उच्चलकीर्ति को सुशोभित कर रहे हैं। आपके ज्येष्ठ पुत्र जगजीवन दास कस्तूरचन्द शाई (B. COM.) वा कॉम वडे ही धर्मात्मा गुरुभवत एव व्यापार कुशल व्यक्तित हैं। आप सदैव धार्मिक कार्यों में भाग लेते रहते हैं। आपकी गुरु भक्ति और धार्मिक डेम के कारण अधिकाश समय साधुओं के संघमें व्यतीत होता है। बम्बई में अनेक धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओं के ट्रस्टी तथा मंत्री के रूपमें समाज सेवा कर रहे हैं। द्वितीय पुत्र श्री केशवलाल कस्तूरचन्द शाह भी वडे ही विनम्र और मिलनसार व्यक्तित हैं। आपमें भी धार्मिकता और गुरु भक्ति कूट कर भरी है। तृतीय पुत्र श्री चन्दुलाल कस्तूरचन्द शाह अपनी सामाजिक सेवाओं में समाज में पर्याप्त ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। बम्बई में आकर आपने अपने सतत परिश्रम तीक्ष्ण बुद्धि और व्यापार दक्षता से व्यापार में आशा-तीत सफलता प्राप्त कर लाखों रुपये कमाये हैं। आपकी मधुरवाणी और आकपक भाषण शैली से जनता को सुग

किन्ने बिना नहीं रहती । ऋषभदेव (केशरियाजी) में अ० भा० दि० जैन नरसिंहपुरा समाज का ऐतिहसिक सम्मेलन आपके ही सभादतित्व में हुआ था और उस अवसर पर सारे भारतवर्ष की नरसिंहपुरा समाज ने सम्मान पत्र भेदकर 'जाति भूषण', की उपाधि से सम्मानित किये थे । तारंगा यावागढ़ तलोद प्रतापगढ़ अदि की प्रतिस्ठाओं में आपके प्रभाव से बहुत बड़ी धन राशि कत्रित होगई थी । गुजरात प्रान्त की समाज के सहयोग से श्री संघ नरसिंहपुरा के लभणी मण्डल एवं श्री कस्तूरचन्द भूठाभाई छात्रालय अहमदाबाद की स्थापन ने आपकी ख्याति में चार चांद लगा दिये हैं । आपने उक्त संस्थाओं को ६००००) रु० का दान दिया वे । आप अनेक धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओं की अपूर्व सेवा कर रहें । वतुर्थ पुत्र श्री रतीलाल कस्तूरचन्द शाह तथा पचम पुत्र श्री रमणि हलाल कस्तूरचन्द शाह भी अपने बड़े भाइयों के समान धर्मात्मा और सरलस्व भावी हैं । इस प्रकार आपका सारा परिवार व्यापारिक उन्नति के साथ साथ समाज सेवा के कार्यों में बराबर योग देता रहा है ।



द्वितीय परिचय



पुस्तकें पाठ भट्टारक श्री १०८ श्री यशोतीतिजी महाराज के विक्रम सं० २०१५ में जहेर, चातु-
मांस के आगर पर श्री सेठ भोगीलाल उगारचन्द नरसीपुर के यहां महाराज श्री ११ का आहार हुआ था इस
शुभाहार पर आपने ५०१) रु० इस पूजन समूह के प्रकाशनार्थ प्रदान किये थे ।

नरसीपुर गुजरात प्रान्त में जहेर के पास छोटासा गाव है यहां पर नरसिंहपुरा समाज
के कीव २० वर हैं । करीब २५ नरसीपुर की सारी समाज सेठ मुतजी० का परिवार है सेठ मुनजी
के धरमचन्द, वन रसी और हीराचन्द ये तीन पुत्र थे । हीराचन्द के नारायणजी और देवचन्द नामक
दो पुत्र थे । नारायणजी के अमथालाल, अमुलख, हरगोवन, और लल्लुपेठ ये ४ पुत्र थे । अमथालाल
के नल्लु सेठ व उगारचन्द दो पुत्र थे स्व० उगारचन्द सेठ बड़े ही प्रतिभाशाली भर्मे निष्ठ सज्जन थे । आप
बड़े ही मिलनसार और भद्रपरिणामी व्यक्तित्व थे । समय २ पर चतु सों का समागम करना सलात्रों को
दान देना एवं धर्म ध्यान आदि में अपना समय व्यतीत करते थे । अपने जीवन काल में सद्वर्तों
रूपयों का ज्ञान किया अनेक प्रय प्रकांशिन कराने एवं तीर्थ यात्राए की थी । पञ्जसी के समय में नरसी

卐ॐॐॐॐॐ卐
卐ॐॐॐॐॐॐॐ卐
卐ॐॐॐॐॐ卐



श्रीमान् स्व० सेठ उगरचन्द अमथालाल
नरसीपुर

卐ॐॐॐॐॐ卐
卐ॐॐॐॐॐॐॐ卐
卐ॐॐॐॐॐ卐



पुर में स्कूल का भवन निर्माण कराया था, और अभी ४०००) रु० व्यय कर एक हॉल और बनवाया है। आप ६० वर्ष की लम्बी उम्र व्यतीत कर अपने पीछे बहुत बड़ा परिवार छोड़कर स्वर्गवासी हुए थे। आपके सुपुत्र सेठ भोगीलाल उगरचन्द भी आपके ही समान धर्म निष्ठ और व्यवहार कुशल व्यक्ति हैं। आका जन्म दि० १३ दिसम्बर १८६० को हुआ था। आपने अपने सद्ब्यवहार से सारी समाज में अच्छी ख्याति प्राप्त की है। साथ ही व्यापार में भी आपने अपनी योग्यता के द्वारा अच्छी उन्नतिकी है। मिल्स क्लोथ डिपो और पावर लूम फैक्ट्री (न्यू विजय सिविंग वर्क्स) अहमदाबाद में स्थापित की है। आप के चन्दूलाल जीवनलाल, विनोदलाल, दशरथलाल मनुभाई, नटवरलाल, गिरीश-चन्द्र चन्द्रकान्त रजिन्द्रकुमार और ज्योतचन्द्र १० पुत्र हुए थे। उनमें से जीवनलाल का स्वर्गवास होगया आपके सभी सुपुत्र सुयोग्य और आज्ञाकारी हैं। श्री चन्दूलाल और विनोदलाल न्यूविजय विविग वर्क्स का कार्य संभालते हैं दशरथलाल ने अभी एल. एल. बी. पास को है। नटवरलाल विजली के कार्य में दक्षता प्राप्त कर रहे हैं। चन्दूलाल के ५ पुत्र तथा ३ पुत्रियां हैं। विनोदलाल के २ पुत्र और ६ पुत्रियां हैं। दशरथलाल के १ पुत्र हैं। इतने विशाल कुटुम्ब का अभी तक सम्मिलित व्यवसाय चल रहा है यह भी कुटुम्ब के लोगों के सौभाग्य जन्म का सूचक है।



❀ १ ब्रह्मजिनदास ❀

नाना जिनदास का समय विक्रम की मोलहरी शताब्दी का अन्तिमभाग रहा है । आप गूल मयी भ० सकलतीर्ति के शिष्य भ० भुवनकीर्ति के शिष्य थे । इनकी हिन्दीभाषा की पद्यमय रचनाओं में उद्यापन पुराण, त्रतकथा, तथा पूजाओं की कई कृतियां विद्यमान हैं लेकिन उनमें से मामूली पूजाएं तथा त्रत कथाएं ही प्रकाश में आई हैं । इन्होंने वि० स० १५७५ में हरिवंश पुराण की पद्यमय रचना कीथी आपकी रचनाओं की सख्या करीब ५० से कम नहीं होगी । इस समग्र में आपकी कृति 'ज्येष्ठ जिनवर पूजा, प्रकाशित की गई है ।

॥ २ ब्रह्म कृष्णदास ॥

भट्टारक संस्थान में भट्टारकों के शिष्यों में से सुयोग्य शिष्य अथवा भावी भट्टारक को आचार्य वियोपण से सम्बोधित करने की प्रथाथा एव तत्परचात् के शिष्यों को ब्रह्म (ब्रह्मचारी) इस वियोपण से संबोधित किया जाताथा ब्र० कृष्णदास जी काष्ठा सघी दसा नरसिंहपुरा समाज का गद्दी के भ. त्रिभुवय कीर्ति के पदस्थ भ. रत्न भूषण के शिष्यों मेंसे एक थे आप लोहारिया के निवासी श्रेष्ठी हर्ष के पुत्र थे आपकी माता का नाम वीरिका देवी था विक्रम सं० १६८१ में मुनि सुव्रत पुराण की रचना की थी, आपका समय विक्रम सं० १६८५ से १६८५ के करीब है । आपने ५० अभ्रराज (नेघराज) से शिष्यण प्राप्त किया थ ऐसा ज्ञात होता है जैसाकि आपने अपनी ज्येष्ठ जिनवर जयमाला में उल्लेख किया है कि " पंडित राज अभ्रवच कलिया, । ये पंडित अभ्रराज भी इन्हीं ब्र० कृष्ण के साथियों में से थे और संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे इनकी रधि 1 एक कथा समग्र भ० सुरेन्द्र-कीर्तिजी सोजिना के सरस्वती भवन में है जोकि संस्कृत में उत्तम रचना है ब्र० कृष्ण की यह जयमाल गुजरात, वागड़, नेवाड़ व मालवा प्रांतोंमें अत्यधिक प्रसिद्ध है । पूजब के अलावा अभिषेक के समय

में इस जयमाला का बहुत अधिक उपयोग होता है, इसका खास कारण इसकी पांडित्य पूर्ण भाषा एवं सरल राग है ।

॥ ३ भट्टारक राजकीर्ति ॥

आप ईडर की काष्ठासंधी गाड़ी के भट्टारक थे आपका समय विक्रम सं० १६६१ से १६६७ तक का है इनके गुरु भ० चन्द्रकीर्ति थे जिन्होंने संस्कृत में कई ग्रंथ लिखे हैं आपके शिष्य भ० लक्ष्मी सेन थे । भ० राजकीर्ति बहुत अल्प समय में ही स्वर्गवासी हो गये थे अतः वे विशेष कुछ भी नहीं कर पाये थे । आपकी कृति देवशास्त्र गुरु पूजा इस संग्रह में है ।

॥ ४ भट्टारक उदयसेन ॥

आप भी काष्ठासंधी नरसिंहपुरा समाज की सूरत की गद्दी के भट्टारक थे आपका समय विक्रम संवत् १५६० से १६१५ तक का है आप भ० यशकीर्ति के शिष्य थे जिन्होंने कि जास तथा ऋषभदेव (केशरियाजी) में प्रतिष्ठाएं की थीं । आप भा संस्कृत भाषा के अच्छे ज्ञाता थे । आपने भी कई प्रिष्ठाएं की थी आपके शिष्य भ० त्रिसुवन कीर्ति थे । इस संग्रह में आपकी शास्त्र पूजा प्रकाशित हुई है ।

॥ ५ कवि जीवनलाल ॥

कवि जीवनलाल के पिता का नाम वासुदेव था, जैसा कि आपने स्वयं गुरु जयमाला में लिखा है "श्री वासुदेव तनयो कवि जीवनोऽहः". आपका समय विक्रम सं० १७७५ से १८०० तक का है आप के जीवन चरित्र का निश्चित हाल मालुम नहीं हो सका है फिर भी इतना अवश्य कहा जा सकता है कि आप गुजरात प्रान्त के निवासी थे एवं आपकी जाति व्यास (बरोठ) है । आपकी गुरु जयमाला के बलावा और कोई कृति प्राप्त नहीं हुई है ।

॥ ६ भट्टारक विश्वसेन ॥

काष्ठा मवी सूरत की गद्दी के भट्टारक सुत कति के शिष्य भ० विश्वसेन हुए हे आपका समय १७२५ से १७५० तक का हे आपके शिष्य भ० मधुचन्द्र थे तथा महीचन्द्र के शिष्य भ० सुमतिकीर्ति थे। जो कि अत्यधिक प्रसिद्ध हुए हे भ० सुमतिकीर्ति उद्भव विद्वान और परमतवादीयो का मान मर्दन करने वाले थे। भ० विश्वसेन की सिद्ध जयमाला के अलावा और कोई कृति उपलब्ध नहीं हुई हे एक भ० विश्वसेन ईश्वर की काष्ठा संघी गद्दी पर भी हुये हे जिन का समय विक्रम स० १५६० से ८५ तक का हे जिन्होंने पणवती क्षेत्र पाल पूजा की रचना की हे।

॥ ७ ब्रह्म चन्द्रसागर ॥

काष्ठा संघी सूरत की गद्दी के भ० जयकीर्ति के शिष्य थे। आपका समय १७०० से १७२० तक का हे आपने भाषा में कई पूजाएं तथा रास आदि की रचना की हे। आपकी रचित शोततनाथ पूजा इस संग्रह में छपी हे।

॥ ८ भट्टारक चन्द्रकीर्ति ॥

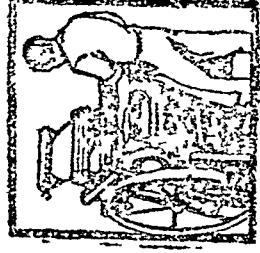
ईश्वर की काष्ठासंघी गद्दी के सुप्रसिद्ध भ० श्री भूषण के शिष्य भ० चन्द्रकीर्ति थे। आप हिन्दी के साथ २ सरसूत तथा प्राकृतिक भाषां क भी अच्छे विद्वान थे। आपने संस्कृत में आदिपुराण पार्श्वनाथ पुराण उपासक.ध्ययन श्रावकाचार आदि अच्छे २ ग्रंथों की रचना की हे ये ग्रंथ भ० यगकीर्ति सरस्वती भवन ऋषभदेव मे उपलब्ध हुये हे इनकी टीका होने की खास आवश्यकता हे। बड़े शास्त्रों के अलावा कई बड़ी २ पूजाएं उद्यापनादी का भो आपन रचना की हे। दुब. हे कि अभी तक आपकी कोई कृति प्रकाश में नहीं आई हे। आपकी रचिऊ पंचमेरु पूजा तथा शातिनाथ पूजा इस संग्रह में प्रकाशित की गई हे।

॥ ६ ब्रह्म ज्ञान सागर ॥

ईडर की काष्ठा संघी गद्दी के भ० श्री भूषण के शिष्य तथा भ० चंद्रकीर्ति के साथी भ० ज्ञान सागर थे। इनका समय विक्रम संवत् १६६० के आस पास का है। ये संस्कृत हिन्दी तथा प्राकृत भाषा के अच्छे ज्ञाता थे। इनके बनाये हुये पूजाएं व्रत कथाएं उद्यापन पुराण तथा स्तत्रनादि उपलब्ध है। दशालक्षण और सोलह कारण की संस्कृत पूजाओं की रचन आपने ही को है आपके भाषा के सर्वेये भी प्रकाशित हो चुके हैं जो कि प्रसिद्ध हैं।

॥ १० भट्टारक इन्द्र भूषण ॥

आपका समय विक्रम संवत् १७०८ के आस पास का है आप ईडर की काष्ठासंघी गद्दी के भ० लक्ष्मीसेन के शिष्य थे आपने भी कई प्रतिष्ठाएं करवाई हैं। आपके शिष्य भ० सुरेन्द्रकीर्ति थे जो कि अच्छे विद्वान और उस समय के प्रसिद्ध भट्टारक थे ऋषभदेव (केशरियाजी) में आबकांश प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा आपने ही कराई है। आपके शिष्य कवि गोविन्द थे जोकि अच्छे विद्वान थे इन्होंने भी पद्मावती पूजा आदि कई पूजाओं की रचना की है।



* भट्टारक हेमचन्द्र *

त्रिगम्बर सम्प्रदाय के काण्डासच में रामसेनाचार्य की शिष्य परंपरा में अनेकों भट्टारक हुए हैं। जिनमें से १०...वें पट्ट पर भट्टारक हेमचन्द्र हुए हैं। पवित्र तीर्थ भूमि केशरियाजी के पास स्थित टोहर गाँव हो आपका जन्म स्थान बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आप बीसा नरभिक्षपुरा जाति में उत्पन्न हुए थे। वि० स० १८३५ के करीब भ० नेमीसेन ने आपको शिष्य बनाया था। भट्टारक पद पर आसीन होने के बाद आपने अनेक मंदिरों की प्रतिष्ठाएं कराईं, तीर्थों की यात्रा हो एवं समाज में धर्म प्रचार किया। आपके जीवन में दो महत्वपूर्ण वल्लेखनीय कार्य हुए हैं जो कि भट्टारकीय चमत्कारों को समीचीन मानने के लिये विवश करते हैं। खांधु में मन्दिर के पीछे एक कुआ खुदवाया गया था। जिस का पानी मोरा निकला इससे सब लोग निराश हुए और विचार करने लगे कि कुआ वापस पूर दिया जाय। तब महाराज श्री ने कहा कि हमने तो श्रीजी के पूजन प्रचाल व पीने के उपयोग के लिये कुआ खुदवाया था यदि पानी पीने के लिये उपयुक्त नहीं है तो दूसरे कामसे तो आयगा ही इस पर किसीने कह दिया कि महाराज ऐसा था तो पहले ही स्थान का परिष्करण कर के कुआ खुदवाना था इस पर महाराज श्री तत्काल अन्न जल का त्याग कर किसी साधना में लग गए। अनंतर मंदिर के पुजारी से वहां की कोई नदी का मोठा जल मंगवाकर उसे मंत्रित कर कुए में डलवा दिया और लोगों से कह दिया कि अब कल से कुए का पानी काम में लाया जाय। दूसरे दिन लोगों ने पानी को देखा तो पानी बढ़िया माठा और इल्का हो गया था। इस चमत्कार की बात सारे गाँवसे फैल गई और लोग भट्टारक हेमचन्द्र की प्रशंसा करने लगे। इसी प्रकार दूसरा चमत्कार प्रतापगढ़ के पास ब्रह्मोत्तर (शांतिनाथ) में हुआ था वहां बीसा नरसिंह पुरा नाति के १०० घर थे। वहां की प्रातःपठ के लिये उनके गच्छ के भट्टारकजी नहीं आ सके अतः

उन्होंने म० हेमचन्द्र को लिखा कि आप भी मेरे भाई ही हैं मैं नहीं आ सकता हूँ अतः यह प्रतिष्ठा आप करा दें। श्री हेमचन्द्राचार्य ने आमत्रण स्विकार कर लिया और प्रतिष्ठा के सत्र कार्य निर्विघ्न-नया सम्पन्न कराये और प्रतिमाज को वेदी में विरजमान करने का मौका आया तब मालूम हुआ कि प्रतिमाजी बड़ी है और द्वार छोटा है सब लोग विचार से पड़ गये कि प्रातःमाजी को अन्दर कैसे लेजाया जाय समाज में चिन्ता की लहर छा गई उस समय एक श्रीवक ने कह दिया कि प्रतिष्ठाचार्य को प्रतिष्ठा कराने के पहले इसका विचार करना चाहिये था इस पर महाराज श्री तीन दिन तक आहार जल का त्याग कर प्रतिमा के समस्त ध्यानस्त बैठ गये। तीसरे दिन समाज के मुख्याओं को बुला कर कहा कि बठाओ प्रतिमाजी को अन्दर ले जावे। लोग विचार में पड़ गये कि छोटे द्वार में से प्रतिमाजी को कैसे अन्दर लेजाया जायगा महाराज श्री ने कहा कि आप लोग चिन्ता न करे सब ठीक होगा। लोगों ने प्रतिमाजी को उठाया तो प्रतिमा का वजन बहुत हल्का हो गया था और ज्योंही द्वार के पास पहुँचे कि प्रतिमा छोटी होकर आसानी से अन्दर चली गई और जाने के बाद फिर उतनी ही बड़ी हो गई इस घटना को जान कर सारी समाज ने हेमचन्द्राचार्य की महती प्रसंशा की आज भी शांतीनाथ में उसी मंदिर में वही प्रतिमाजी विरजमान है सैंकड़ों यात्रो वहां की बन्दना करने जाते रहते हैं। सं १६१८ में खाधु में आपका स्वर्गवास हो गया आपके स्मारक के रूप में खाधु मंदिर जिसमें दाहिनी तरफ छतरी बनी हुई है जिसमें आपके चरण प्रतिष्ठापित किये गये हैं आपके शिष्य पं० दौलतराम पं० पञ्चालाल और पं० गिरधारीलाल में से आपके आदेशानुसार आपके आदेशानुसार आपके पद पर पं० गिरधारीलाल को म० जैमकीर्ति के नाम से भट्टारक स्थापित किये थे।

* महारक क्षेमकीर्ति *

भ० क्षेमकीर्तिजी को ५ वर्ष की उम्र में वि. सं० १९१० में भ० हेमचन्द्रजी ने शिष्य बनाये थे। आप गयपुर के नियासी खंडलबाल जाति के पांड्या गोत्री थे आपका वचपन का नाम गिरवारीनाथ था। वि. सं० १९२३ में नरोग में गुरुत निवासी श्रीमान् सठ गोभागचन्द्र मेवराज नं वड़ा भारी उन्मत्त कर गये समारोहपूर्वक भ० हेमचन्द्र के पट्टपर स्थापित किये थे। आपने अपनी सच्चरित्रता के कारण सारी समाज में अचञ्ची ख्याति प्राप्त की थी।

आपको व. गी में कुछ ऐसी सिद्धी थी कि आपने कह दिया वह अभिर होता था। इस प्रकार आपने शुभाशियाओं से सैकड़ों लोगों का उपकार किया था। अनेकों बार तीर्थ यात्राएं की और अनेक मंदिरों की प्रतिष्ठाएं कराई थीं। उन दिनों १९३५ में केशरियाजी क्षेत्र में खेताम्बर भमाज की और से धनबादएउ कलशा चढ़ाने के प्रयत्न किये जाने लगे थे। इस बात की जानकारी मिलते ही आपने इसका विरोध किया और इसके लिये भ० गुणचन्द्र, भ० कनककीर्ति, भ० धर्मकीर्ति, भ० रजिन्द्रकीर्ति को सलल बल आमंत्रित किये। सभी महारक आपने शिष्यों व चपरामी आदि २०० व्यक्तियों को लेकर आये। उधर खेताम्बर साधु भी बड़ी सख्या में एकत्रित हुए थे। बाजार में ही महारकों व खेताम्बर साधुआ के आपस में विसवाद हो गया, विवाद बढ़ते बढ़ते मारा मारी तक नीचत आ गई। अत में सब महारक आपने शिष्यों सहित मंदिर के समक्ष पंक्त बद्ध खड़े हो गये और खेताम्बरों को मंदिर से जाने से रोक दिये और धनबादएउ कलशा नहीं चढ़ाने दिये।

आपने अनेकों स्थानों पर नरसिंहपुरा समाज के बगड़ों की मध्यस्थता कर उनको मिटाया। वि. सं.

१२ ७४ नार्गशीर्ष शुक्ला ८ शुक्रवार को दिन में २ बजे प्रतापगढ़ में आपका स्वर्गवास हुआ। अपनी मृत्यु के दो घण्टे पूर्व पत्नी की समलता में पं० प्यारेलाल को अपने पट्टपर २० यशकर्ति के नाम से स्थापित किये थे। आपका अन्तिम संस्करण बड़े समारोह पूर्वक किया गया था। करीब १०००० दस हजार जनता ने शत्रु यात्रा में भाग लिया था। तालाब के रास्ते पर जहाँ आपका अन्तिम संस्कार किया गया था आपका स्मारक बना हुआ है। आपने ऋषभदेव (केशरियाजी) में एक मकान खरदा था जहाँ उसी स्थान पर भ० यशकीर्ति भवन बना हुआ है। आपके निम्न सुयोग्य शिष्य थे।

१ पं० किसनलाल, २ पं० चिमनलाल, ३ पं० मन्नालाल, ४ पं० हीरालाल,

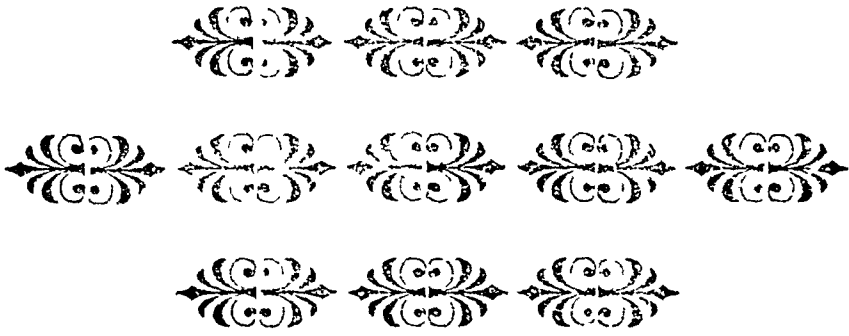
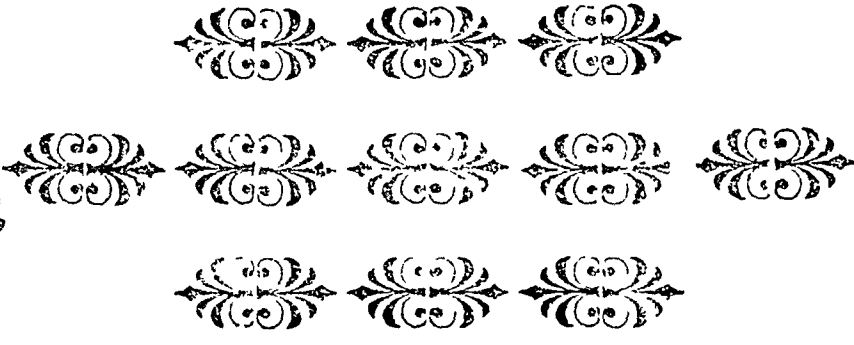
५ पं० प्यारेलाल, ६ पं० रामचन्द्र, ७ पं० किरानलाल

* भ० यशकीर्ति *

भ० यशकीर्तिजी महाराज का जन्म विक्रम सं० १६५१ में ठाकरड़ा (वागड़) निवासी श्रेष्ठी उदयचन्द की पत्नी सुन्दर बाई के उदर से हुआ था। आप नरसिंहपुरा जाति के पटनर (खड़नर) नायक गोत्री थे। आपके ५ भाइयों में से ३ बड़े और एक आपसे छोटा था आपके काका पं० किरानलाल जो कि भ० जैम कीर्तिजी महाराज के शिष्य थे अंधे हो गये थे अतः उन्होंने अपने भाई उदयचन्द से एक पुत्र की मांग की। उदयचन्द ने कहा आप कहो उसको आपको सेवा के लिये रखूँ। तब उन्होंने प्यारेलाल की मांग की जो सं० १६५७ में प्यारेलाल को भेंट कर दिया। प्यारेलाल वचपन से ही कुशाग्र बुद्धि और प्रतिभाशाली थे। आपका अध्ययन भ० जैमकीर्तिजी महाराज की संरक्षकता में ही हुआ था आप १५ वर्ष की उम्र में ही शास्त्र सभा में भाषण और भवनोपदेश द्वारा जनता को सुग्ध कर देते थे। आप

जेमान त्या में भी शूद्रों प्रवीण थे और तः मुन्दर यत्नर जितते गे । साथ ही आप युग मत्र नीरक
 योगिय आदि में भी सिद्ध हस्त हो गये थे । आपके इन गुणों पर मुग्ध होकर विह्वल सं० १६५४ मार्ग
 शीर्ष शु० = को भ० चैमकीर्तिजी महाराज ने अपने पट्टपर भ० यशकीर्ति के नाम स स्थापित किये थे
 आपने भ० पदश्रव ग्रहण करने के बाद सर्व प्रथम गुजरात प्रान्त में भ्रमण कर अन्धा प्रभाव स्थापित
 किया उसके बाद १६२२ में अपने गुरु भ० चैमकीर्तिजी के स्मारक (छतरी) की प्रतिष्ठा कराई जिसमें
 सभी शान्तों की नरसिंहपुरा समाज एकत्रित हुई थी । और मत्र पंचोने भ० यशकीर्ति महाराज को पछे-
 यी समर्पित की धीरे धीरे आपकी त्याग भावना बढ़ती गई । २५ वर्षों से चातुर्मास में एक ही अन्न
 का आहार करते हैं । और १५ वर्षों से घृत का त्याग कर लिया है । आप भट्टरक पदस्थ पर होते
 हुए भी म्याना पालकी गद्दी तकिये छडी चेंबर पशु वाहन की सवारी आदि का सर्व था त्याग कर
 दिया है । आपका शान्त व गभीर द्वा और आपका प्रभावक व्यक्तित्व प्रत्येक व्यक्ति के हृदय पर
 अपनी गहरी छाप डालता है । आपका उपदेश बड़ा ही प्रभावकारी होता । साथ ही सगीत और
 सभी प्रकार के वाद्य बजाने में भी आप बडे निपुण हैं आपने अपने जीवन में इतनी प्रतिष्ठाए
 की हैं जितनी पहले के किसी भी भट्टरक ने नहीं की होंगी । समाज में अनेकों स्थानों पर आपसी
 वैमनस्य थे उनको निपटाये । वि. सं० १६६५ में ऋषभदेव में चौ मंजिला भ० यशकीर्ति भवन के
 नाम से भवन बनाया है जिसमें औपघालय, चैत्यालय और सरस्वती भवन की स्थापना की है । सर-
 स्वती भवन में हस्त लिखित व मुद्रित करीब ३००० ग्रंथों का सत्रह है । कई शास्त्र १३ वीं शताब्दी
 के लिखे हुए तक हैं । यशकीर्ति भवन का उद्घाटन समारोह बड़ा धूम धाम से किया गया था उस
 अवसर पर १ माह तक इन्द्रध्वज विधान करया गया था । पूज्य आ. शान्ति सागरजी म. छाणी एवं
 अनेक त्यागो मुनि और श्रावक गए एकत्रित हुए थे । सरे गाव की आम जनता को प्रीतिभोज
 दिया था देवस्थान विभाग ने केशरियाजी मंदिर से तमास लवाजमा उपकरण आदि देकर पूर्ण सहयोग
 दिया था । आपने शिक्षा प्रचार के क्षेत्र में भी बड़े ही प्रसशनीय कार्य किये हैं । वि० सं० २०००

❁ साहित्य सूर्य प्रलिप्ठा चार्य ❁



श्री मद्दिगम्बर जैनाचार्य कवि भूषण सहिता शिरोमणि
भट्टारक श्री १०८ श्री यशकर्ति जी महाराज

केवल फोटो प्रिन्टः—श्री बद्धमान भि० गेस, मन्डी की नाल उदयपुर।

केवल तथा में भी बड़े प्रयोग थे और नई सुन्दर अक्षर लिखते थे। साथ ही आप युग नव नव
 आतिग प्राप्त में भी सिद्ध दस्त हो गये थे। आपके इन गुणों पर मुग्ध होकर रिक्तम सं० १६६४ मार्ग
 शीर्ष गु० २ को भ० चैमकीर्तिजी महाराज ने अपने पट्टर भ० यशकीर्ति के नाम से स्थापित किये थे
 आपने भ० प० १५ प्रहण करने के बाद सर्व प्रथम गुजरान प्रान्त में भ्रमण कर अच्छा प्रभाव स्थापित
 किया उसके बाद १६२२ में अपने गुरु भ० चैमकीर्तिजी के स्मारक (अतरी) की प्रतिष्ठा कराई जिसमें
 सभी ज्ञानों की नरमिहपुरा समाज एकात्रिा हुई थी। और सब पंचोने भ० यशकीर्ति महाराज को पछे-
 गयी समर्पित की धीरे धीरे आपकी त्याग भावना बढ़ती गई। २५ वर्षों से चातुर्मास में एक ही अन्न
 का आहार करते थे। और १५ वर्षों से घृत का त्याग कर लिया है। आप भट्टारक पदस्थ पर होते
 हुए भी स्थाना पालकी गही तकिये छडी चैवर पशु वाहन की सवारी आदि का सर्व या त्याग कर
 दिया है। आपका शान्त व गभीर उद्रा और आपका प्रभावक व्यक्तित्व प्रत्येक व्यक्ति के हृदय पर
 अपनी गहरी छाप डालता है। आपका उपदेश बड़ा ही प्रभावकारी होता। साथ ही सगीत और
 सभी प्रकार के वाद्य बजाने में भी आप बड़े निपुण हैं आपने अपने जीवन में इतनी प्रतिष्ठाए
 की है जितनी पहले के किसी भी भट्टारक ने नहीं की होगी। समाज में अनेकों स्थानों पर आपसी
 नेमतस्व थे उनकी निपटायें। वि. सं० १६६५ में ऋषभदेव में चौ मजिला भ० यशकीर्ति भवन के
 नाम से भवन बनाया है जिसमें औपधालय, चैत्यालय और सरस्वती भवन की स्थापना की है। सर-
 स्वती भवन में हस्त लिखित व मुद्रित करीब ३०० ग्रंथों का संग्रह है। कई शास्त्र १३ वीं शताब्दी
 के लिखे हुए तक है। यशकीर्ति भवन का उद्घाटन समारोह बड़ा धूम धाम से किया गया था उस
 अवसर पर १ माह तक इन्द्रध्वज विधान कराया गया था। पूज्य आ. शांति सागरजी म. छाणी एव
 अनेक त्यागी मुनि और श्रावक गण एकत्रित हुए थे। सरे गाव की आम जनता को प्रीतिभोज
 दिया था देवस्थान विभाग ने केशरियाजी मंदिर से तमाम लबाजमा उपकरण आदि देकर पूर्ण सहयोग
 दिया था। आपने शिक्षा प्रचार के क्षेत्र में भी बड़े ही प्रसशनीय कार्य किये हैं। वि. सं० २०००

❀ साहित्य सूर्य प्रतिष्ठा चार्ज ❀

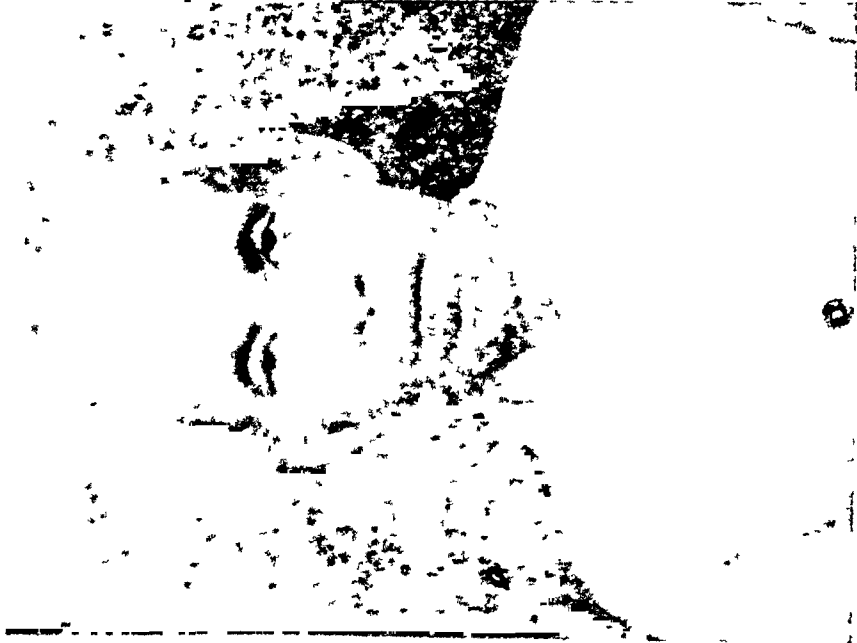


श्री महिगम्बर जेनाचार्ज कवि ब्रूषण सहिता शिरोमणि
भद्वारक श्री १०८ श्री यशकीर्तिजी महाराज

केवल फोटो प्रिन्टः—श्री ब्रह्मान प्रि० ग्रेस, मन्डी की नाल उदयपुर।

श्रीमान् मंगीत शिरामणि

सम्पादकः—



पं० डाडमचन्द्र जैन



जैनरत्न धने भूषण प्रतिष्ठाचार्य
पं० रामचन्द्र जैन

में अतापगढ़ में विशाल आत्रालय की स्थापना की है। आत्रालय की आधारशिला अनेक पद विभूषित श्रीमंत सर सेठ हुकमचन्द्रजी साहने रखी थी वि. स. २०११ में बड़े भारी समारोह पूर्वक श्री सीमधर जिला लय की प्रतिष्ठा कराई थी। इसी प्रकार छापी फलासिया चाण्ड और वासवाड़ा में भी आत्रालय स्थापित कराये एव अनेक पाठशालाएं स्थापित कराईं। आपने सारे भारत वर्ष के जैन तीर्थों की कई बार यात्राएं की हैं। कुछ वर्षों तक तो प्रति वर्ष तीर्थराज संभेद शिखरजी की यात्रा करते थे अपना सारी सम्पत्ती को सस्थाओं में देदी है। ऋषभदेव का म० यशकीर्ति भवन भी ट्रस्ट डीड कर समाज को सौंप दिया है। भवन के साथ १००००) रु० तक दे एव गद्दी का लवाजमा उपकरण शास्त्र बरतन फर्निचर आदि सब समाज को सौंप कर अपना अधिकार हटा लिया है। ज्यों ज्यों आप सम्पत्ति से मोह हटते जाते हैं समाज आपको अधिक भेंट देने लगी है अब भी जो कुछ भेंट आता है सब सस्थाओं को देदी जाती है। आप के उपदेशों से लाखों लोगों ने आत्म कल्याण का मार्ग अपनाया है सारी दिग्गजर समाज में आपके नाम के अनुरूप यशकीर्ति का विस्तार हुआ है। पूज्यवादि आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज की समलता में और अन्य असंगो पर अनेक उपाधियां एवं अभिनन्दन पत्र समर्पित किये हैं। आपके ३ सुयोग्य शिष्य १ श्री पं. रामचन्द्रजी २ पं. किशनलालजी ३ पं. डाइमचन्द्रजी हैं। पं. रामचन्द्रजी शिक्षण सस्थाओं को देखभाल करते हैं। पं. डाइमचन्द्रजी उपदेश के साथ २ यत्र यत्र और ज्योतिष के भी जानकार हैं। और संगीत कला में तो बड़े ही निपुण हैं।

आपकी संगीत कला पर सुग्ध होकर आपको " संगीत शिरोमणी " की उपाधी प्रदान की गई है। पं. किशनलालजी महाराज श्री की सेवामें रहते हैं वे भी पूजन पाठ एव संगीत आदि के जानकार हैं। वर्तमान समय की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए महाराज श्री ने नया शिष्य बनाने का विचार छोड़ दिया है और अद्वारक गद्दी की स्मृति हमेशा स्थायी रखने के लिये सम्पत्ति का ट्रस्ट डीड कर दिया है।

श्रीमद् पंडित रामचन्द्र

स्वामी की घोंनी और बाहर से देना हुआ सुटी भर दृष्टियों का ढांचा, छोटा रुद्र और कृष्णी बाल और वर्ण और उन्नत ललाट. दृढ़त्व के परिचायक पूर्ण स्वेत केश मभाषण के पूर्व तक छिपा रहने वाला अश्लिल, पालस्य और निराशा के कट्टर शत्रु जवसे जगे वभी से सुवद् मान कर काम में शुट जाने वाले। बाहर से कुछ उग्र दिखाई देने वाला स्वभाव परन्तु भीतर स अत्यन्त कोमल यह है नीचरूप रामचन्द्र का संक्षिप्त परिचय।

आपका जन्म वि०म सं० १६६२ में नीमच के पास श्रावण भादवा गंत्र के निवासी गुजरगौड़ ग्राण्य गगनाग के घर में हुआ था आपकी माता का नाम हगामबाई था आपके पिता जगन्नाथ आपकी ६ माई का स्वामर ही स्वर्ग सी हो गये थे। हगामबाई आज्ञीविका के लिये ६५ वर्ष के बालक रामचन्द्र को लेकर प्रतापगढ़ चली गई। वि०म सं. १६६६ में म० देसभिविजी महाराज का प्रतापगढ़ से चालुगांस था उनके पास अष्टपिण्डल का पाठ सुनने एक श्वेताम्बर स्थानक वासी धूलजी रंग व्याघ्र करने थे एक दिन उन्होंने कहा कि प्र०४। वर्ष का ब्राह्मण का लड़का है आप शिष्य रखना चाहें तो मैं उसकी मा को समझा कर दिलावा दूँ। महाराज श्री ने कहा कि ब्राह्मण को शिष्य रखने से क्या लाभ होगा परन्तु यहा पर बैठे हुए महाराज श्री के शिष्य पं. किशनलाल पं. हीर लाल पं. पम्परेलाल और रसोइयां बालजी आदि ने कहा कि ब्राह्मण है तो क्या दर्जे है गौतम गणधर भी तो ब्राह्मण थे अपने यहां एक छोटा बालक होगा वो दूज सब का मनोरंजन भी होगा

और पढ़ लिख कर योग्य बनेगा तो शिष्य रहेगा नहीं तो गद्दी में दूसरा काम करेगा ऐसा कह कर
 अत्र पंडित बालक को देवने गये बालक को तीव्र बुद्धि और क्षपल देख कर खुश हो गये और
 प. होरलान्ती बालक को पठा लाये । दिक्कम स. १६६७ दीपावला के दिन से आदिनाथ स्तोत्र से
 आपका अध्ययन प्रारंभ कराया गया । दिक्कम स. १७७३ में म० नेसकीतिली महाराज का स्वर्गनाग
 हो गया तो राज. ज. कीर्तिली महाराज ने आपके अध्ययन के लिये एक पंडित की व्यवस्था कर दी ।
 परन्तु १६७६ में भ० यशकीर्तिली महाराज गुजरात में भ्रमण करने पधारे तब से आपका अध्ययन
 पूर गथा और गदा के सारे कार्यों का उत्तरदायित्व आपके कंधों पर आपड़ा फिर भी आपने अध्य-
 यन प्रारंभ रक्खा और गदा के संपूर्ण कार्यों को योग्यतापूर्वक व्यवस्था करने लगे यद्यपि आपने
 कोई परिहा इत्तीर्ण नहीं की परन्तु सभी विषयों में अच्छी योग्यता रखते है । शास्त्र सना में जनता
 को गुग्ध कर देते हैं । यत्र मंत्र व्योतिष और वैद्यक में भी आपकी अच्छी योग्यता है । वास्तु
 शास्त्र में तो आपकी गति अत्यन्त प्रसंशनीय है । मन्दिर मूर्ती ध्वजादण्ड कलश वेदी आदि के पमाणिक
 नाप तत्काल निकाल देते हैं । आपकी देख रेख में कई शिखर बद्ध मन्दिरों और हजारों जिन मूर्तियों
 का निर्माण हुआ है । इसी प्रकार गृह बालु शान्त्र का भा अच्छा ज्ञान है । आपके द्वारा सैकड़ों
 प्रतिष्ठाएं और विधान कराये गये हैं ।

प्रतिष्ठा पाठ के शास्त्रीय ज्ञान के अलावा प्रखर बुद्धि के कारण तत्सम्बन्धी अन्य आयोजन भी
 वही रक्षणीय और चिन्ताकर्षक रहते हैं । प्रतिष्ठा करने और विधि विधान सम्पन्न करने की आपकी
 अपनी निराली ही शैली और विशेषताएं हैं । प्रतिष्ठा में कल्याणक एवं अन्य दृष्य एसी
 सज बज के साथ दिखाये जाते हैं जिनसे जनता बड़ी प्रसन्न होती है । आपकी प्रतिष्ठा करने की
 पद्धति की अनेक आचार्यों मुनियों प्रतिष्ठाचार्य विद्वानों और समाज के प्रतलित नेगओं आदि ने
 मुक्त कंठ से प्रसंशा की है । जिन दिनों प्रतिष्ठा में कल्याणक की क्रियाएं होती है आप इतने

संभ्रमण करते हैं कि गाना और सोना एक द्योत देने हैं गही कारण है कि समाज आपको हजारों रुपये भेंट करता है। परन्तु आपने अपने पास मात्र १००३ रु० से अधिक नहीं रखने को प्रतिज्ञा कर ली है तदनुसार भेंट का रकम संस्थाओं में देते रहते हैं। सारे भारत वर्ष की दिगम्बर जैन समाज में आपकी इयाति है आपने अपना भार जोयन संस्थाओं की सेवा में लगा दिया है।

प्रतापगढ़ में आपके द्वारा संचालित श्री भ० यशकीर्ति दि० जैन बोर्डिंग प्रतापगढ़ दिगम्बर जैन समाज की आद्वितीय शिक्षण संस्था है। जिस के अन्तर्गत भ० यशकीर्ति माध्यमिक विद्यालय (राजस्थान सरकार द्वारा प्रमाणित) श्री रमण बहिर्न दे० है। कन्याशाला आदि संस्थाएँ चल रही हैं। छात्रालय में श्री सीमन्धर भगवान का भव्य जिनालय बनवाया है जिसकी प्रतिष्ठा बड़े समारोह पूर्वक की गई थी। इस प्रतिष्ठा के पूर्व प्रतिमाजी लाने के दिन से ही आपने प्रबन्ध तक प्रतिष्ठा नहीं होगी तब तक दू और चावल खाने का त्याग कर दिया था। प्रतिष्ठा होने के बाद प्रतापगढ़ की समाज ने ६ मन दूध की खीर बनाकर आपकी प्रतिज्ञापूर्ति का समारोह किया था तथा मन्दरजी में आससभा कर आपको मान पत्र समर्पित किया गया था। प्रसिद्ध तीर्थ भूमि केशरियाजी (चुसम दे०) में भ० यशकीर्ति भवन का निर्माण आपको देख मे ही किया गया था एव वहाँ पर श्री ऋषभ दे० जैन मण्डल श्री जीवदया मघ श्री ऋषभदेव दि० जैन तीर्थ रक्षा कमेटी आदि संस्थाएँ आ ही के द्वारा स्थापित की गई हैं। ऋषभदेव की समाज ने आपका संवाओं के उपलब्ध मे कृतज्ञता स्वरूप आपको 'जैनरत्न' का उपाधी प्रदान कर बहुत बड़ा रगत शिल्ड समर्पित किया था। आपका ही सा, स था कि ऋषभ देव में श्री भ० दिगम्बर जैन नरसिंहपुरा समाज का एतिहासिक महा सम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ था और श्री भ० दि० जैन नरसिंहपुरा महासभा की स्थापना हुई थी।

पण्डितजी के अनन्य स्नेही श्रीमान् जौहरी मोतीलालजी मीण्डा उदयपुर की समाज के प्रमुख व्यक्ति हैं आपने उदयपुर में बड़े समारोह पूर्वक सिद्ध चक्र विधान कराया था, उस अवसर पर उदयपुर की दि० जैन समाज ने आपको 'धर्मरत्न' की उपधि प्रदान की थी। साथ ही पण्डित रामचन्द्रजी महोदय को भी अभिनन्दन

पत्र समर्पित किया था। इसी प्रकार सरोदा पचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर एकत्रित समज ने आपको धर्म भूषणकी उपाधि से विभूषित कर अभिनन्दन पत्र अर्पित किया था। फलासिया (मालात्राड़) में पद्म प्रभु दि० जैन बोडिंग एव बांसवाडा में श्री भ. यशक्रीति दि जैन छात्रालय का स्थापना आपके ही प्रयत्नों का फल है। वर्तमान से भी ये साथै आपके ही महासंतीत्व में चलारही हैं।


अ. भा० दिगम्बर जैन महासभा, मालवा प्रा० दि० जैन महासभा, शांति सागर स्मारक समिति, दिगम्बर जैन मंदिर जीणोद्वार कमेटी चितौड़ आदि अनेक संस्थाओं के सदस्य रहकर समाज की सेवा कर रहे हैं। आपकी इस वृद्धवस्था में कार्य करने की वही स्फूर्ति है। आपकी कर्मठता को देख कर पूज्य आचार्य कुथुसागर जी महाराज आपको लोहे का पुतला“ कहा करते थे। और प्रतापगढ़ के कवि श्री देवी चन्दनी तो आपको “ करामत का पुतला “ कह कर अपनी कविताओं से गाथा करते हैं। इस प्रकार आपका साराजीवन समाज की सेवा कार्यों में लग रहा है। इस श्री जिनेन्द्र देव से आपके दीर्घायुष्य को कामना करते हैं।

पं० चन्दन लाल साहित्यरत्न

ऋषभदेव (राजस्थान)



जल यात्रा विधि

 नोट.—जल यात्रा विधि की आवश्यक सामग्री कलश, श्रीफल, आच्छादन, छाना, अंग पोंछणा, अष्ट द्रव्य, पान, माला, रोकड़ (रुपा नाणा), दूध, शक्कर (मिश्री) दीपक, दपण, ध्वजा पाटला, सूत, (लच्छा) कुंकुम आदि पहले से तैयार कर साथ में ले लेना चाहिये ।

सर्व प्रथम शुभ मुहूर्त में प्रातःकाल मन्दिरजी या मण्डप से यन्त्रजी लेकर गाले वाले संगीत आदि बड़े समारोहपूर्वक सहधर्मी श्रवक श्राविकाओं के साथ तालाव या वापिका पर जाना चाहिये फिर दो हरे छन्ने को उसके चारों कोने पकड़ कर जल में डूबता हुआ भूले की तरह पकड़ रखे उस छन्ने में यन्त्रजी विराजमान करके वरुण देवता का आह्वाहन करके मध्य करिष्का पूजा (वरुण देवता की) अष्ट द्रव्य से करें । जिसमें १ श्रीफल भी चढ़ावें ।

(वरुण देवताह्वाननम्)

वारुणं यंत्र मुद्गृत्य, पूजयेद्विधि पूर्वकं

भोगैश्वर्याभिवृद्धयर्थं, जनानां हित काम्यया ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं वरुणदेव जलयात्रा महोत्सवे अत्रागच्छगच्छ तिष्ठ ठः ठः ठः मम सन्नि-
हितो भव भव वपट् । आह्वानन, स्थापनं, सन्निधिकरणं, ॥ यंत्रस्थापनं ।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

॥ अथ मध्य कर्णिका पूजा ॥

पाशपाणिमपानार्थं, पश्चमाशा पतिं वरम् ।

पूजयामि महा भक्त्या, सर्व कल्याण कारकम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं वरुण देव सपरिवारेण जलयात्रा महोत्सवे आगच्छगच्छ वलीं गृहाण २ जलं मुंच २
स्वाहा ॥

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

ॐ ह्रीं वरुण देवाय इदं जलमित्यादि ॥ इति मध्य कर्णिका पूजा ॥

॥ अथ प्रत्येक पूजा ॥

हिमाद्रि संस्थितां रम्यां, पद्म द्रव निवासिनीम् ।

पूजयामि महाभक्त्या, श्री देवीं श्री विधायिनीम् ॥ ३ ॥

ॐ श्री श्री क्लीं गुणैर्गणं चतुर्भुजे पुष्प कमल मुख हस्ते श्री देवी आगच्छ २ वलि
गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्री देव्यैः इदं जलं गंधं इत्यादि ॥
जन्मोत्सवे जिनेन्द्रस्य, मातुर्भक्ति परायणां
पूजयापि महाभक्त्या, ह्रीं देवीं ह्रीं विधायिनीम् ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्णं वर्ये चतुर्भुजे पुष्प कमल मुख हस्ते ही देवी आगच्छागच्छ वलि

गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा

ॐ ह्रीं ही देव्यैः इदं जलंगंधमि त्यादि ॥
सुखदां सर्वदा लोके नित्यानंद विधायिनीम्
पूजयामि महा भक्त्या धृति धृति विधायिनीम् ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्णं वर्ये चतुर्भुजे पुष्प कमल मुख हस्ते धृति देवी आगच्छागच्छ वलीं
गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा
ॐ ह्रीं धृति देव्यै जलं गंधं मित्यादि ।

शरद् भूचंद्र धवलां, कीर्ति कल्याण कारिणीम्
पूजयामि महा भक्त्या, कीर्तिं कीर्तिं विधायिनीम् ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्णं वर्ये चतुर्भुजे पुष्प कमल मुख हस्ते कीर्ति देवी आगच्छागच्छ वलि
गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा ।

ॐ ह्रीं कीर्तिं देव्यैः जलं गंधमित्यादि ॥

पञ्च धृत्योपमा लला, विमलाभ्रविनीं सदा

पूजयामि महाभक्तया, बुद्धिं बुद्धिं विधायिनीम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्णं वर्यं चतुर्भुजे पुष्प कमल मुख हस्ते

बुद्धिं देवी आगच्छ २ बलिं गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा ।

ॐ ह्रीं बुद्धिं देव्यैः इदं जलं गंधमित्यादि ॥

कमलाऽऽगच्छतु गेहे, परमानन्द दायिनी ।

पूजयामि महाभक्तया, लक्ष्मीं लक्ष्मी ॥ करां नृणां ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्णं वर्यं चतुर्भुजे पुष्प कमल मुख हस्ते

लक्ष्मीं देवी आगच्छ २ बलिं गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा ।

ॐ ह्रीं लक्ष्मीं देव्यैः जलं गंधमित्यादि ॥

तुष्टिं करोति तुष्टिः स-ततं सर्वं शरीरिणां ।

पूजयामि महाभक्तया, तुष्टिं तुष्टिं विधायिनीम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्णं वर्यं चतुर्भुजे पुष्प कमल मुख हस्ते

तुष्टिं देवी आगच्छ २ बलिं गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा ।

ॐ ह्रीं तुष्टिं देव्यैः जलं गंधमित्यादि ॥

जन्माभिषेक कल्याण, कारिणी परमेश्वरीम् ॥

पूजयामी महाभक्त्या, पुष्टि पुष्टि विधायिनीम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुभर्णं वंशं वतुर्भुजे पुष्प कमल हस्ते
पुष्टि देवी आगच्छ २ वलि गृहाण २ जलं मुंच २ स्थाहा ।

ॐ ह्रीं पुष्टि देव्यैः नलं गधमिव्यादि ॥

(विसर्जन मन्त्रः)

इत्थंच देवताः सर्वाः पूजिताच मयाधुना ।

सर्वा मम प्रसिदन्तु सर्व कल्याण दापिनः ॥ इति विसर्जन मंत्रः ॥

परचान्नारिकेलं सहित पूजोपहारं जलमध्ये संव्यज्य, यंत्र संनिधौ धौत
मध्यजलेन कुंभान् संमृत्य तिलकं कुर्यात् परचात् शर्करा दुग्धे प्रक्षिप्येते तदनंतरं
अष्ट विधार्चनं क्रियते । परचात् महोत्सवेन चैव्यालये समानीया ।

॥ इति जलयत्रा संपूर्णम् ॥

सकलीकरण विधानम्

सर्व प्रथम पूजा या विधान करने वाला स्नान कर शुद्ध होकर श्री जिनेन्द्र भगवान के सन्मुख निम्न मन्त्र का १००८ बार जाप्य करके आत्म शुद्धि करे ।

ॐ ह्रीं यमो अरहंताण, ॐ ह्रीं यमो सिद्धाणं,

ॐ ह्रीं षमो आई रियाणं, ॐ ह्रीं षमो उवडभायाणं,
ॐ ह्रीं षमो लोएसत्र साहूथं ।

अष्टोत्तर सहस्र जाप्येनेन्द्रेयात्म शुद्धिः कर्तव्याः ।

पश्चात् निम्न मन्त्र पढ़ते हुवे २१ लोंग अपने दोनों हाथों को तर्जनी (अंगुष्ठ के पास वाली) अंगुली से पकड़ कर अपने सिर पर रखता अपने आपको इन्द्र होने का चितवन करे ।

ॐ वज्राधिपतये आं हां अः ऐं ह्रीं हं सूं हं लं इन्द्र संवैषट् एक
विंशतिवारान्नात्मान मधिवासयेत् ॥

(इति इन्द्र आह्वाननं)

पश्चात् मुकुट, कुण्डल; मुद्रिका, कंकण, मेखला, करधनि, आदि अभूषण धारण करे ।

ॐ वचो निर्मली करण मन्त्र ॐ

ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्नादिनी नमः स्वाहाः ॥

यह मन्त्र पढ़ कर इर्भ शलाका से अपनी जीभ पर जल छॉट कर वचन शुद्धि करे ।

॥ शिला बंधन मंत्र ॥

ॐ नमो भयवदो वड्डमाणस्स रिसहस्स चक्क जलंतं गच्छ २ आयासं पायाल लोयाणं
भूयाणं जुएवा विवाहो वारायंगणेवा घणेवा मोह मेर रत्त २ साहा । ॐ ह्रीं वषट्

इस मंत्र को पढ़कर चोंटी के गांठ लगावे ।

प्रथम अंगन्यास :-

येनीं क्षुणों के अगुण्डों से हृदय आदि स्थानों को स्पर्श करने की क्रिया को अंगन्यास कहते हैं ।

- ॐ हीं एमो अरहंताणं स्वाहा । (हृदये)
 ॐ हीं एमो विद्वाणं स्वाहा । (ललाटे)
 ॐ ह्रूं एमो आइरियाण स्वाहा (शिरसो दक्षिणे)
 ॐ ह्रौं एमो उवज्ज्मायाणं स्वाहा (शिरसः पश्चिमे)
 ॐ हः एमो सन्व साहूणं स्वाहा (शिरसो वामे)

❀ द्वितीय अंगन्यास ❀

अनंतर ऊपर के मंत्रों को फिरसे पढ़ते हुवे निम्न प्रकार दूसरा अंगन्यास करे ।

- ॐ ह्रौं एमो अरहंताणं स्वाहा (शिरसः मध्ये)
 ॐ हीं एमो सिद्धाणं स्वाहा (शिरसः आग्नेय भागे)
 ॐ ह्रूं एमो आइरियाणं स्वाहा (शिरस नैऋत भागे)
 ॐ ह्रौं एमो उवज्ज्मायाणं स्वाहा (शिरसः वायव्ये)
 ॐ हः एमो लोए सन्वसाहूणं स्वाहा (शिरसः ईशाने)

॥ तीसरा अंगन्यास ॥

ॐ हौं णमो अरहंताणं स्वाहा (दक्षिण भुजे)
 ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा (वाम भुजे)
 ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं स्वाहा (नाभि मंडले)
 ॐ हौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा (दक्षिण पृष्ठे) दाहिने पछवाड़े
 ॐ हः णमो लोए सव्व साहूणं स्वाहा (वाम पृष्ठे) बांये पछवाड़े
 ॐ अट्ठेवय अट्ठसया, अट्ठ सहस्साइ अट्ठ कोट्टिउ ।
 रक्खंतु मे शरंरं, देवासुर पणमिया सिद्धाय स्वाहा ॥

इत्यंगन्यासः ॥

☀ हस्त निर्मली करण मंत्र ☀

ॐ ह्रीं णमो अरहंताए श्रुतांगदेवी प्रशस्स हस्ते ह्रूं फट् स्वाहा

इति हस्त निर्मली करणम्

☀ हृदय शुद्धि मंत्र ☀

ॐ ह्रीं अर्हन्मुख कमलवासिनी सर्वधाप चयंकारी श्रुतज्ञानदेवी हन हन दह दह हौं चीं चूं
 हौं चः चीर धवले अमृत संभवे वं वं ह्रूं फट् स्वाहा काय शुद्धिमहे स्वाहा ।

(इति हृदय शुद्धिः)

निम्न मंत्र पढ़कर अपने सुख की शुद्धि करें

ॐ नमो भगवते कौं हीं चन्द्र प्रभाय चन्द्रेन्दु महिताय चन्द्र मूर्तिनि मर्व सुख रंजिनि पुनी
महे स्वाहा । (इति आत्म सुखाभिमन्त्रणम्)

☸ नेत्र पवित्रीकरण मंत्र ☸

ॐ हीं कौं महापुद्रे कपिल शिखे हूँ फट् स्वाहा ।
(लोचनाभिसंत्रणम्)

☸ उपांग पवित्रीकरण मंत्र ☸

ॐ नमो भगवते ज्ञान मूर्ते सप्तशत कुल्लकादि महा त्रिधाधिते विश्व रुपाणि कौं हां हीं
हीं संवोषट् । (उपांग पवित्रीकरणम्)

☸ हृदय रत्ना मंत्र ☸

ॐ नमो अरहंताणं हृदयं हीं रत्न रत्न हूँ फट् स्वाहा
(हृदय रत्ना)

☸ शिरो रत्ना मंत्र ☸

ॐ नमो सव्व सिद्धाणं हर हर शिरो रत्न रत्न हूँ फट् स्वाहा (शिरोरत्ना)
ॐ नमो आइरियाणं हीं शिखां रत्न रत्न हूँ फट् स्वाहा (शिखा रत्ना)
ॐ नमो उवज्झायाणं एहो हि भगवती वज्र कवचं वज्रिणि रत्न रत्न हूँ फट् स्वाहा ।
(इति सुव रत्ना)

नीचे का मंत्र पढ़कर वज्र कवच धारण करने का चिंतन करे ।

ॐ नमो लोए मन्त्र साहूयां त्रिप्रं साधय २ वज्र हस्ते शुलिनी दुष्ट रक्ष हूँ फट् स्वाहा ।

॥११॥

(इन्द्रस्य कवचम्)

ॐ अरिहाय सर्वे रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा

(इति परिवाक रक्षा)

पश्चात् इन्द्र दशों दिशाओं में पुष्पाक्षत चैपण करता हुआ विघनों की शांति के लिये निम्न शांति पाठ पढ़ें ।

विचिपन् दिबु सिद्धार्थान्, यवाक्षत विमिश्रितान्

इन्द्रो विघ्नोपशान्त्यर्थं शांतिक तदिद पठेत् ॥

ॐ हूँ चूँ फट् किरिटि घातय २ परिघ्नान् स्फोट्य २ सहस्र खंडान्
कुरु २ पर मुद्रां खिन्द २ घातय २ पर मंत्रान् भिन्द २ बः फट् स्वाहा ॥

सुसिद्धार्थानि मन्य सर्वापु दिबु विचिपेत् ।

तर्व विघ्नोपशान्त्यर्थं सकली कारणं भवेत् ॥

कर्माष्टक विनिर्मुक्ता गुणाष्टक समन्विता ।

सिद्धाः सन्निहिता सन्तु भव्य सत्व विमुक्तिदा ॥

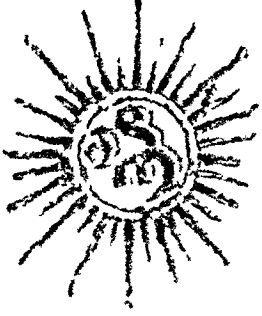
ॐ नमो भगवद्गणेशः सिद्धेभ्यः सुं सुं सुं हीं हूंं ठं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं
लृं एं ऐं ओं औं अं अं अं संवोषट् ।

इस मन्त्र को पढ़ कर सब दिशाओं में पुण्यान्त चरण करे ।

यावन्नेहसर्होपाध्यावच्चन्द्रार्कं वारकाः तावद्भद्राणि पश्यन्तु शान्तिं स्नान पाठकाः ॥

॥ इति सकली करणम् ।

॥ श्री चंतरागाय नमः ॥



समृच्चय पञ्च कल्याणक ३३

[भद्रारक-भुवन प्रीति कुत]

प्रगप जिन चंवीस के पञ्च कल्याण जी, गर्भ इन्म तप ज्ञान अरु निर्वाण औ ।
राहि समृच्चय संगल पाठ वद्वान नी, तजि सर्वार्थ पयान करे त्रय ज्ञानजी ॥

त्रय ज्ञान धारी गर्न प्राये, मात स्वप्न छु देखिये ।

इठि के प्रभातहि पूछि पिउ को फल तीर्थ कर देखिये ॥

तन्नि इन्द्र अवधि धनद पन्द्रह माघ वर्षह रत्न सो ।

अपन कुमारी मर्म शोधन, राखि माता यत्न सो ॥ १ ॥

इह पिनि उन्मव धार, इन्द्र मन पुर गये, प्ररनीतर नव मात मात पूरख भये ।
नन्द यमय तय देव अंट हरि वालिबो, इन्द्र चल्पो सज सैन्य, गगन तय गाविबो ।

गात्रियों ऐरावत चंद्रिय सुर , जन्म नगरी आइया ।
 इन्द्राणी माया मधि शिशु रलि, मात से प्रभु लाइया ।
 जय जय कृत सुर देव नाचत, मेरु गिरि पै ले गये ।
 इम महस आठ सु हेम कलशा, चीर जल डारत मये ॥२॥

महि श्रंगार मुलाय मात पित सौमिथारज विलक सुरंदय धर्म बख रोषिया ।
 हार निराह शुभ राजनीति मय धारिया, अन्त वैराग्य सुपाय मपच निगरिया ॥

ममता निवारी धन्य प्रभु तुम आय लोकांतिक भने ।
 प्रभु वार भावे भावना तहां इन्द्र जो आये वने ॥
 आरूढ है प्रभु पालखी में, भवजन जन ममभाविya ।
 नमः सिद्ध कर लोच करिके तप कल्याणक पाविya ॥ ३ ॥

शैल उल पुनि त्रय ऋतु में प्रभु तप करे, मनः पर्यय शुभ पाय भव्य जहना हर ॥
 आहार गिआ करे सुनिहार करे नहीं, कर्म धारिया नाश, ज्ञान केवल कही ॥

लहि ज्ञान केवल इन्द्र जानी समशरण रचइया ।
 गणधर सुमुनि अरु आजिका वउ देव नर पशु आइया ।
 करि धर्म तत्व बखान से बहु भव्य जीव मम्मोधिया ।
 थुति कृि इन्द्र निहार को, गिरि शिखर योग निरोधिया ॥४॥

एक मास क्रिय ध्यान शुभल मन धारिया, प्रकृति सहित लु अघातिय कर्म निवारिया ।
 लघु पन्चाक्षर मांदि प्रभु गंत शिव लये , रहे केश नख, तन परमाणु खिर गये ॥

खिर गये जत्र सुर आय कं, मायामयि तनु निामये ।
चन्दन प्रसन्न मुकुटाग्नितै शुभ क्रिया कर सब सुर गये ॥
श्री पन्च कल्याणक महातम, सुनत भवि सुख पाइये ।
कहि भाव सेन सुदेव यरा त्रैलोक्य मंगल गाइये ॥२॥

सलित चन्दन पुष्प शुभाचतै-श्चरु सुदीप सुधूप फलार्थ कैः ।
धवल मंगल गान रवाकुले जिन गृहे जिनराज महं यजे ॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पन्च कल्याणकेभ्योऽद्य
निर्वपामीति श्वाहा ॥

❀ श्री लघु अभिषेक पाठ ❀

ॐ श्री मन्मंदर सुन्दरे शुचिजलै धौतैः सदभोक्तैः ॥
पीठे मुक्ति करं निवाय रचितं, त्वत्पाद पत्र स्रजः ॥

(पीठ प्रचालनं, श्री कारार्चनं)

इन्द्रोऽहं निज भूषणार्थं ममलं, यज्ञो पवीतं दधे ।
मुद्रा क्रमण शोखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥ १ ॥

(इन्द्रा भरणं यज्ञोपवीत धारणं)

इन्द्र, अग्नि, यम, नैऋत्य, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, धरणेन्द्र, सोम इति दश दिग्पालेभ्योऽर्घ्यं ॥

(चेत्र पाळ स्थापनं कुर्यात्)

इन्द्रान्यान्यन्वरु नेष्टोदपिमरु-धचेष्ट शेषो ईशाव ।

प्राहृशान्निज राहनायुभवधुन् युस्तांसुभंस्थापितान् ।

(इति द्विरपाल आह्वानम्)

[सिद्धामन र चारों तरफ बावळ के १० डेर स्थापित कर दिग्पालों को स्थापना करे]

प्रागत्य देवी वननी प्रपूज्या, नित्यानिभृत्या नगराज मूर्तिर्न ।

सुगेन्द्र पीठे वर पांडु कायां, निवेश्य पूर्वभिमुखं जिनेन्द्रम् ॥

क्षीरोद दोयैरमरोऽप नित्यैः, प्रियंगुसञ्चन्दन शृङ्ग मिश्रैः ।

आपूरितामष्ट महस संख्यान्, प्रशृङ्ग सत्कचन रत्न कुंभान् ॥

वः बाहुकामल शिलागत, मादिदेव-पस्नापयन्सुरावागः ।

कञ्चयः शमीपु रद्द मक्षत तोय दृष्यैः समावयामि पुर एव तदीय विम्बं ॥

(प्रतिमा स्थापनं)

[निम्न मंगल स्तुति पढ़ते हुए वादित्र के साथ भगवान को बाहर विराजमान करे]

कैलाशे वृषभस्य निवृति मही-वीरस्य पावापुरे ।

चम्पायां वसु पूज्य सज्जिनपतेः मध्मेद शैलेर्द्विताम् ॥

शेषाश्यामपिचोर्ब्यंत शिलरं, नेमीश्वर स्याहंतः ।

निर्वाण्यवनयः प्रसिद्ध विभवाः कुर्वन्तुनो मंगलम् ।

मंगलं मंगान् वीरो, मंगलं गौतमो गथिः ॥

मंगलं राम सेनायाः नैन वसोन्तु मंगलम् ॥

(इति मंगल स्तुतिः)

ॐ आर्हत्य, स्नपनोसितोषिकरणं, दध्यक्षताद्यचितान् ।
 संस्थाप्योज्वल वर्णं पूर्णं कलशान्, कोशेषु सूत्राष्टान् ॥
 तूर्धान्संस्तुति गीत मंगल रवै, लुब्धे जयत्सुध्वनिः ।
 सोऽसाहं विधिपूर्वकं जिनपतेः स्नानक्रियां प्रस्तुवे ॥

[चारों कोनों पर ४ कलश स्थापन करें]
 (चतु कलश स्थापनम्)

हे इन्द्रदेव समाह्वानायामहे स्वाहा । हे इन्द्र देव आगच्छ २ इन्द्राय स्वाहा ।
 इन्द्र परिजनाय स्वाहा । इन्द्रानुचराय स्वाहा । इन्द्रमहतराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा ।
 अनिलाय स्वाहा, सोमाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा ।
 भूः स्वाहा, भुवः स्वाहा । स्व स्वाहा । स्वधा स्वाहा (पुष्पांजलि क्षिपेत ,

ॐ इन्द्र देवाय स्वर्गाय परिवृत्ताय इदं जलं गंधं पुष्पं अक्षतं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं अर्घ्यं
 वास्तुकं यज्ञ भाग्यं यजामहे प्रतिगृह्यतामीति स्वाहा (अर्घ्यं)
 यस्यार्थं क्रियते कर्म, मप्रीतो भव मे सदा ।
 शांतिरुं पौष्टिकं चैव सर्वं कार्येषु सिद्धिदः ॥ (इत्यशीर्वादः)

(इसी प्रकार दशों दिग्पालों के अर्घ्य चढ़ाना चाहिये)

ॐ अर्घ्यं स्वस्तिकं यज्ञ भाग चरुकै रोभूसुं वः स्व स्वधा ।
 स्वाहा चैत्यभिमन्त्रितैः प्रति दिशं संतर्पयामि क्रमात् ॥
 सच्चन्दनाद्यक्षत तोयभिश्चैः त्रिक्रस पुष्पांजलिना सुभवतया ॥
 जैनाभिषेकेन समं समेतान् नव ग्रहान् शान्ति करान्यजामि ॥

आदित्य सोम मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनिश्वर राहु केतु नवग्रह देवताभ्योऽर्घ्यं तिर्य-
पामीति म्बद्धा ॥

(इति द्वित्रिपालानामर्घ्यवितारणम्)

सद्यो नाति सुगन्धेन ध्वच्छेन बहुलेन च स्नपनं क्षेत्रपालस्य, तैलेन प्रकरोम्यहं ॥
तैल स्नपनम् ॥

सिन्दूरैररुणाकारैः पीत धर्षोरच कुंकुमैः, चर्चनं क्षेत्रपालस्य सिन्दूरेण करोम्यहम् ॥
सिन्दूरार्चनम् ॥

मद्यः पूतैः महास्निग्धैः श्लथ्रः गुडार्चं पिरडकैः, क्षेत्रपाल मुखे देयात् गुरु विघ्नः विनाशनम् ।
गुडाचनम् ॥

सुखच्छ सौगन्ध्य सुनिर्मलेन सद्यै न तैलेन गुडान्वितेन ।
श्री क्षेत्रपालं बहु विघ्न शान्त्यै, संस्तोमि सिन्दूर कृतानुलेपम् ॥

भो क्षेत्रपाल जिनपः प्रतिमाकपाल दंष्ट्रा कराल जिन शासन रक्षपाल ।
तैलाभिपेक गुड चन्दन दीप धूपैः भोगं प्रतीच्छ जगदीश्वर यज्ञ काले ॥
श्री कुमुद अंजन चामर पुष्पदंत जय विजय अपराजित, मणिभद्रादि अष्ट क्षेत्रपालेभ्यो अर्घ्यं ॥

॥ अथाष्टकं ॥

स्थानान्सुनर्घ्यान् प्रति पत्ति योग्यान्, सद्भावमन्मान जलादिमिश्रव ।
क्षेत्राभिपेके समुपागतानां, करोमि पूजामह दिक्पतीनाम् ॥

ॐ ह्रीं दशदिग्पालेभ्यो जलं यजामहे स्वाहा ।

श्री खंडकर्पूर सुकुंकुमाढ्यैः गन्धैः सुगन्धीकृत दिग्त्रिभागैः ॥ जैनाभिः ॥ चन्दनं ॥
 शाल्यदत्ते रक्षत दीर्घपात्रैः सुनिर्मलैश्चन्द्र करावदत्तैः ॥ जैनाभिषेः ॥ अक्षतम् ॥
 अंभोजनीलोत्पलपारिजातैः कदम्ब कुन्दादिभिर प्रसूनैः ॥ जैनाभिषेः ॥ पुष्पः ॥
 नैवेद्यकैः कांचन रत्नपात्रैर्न्यस्तैर्हस्तैः हरिणासुहस्तैः ॥ जैनाभिषेः ॥ नैवेद्यम् ।
 दीपोत्करैः ध्वस्त तमोभिधातैः, हृद्योदिताशेष पदार्थ जातैः ॥ जैनाभिः ॥ दीपम् ॥
 तरुत्थकुण्डलागुरुचन्दनाद्यैः, सच्चूर्णैर्जैरुत्तम धूपवर्गैः ॥ जैनाभिः ॥ धूपम् ॥
 लवंग नारंग कपित्थ पूरैः, श्री मोचचोचादि फलैः पवित्रैः । जैनाभिः ॥ फलम् ॥
 श्री खंडकर्पूर सुगन्धधामिः फलैश्च पुष्पाक्षत धूप नाद्यैः ॥ जैनाभिः ॥ अर्घ्यः ।

(शुद्ध जल से अभिषेक करें)

ॐ श्रीमद्भिः सुरसैः निसर्ग विमलैः पुष्पाश्रयाभ्यावृतैः ।
 शीतैश्चारू घटाश्रितै रवित्थैः, सन्ताप विच्छेदकैः ॥
 तृणोद्रेक हरैः रजः प्रशमनैः, प्राणोपमैः प्राणिनाम् ।
 तोयैर्जैनवचो, मृताविशयिभिः, संस्नापयामोजिनम् ॥
 ॐ जय जय अहन्त भगवंतं, जलेन स्नापयामीति स्वाहा ।
 जे के वि भव्व जीवा, इच्छन्ति मण वयण काय संजुत्ता ।
 सर्वदे मणुपुव्वं, पछेइवन्दामिया सव्वे ॥

मममानय चालीमा, विन्नर देमाण होंति वचीमा ।
 रूपामर चउतीसा, चन्दो यरोगरो तिरिओ ।

भगवतः गर्भं जन्म दिक्षा ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकर्मयो जले यजामहेऽन्नात् ।
 नल न्तपनम ॥

पुण्यैः वार्भिः प्रसिद्धैः परिमल महूलैश्चन्दनै रजतौघैः ।
 पुष्पैः पुन्नागनगिरचरुभि सुरवरैः दीपकै दीपित्वाभिः ॥
 धूपैः सद्द्रव्य युक्तै रिव सुकृत फलैः मातुलिंगाम्न पूजैः ।

पुष्पांजलि प्रयुक्तै रूपवनमहितैः, संयजे देव देवं ॥ अर्घं निर्घपामीति स्वाहा ॥

(दृताभिपेक)

अंदण्डी भूत तडिद्गुण प्रगुणया, हेमाद्रिवत् स्निग्धया ।
 चञ्च न्चंपक मालया रुचिरया, गौरोचना पिगया ॥
 हेमाद्रिस्थल सूक्ष्मरेणु विलसद्, धातुल्यिका लोलया ।
 द्राक्षीयो दृत धारया जिनपतैः, स्नानं करोम्यादरात् ॥

ॐ जय जय अर्हतं..... दृत स्नपनम् । पुण्यैः वार्भि इत्यादिना अर्घं ॥

ॐ दुग्धा भिपेक ॐ

ॐ माला तीर्थ कृतः स्वयंवर विधौ क्षिप्रा पवर्ग श्रिया ।
 तस्येयं शुभगन्ध हार लतिक्रा, प्रेम्णातया प्रेषिता ॥

वर्त्मन्यस्य समक्षितौ विनिक्षिता, दिग्विथि संख्या कृता
कुर्म शर्म समृद्धये भावतः संस्नापयेधारया ॥

ॐ जय जय अर्हन्तं..... दुग्ध स्नपनं ॥ पुण्यैः वार्षिभिः इत्यादिनाः अर्घं ॥

(दध्याभिषेक)

ॐ शुक्ल ध्याल मिदं समृद्ध मथवा, तस्यैव भर्तुर्यशो ।
राशीभूत मिदं स्वभाव विशदं, वाग्देवतायाः स्मितं ।
आहोचित्सुर पुष्प दृष्टि रियमि, -त्याकार मातन्वितैः ।
दध्नेन हिम खंड पांडुर रुचा संस्नापयामो जिनम् ॥
ॐ जय जय अर्हन्तं..... दधिस्नपनम् ॥ पुण्यै वार्षिभिः इत्यादिना अर्घं ॥

— :इक्षरसाभिषेक:—

ॐ देवाने कैरनेकै स्तुति मुखर मुखै वीची ता याति रिष्टैः ।
शक्रेशोर्च्यैः प्रयुक्तैर्जिन चरण युगैरवारु चाभीकरामा ।
धारां भोजक्षितीनु प्रचुर वर रसा श्यामला वो विभूत्या ॥
भूयात्कल्याण काले, सकल कलिमल चालने तीवदत्तः ।

ॐ जय जय अर्हन्तं..... इक्षुरस स्नपनम्, पुण्यै वार्षिभिः इत्यादिना अर्घं ॥
॥ सर्वौषधि स्नपनं ॥

ॐ संस्नापितस्य घृत दुग्ध दधीक्षुवाहै सर्वाभिरौषधि भिरर्हत मज्जलाभि ।
उद्वर्तितस्य विदधाम्यभिषेक मेला कालेय कुंकुम रसोत्कट वारिपूरैः ॥

ॐ जय जय अर्हन्तं भग ...सप्तोपाधि स्नपनम् ॥ पुण्यैर्वाभिः इत्यादिना अर्थं ॥
(शांतिघातरत्रयम्)

संपूजकानां प्रति पालकानां यतीन्द्र गामान्य तपोधनानां ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिर्भगवान् जिनेन्द्रः ॥

“एक रकेवी में धुण्ण अबत दीपक रख कर आरती उतारें”

दध्युज्ज्वलात्त मनोहरं पुष्प दीपैः पात्रार्पितं प्रतिदिनं महतादरेण ।
त्रैलोक्य मंगल सुखानल कामदाह, मारतिकं तवविभोरचतारयाभि ॥
(इति मंगलार्तिकप्रतारणम्)

(चारों कोनों के ४ कलशों से अभिकेक करे)

ॐ हृद्योद्धर्तन कल्क चूर्ण निवहैः, स्नेहापनो दंतिनो-
वर्णाढ्यै विविधैः फलैश्च सलिलैः, कृत्वावतार क्रियां ।
सपूणैः सकृदुद्धतै जल धरा कारैश्चतुर्भिवर्धैः ।

रंभापूरित दिङ्मुखै रभिषवं कुर्मस्त्रिलोकीपते.

ॐ जय जय अर्हन्तं ...चतु कलशस्नपनम् ॥ पुण्यैः वाभिः इत्यादिना अर्थम् ॥

निम्न श्लोक पढ़ते हुए भगवान के शरीर पर चन्दन का विलेपन करेः—

ऋद्धया च वृद्ध्या परया सुगंध्या, कर्पूर सन्मिश्रित चन्दनेन ।
जितस्य देवासुर पूजितस्य विलेपन चारु करोमि भक्त्या ॥
(चन्दनानु लेपनम्)

पुष्प वृष्टि

प्रफुल्ल पद्मोत्पल कंटकारि, कदम्बकै शर्चपक पाटलाभिः ।
अशोक पुष्पै वरपारिजातै जिनस्य पूजां महतीं करोमि ॥

उक्त श्लोक पढ़ते हुए श्रीजीपर पुष्प वृष्टि करना चाहिये

— गंधोदक स्नपनम्:—

ॐ कर्पूरोल्वण साद्र चन्द्रनरसा, प्राचूर्य शुभ्रत्विषा ।

मौरभ्याधिक गंधलुब्ध मधुदैः श्रेणी समारिल्लष्टया ॥

सद्यः संगत गंगया मुनिमहा श्रोतो विलसस्पृहा

सद् गंधोदक धारया जिनपतेः स्नानं करोमि श्रियैः ।

ॐ जय जय जय अर्हतं..... गंधोदक स्नपनम् ॥

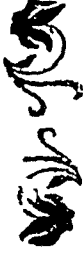
ॐ स्नानानन्तर मर्हतः स्वयमपि स्नानाम्बुषेकाद्रितो-

वागंधाक्षत पुष्पदाम चरुकैः दीपैः सुधूपैः फलैः ॥

कामोदाम गजकुशां जिनपतेः स्वभ्यर्च्य स्वस्तोत्रया

सः स्यादारवि चंद्रमन्त्रय सुख प्रख्यात कीर्तिं ध्वजः ॥

अर्थ निर्वपामीति स्वाहा ॥ [पुष्पांजलि क्षिपेत्



अभिषेक के बाद निम्न शान्ति मन्त्र पढ़ते हुये भगवान पर दूध या जल की अग्रहण द्वारा कृष्णा चादिये ।

—: शान्ति धारा मन्त्र :—

ॐ ह्रीं श्रीः वलीं ऐं अहं वं मं हं सं तं वं वं मं सं हं हं सं सं तं तं पं पं मं मं
भर्षीं भर्षीं क्षीं क्षीं द्रां द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽहते भगवते श्रीभते ॐ श्रीं क्रौं मन
पापं: खंड, संड, हन हन दह दह पच पच पाचय पाचय शीघ्रं कुरु कुरु गाहा ।

ॐ नमोऽहं भर्षीं क्षीं हं सं सं वं वं हः पः हः ह्रीं हः अग्निआउसा नमः सर्वे
पूजकानाम् ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु गाहा ।

ॐ द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽहते भगवते श्रीभते ठः ठः मम श्रीरस्तु, वृद्धिर
पुष्टिरस्तु, शान्तिरस्तु, कालिरस्तु, कल्याणमस्तु, अस्मद्कार्य सिद्धयर्थं सर्व विघ्न निवारणार्थं
श्रीमद्भगवते सर्वोत्कृष्ट त्रैलोक्य नाथाचित पाद पद्म प्रगाढात् सद्धर्म श्री बलायुरारोग्यैश्वर्याभि-
वृद्धिरस्तु स्वर्गतरगत धनधान्य समृद्धिरस्तु श्री शान्तिनाथो मां प्रसीदतु श्री शीतराग देवो
मां प्रसीदतु श्री जिनेन्द्र परम मांगल्य नाम धेयो ममेहामनुत्रच मिद्धि तनोतु ।

ॐ नमोऽहते भगवते श्रीभते चितामणि पार्वर्ष तीर्थंकराय रत्नत्रय रूपाय अनंत चतुष्टय
सहिताय धरशेन्द्र फणसण्डल मंडिताय समवशरण लक्ष्मी शोभिताय इन्द्र धरशेन्द्र चक्रवर्त्यार्द्रि-
पूजित पादपद्माय केवल ज्ञान लक्ष्मी शोभिताय जिनराज महादेवाय ऋषटाइश दीप रहिताय पट्-
चत्वारिशत्युण संयुक्ताय परम गुरु परनात्मने सिद्धाय बुद्धाय त्रैलोक्य परमेश्वराय देवाधि देवाय

सर्वसत्त्व हितंकराय धर्मचक्राधीश्वराय सर्वं विद्या परमेश्वराय त्रैलोक्य मोहनाय धरणेन्द्र पद्मावती
सहिताय अतुल्यलक्ष्मी वीर्यं पराक्रमाय अनेक दैत्य दानव कोटि मुकुट घृष्ट पाद पीठाय ब्रह्मा विष्णु
रुद्र नारद खेचर पूजिताय सर्वभय जलानन्द कराय सर्वं रोग मृत्यु घोरोप सर्ग विनाशाय सर्वं देश
ग्राम पुर पट्टन राजा प्रजा शान्तिकराय सर्वं नीच विघ्न किञ्चरण समर्थाय श्री पार्श्वं देवाधि देवाय
नमोस्तु । श्री जिनराज पूजन प्रसादात् सर्वं सेवकानाम् सर्वं दोष रोग शोक भयपीडा विनाशनं कुरु
कुरु सर्वं शान्ति तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ नमो श्री शान्ति देवाय सर्भरिष्ट शान्ति कराय हौं हौं हौं हः असिआ उसा मम सर्वं विघ्नं
शान्ति कुरु कुरु स्वाहा मम तुष्टिं पुष्टं कुरु कुरु स्वाहा । श्री पार्श्वनाथ पूजन प्रसादात् मम अशुभानि
पापानि छिन्द २ भिन्द २, मम पर दुष्ट जनोपकृत मंत्र तंत्र दृष्टि मुष्टि छल छिद्र दोषान् छिन्द
२ भिन्द २ मम अग्नि चोर जल सर्प व्याधिं छिन्द २ भिन्द २, सारी कृतोपद्रवान् छिन्द २
भिन्द २, सर्वं भैरव देव दानव वीर चरनारसिंह योगिनी कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, डाकिनी
शाकिनी भूत प्रेतादि कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, भवनवासी व्यंतर ज्योतिषी देव देवी कृत
विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, अग्निकुमार भयं छिन्द २ भिन्द २, उदधिकुमार भयं छिन्द २
भिन्द २, स्तनितकुमार भयं छिन्द २ भिन्द २, द्वीपकुमार दिक्कुमार भयं छिन्द २ भिन्द २
वातकुमार मेघकुमार भयं छिन्द २ भिन्द २, इन्द्रादि दश दिग्पाल देव कृत विघ्नान् छिन्द २
भिन्द २ जय विजय अपराजित माणिक्य पूर्णभद्रादि क्षेत्रपाल कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २,
राक्षस वैताल दैत्यदानव यक्षादि कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, नवग्रह देवता कृत सर्वं ग्राम

नगर पीडां छिन्द २ भिन्द २, सर्व अष्ट कुली नाग जनित विप भयान् छिन्द २ भिन्द २,
 सर्व ग्राम नगर देश मार्ग रोगान् छिन्द २, भिन्द २, सर्व स्थानर जंगम विषजाति वृश्चिक
 दष्टिः विप सर्पादिभूत दोषान् छिन्द २ भिन्द २ सर्व मिह अष्टापद व्याघ्रज्याल वनचर लीव
 भयान् छिन्द ० भिन्द, २, पर शत्रु कृत मारखोच्चटन विद्वेषण मोहन वशी करणादि दोषान् छिन्द २
 भिन्द ०, सर्व देशपुर मारीम् छिद्र २ भिद्र २, सर्व राज नरमारो छिद्र छिद्र भिद्र भिद्र, सर्व हस्ती
 घाटक मारीम् छिद्र छिद्र भिद्र भिद्र, गोधूपमादि तोयैः च मारीम् छिद्र छिद्र भिद्र भिद्र, सर्व
 धुन पुष्प लता मारीम् छिद्र छिद्र भिद्र भिद्र !

ॐ भगवती श्री चक्रेश्वरी ज्वाला मालिनी पद्मावती देवी अस्मिन् जिनेन्द्र भवने आगच्छ
 आगच्छ एहि २ तिष्ठ २ नलि गुहाण २ मम धन धान्य समृद्धि कुरु कुरु सर्व भव्य जीवानंदनं
 कुरु २ सर्व देश ग्रामपुर मध्ये ह्युद्रो पद्रव सर्व दोष मृत्यु पीडा विनाशनं कुरु २ सर्व परचक्र भय
 निवारणं कुरु २ स्वाहा ।

ॐ आं कौं ह्रीं श्रीं वृषभादि वद्धमानात्तरचतुर्विंशति तीर्थंकर परम देवा प्रीयंताम् २,
 मम पापानि शाम्यन्तु घोरोप सर्गाणि सर्व विघ्नानि शाम्यंतु ।

ॐ ओं कौं ह्रीं चक्रेश्वरी ज्वालामालिनो षड्मावती देवी प्रीयंताम् २ ।

ॐ ओं कौं ह्रीं श्रीं रोहिण्यादि महादेवी अत्र आगच्छ २ सर्व दंष्टता प्रीयंताम् २ ।

ॐ ओं कौं ह्रीं श्रीं मणिभद्रादि यक्षकुमार देवाः प्रीयंताम् २, सर्वे जिन शासन रक्षक देवाः

प्रीयंताम् २, श्री आदित्य होम संगल बुध इहस्पति शुक्र शनिश्चर राहु केतु सर्वे नवग्रह देवाः
प्रीयंताम् २ प्रसीदंतु देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांति भगवान् जिनेन्द्रः ।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि व्यसन वर्जितम् ।
अभयं क्षेममारोग्यं, स्वस्ति रस्तु सदा मम १॥
यस्यार्थं क्रियते कर्म, सप्रीतो नित्य मस्तु मे ।
शांतिकं पौष्टिकं चैव, भवं कोर्येषु सिद्धिदः ॥२॥
आह्वानं नैव जा नामि, नैव जानामि पूजनम् ।
विमर्जनं न जानामि, क्षमस्व परमेश्वर ॥ ३ ॥

॥ इति शांति धारा मंत्रम् ॥

रा.नि पत्र के वा अवकाश हो तो उसी प्रकार भगवान पर अखंड धारा करते हुए आगे छपी हुई स्पेष्ठ
जिनवर जयमाला पढ़ना चाहिये ।

ॐ आरती ॐ

आरती सुनिशाल रत्न मारे निपाई, सुवर्ण मय धरि पात्र इन्द्र हाथे विहूसई ॥
प्रज्वलंति कूर्पूर गुण्य माला करि सोहै, अन्धकार कोहंति भविय लोक मन मोहै ॥
जे जिनवर यवित वरी आरती करंती, ते अज्ञान हणी करि केवल ज्ञान लहंती ॥
आरतीय कनक वरणी दादि जिनेश्वरतणे भुवन ।

उत्तर दक्षिण पूरुम पश्चिम, चतुर्दिशि जिन चैन्यालय ।
 अतीव अनागत वतमान, तीन चौकीसी होय
 कल्याण कीर्त्तये, कर जोडि जिये । जिन बहोत्तर होय चंग
 प्रणमिजे पुच्छप, त्रिपठ मलाखा । नित्य नम्रा होई रंग ।
 आरती हुई चौबीस जिनेश्वर, तणे भुवने हुई निनाद ।
 तिहां भालर घण्टा, धोमधोमन्वा, श्री संघह मन आणंद ॥

देवताविसर्जनम्:—

आहूता ये पुरा देवाः लब्धभागा यथाक्रमम् ।
 ते जिनाभ्यर्चनं दृष्ट्वा सर्वेयांतु यथास्थितिम् ॥
 स्वस्थानं गच्छतु गच्छतु स्नाहा । इति दिक्पाल क्षमापनम् ।
 निर्मलं निर्मलाकारं पवित्रं पाप नाशनम् ।
 जिन गन्धोदकम् ऋन्दे अष्ट कर्म विनाशनम् ॥ गंधोदक वंदनम् ॥

अनतर निम्न श्लोक पढ़कर धूप खेवन करे:—

वरूथ काला गुरु चन्दनाद्यं प्रपूर्तिता शेष दिगन्तरालम् ।
 सधूमवृत्त्या घनदुन्द कांत्या यजामिधूप प्रथरं जिनाय ॥

तत्पश्चात् केशर चढ़ा कर घण्टादि वाजित्र बजाते हुए भगवान को यथास्थान विराजमान करे ।

❀ अथ ज्येष्ठ जिनवर पूजा ❀

(ब्र० जिनदास कृत)

श्री नाभिराय कुल मंडन, मरु देवी उर रयण ।

प्रथम तीर्थंकर गाय सुं, स्वामी आदि जिणंद ॥

ज्येष्ठ जिनंद नवायु, हरज उगमणे ।

सुवर्ण कलश अण्डाळं, नीर समुद्र मरणे ॥ १ ॥

युगला धर्म निवारण स्वामी, आदि जिनंद ।

संसार सागर तारण, सेवित सुर गहनं ॥ ज्येष्ठ जि० ॥

गण धर ऋषिवर यति वर मुनिवर ज्ञान धरं ।

आर्जिका श्रावक भाविका पूजित चरण वरं ॥ ज्येष्ठ जि० ॥

श्री सकल कीर्ति गुरु प्रणमी ने जिनवर पूज रचूं ।

ब्रह्म भणो जिन दास सु आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० ।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ जिनवर स्वामी अत्र अवतर २ संघौषट् ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ जिनवर स्वामी अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ जिनवर स्वामी अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

निर्मल शीतल सुगन्ध पुज्य रयं, ॥ षष्टक ॥

कर्मात्मल सब टालिय आत्मा निर्मलयं । ज्येष्ठ जि० ॥ जलं ॥

चन्दन कुंडुम कर्पूर विलेपन पूज्य रयं ॥
गुग्गुलु शरीर लक्ष्मी करी आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० ॥ चन्दनम् ॥
मुक्ताफल जिम उज्ज्वल बद्धत पूज्य रयं ।
पूज्य पद लक्ष्मी करी आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० ॥ अक्षतम्
जाही जुही मच कुंद सेवत्री पूज्य रयं ।
पूज्यपद लक्ष्मी करी आत्मा निर्मलयं । ज्येष्ठ जि० ॥ पुष्पम् ॥
उत्तम अन्न बहु आणिय, पक्वान्न पूज्य रयं ।
वेदनीय कर्म विनाशिय आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० ॥ नैवेद्यम् ॥
कर्पूर तथा बहु ज्योति सु आरती पूज्यरयं ॥
घातीय कर्म विनाशिय आत्मा निर्मलयं । ज्येष्ठ जि० ॥ दीपम् ॥
अगर कर्पूर कृष्ण गुरु धूपह पूज्य रयं ।
घातीय कर्म विनाशिय आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० धूपन् ॥
आम्र नारिंग जंबीर नारीकेल पूज्यरयं ।
मन वांछित फल मांगहु आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० ॥ फलम् ॥
धवल मंगल गीत महोत्सव अर्घह पूज्य रयं ।
स्तवन करी फल मांगहु आत्मा निर्मलयं । ज्येष्ठ जि० ॥ अर्घम् ॥
सकल कीर्ति गुरु प्रणमिने जिनवर पूज्य रयं ।
ब्रह्मप्रणे जिन दास सु आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० । कुसुमांजलिः ।

❀ जयमाला ❀

(त्र० कृष्णदास कृत)

अमर नयरि सम नयरि अयोध्या, नाभि नरेन्द्र वसै निजबुध्या ।
सुरपति मेरू शिखर लही चढ़िया कनक कलश चिरोदधि भरिया ॥

तस पटराणी मरू देवी माया, युगपति आदि जिनेश्वर जाया । सुरपति० ।
ज्येष्ठ मास अभिषेक जु करिया, अष्टोत्तर शत कुंभ जु भरिया । सुरपति० ।
भभक्त जलधारा संचरिया, ललित कलोल धारिण उत्तरिया । सुरपति० ।
जय जय असुरनि करी उच्चरिया, इंद्र इन्द्राक्षी सिंहासन धरिया । सुरपति० ।
अंग अनंग विभूषण धरिया, कुण्डल हार हरित मणि जड़िया । सुरपति० ।
ऋषभनाम शत्रु मुख विस्तरिया, कमल नयन कमलापति कहिया । सुरपति० ।
युगला धर्म निवारण वरिया, सुर नर निकर गन्धोदक महिया । सुरपति० ।
रत्न कचोल कुमारिनि भरिया, जिन चरणाम्बुज पूजत हरिया । सुरपति० ।
हिमहिमांशु चंदन घन सरिया, भूरि सुगन्ध गन्ध परि सरिया । सुरपति० ।
अचत अक्षतवास लहरिया, रोहिणी कांत किरण सम सरिया । सुरपति० ।
देखत रुचि करि अमरनिकरिया, पंच मुष्टि जिन आगे धरिया । सुरपति० ।
सुन्दर पारिजात मोगरिया, कमल बकुल पाटल कुमुदरिया । सुरपति० ।
चरुवर दीप लेई अयच्छरिया, जिनवर आगे उगारि उधरिया । सुरपति० ।

अगर लुप्तान भूप फल फलिया, फणम रसाल मधुर रस भरिया ॥ सुरपति० ॥
 कुमुमांजलि सांजलि समुजलिया, पंडितराय अन्न वच कलिया ॥ सुरपति० ॥
 त्रिभुवन कीर्ति पद कज वरिया, रत्न भूषण खरी महापद कहिया ॥ सुरपति० ॥
 व्राम कृष्ण जिन राजस्तविया, जय जय कार करि मन हरिया ॥ सुरपति० ॥
 कुम्भ कलश भरी जय जिन वरिया, शारवत शर्म सदा अनुसरिया ॥ सुरपति० ॥

घत्ता- यावति जिन चैत्यानि, विद्यते भुवन त्रये ।
 तावति सततं भक्त्या, त्रिः परित्य नमाम्यहं ॥ अर्घ ॥

नोट — ऊपर की जयमाला अभिषेक के समय में भी पढ़ी जाती है एवं उस समय इन्द्र जल या दूध की अखंड धारा करे तथा इन्द्राणी एक थाल में अष्ट द्रव्य रख कर भगवान की आरती उतारे। यह प्रथा खास कर गुजरात प्रांत में प्रचलित है।

॥ अथ देव पूजा प्रारभ्यते ॥

(भ० सुमति कीर्ति के शिष्य अश्वन्त सागर कृत)

ॐ जय जय जय नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु ।
 यमो अरहंताणं, यमो सिद्धाणं यमो आइरियाणं ॥
 यमो उवज्जायाणं, यमो लोए मव्व साहूणं ॥

चत्वारि मंगलं, अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलपणतो धम्मो मंगलम् ।
 चत्वारि लोगुत्तमा, अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लो गुत्तमा, केवलि पणतो-

धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरहंते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धेशरणं पव्वज्जामि,
साहू शरणं पव्वज्जामि, केवल्लि पएणत्तं धम्मं शरणं पव्वज्जामि ।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा ॥ पुष्पांजलि क्षिपेत्

(निम्न मंगल पाठ पढ़ते हुवे पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

अपवित्रः पवित्रोवा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपिवा । ध्यायेत्पंच नमस्कारं, सर्वं पापैः प्रमुच्यते । १।

अषवित्रः पवित्रोवा, सर्वावस्थांगतोऽपिवा । यः स्मरेत् परमात्मानं, स बाह्याभ्यंतरे शुचि ॥२॥

अपरात्रित मंत्रोऽयं सर्वं विघ्न विनाशनः मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ॥३॥

एसो पंच णमोयारो, सब्व पावप्पणासणो । मंगलाणं च सब्वेसिं पढमं होइ मंगलम् । ४॥

अर्हमित्यक्षर ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ॥५॥

कर्मण्टक विनिर्मुक्तं मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं । सम्यक्त्वादि गुणोपेतं सिद्ध चक्रं नमाम्यहं ॥६॥

भिध्नौवाः प्रलयं याति, शाकिनी भूतपन्नगाः विषं निविषतां याति पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥७॥

युगादि देवं प्रणिपत्य पूर्वं, श्री काष्ठ संघे महिते सुभव्याः

श्री मत्प्रतिष्ठा सुततो जिनस्य श्री यज्ञ कल्पं स्वहिताय वक्ष्ये ॥८॥

आदि देवं जिनं नत्वा केवल ज्ञान भास्करं ।

काष्ठा संघ शिचंजीयाइ क्रिया काष्ठादि देशकः ॥९॥

जय जय श्री सदा शान्तिः, कल्याणं सर्वं मंगलम् ।

तनोतु सर्वदा श्रेयः पूजा प्रारभ्यते जिनैः ॥१०॥

श्री नार्भि नंदनं लिनं प्रणिपत्य भक्त्या यद्देशनामृत रसेन जगत्प्रार्णम् ।

श्री काष्ठ संघ नर मंगल हेतु भूत, यदागमे निगदितं प्रकरोमि पूजा ॥१६॥

(पुष्पांजलि लिपेत)

[निम्न स्वस्ति विधान पढ़ते हुवे पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये]

स्वस्ति त्रिलोक गुरवे जिन पुंगवाय, स्वस्ति स्वभावात् महिमोदय सुस्थिता ।

स्वस्ति प्रकाश सहजैर्जितदृष्ट्मयाय, स्वस्ति प्रसन्न ललिताद्भुत वैभवाय ॥१॥

स्वस्त्युच्छल द्विमल बोध सुधाप्लवाय, स्वस्ति स्वभावात् पर भाव विश्राम काय ।

स्वस्ति त्रिलोक विततैक चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल सकलायत विस्तृताय ॥२॥

द्रव्यस्य शुद्धि मधि गम्य यथाबुद्धयं, भावस्य शुद्धि मधिका मवि गंतु कामः ।

आलम्भनानि विविधान्यमलंब्य बल्बान् भूतार्थं यज्ञ पुरुषस्य करोमि यज्ञं । ३॥

अद्भुतपुराण पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तुन्यनूनमखिलान्ययमेक एव

अग्निज्वलाद्विमल केवल बोध बन्धौ, पुण्यं समग्र महभेकमना जुहोमि ॥४॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञे जिन प्रतिभाये पुष्पांजलि लिपेत् ॥

(आह्वयानतम्)

सार्धः सर्वज्ञनाथः सकल तनुमृतां, पाप सन्ताप हर्ता,

त्रैलोक्या क्रान्त कीर्तिः क्षतमदनरिपुर्वाति कर्म प्रणशः ।

श्री मन्निर्वाण संपद्गर युवति करालीढ करुठैः सुकरुठै-

देवेन्द्रेवंध पादो जयति जिनपतिः प्राप्त कल्पाण पूजा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं भगवज्जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संशेषट् आह्वानन ।

ॐ ह्रीं भगवज्जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥

ॐ ह्रीं भगवज्जिनेन्द्र अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

देवि श्री श्रुत देवते भगवति त्वत्पादपंकेरुह-

द्वन्दे यामिशिलीमुखत्वमपरं भक्तया मया प्रार्थ्यते ।

मातश्चेतसि तिष्ठ मे जिन मुखोद्भूते सदा पाहि मां

हृदानेन मयि प्रसीद भवतीं सम्पूजयामोऽधुना ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत द्वादशांग श्रुत ज्ञान अत्र अवतर अवतर संशेषट् ।

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत द्वादशांग श्रुतज्ञान अत्र तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत द्वादशाङ्ग श्रुत ज्ञान अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

इत्युच्चार्य पुस्तकोपरि पुष्पाञ्जलिंक्षिपेत् ।

सम्पूजयामि पूज्यस्य, पाद पद्म युगं गुरोः ।

तपः प्राप्त प्रतिष्ठस्य, गरिष्ठस्य महात्मनः ॥ ३ १

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्याय सप्त साधु समूह अत्र अवतरत अवतरत संवीपट् ।

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्याय सर्व साधु समूह अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्याय सर्व साधु समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वपट् ।

गुरु पादुका स्थापनम् ॥

(समुच्चयाण्डक)

देवेन्द्र नारेन्द्र नरेन्द्रवन्द्यान् शुम्भत्पदान्शोभितसार वर्णान् ।

दुग्धाब्धि संस्पद्धिं पुणैर्जलौघैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं परं ब्रह्मणे अनन्तानंत ज्ञान शक्तये अष्टादशदोष रहिताय यट् चत्वारिंशद्गुण महिताया-
हंपरमोष्ठिने, जिनमुखोद्भूत स्याद्वाद नप गभित द्वादशांग श्रुतज्ञानाय, सम्यग्दर्शनादि गुण-
विराजमानाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यश्च जल निर्वपामीति स्वाहा ॥

ताम्यत् त्रिलोक्योदर मध्यवर्तिं, समस्त सत्त्वाहितहारिवाक्यान् ।

श्री चन्दनैर्गंध त्रिलुब्ध भृङ्गैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ चंदनं ॥ २ ॥

अपार संसार महासमुद्र प्रीत्तारणे प्राज्यतरीच् सुभक्त्या ।

दीर्घचित्तगैर्धवलाक्षतौघैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् । अक्षतं ॥ ३ ।

धिनीत भव्याब्ज त्रिभोध सूर्यान्वर्यान्सुचर्या कथनैक धुर्यान् ।

कुन्दारविन्दप्रमुखैः प्रह्लनैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

कुदर्पकंदर्पविसर्प सर्प असह्य निष्ठाशिन धैनतेयान्
 प्राच्याल्य सार्श्वरूभीरसाढ्यैजिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ नैवेद्यम् ॥ ५८ ॥
 ध्वस्तोद्यमानधीकृत विश्व मोहान्धकार प्रर्तिघाति दीपान् ।
 दीपैः क्रनत्क्रांचन आजनस्थैजिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ दीपम् ॥ ६॥
 दुष्टाष्टकर्मन्धन पुष्ट जाल संधूपने भासुर धूमकेतून् ।
 धूपैर्विधूतान्यसुगन्ध गन्धैजिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ धूपम् ॥ ७ ॥
 जुभ्यद्विलुभ्यन्मनसासगभ्यान् कुवादि वादा श्वलित प्रभावान् ।
 फलैरलं मोक्षफलाभिसारैजिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ फलं ॥ ८ ॥
 सद्वाग्निगन्धाक्षत पुष्प जातैर्नैवेद्य दीपामल धूप धूमैः ।
 फलैर्विचित्रैर्धन पुण्य योग्यान् जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

ये पूजां जिननाथ शास्त्र यमिनां भक्त्या सदा कुर्वते ।

त्रै सन्ध्यं सुविचित्र क्णव्य रचना मुच्चारयन्तो नराः ॥

पुण्याढ्या मुनिराजकीर्तिं सहिता भूत्वा तथो भूषणा-

स्ते भव्याः सकलाव बोध रूचिरासिद्धिलभंते पराम् ॥ इत्याशीर्वादः ॥

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

इयमोऽजित नाभाच, संभवश्चाभिनन्दनः सुमतिः पद्मभासरच, सुपार्श्वोजिन सत्ससः ॥ १ ॥

चन्द्रामः पुण्यदन्तरच शीतलो भगवान्मुनिः, श्रेयांश्च वासु पूज्यश्च त्रिमक्तो त्रिमल युतिः ॥२॥
 थनंतो धर्म नामाच शांतिः कुन्थुर्जिनोत्तमः, आश्च मल्लिनाथश्च, सुवतो नमि तीर्थकृत् ॥३॥
 हरिवंश समुद्भूतोऽरिष्टनेमिर्जिनेश्वरः, स्वस्तोपसर्गद्वैत्यारि पाश्र्चोनागेन्द्र पूजिनः ॥४॥
 कर्मान्तकृन्महावीरः मिद्वार्थ कुल सम्भमः, एतेसुरा सुराधिेण पूजिता विमलस्वपः ॥५॥
 पूजिता मरताद्यैश्च, भूपैन्द्रैर्भूरिभूतिभिः, चतुर्विधस्य संधस्य शांति कुर्वन्तु शाश्वतीम् ॥६॥
 जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिः सदास्तुमे, सम्यक्त्वमेव संसार वारणं मोक्षकारणम् ॥७॥
 पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।

❀ देव जयमाला ❀

वचाः— चौबीस जिणंदह तिहुयणचंदह, अड्डय लक्ष्मण भायणहं ।
 जय जय रिसह णमो भव रहिया, जय जय अजिय सुरासुर महिया ।
 जय जय सुमइ कुबुद्धि भिणामण, जय पउमण्यह कलिमल णामण ।
 जय जय सुपास जैनेऽद्र भरडारा, जय चन्दण्यह तिहुयण सारा ॥ ३ ॥
 जय जय पुण्ययंत परमेश्वर जय जय सीयल जिण जोगेशवा ।
 जय जय सेय मनोदधि तारा, जय जय वासु पुब्ज गुण धारा ॥ ४ ॥

जय जय विमल सुनिरमल देहा, जयहि अशंत अशंत जिशेशा ।

जय जय धम्म सु धम्म पयासा, जय जय सांति सांति नय भासा ॥५॥

जय जय कुंथु परम सुम कारण जय अर कर्माण कलमस दारण

जय जय मल्लि मरणभय भज्जिय, जय मुणिसुव्वय सुर थर पुज्जिय ।६॥

जय णमि विक्रल कमल दल कीमल, जयहि अरिट्ठणोमि अतुलीवल ।

जय जय पाम फणी मण भूषण, जय जय वट्टमाण गय दूषण ॥७॥

धत्ताः-इय णर देवे, णीय स्यसंचिए, जिण चौवीसइ पणमिया भत्तिए ।

एज्जिण वर जो अणुदिणु भावई, सो पुणु अणसुण पच्छई आवई ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं वृषभादि महावीरान्तेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

❀ अथ सरस्वती (शास्त्र) पूजा ❀

देवि श्री श्रुतदेवते भगवति, त्वत्पाद पंकेरूह-

द्वन्द्वेयामि शिली मुखत्वमपरं, भक्त्या मया प्रार्थ्यते ।

मातश्चेतसि विष्ट मे जिन मुखोद्भूते सदापाहिमां ,

हृद्दानेन मयि प्रसीद भवतीं सम्पूजयामोऽधुना ॥१॥ स्थापनम् ॥

इत्युच्चार्य पुस्तकोपरि पुष्पांजलिंक्षिपेत् ।

वृषभ वक्त्र सरोरूह निर्गता, प्रकटिता वृष सेन गणाधिपैः ।

जगति तत्त्व विदां हृदयं गता जयतु जैन वचोऽमल भारती ॥१॥

गमल भव्य मनोम्युज भास्वरी, भविक मानस हंस मनोहरी ।
श्रुतसु पन्नसु चन्द्र करोज्वला, जयतुं..... ॥ २ ॥

अमल बोध चतुष्टय पूरिता, परम केवल ललित विन्मयी ।
त्रिदित त्रिश्व त्रिचिष्ठित वाग्धरं, जयतुं..... ॥ ३ ॥

दशमाधिक अंग विवद्विता, नव पदार्थ नवीकृत भूषणा ।
रुचिर वति पदावलि नूपुरा, जयतुं..... ॥ ४ ॥

मनसि जोत्सुट कुञ्जर सिंहिका, कलि कराल तमोरवि सत्प्रभा ।
व्यसन वृन्द दवानल वारिणी, जयतुं..... ॥ ५ ॥

वचन जाल्य निर्वहण परिडता, हृदय कल्पित कल्पतरूपगा ।
ससुर शक्रशतेन नमस्कृता, जयतुं..... ॥ ६ ॥

अनुक्रमामृत संश्रित निश्चला, शिव सुखेष्ट फलानु प्रदायिनी ।
भवभृतां भववारि तरंतिका, जयतुं..... ॥ ७ ॥

नितय रत्न परार्थ्य निधान भू वितत तथ्य वितर्क पटीयसी ।
जनन मृत्यु जरादि भया पद्मा, जयतुं..... ॥ ८ ॥

सतत संश्रित कामित कामिगैर्विबिध विघ्न विपन्न विद्यादनैः ।
भगवती मम तिष्ठतु मानसे, जयतुं..... ॥ ९ ॥

उदयेनान्त सेनेन कृतेयं भारती स्तुतिः ।
भयादज्ञान नाशाय, पावनी भव्य देहिनां ॥ १० ॥

इति शारदा स्तुति ॥

॥ अथाष्टकम् ॥

पयः पयोधेस्त्रिदशापगायाः, पयः पयोजात पराग रम्यम् ।

समन्त भद्रश्रुत देवतायै भक्त्या परायै परया ददामि ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै जलम् ॥

सद्द्रव्य सौरभ्य समाहुतालि कोलाहल स्तोत्र मनोभिरासैः ।

कारसीर सत्कुङ्कुमचन्दनाद्यैः गिरं चिरं तीर्थं कृतां यजामि । चन्दनम् ॥ २ ॥

सदावदातैः सरलैर्विचित्रैर्मुनेर्मनः साम्यमपाश्रयद्भिः ।

सदचतैरक्षत शासनानां तीर्थंकराणां गिरमर्चयामि । अक्षतम् ॥ ३ ॥

मन्दार सन्तानक पारिजात जातैः प्रसूनैरल्लिखुम्बिताग्रैः ।

देवेन्द्र नागेन्द्र नरेन्द्र वधां, गिरं जिनना महमर्चयामि । पुष्पम् ॥ ४ ॥

शाल्चोदनैः क्षीर दधीलु भक्ष्य, द्राक्षास्र खर्जूरक चोच पाद्यैः :

प्रमाण वाधादि विरोध मुक्तां स्याद्वाद वाणीं परिपूजयामि । नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

शिखाधरैः स्नेह दशान्तमोह मलं त्रिमन्चद्भिर्भरलं प्रतापैः ।

सदा समस्थैरिब भाजन स्थैः प्रदीपकैः श्री श्रुतमर्चयामि । दीपम् ॥ ६ ॥

सग्रंथ पर्णेरूज संकु एव स्वकंदयद्भिः प्रसरद्भिर्मरुद्भ्य ।

धूपैर्विधुमानल संशयद्भिः कण्डोपमैर्गा महमर्चयामि । धूपम् ॥ ७ ॥

बम्बीर नारंग लविंग पूग फलैर्ददामीण्ट फलाभिलापैः ।
प्रचीं भ्रमरीः भृतदेवतायै, जगल्यहं श्री जिन नायकस्य । फलम् । ८ ॥

भिद्रं गुणैर्नत्र विशाल रस्यं वस्त्रं वर स्त्री वदनोपमानं ।
मंशोम कौशेय पटलुकूलं ददामि जैन श्रुत देवतायै ॥ वस्त्राभरणम् ॥ ९ ॥

गाटीर पाथोऽवत पुष्प पुन्ज चरु प्रदीपोत्तम धूप धूम्रैः ।
फलैर्निन्द्रास्य पयोज पुत्रीं यजामि जैन श्रुत देवतां ताम् ॥ अर्घं ॥ १० ॥

❀ जयमाला ❀

घन मोह तमः पटलाणहरं, यम संयम संजम भावधरं ।
भृत धूरि भवार्णव शोक हरं, प्रणमामि सुबोध दिनेश महं ॥ १ ॥

कृत दुष्कृत कौसिक भात्र हरं, मिथ्यात्व निशाचर दूर करं ।
शुचि भव्यपयोज विकास सहं, प्रणमामि सुबोध दिनेशमहं ॥ २ ॥

कलि कर्दम कल्मष शोपमलं, रुदयादवसर्पित कर्ममलं ॥ शुचि० ॥ ३ ॥
निखिलामल वस्तु विकास पदं, धृत दुर्धर दुर्भर श्रेष्ठ पदं ॥ शुचि० ॥ ४ ॥
जडतामपहार विहार समं, सुमनोभव भंग विभंग समं ॥ शुचि० ॥ ५ ॥
रुदयामल लोचन लक्ष्मितं, जिन भासुर भानु सहस्र युतं ॥ शुचि० ॥ ६ ॥
निजमण्डल मंडित लोक मुखं, निज सत्व समर्पित लोक सुखं ॥ शुचि० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै महाधैर्निर्वपामीति स्वाहा ।

❀ अथ गुरु पूजा ❀

(शिखरिणी च्छन्द)

सुसंधे काष्ठाख्ये विमल शुभ नंदीतटमिते,
सुगच्छे पुण्येशे प्रविजयति विद्यासु गण के ॥
सुनाम्ना विख्यातः सुमति रिह कीर्त्यं त मतिमान् ।
सरामाशेषोऽभूत् प्रबलतर सेनोन्नतमतिः ॥ गुरु पादुका स्थापनं ॥१॥

श्रीमत् श्री जयकीर्तिवंश विल सत् श्री मन्महीचंद्रजित्,
तत्पट्टे मुनि वृन्द वंध्य महिमा, भट्टारकाणां प्रभु ।
नाम्नायः सुमति परो विजयते यः कीर्तितः सज्जनैः ॥
श्रीमद्भागवर देशवंश विलसत् चिन्तामणि सार्थदः ॥ २ ॥

इत्युच्चार्थं गुरुपादुकोपरि पुष्पाजलि क्षिपेत् ॥

❀ अथ गुरु पादुका स्तुतिः ❀

निज जनात्परि पालयति स्वयं करुणया मलयासु मनीश्वरः
सुमति कीर्तिरसौ जयतेऽनिशं शशि मुखं कमनीय गुणा करः ॥१॥
विरजता मनसोभवद्भुवः सकल सज्जनरंजित पंडितः ॥ सुमति० ॥ २ ॥
निखिल लोकसुवंदित सत्पदं प्रबल काव्य कला कुल कोविद ॥ सुमति० ॥ ३ ॥
शुवन जीवदया करुणोद्यमः, कमल कोमल रुड् मुनि गौतमः ॥ सुमति० ॥ ४ ॥

भिन जनाति हरो हत पातकः सुनयनः प्रतिवन्दित भक्तिः ॥ सुमति० ॥ ५ ॥
 निज गुणो मुनिमान्य गुणोदधि, स्वजमहो कवितागुण वारिधिः ॥ सुमति० ॥ ६ ॥
 भिनलयान्जित नागमहा निधिः, सकल तन्त्र समुच्चय तोयधिः । सुमति० ॥ ७ ॥
 प्रबल पंच व्रतादि करं परः, प्रथित शास्त्र कलाथं परं परः ॥ सुमति० ॥ ८ ॥

(मालिनी छंद)

निखिल खल विकारान् वर्जयन्नैक वस्तु, प्रकटित निगमान्धिस्यक्त संसार संगः ॥
 अयति सुमति कीर्तिः सर्व गच्छे हि वंधो, विदित गुण गुणैधः सर्व भङ्गारकेशः ॥
 इति गुरु स्तुति ॥ पुष्पांजलि चिपेत ॥

(अथाष्टकम्)

नाना नदी सिन्धु सुताम्रघौषैः श्री मत्कल्लिद गिरिजा विधियोद्भवैश्च ।
 सम्पूजयामि विधिना तमादौ भङ्गारकः सुमति कीर्ति मुनीश्वरेन्द्रः ॥ जलम् ॥ १ ॥
 श्री चन्दनैः सकल चन्द्र करावदातैः पाथोरुहोद्भव पराग पराग कात्रैः ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥
 रम्याक्षतैः परिमलाक्षत चञ्चरीकै लीला विलोलकमलाकर निर्मितैश्च ॥ सम्पूज ॥ अक्षतं ॥ ४ ॥
 शुम्भसुरेश्वर तरु प्रभवैः प्रहूनैः पंकेरुहै वकुल जाती सुकेतकैश्च ॥ सम्पूज ॥ पुष्पम् ॥ ३ ॥
 स्फुजःप्रभापरितिरस्कृत चंद्रविम्बैः सुस्वादुभिरश्चरुवैर्विधैः घृताढ्यैः ॥ सम्पूज ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥
 उर्जत्वदम्भ कलितेस्फुरदशुभिर्वा दीपैः प्रकाशितदशैश्चपुंजहारैः ॥ सम्पूज ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

हर्म्यावशाकर सुगंध महाप्रधूपैः कर्पूर चन्दन लविंगललालान्धुवैतैः ॥ सम्पूज ॥ धूपम् ॥ ७ ॥
रम्याफलै स्फुटफलै पनसेन कैश्च कंकोरकैः कमल कर्कटिकादिभिरच ॥ संपूज ॥ फलं ॥ ८ ॥

श्री काष्ठ संघ महीचन्द्र पदाद्रि भानो, तोयादिभिः सुमति कीर्तिं गुरुं गरिष्ठं ॥
योवत्यमु स लभतेवर भोगसौख्यं, लक्ष्मीश्वशिष्य यशवंतमुनीश्वरेण ॥ अर्घं ॥

१ ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः २ ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः ३ ॐ ह्रीं सम्यक् चारित्र्याय नमः ॥
रत्नत्रयस्य नाप्यं देयात् ।

॥ जयमाला ॥

श्री मञ्जिनेश्वर महं प्रणिपत्य कुर्वे श्रीमद्गुरो गुणगणान्प्रतिबुद्ध बुद्धया ।

श्री वासुदेव तनयो कवि जीवनोहं, भट्टारकस्य सुमतेर्जयकारी माला ॥ १ ॥

निखिलाद् जिनागमदेह धरं धरणीधरवद्बहु शास्त्र धरं ।

प्रण मामि सुकीर्तिं परं सुमतिः मतिदं गतिदं कृतदिव्य नुतिः ॥ २ ॥

निब बोध सुबोधित शिष्य परं वचनामृत तपित भव्यभरं ॥ प्रणमामि० ॥ ३ ॥

शुभ नित्य विवेक विचार परं, विजितारिभरं स्वजनेष्ट करं ॥ प्रणमा० ॥ ४ ॥

हत मोह महान्वित सैन्य बलं, बल निर्जित क्रोध मनल्पकलं ॥ प्रणमा ॥ ५ ॥

सुतपोत्रत सत्कृत देहधरं, धृतधर्म परं परमेष्ठी परं ॥ प्रणामा० ॥ ६ ॥

निजचित्त निवृत्ति पुरा कलुषं, रजनीपति बधित सद्गुणं ॥ प्रणमा० ॥ ७ ॥

धृत दिव्यदयं विधिपालनकं, कलि पातक संघ निवारणकं ॥ प्रणमा० ॥ ८ ॥

॥ ६ ॥

कृत काम महाभट दिव्य जयं, विमलैक विवेक हतारि भयं ॥ प्रणमा० ॥ ६ ॥

वचनैरुञ्जितदिव्य सदं, निज शास्त्र बलादित वैरी मदं ॥ प्रणमा० ॥ १० ॥

ॐ तीं गुरु चरण कमलेभ्यो महाधर्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ अथ सिद्ध पूजा ॐ

अर्धाधोरयुतं सविन्दुमपरं ब्रह्मधरावेष्टितं, चार्णित दिग्गताम्बु जदलं तत्सन्धितत्वान्मितम् ।
अन्तः पत्रटेध्वनाहतयुतं हीं धार संवेष्टितं देवं ध्यायति यः स मुक्तिं सुभगो वैरीभक्तखीरवः ॥१॥

ॐ हीं सिद्ध चक्राधिपते, सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अन्तर अन्तर । संवैपट् ।

ॐ हीं सिद्ध चक्राधिपते, सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ हीं सिद्ध चक्राधिपते सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

सिद्ध चक्र स्तवन

अर्हमित्यम्बर ब्रह्म वाचकं परमेष्ठिनः । सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ॥ १ ॥

अकारादि हकारान्तं रेफ व्यञ्जन संयुतं । हींकारस्य स्वरुपाभं, सिद्ध चक्रं नमाम्यहं ॥ २ ॥

मध्यतो अर्हवः प्रोक्तं, नील लक्षण ललितम् । भावितं सर्वरुपत्वं सिद्ध चक्रं नमाम्यहं ॥ ३ ॥

लकार वगेप्रापति, पकार षट् भर्ग कं । लोक मध्य गतो अर्द्रं, सिद्ध चक्रं नमाम्यहं ॥ ४ ॥

ईकारान्त प्रतीकारं, ललना वर्ग माक्षतिः । मव्य पीठ गतो ध्यान, सिद्ध चक्रं नमाम्यहं ॥ ५ ॥

सुभराच्छन्दः

यो देवेन्द्रैर्नरेन्द्रैः फलिपति सहितं सर्वं सत्वोपकारं ।

संसाराम्भोधियोतं, कमलदीगदलं शुक्तिशर्म प्रदेशं ।

शान्तौ शान्तैकरूपं, बहु विश्व महितं कर्म संघापनोदं

तच्चक्रं चक्रनाथं जयति गुह्यवरं सिद्ध चक्राभिधानं ॥ ६ ॥

यस्युद्धं व्योम वीजं अवरं परिभुतं शांति सिद्धाक्षरेण,

तत्सन्धौतव्य युक्तं परम पद सरैः वेष्टितं कर्म बीज ।

यः श्रीमंतं निरन्तं विगतकलिभलंमायया वेष्टितांगं,

जीयतेसिद्धचक्रं विमलतर गुणं देव नागेन्द्र वंधं ॥ ७ ॥

॥ शार्दूल विकीर्णितच्छन्दः ॥

यद्गर्गाष्टकं पूरितं वरदलं सानाहतनीरजं,

यस्त्वोकारकलासविन्दुसहितं गर्भास्त्रिमुत्पत्त्या वृत्तं ।

यः सर्वार्थं करं परं गुणभृतां कालत्रयेवर्तिनां,

तत्त्वलेशौघविनाशनं भवतु मे श्रीसिद्धचक्रेश्वरं ॥ ८ ॥

यद्द्वरयादिककारकं बहुविधं कासाधिकमोहितं ।

यल्लक्ष्यादिकजाप्यसाध्यमहिमायत्संपदादायकं ।

बहुष्टादिकदर्पदोषदहनं दुःखाभिभूतात्मनां

तद्ब्राह्मणफलप्रदं वरयशः श्रीसिद्धचक्रेश्वरं ॥ ९ ॥

यत्सर्वांगहितं मनुष्यमहिमं, सौख्यालयं धार्मिणां

येदोषैः परिवर्जितं हि शिवदं ध्यानादिरूढसतां ।

तन्नः पातु त्रिनं भवति शमनं मन्त्राधिपं सर्वदा,
यत्कर्म त्रय कारकं सुधवलं श्री सिद्ध चक्रेश्वरं ॥ ०१ ॥

व्यन्तं हस्तेपुरुद्धं, स्वर पर कलितं मण्डलं तोय युग्मै,
भूरि भ्लेश प्रणारां पतदमृत श्रवं स्वेतं हकारान्वितं ।

परवादागम्य भर्त्रीं ज्जीं कृत ममलगुण मासनं मंत्र नाम,
आहृतं ज्ञान रूपं सकल भयहरं अर्चये सिद्ध चक्रं ॥११॥

ॐ जिह्वायां कराग्रे नशित मृतश्रवं स्वेतं हकारान्वितं,
परवाद्ध्ययेत्स्वरूपं विगत कलिमलं दग्ध कर्मेन्ध नौघं ।

विप्रो स्वाहा समेतं निशित सुरमुखे अंगभागे समस्तं ।
एवं कृत्वाभिधानं परम फल प्रदं अर्चये सिद्ध चक्रं ॥१२॥

शब्द त्रलौकलीनं प्रवल चल युतं सर्वं सत्त्व प्रभावं,
सम्पेदं सर्वं भद्रं गणधर वलयं दुःख पाप प्रणाशं ।

यन्नैमिचं वरिष्टं विशद हृदि गतं सज्जनानां च नित्य
यद्दत्तं यत्स वाह्यं रिपुकुलमघनं सिद्ध चक्रं नमामि ॥१३॥

यन्त्राणां मन्त्र बीजं सकल कलिमलं ध्वंसनं सिद्ध वंशं,
भूत्वाभिष्टार्थवंतं निखिल वर गुणालंकृतं दीप्ति वन्तं ।

रोगाणां दुनि मित्तं ग्रहगण सकलान्भूतरत्ना करंतं,
श्री चक्रं चक्रनार्थं मुनिभिरभिदुतं ध्यान गम्यं नमामि ॥१४॥

पश्यन्समस्त भुवनं युगपन्नितान्त, त्रैकाल्य वस्तु विषये निविड प्रदीपम् ।

मधुद्रव्य गंध धनसार विमिश्रितामां धूपैर्यज्ञैपरिमलैर्वर सिद्ध चक्रम् ॥ ध्रुमम् ॥ ७ ॥

मिद्वापुराधिपति यच्च नरेन्द्र चक्रै, धैर्यं शिवं सकल भव्य जनैः सुवन्द्यम् ।

नारिं ग पूग ऋदली फल नारिकैलैः सोऽहंयज्ञैवरफलैर्वर मिद्ध चक्रम् ॥ फलम् ॥ ८ ॥

गन्धाढ्यं सुषयो मधुव्रत गणैः संगं वरं चन्दनं ,

पुष्पाद्यं विमलं सदक्षत चयं रम्यं चरुं दीपकं ।

धूपं गन्ध युतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये,

सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोत्तरं वाञ्छितं ॥ अर्घ्यं ॥ ९ ॥

ज्ञानोपयोग विमलं विशदात्मरूपं, सूक्ष्म स्वभाव परमं यदन्तवीर्यं ।

कर्मोद्य कक्ष दहनं सुख शशय चीजं, वन्दे सदा निरूपमं वरसिद्ध चक्रं ॥ महाढ्यं ॥ १० ॥

॥ जाप्य कुर्याद् ॥

ॐ ह्रीं असिआउसाय नमः ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वाय नमः ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानाय नमः ॥

ॐ ह्रीं दर्शनाय नमः ॥

ॐ ह्रीं वीर्याय नमः ॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्माय नमः ॥

ॐ ह्रीं अबगाहनाय नमः ॥

ॐ ह्रीं अगुरु लघवे नमः ॥

ॐ ह्रीं अव्यानाधाय नमः ॥

एभिर्मंत्रैर्जाप्य कुर्याद् ॥ अर्घ्यं चापि समुद्धरेत् ॥



❀ जयमाला ❀

(भ० विश्वसेन कृत)

घटाः— पणमवि परमेसर गेमि जिणेशर शासिय दुक्खिय कम्ममलो ।

पुर अरकमि भत्तिय, णियमण सत्तिय, सिद्ध चक्क जयमाल फलो । १ ॥

तभाला समा भंपडा सीस केसा, खरा दारूणा लोयणा रत्त भीसा ।

गहा भूय वैयालणं सांति चक्कं, वरं भावये णिम्मलं सिद्ध चक्कं ॥ २ ॥

तणु भीसणा वंक्क दब्बा कराला, चलालोयणा जीह यासा विसाला ।

वसी होंति सिहाय डड्ढेण चक्कं, वरं भावये णिम्मलं सिद्ध चक्कं ॥ ३ ॥

सरोसा सवोरा महाक्काल रूवा, छुरा विघा सेविसा दुट्टभावा ।

सकोदाण डंक्कं तिहोणाय चक्कं, वरं भावये णिम्मलं सिद्ध चक्कं ॥ ४ ॥

जरा खेय रोगावलि कण्ठमाला, पमेहा विरुठा विणा कुट्टहला ।

विणासंति खासाण लावाहि चक्कं वरं भावये ० ॥ ५ ॥

सधूमावलि भीसणा संजलंता, फुल्लिगाय मेलंति चंडाविगंता ।

ण डाहोंति देहं सही जाल चक्कं वरं भावये ० ॥ ६ ॥

सकल्लोल लोला बहुला तरंगा, अपारा सिघोसा वसि सिधु गंगा ।

अगाधासुतारंति सोणीर चक्कं, वरं भावये ० ॥ ७ ॥

पश्यन्समस्त भुवनं युगपन्नितान्त, त्रै काल्य वस्तु त्रिपये निषिड प्रदीपम् ।
सद्द्रव्य गंध घनसार विमिश्रितामां धूपैर्यजेपरिमलेर्वर सिद्ध चक्रम् ॥ ७ ॥

मिद्भागुराधिपति यच्च नरेन्द्र चक्रे, धैर्यं शिषं सकल भव्य जनैः सुवन्द्यम् ।
नारिग पूग कदली फल नारिकेलैः सोऽह्यजेवरफलेर्वर सिद्ध चक्रम् ॥ ८ ॥

गन्धालां सुपयो मधुत्रय गणैः संगं वरं चन्दनं,
पुष्पैषं विमलं सदञ्चत चयं रम्यं चरुं दीपकं ।

धूपं गन्ध युतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोचरं वाञ्छितं ॥ अर्घ्यं ॥ ९ ॥

ज्ञानोपयोग विमलं विशदात्मरूपं, सूक्ष्म स्वभावा परमं यदन्तर्वीर्यं ।
कर्मैश्च क्लृप्त दहनं सुख शस्य वीजं, वन्दे सदा निरूपमं वरसिद्ध चक्रं ॥ महाह्यैः ॥ १० ॥
॥ जाप्य कुर्याद् ॥

ॐ ह्रीं असिआउसाय नमः ॥ ॐ ह्रीं सम्यक्त्वाय नमः ॥ ॐ ह्रीं ज्ञानाय नमः ॥
ॐ ह्रीं दर्शनाय नमः ॥ ॐ ह्रीं वीर्याय नमः ॥ ॐ ह्रीं सुहृत्स्वाय नमः ॥
ॐ ह्रीं अबगाहनाय नमः ॥ ॐ ह्रीं अगुरु लघवे नमः ॥ ॐ ह्रीं अव्यावाधाय नमः ॥

एभिर्मंत्रैर्जाप्य कुर्याद् ॥ अर्घ्यं चापि समुद्धरेत् ॥



❀ जयमाला ❀

(भ० विश्वसेन कृत)

वृताः— पण्डितपरमेसर योनिजिणेशर शासिय दुक्खिय कम्ममलो ।
पुर अरकमि भत्तिय, शियमण सत्तिय, सिद्ध चक्क नयमाल फलो । १ ॥

तमाला समा भंयडा सीस केसा, खरा दारुणा लोयणा रत्त भीसा ।
गहा भूय वेवालणं सति चक्कं, वरं भावये शिम्मलं सिद्ध चक्कं ॥ २ ॥

तणु भीसया वंक दब्बा कराला, चलालोयणा जीह शारा विसाला ।
वसी होति सिहाय डड्ढेण चक्कं, वरं भावये शिम्मलं सिद्ध चक्कं ॥ ३ ॥

सरोसा सघोरा महाकाल रूवा, कुरुरा विपा सेविसा दुट्टभावा ।
सकोहाण डंक्कं तिहोणाय चक्कं, वरं भावये शिम्मलं सिद्ध चक्कं ॥ ४ ॥

जरा खेय रोगावलि कण्ठमाला, पमेहा विरुठा विणा कुट्टहला ।
विणासंति खासाण लावाहि चक्कं वरं भावये ॥ ५ ॥

सधूमावलि भीसया संजलंता, फुल्लिणाय भेलंति चंडाधिगंता ।
ण डारोति देहं सही जाल चक्कं वरं भावये ॥ ६ ॥

सकल्लोल खोला बहुला तरंगा, अपारा सिधोसा वसि सिधु गंगा ।
अगाधासुतारंति सोणीर चक्कं, वरं भावये ॥ ७ ॥

कृपाया सहुंता सरिला सगला, मकोदंडाणा करे मीड भाणा ,

एमारंति रो संगरे चोर चककं, वरं भावये०॥ ८ ॥

सगाढा विवंधा घणा घोर वंधा, असेसाण अंगा ऊंत्रंगा विवंधा,

विष्टुंचवि सासंखला पास चककं, वरं भावये०" ...॥९॥

सगा सगिग भ्याणेण क्रममठणामं, ललाटे सुवीयं करेमोकखवासं ।

फुडं देवकी दिन्नी भाणं पयाउ सुळ्ळन्दो वियाउ भुजंगप्पयाउ ॥१०॥

उह वर जयमाला, वर सफला विस्स सेणेण क्कहिय बुहं,

जो भणे यणवे णियमण भावे सोणर पवहि रिद्ध सुहं । महाळ्ळी ।

॥ इति सिद्धचक्र पूजा समाप्तम् ॥

❀ विद्यमान वीस तीर्थंकर पूजा ❀

पूर्वा पूर्वं विदेहेषु, विद्यमान जिनेश्वराः ।

अहं संस्थापयाम्यत्र, शुद्ध सभ्यत्त हेतवे ॥

ॐ हीं सीमंधर, युगमंधर, बाहु, सुबाहु, सुजात, स्वयं प्रभ, ऋषभानन, अनन्तवीर्य,

सौरी प्रभ, विशास, वज्रधर, चंद्रानन, मद्रबाहु, श्री भुजंग, ईश्वर, नेमि प्रभु, वीरसेन,

महाभद्र, यशोधर, अजीत वीर्य, विद्यमान मिशति तीर्थंकराश्च अवतर अनतर संवोषट् ।

अथ तिष्ठ २ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधि करणम् ॥

॥ अथाष्टक ॥

कर्पूर वासित जल भृत हेम भृंगं धारा त्रयं ददति जन्म जरा पहान्धीः ।
 तीर्थकराय जिन विशति विद्यमान संवर्चयामि पद पंकज शांति हेतु ॥ जलम् ॥
 काश्मीर चन्दन विलेपन अग्रभूमि, संसार ताप हर दूर करोति नित्यं । ती० चन्दनम् ।
 सद्व्रतैः खंड विवर्जितैश्च, अत्रय पदस्य सुख सम्पत्ति प्राप्ति हेतु ॥ ती० अन्नतम् ।
 अम्भोज चम्पक सुगन्ध केरोमिपूजा मदनस्य मानंच विमर्दनाय ॥ ती० । पुष्पं ॥
 नैवेद्यकैः शुचितरैर्घृत पक्व खडैः, लुधादिरोगहर दूर करोतिनित्यं । तीर्थं क ॥ नैवेद्यम् ।
 दीपैः प्रदीपित जगत्रय रश्मिजातैः दूरीकरोति तम मोह विनाशनार्थं । तीर्थं क ॥ दीपम् ॥
 धूपैः सुगंध कृष्णागुरु चंदनाद्यैः गंधैः सुगंधी कृत सार मनोहराणि । तीर्थं क ॥ धूपम् ॥
 नारिंग दाडिम मनोहर श्री फलाद्यैः फलैरभिष्ट सुख सम्पत्ति प्राप्ति हेतुः । तीर्थं क ॥ फलम् ॥
 चार्गंध पुष्पाक्षत व्यंजनैश्च, सदीप धूपफल मीश्रित हेमपात्रे ।
 अर्घं करोमि जिन पूजन शांति हेतोः संसारपर करुणात्कुरु सेवकानां ॥ अर्घ्यम् ॥

❀ जयमाला ❀

धत्ता-जय वीस जिणेसुर, एमीत सुरासुर, चक्रीश्वर पूजित चरणा ।

जय ज्ञान दिवाकर, गुणरत्नाकर, पूजत नाशै विघ्न घणा ॥१॥

जय वीस जिनेश्वर विद्यमान, तनु पंच शतक वर धनु प्रमान ।

जय भव्यकमल प्रतिबोध देत,.....

॥२॥

सीमंधर प्रणमुं जिन वरिन्द वन्दु लुगमंधर बहु बलिन्द ।

हुं वन्दुं वाहु सुवाहू स्वामी, जिन लीन विदेहे मोक्ष ठाम ॥३॥

सुजात स्वयं प्रभ जिन वरिन्द, ष्टपमानन वर्म प्रकाशकंद ।

तहां नंत वीर्य सौरी प्रभोप, वन्दु विशाल बज्जर धरोप ॥४॥

चन्दानन आठम दीवसवीर हू प्रणमुं जिनसो भवह तीर ।

तिहां पुष्कार्द जिन सद्र वाहु, सुयंगम ईश्वर जगह नाह ॥५॥

नेमि प्रभ वन्दु वीरसेन, महाभद्र भव्य हित मधुर वैन ।

पद नमुं यशोधर शुद्ध भाव, जय अजिन वीर्य वर मुक्ति पाय ॥६॥

यह नाम जपता जाय पाप, नहीं व्यापै भव भव मोह ताप ।

जिन नाम जपता होय रिद्धि, अतुकमे लहेते मोक्ष सिद्धि ॥७॥

घटाः—जय वीस जिनेश्वर नमित नरेश्वर विद्यमान जिन सौख्यकराः ।

जे भणो भणवै, अरु मन भावै, पाषे अविचल मोक्ष धराः ॥ महाद्वय ॥



❀ श्री शीतलनाथ पूजा ❀

(३० चन्द्रसागर कृत)

दोहा:--श्री सजोधपुर मंडनं, शीतल नाथ जिनेश
आह्वानन संनिधि करी, थापुं आवहु ईश ॥

ॐ ह्रीं सजोधपुरतीर्थस्थ शीतल नाथ बिनेन्द्र अत्र अवतर २ संवौषट । अत्र तिष्ठ
तिष्ठ ठः ठ । अत्रसम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(राग-म्हारी दीन तणी सुनो विनती)

प्राणी गंगोदक शुभ जलधरी, रत्न जडित भृंगार सुमारहो ।

जिन चरणाम्बुज धारिये, जन्म जरा मरण निवार हो ॥ श्री शीतल जिन पूजिये

प्राणी सजोधपुर वर मंडणो, सुखकरी भविषण सार हो ।

इन्द्र नरेन्द्र सेवा करे पापे नवनिधि अस्थ भंडार हो । श्री शीतल ॥ जलम्

प्राणी बावन चन्दन घसिकारि मलयगिरि शुभवास हो ॥

जिन चरणाम्बुज चर्चिए, भव आताप कस्त विनाश हो ॥ श्री शीतल० चन्दनम् ।

प्राणी अखंड अक्षत ऊजला, ज्योतिचन्द्र किरण समजाण हो ।

अक्षतसुं जिन पूजिये, लहे अक्षय पद सुख खाण हो । श्री० अक्षतम् ।

प्राणी नाही जूदी चंपो सेवती, और केतकी परम रसाल हो ॥

पुष्पसुं श्री जिन पूजिये, होवत मदन सुमाण विनाश हो । श्री शीतल ॥ पुष्पम्
प्राणी राजा फेणी लाडवा, और वेवर वावर सार हो ।

सुवरण थाल भरी करी, जुधा रोग न उपके लगार हो । श्री शी० । चरुम् ।
प्राणी रत्न जड़ित करी आरती, शुभ कर्पूर ज्योति विशाल हो ।

जगमग जगमग चमकती, मोह विमिर न रहे लगार हो ॥ श्री . दीपम् ।
प्राणी अगार तगर कृष्णा गुरू, जिन चरणे अग्रेउ खेव हो ।

परिमल दश दिशी निर्मली, अष्ट कर्म न रहे ततखेव हो श्री शी० ॥ धूपम् ।
प्राणी श्रीफल आम्र विजोरडा और पूग वदामरु ईख हो ।

फल सुं श्री जिन पूजिये, शिव फल पामे बहुलाख हो । श्री शी० फलम् ।
प्राणी जल गंध पुष्पाचल चरु, दीप धूप फल लेई हो ।

अर्घ उतारो भाव सुं पामे अर्थ सकल सुख देई हो ॥ श्री शीतल० ॥
प्राणी काष्ठा संघ सोहामणो, गच्छ नंदीतट मनोहार हो ।

सकल कीर्ति गुरु पदनमी, कहे चन्द्र सागर बल्लचार हो । अर्घ० ॥

॥ जय भाला ॥

धत्ता- शीतल जिनसार है, दुखनिवार है, सुखकारी जिनवर कहियो ॥
भव पातक हरत, शिव फल कारता, परमानन्द पदते लहियो ॥

(राग—मणुयणा इन्द्र)

शीतलं जिनवरं पूज्य शिव गामिनं, गावए गुण गणा अक्षरा गामिनं ॥
सजोधपुर मंडणं, मदन रिपु खंडणं, वंश इक्ष्वायिकं वंशवर मंडणं ॥
आयु वर पूर्व लक्ष हेमवर्णो तनुं, समवशरशो वर, राजितं जिन मनुं ॥ सजो० ॥
सभा बारह प्रवि राजितं जिन वरं, वृक्ष अशोक शिर ऊपरं श्रम्बरं ॥ सजो० ॥
घुष घुष्टि करी देव मन निर्मलं, दिव्य ध्वनि गणितं पाप नाशि मलं ॥ सजो० ॥
तीन सिंहासनं शोभ प्रधिराजितं, चार द्वात्रिंश, युगल सुवाजितं ॥ सजो० ॥
छत्र त्रयेण, दंडेण ऊपेणतं, रत्नभालाधरा, चन्द्र खरेण तं ॥ सजोधपुर० ॥
कोटि सार्द्ध द्वादशं, दुंदुभि गणितं कर्म अष्टक रिपु मदन तेज तजितं ॥ सजो० ॥
नाचती किंकरी, देव देवी गणं, तान मानं, महा भाव गान रागणं ॥ सजोध० ॥
राग छत्तीस मुख, गान संगायती, हस्त वीणा लई मधुर सुखायती ॥ सजोध० ॥
देव नर नाग एर असुर संसेवितं, दुख दावानलं दुरिक्तं देवतं ॥ सजोध० ॥

पंच कल्याण सुरकुत गर्भाविकं, मुनित रमणी वशीकरण सुखावितं ॥ सजोध० ॥

धत्ता:- इति गुण जयमाला, सुरभिरमाला, कोटि पाप दूरी करण ।

शीतल जिन कहियं, गुणगण महियं, ब्रह्म चन्द्र एणि पेरे कहियं । पूणार्घ्यम् ।



❁ श्री शांतिनाथ पूजा ❁

(म० चन्द्रकीर्ति कृत)

राग -भक्तार स्तोत्र की

श्री मत्सुरेन्द्र मुकुटामल रत्न रोचि, पीयूष पूर परि पूजित पाद पद्म ॥

श्री कैरवाच्य नभस्तल पूर्ण चन्द्रः श्री शांतिनाथ जिनपं भुवनैर्महाभि । जलम् ॥

अष्टादशाद्धं निधि पूरित सव कामं, सप्तर्द्धि कामर सुरचित रत्न नाथं ।

श्री विश्वसेन तनुजं मनुजेन्द्र सेव्यं सर्वर्चयामि हरिचदन केशरौधैः । चन्दनं ॥

पट्ट खंड भूप परि संस्तुत पाद पीठं, देवेन्द्र दिव्य रमणी परिगीत कीर्तिः ।

संयाप्त सर्व नयनोत्सन्न कारी रूपं, शान्तीश्वरं परिचरे कमलाक्षतौघैः । अक्षतम् ॥

प्रस्वेद बिन्दु परिवर्जित दिव्य देहं, निर्वेद भाव शिखीकृत मोह गेहं ।

दुर्वार पंचशर कुंजर कुंजरि, संपूजयामि कुसुमैर्जिन शांतिनाथं ॥ पुष्पम् ॥

छत्रत्रयोत्तम विभूति धिरायमानं, देवीगना ललित सुस्वर गीयमानं ।

सचासरालि परिबेष्ठित युग्म पद्मं, शांतीशमीश मुनयं चरुभिर्यजेहम् । चरुं ॥

युज्जन्म काल समयागत देवराज, निर्मायितस्त्रिदश मेरु महासिधेकः ।

दुग्धाब्धि वारि निव हैः परमोत्सवेन दीपैर्भजामि भगवन्तमुमेशशान्तिं । दीपं ॥

दुष्टाष्ट कर्म गिरि भंजन वज्र तीर्थं, विथ्यान्यकार पटलोज्ज्वल बालसूर्यं ।

गंभीर दिव्य ननदासृत पुष्ट भव्यं शान्तिजिनेन्द्र ममलं परिधूषयामि । धूपम् ।

श्री हस्तिनापुर संभव नाथ मीशं, निर्वाण धामगत रूप मनंत रूपं ।

श्री नारिकेल वर दाडिम मातृ लिंगैरोशरीरजमलं परिपूजयामि । फलम् ।

काष्ठा सघ मुनीन्द्र वर्यं विबुधैः श्री भूषणैः संस्तुतः ।

संसृत्यार्यावपार लब्धि करणैः श्री कर्ण धारोगितां ।

अम्भश्चन्दन पुष्पतंडुल हविः स्नेहप्रियाद्यपितो ।

भूयान्मौक्षफलायते जिनवराट् श्री चन्द्र कीर्तीश्वरम् ।

❀ जयमाला ❀



विराग विभाग विरोग वभोग, विकार विरेक विनेन्द्र वियोग ।

ग्रसीद सनातन शान्ति जिनेन्द्र, स्वपाद सरोरूह भव्य शतेन्द्र ॥१॥

पिपाट पिनाट पिनाम, पिन्नत्र विमंत्र पितंत्र विन्नाम । प्रसीद० ॥ २ ॥
 पिरोप पितोप पिमोप पिघोप, विवोव विशोध विरोध विदोप ॥ प्रसीद० ॥ ३ ॥
 पिगन्ध विबंध पिशब्द विरूप, विगेह विदेह विमोह विकूप ॥ प्रसीद, ॥ ४ ॥
 पिमर्ग विमर्ग विवित्त विचित्त, विरेख विलेख विभेष विवित्त प्रसीद ॥ ५ ॥
 विभाय पिहाय विदंभ विलोभ । पितर्प विमर्ष विदर्भ विशोभ । प्रसीद. ॥
 पिसाध्य विराध्य विमाध्य विशुद्ध विशोक विलोभ, वितंद्र विबुद्ध ॥ प्रसीद. ।
 विवाल पिवाल विकाल विमाल, विशाल विमाल विजाल विताल, ॥ प्रसीद. ॥
 श्री संघ मांगल्य विधान पूति, विशालानक्षत्रल दिव्य मूर्तिः
 श्री शांतिनाथो चित्त चंद्रकीर्तिः ददातुवः सर्वं सुखाप्तमूर्तिः । अर्थ ॥
 कल्याणं विजयं भद्रं चिन्तितार्थं मनोरथाः
 शांतिनाथ प्रसादेन, सर्वे अर्थाः भवन्तु नः ॥ ॥ इत्याशित्रादिः ॥

❁ अथ श्री कलिकुराड (पार्वनाथ) पूजा ❁



हींकारं ब्रह्मरूढं स्वर पर कलितं, वज्र रेखाष्ट भिन्नं
 वज्रस्याग्रंतराले प्रणवमनुपमा नाहतं संसृषीच ।
 वर्णान्ताद्धान्सपिंडान् हभमरघभक्तखान्वेष्टयेतद्दन्ति
 वज्राणां यत्र मेतत् पर कृतमशुभं दुष्ट विद्याविनाशम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिन् अत्र एहि एहि, स्वौषट् । आहाननम् ॥

पिण्ड स्थापनोदं हभमरधक्त सखान् कांतियुक्तादिदस्युः

शाकिन्यो यान्ति नाशं वरलक्ष्यहसैर्फेनयुक्तैर् महोदना ।

यन्त्र श्री खंड लिप्तो शुचिवस्त्रे कांस्यपात्रे सुभद्रैः

लेखिन्या दर्भं जाता निखिल जन हितं तस्य सौख्यं विभक्तिं ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । स्थापनम् ।

सिद्धं विशुद्धं महिमा निवेपं, दुष्टारिसारि ग्रह दोष नाशं ।

सर्वेषु योगेषु परं प्रधानं, संस्थापये श्री कलिकुण्ड यन्त्रम् ३॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव

वपट्, । सन्निधापनम् ॥ कलिकुण्ड यन्त्रो परि पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

(कलिकुण्ड यत्र स्थापनम्)

❀ श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ स्तवनम् ❀

प्रणम्य देवेन्द्र नुतं त्रिनेन्द्रं सर्वज्ञं प्रतिबोध सुज्ञम्

स्तोष्ये सदाऽहं कलिकुण्ड यन्त्रं सर्वाङ्ग विघ्नौघ विनाश दक्षम् ॥१॥

नित्यं स्मरन्तोऽपिहि एषि भक्तया शक्तया स्तुवन्तोऽपि लपत्सुभंशम् ॥

पूजां प्रकुम्हदयेदधानं सर्वेष्वपतं यच्छतु मंत्र राजं ॥ २ ॥

गृहान्गणे कल्प लवा प्रद्वन चन्तामणि चिन्तित वरुु दाने ।

गाभस्व तुल्या किल कामधेनो यस्यास्ति भक्ति कलि कुंड यन्त्रे । ३ ॥
नमामि नित्यं कलि कुण्ड यन्त्र सदापत्रिं क्रुच रत्न पात्रं ।

रत्नत्रया राधन भाव लभ्यं, सुगसुर्वैदितभाद्यमिद्व्यम् ॥ ४ ॥

मिहेभसर्पाग्नि जलाब्धि चौरा, त्रिपादयो न्यानि सदापविध्नाः ।

व्याधादयो राज्य भयं नृणा हि. नरदन्यवश्यं कलि कुंड पूजनात् ॥ ५ ॥
प्रदृष्ट वन्द्यैर्निगडैर्नियन्त्रितै नुटगति शीघ्रं प्रचपन्सुमंत्रं ।

जगति सारा ग्रहणी विकारा, प्रयान्ति नाशं कलि कुण्ड पूजनात् ॥ ६ ॥

वन्द्याग्निारी गहु पुत्र युक्ता,, संसार सक्ता प्रिय पित्परक्ता ।

दस्यास्ति चित्ते कलि कुण्ड चिन्ता, नमाम्यहं तं सततं त्रिकालं ॥ ७ ॥
अनर्थ सर्वे प्रति यात दत्तं, सौख्यं यशः शांतिक पौष्टिकाम्यां ।

नमाम्यहं तं कलिकुण्ड अंत्रं विनिर्गतं यच्चिजनराजक्यात् ॥ ८ ॥

स्तत्रनभिदमनिन्तां, देवराजाभिवन्द्यम्, पठति परम भक्तया योनरः सर्वद हि ।

सकल सुखमनल्पं कल्पितं प्राव सर्वं, विनिहित विध्नौषं यंत्रराज प्रसादात् ॥ ९ ॥

॥ इति श्री कलिकुण्ड स्तवन विधानम् ॥

गंगा पगा तीर्थ सुनीर पूरैः शीतैः, सुगन्धै र्धनसार मिश्रैः ।

दुष्टोपसर्गैक विनारा हेतुं समर्चये श्री कलि कुण्डयन्त्रम् । १ ॥

❀ जयमाला ❀

पर मम्मत तिरु सण हो, भवियण जियवर समरणे ।

णामिय पाउ असेस लहु, वमजम दिवार पिअरणे ॥ ? ॥

(राग-विराग सनातन०)

मुदुन्न अंलण पुव्वय काउ, दिसाकर तासण भेद शिणाउ ।

सुदुप्प विविलण देउ करिंद मणम्मि भणंतां देउ जिणंद ॥ १ ॥

पयत्त सभि द्विय दितु ममूद महानल लोल लोला विह जीह ।

सरोसण दे उप कम्म मयंदु, मणम्मि० ॥ ३ ॥

तपाल भहीरूह भंपइ सीस, दिशेसर सणिय लोयण भीस ।

हवेई यद्धण पयासुर इंदु, मणम्मि० ॥ ४ ॥

विअंभिय वेलण हिंणण वेल, जलोभद्व जीव पयासिय रोल ।

अथाहु विगोपय सित सुरेन्द मणम्मि० ॥ ५ ॥

फुडंति फोडायण रुद्धय यंति, विलोय खयंकर शायक यति ।

विले विणु डकई कूर फणंदु, मणम्मि. ॥ ६ ॥

दुसंवर तीरण पुव्वय दुग्गि; असंख महीरूह भीसह मग्गि ।

कहेप्पणु लग्गई तक्कर विदु, मणम्मि, . . . ॥ ७ ॥

धिराण वि सक्कई तिव्व जलंति, नगत उजालण णायक यति ।

ससोम हवेई सही जम चंद, मणम्मि, . . . ॥ ८ ॥

शेमिलिय वंधव सज्जण चकलु, अण्येयव्यार पयासिय दुमलु ।

विहहई श्रुंखल विन्दु सुरेन्दु, मणम्मिः... ॥ ६ ॥
मणोहर द्रन्दिद्य सोमय चारु भयंदर खल विलेमम सारु ।

पयासिय रोउत हाजर विंदु, मणम्मिः... ॥ १० ॥
दुलंधण ए विणु पासह बूह, यमारि वि सककई सत्त समूह ।

किंवाण हवेई अलं अरविंदु मणम्मिः... ॥ ११ ॥
धत्ता-वर खगेंदु भायंबहा, गारुडिया फ्रिटि विमुनीह ।

भविण्यण ययणाणंद जिण्यसमरंता उवसग्ग तह ॥ १२ ॥ महाधर्म्यम् ॥
सर्पसर्पेषु दर्पं, स्फुट तरल तरोत्तार कुत्कार वेला ,

संघट्टोत्पत्ति वाताहत शठ कमठोद्भूत नीमूत जातः ।
खेसत्सर्गापवगत्तरिण तरल सल्लोल ंडिडिर पिडं ;

व्याजा श्री पार्श्वनाथो जयविजय यशो राज हंसो वताद्धः ॥

दधे भूधनीहिताशेषः नाहुता सर्व देवता ।
इत्याशीर्वाद्दः ॥

मयाक्रमाद्विसर्जते निर्गच्छामि जिनालये । इति विसर्जन मंत्रः ॥
शांति वृद्धि जयं सौख्य, मैश्वर्यारोग्य मिच्छता ।

अलयाणं तुष्टि संतुतेऽहंत्प्रसादतः ॥

ॐ श्री ऋषिःमंडल पूजा ॐ

प्रणम्य श्री जिनाधीशं, समस्त लब्धि संयुतं ।
ऋषि मंडल यंत्रम्य, वक्ष्ये पूजादिमल्पशः ॥

ये जित्वा निज कर्म कर्कश रिपून्, कैवल्यमाभाजिरे ,
दिव्येन ध्वनिनावबोधमखिलं चक्रम्यमाणं जगत् ।

प्राप्ता निवृत्तिमन्त्रयामतितरा, - मंताविगामादिगा ,
वक्ष्ये तान् वृषभादिकान् जिनवरान् बीरावसानाहं ॥

ॐ ह्रीं वृषभादि बद्धमानान्तास्तीर्थंकर परमदेवाः अत्रावतर अवतर संवोपट् ॥
ॐ ह्रीं वृषभादि बद्धमानान्तास्तीर्थंकर परम देवाः अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं वृषभादि बद्धमानान्तास्तीर्थंकर परमदेवाः अत्र मम सन्निहितो भव भव वपट्
सन्निधापनम् ॥ यंत्र स्थापनं ॥

करूपंकत्र पराग सुगंध शतै, - राकाशशांक विमलैः सलिलैर्जलौघैः ।
सत्पात्रतापुषगतैर्मथुरैर्लविष्टै-द्विद्वादश प्रमजिनात्रियुगं महामि ॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वर्धमानान्तास्तीर्थंकर परम देवेभ्यो जलम् ॥१॥

काशमीरपूरचक्रसारगतोद्यमवै, बर्हान्वरंगपरितापहरैर्यवित्रैः ।

श्रीचन्द्रनोत्कटारसैः सुरसै सुभक्तया द्विद्वादश० ॥ चन्दनं ॥

माथुर्यं गन्धं निघ्नान्वित दिव्यदेहै कुन्देन्दुसागरकफोब्यलचारुशोभैः ॥
शाल्यचतैः शुभगपाश्रगतैरखंडै द्विद्वादश० ॥ अक्षतं ॥

मंदार कुन्द कमलान्वित पारिजातैः, जाति कदंब भसलातिथिसप्तमूत्रैः ।
गंधागतभ्रमरजात रवप्रशस्तैः द्विद्वादश० ॥ पुष्पं ॥

नेवेद्य मंडक सुमोदक खज्जलाद्यैः सस्योलिका वटक व्यंजन पंच भक्षैः ।
सञ्छालिभकउद्युतयुक्तवरैर्विशुद्धै, द्विद्वा० ॥ चरुं ॥

दीपत्रजैरमलकीनकलाप सारै, निर्धूमता शुपगतैः सरमलैर्ज्वलद्भिः ।
पीतद्युति प्रचय निर्जित जात रूपै, द्विद्वा० ॥ दीपम् ॥

कृष्णागुरु प्रमुखसार सुगंधद्रव्यै ओद्भुतमूर्तिभिरलं वरधूप जालैः ।
धूमत्रज प्रमुदितं दितिनंदनोद्यैः द्विद्वा० धूपं ॥

नारिग पूगकदली फल नारीकेश, सन्मातुलिंग क्रमुक प्रमुखैर्फलोद्यैः ।
शाला सुपाकमधिगम्य विरक्त चित्ते, द्विद्वादश० ॥ फलम् ॥
जल गंधाचतैः पुष्पैरचरुभिर्दीपधूपकैः ,

फलैरर्थं विधायासु श्री जिभ्यो दक्षे मुदा ॥ अर्घं ।
ॐ तौ हि तु हूँ हूँ हौँ हौँ हः असि आउसा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेश्वोर्हीनमः अस्य मंत्रस्य
शताष्ट वारं जाप्यं कुर्यात् ॥

उपर मंत्र के १०८ जाप्य देकर अर्घ चढावे)

❀ जयमाला ❀

पथमग्नि जिण देवं, सुरक्रिय सेवं, यासिय जम्म जरा मरणं ॥

सिब सुह करारवं, गय मय रावं शिय भत्ति छुत्तिए शुणमि ॥

जय आईणाह कम्मरिवाह, जय अद्रिय जिणेसर मोह दाह ।

जय संभव गय यधराज डंभ, जय अहिण्डंण जिण परम वंभ ॥

जय सुमई कुमई गय देव देव, जय पुहुमप्पय सुर विहियसेव ।

जय जय सुपास माण्हार सुभाए, जय चन्दप्पह जीयचंद हास ॥

जय पुण्फ यंत जीय पुण्फयंत, जय सीयल भीयल जिण पिचंत्र ।

जय सेय देव कय भव सेव जय वाधपुञ्ज सुरक्रियतीसेव ॥

जय विमल जिनेसर विमलणाण, जय जिण अणंत गय परमठाण ।

जय धम्म धम्म देसण समत्थ, जयमाति सात्ति गय गंथ सत्थ ॥

जय कुंथु सामि गय कम्मपंक, जय जय अर सामी समिय संक ।

जय मल्ली सामीगय सत्तभंग, जय जय मुणिसुव्वय जिय अणग ॥

जय णमि जिणणिर सिय सव्व संग, जय णेमि मुक्कराई य रंग ।

जय पास देव फाणि बई पण्डि । जय वड्डमाण गुण गण गरिड्ड ॥

घत्ता-इयथुणमि जिणेसर, महि परमैसर णात्थियम्म फलंकर ।

सुरपई बहु सामिय भव भयं भाम्मिय, उत्तारि जे अठथुवई ॥ अर्थ ॥

निशेषामर शेषणचित्तपदः, दून्दौल्ल सत्सन्नखः ।

त्रात प्रोभ्दत कांलि मंहति हतः, प्रच्यक भक्तया सब ॥
निर्वाणेश महोतमांग मुकुट, प्रस्फुलि मभद्वतरा ।

ऋद्धि वृद्धि मनारतं जिनवराः, कुर्वन्तु वः सर्वदा ॥ इत्वाशिर्वादः ॥

श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र पूजा

सम्मेदाचल तीर्थ है, सब तीर्थों का राज ।

जहें तैं शिवपुर को गये विंशति भी जिनराज ।

आह्वानन विधि सौ करूँ, करूँ स्थापना सार

सन्निधि कारण क्रियाकरी, मैं उतरूँ भव पार ॥

ॐ हौं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र अत्र अवतर २ संवैषट् ।

ॐ हौं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ हौं श्री सन्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

क्षीराम्बुधि सारं, पयसप्रकारं, मिश्रित हेम भृंगार भरं ।

जल धारा दीजे, अशुभ हणीजे, कर्ममलामल धौत करं ।

पूजा गिरि धामं, शिखर सुठामं, वीस जिनेश्वर पद कमलं ।

जहं बम्न विराजै, महिमा छाजै पार्श्व जिनेश्वर सौख्य करं ॥१॥ जलम् ॥

कर्पूर सुगारं, जग उद्धारं, मिश्रित वसिषे प्रेमकरी ।

हेमादिक चित्रं जडित विचित्रं, चन्दन चरचौ भाव धारी । पूजा० ॥ चन्दनम् ॥

धवलान्वित राशि, कमल सुगामी, तंदुल पूज्य सु अग्रधरं ।

शशि क्रियाय समानं, कीजे ज्ञानं, अक्षय पद जिम सौख्य करं । पू० ॥ अक्षतं ॥

चम्पक द्वय जातं, कमल पिख्यातं, केतकी कुन्द मंदार चयं ।

शुभ मोगर लीजे, काम हणीजे, पद पूजीजे वीस जिनं । पूजा० ॥ पुष्पम् ॥

वेसर बहु पूरी, साकर चूरी, खज्जक लाडु सुंबाली करी ।

शुभःस्यंजन लीजे, थाल भरीजे, अश्र उतारे भाव धरी । पूजोगि० । नैवेद्यं ।

रत्नादिक दीपं, महज स्वरूपं, कर्पूरामल ज्योति करं,

वर कंचन पात्रं, जडित विचित्रं, भावे उतारो दीप वरं ॥ पूजोगि० ॥ दीपम् ॥

कृष्ण गुरु चन्दन, तगर सुगन्ध, अगारादिक बहुधूर चयं,

दशदिशी शुभवासं. कर्मविनाशं, श्री जिन आणे धूप करं ॥ पूजोगि० । धूपम् ॥

द्राक्षादिक सारं, कदली भारं, श्रीफल पूग जम्बीर फलं ,

फणसादिक लीजे, थाल भरीजे, शीत फल लीजे भविक अलं । पूजोगि० ॥ फलम् ॥

जल आदिक श्रीफल, अर्घं समुज्ज्वल, आरती गद्दी करी ज्ञान करं,

जिन चरण उतारो, तीर्थ जुहारो, लक्ष्मी सेन शुभ भाव करं । पूजोगि० ॥ अर्घ्यम् ॥

❀ जयमाला ❀

समेद शीखर सिद्ध्या जिन वीसं, वन्दौं भवियण भाव श्रीशं ।
शिखर बंध जिन पयडि विशालं, धंटा भेरी ध्वजा गुण मालं ॥ १ ॥

वन उन्नत जहां मधुक विराजे, पार्श्व जिनेश्वर महिमा छाजे ।
उत्तम वन मधि वृक्ष विशालं, कदली स्तंभावली सुरसालं ॥ शीखर० २ ॥

जय हुंदुमि नित संगल नादं, सुनतां उपजे परमाल्हादं ।
परवत पयाड समुन्नत सोहे, देखत भविजन के मन मोहे ॥ शिखर० ३ ॥

करत है रत्ना क्षेत्र सुपालं, सीता नाला सजल विशालं ।
चैत्य अनूषम विशति छाजे, मुक्ति गये वीसों बिन राजे ॥ शिखर० ४ ॥

अवर न तीरथ शिखर समानं, देवेन्द्रादि सु करत प्रणामं ।
जे भनि प्राणी यात्रां करहि अनुक्रमतेते शिवसिय वरहि ॥ शिखर० ५ ॥

घत्ता— यह शुभ जयमाला, भाव रसाला, जे पठति भनि भावधरि ।
गुरु सकल सुक्रीतिं, पड्ड सोहे मूर्ति लक्ष्मीसेन शुभ भाव धरि ॥ ६ ॥

पूर्णार्च्यम् ॥



अथ षोडशकारण भावना पूजा

एन्द्रं पदं प्राप्य परं प्रमोदं धन्यात्मतामात्मनि मन्य मानः

दृशुद्धि मुख्यानि जिनेन्द्र लक्ष्म्या, महाम्यहं षोडश कार्यानि ॥ १ ॥

ॐ हीं दर्शन विशुद्धयादि षोडश कार्यानि अत्र अवतरत अवतरत, संशौषट् ।

ॐ हीं दर्शन विशुद्धयादि षोडश कार्यानि अत्र तिष्ठत तिष्ठत, ठः ठः ।

ॐ हीं दर्शन विशुद्धयादि षोडश कार्यानि अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत, वषट् ।

सुवर्णं भृङ्गार विनिर्गताभिः पानीयधाराभिरिमाभिरुच्चैः ।

दृक शुद्धि मुख्यानि जिनेन्द्र लक्ष्म्या महाम्यहं षोडश कार्यानि ॥ जलं ॥ १ ॥

श्री खण्ड पिण्डोभद्वव चन्दनेन, कर्पूर परैः सुरभीकृतेन । दृक्शु . ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥

स्थूलैरखण्डैरमलैः सुगन्धैः शाल्यद्वैतैः सर्व जगन्नमस्यैः । दृक्शु . ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥

गुञ्ज दक्षिरेकैः शतपत्र बाती सत्केतकी चम्पक मुख्य पुष्पैः । दृक्शु . ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

नवीन पक्वान्न विशेष सारैर् नानापकारै र्शकरभिर्वरिष्टैः । दृक्शु . ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

तेजो मयोल्लाम शिल्पैः प्रदीपैः दीपप्रभैर्द्वयस्त तमो वितानैः ॥ दृक्शु . ॥ दीपम् । ६ ॥

कर्पूर कृष्णागुरु चूर्णरूपै धूपै हुताशाहुत दिव्य गन्धैः ॥ दृक्शु ॥ धूपम् । ७ ॥

सन्नारिकेल क्रमुकाअधीजैः पूगादिभिरचारुफलैः रसाढ्यैः ॥ दृक्शु ॥ फलम् । ८ ॥

पानीय चन्दन रसान्त पुष्प भोज्य, सदीपधूपफलकल्पितमर्थपात्र ।

अहंतेहत्वमल षोडश कार्यानि पूजा विधौ विपल मंगलमावगोमि ॥ अर्धम् ॥ ९ ॥

यहायदोष वासास्युराकर्ण्य ते तदातदा । मोक्ष सौख्यस्य कदत् र्णि कारणान्यपि षोडश ॥

॥ पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

❀ अथ प्रत्येकार्घ्यं ❀

असत्य सहिता हिंसा मिथ्यात्वं च न दृश्यते । अष्टाङ्ग यत्र संयुक्तम् दर्शनं तद्विशुद्धये ॥ १ ॥

कवित्त-दर्शन शुद्ध न होवत जां लागि, तां लागि जीव मिथ्यात्वी कहावे ।

काल अनंतफिरे भवमें, महा दुःखनको कहीं पारन रावे ।

दोष पचवीस रहित गुणाम्बुधि सम्यक दर्शन शुद्ध अराधे ।

ज्ञान कहेनर सोही बड़ो जो मिथ्यात्व तजि जिन भारग साधे ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धयै अर्घ्यम् ॥

दर्शन ज्ञान चरित्र तपसां यत्र गौरवम् मनो वाक्काय सशुद्धया सा ख्याता विनय स्थितिः ॥ २ ॥

देव तथा गुरुराय तथा तप संयम शील व्रतादिक धारी ।

पापके हारक कामके मारक शल्य निवारक कर्म निवारी ।

धर्म के धारक पापके भेदक पंच प्रकार संसार के तारी

ज्ञान कहे विनयो सुख कारक भावधरी मन राखो विचारी ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्नतायै अर्घ्यम् ॥ २ ॥

अनेकशील सम्पूर्ण व्रत पंचक संयुतम् । पंच विंशति क्रियायत्र तच्छील व्रतमुच्यते ॥ ३ ॥

शील सदा सुख कारक है, अतिचार विभ्रंजित निर्मल कीजे,

दान्य देय करैं तम सेव त्रियाद न मूल पिशाच पमीजे ।
शील वडो जगमें हथियार जु शील को ओपमा काहे की दीजे

तान कहे नहीं शील बराबर तातैं सदादृढ़ शील धरीजे ॥ ३ ॥

ॐ हीं शील व्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् ॥ ३ ॥

काले पाठस्तमो ध्यानं शास्त्रे चिन्ता गुरोस्तुतिः । यत्रोपदेशना लोके शास्त्रज्ञानोपयोगता ॥ ४ ॥

ज्ञानसदा जिनराज को भाषित, आलस छोड़ि पहे जु पढावे ।

द्वादश दोऊ अणेकह भेद सु नाम मति श्रुत पंचम पावे ।

चारह वेग निरन्ता भाषित ज्ञान अभिलषण शुद्ध कहावे,

ज्ञान कहे श्रुत भेद अनेकजु लोक अलोक प्रत्यक्ष दिसावे ॥ ४ ॥

ॐ हीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगाय अर्घ्यम् ॥ ४ ॥

पुत्र भिन्न कलत्रेभ्य संसार विपर्ययत्र. विरक्तिर्जायते यत्र स संवेगो बुधैः स्मृतः ॥ ५ ॥

मात न तात न पुग कलत्र न सर्पात्त सज्जन यह सव खोटो,

मंदिर सुन्दर काय सखा सव कोई कहे हम अन्तर मोटो ।

भाबहु भावधरी मन भेदन नाहि संसंग पदारथ छोटो ।

ज्ञान कहे शिव साधन को जैसे साह को काम करेजु बनोटो ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं मंत्रेणाव अर्घ्यम् ॥ ५ ॥

अन्य मध्यगोच्छ्रुत पात्रेभ्यो दीयते भृशम् शततया चतुर्विधं दानं साख्याता दान संस्थितिः ॥ ६ ॥

पात्र चतुर्विधं देय अनूत्तम दान चतुर्विध भाद्रपौ दीजे ।

शक्ति गमान अभ्यापत को बहु आदर सौ श्रणिपत्न्य करीजे ।

द्वे नरै नर दान सु पचहि तासौ अनेकह कारण सीजे ॥

बोलत दान देह शुभदान जु भोग सु भूमि महासुख लीजे ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्रागाय अर्घ्यम् ॥ ६ ॥

तपो द्वादश भेदं हि क्रियते मोक्ष लिप्सया ।

शक्तितो भक्तितो यत्र भवोत्सा तपसः स्थिति ॥ ७ ॥

कर्म कठोर गिरावन को निज शक्ति समान उषोपण कीजे ।

नारह भेद तपोतय सुन्दर पाप तिलांजलि काहे न दीजे ॥

पात्र धरी तप योग कुरी नर जन्म सदा फल काहे न लीजे ।

दान कहे नर जे तपते तप ताके अनेकह पातक छीजे ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपसे अर्घ्यम् ॥ ७ ॥

मरुत्पथमर्म रोगादिष्ट विषोपा दनिष्ट मंत्रेणात्, न भयं यत्र प्रविशति साधु समाधिः मन्त्रिणेय ॥ ८ ॥

साधु समाधि करो भवि भावक पुण्य बड़े उपजे अचभजे ,
साधु की संसति धर्म को कारण भक्ति करे परमाश्रय भावे ।

साधु समाधि करे भव छूटव कीति छटात्रय लोकमें गजे ।

ज्ञान कहे जग साधु बड़ो गिरि श्रृंग गुफा विच जाय विराजे ॥ ८ ॥

ॐ हीं साधु समाधये अर्घ्यम् ॥ ८ ॥

कुष्टोदर व्यथा श्लैवति पित्त शिरोतिभिः ।

कास श्वास ज्वरा रोगैः पीडिता ये मुनीश्वराः ॥

तेषा भैषज्यमाहारं शुश्रूषपथ्यमादरात् । यत्रैतानि प्रवर्तन्ते वैयाद्युत्पं तदुच्यते ॥ ९ ॥

कर्म के योग विथा उपजे मुनि पुंगव को तस भैषज कीजे,
पित्त कफानल तास भगन्दर तापको शूल महागद छीजे ।

भोजन साथ वनाय के औषध पथ्य कुपथ्य विचार के दीजे

ज्ञान कहे नित एसी वैयाद्युत्ति जेहिकरें तस देव भी पूजें ॥ ९ ॥

ॐ हीं वैयाद्युत्तिकरणाय अर्घ्यम् ॥ ९ ॥

मनसा कर्मणा वाचा जिन नामाक्षर द्वयं । सदैव स्मर्यते यत्र सार्हभृक्तिः प्रकीर्तिता ॥ १० ॥

देवसदा अरहन्त भजो जिन दोष अठारह किया अतिदूरा ।

पाप पखाल भये अति निर्मल कर्म कठोर क्रिये अति चूरा ।

दिव्य अन्नत चतुष्टय सोमित घोर मिथ्यात्व निवारण शूरा,

ज्ञान कहे जिन राज आराधो निरन्तर जे गुण मन्दिर पूरा । १० ॥

ॐ ह्रीं अहंभक्तये अर्घ्यम् ॥ १० ॥

निर्ग्रथ भुवित्तो भुवित ह्यस्य द्वारावलोकनम् तद्भोज्या लभते वस्तु रसत्यागोपवासता ॥

तत्पाद वन्दना पूजा प्रणामो विनयो नतिः

एतानि यत्र जायन्ते गुरु भक्तिर्मतेजिसा ॥ ११ ॥

देवत हैं उपदेश अनेक सु आप सदा परमाश्र धारी,

देश विदेश विहार करै दश धर्म धरै भव पार उतारी ।

एसे आचार्य को भावधरी भजि जे शिव चाहत कर्म निचारी,

ज्ञान कहे जिन भक्ति कीनों नर देखतहों मनमांही विचारी ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं आचार्य भवतये अर्घ्यम् ॥ ११ ॥

भवसृष्टिरनेकान्त लोकालोक प्रकाशिका । प्रोक्ता यत्रार्हता वाणी वर्यते सा महृश्रुतिः ॥ १२ ॥

आगम छन्द पुराण पढ़ावत साहित्य तर्क वितर्क बलाणे ।

काव्य कथा नव नाटक बुक्त ज्योतिष वैद्यक शास्त्र प्रमाणे ।

एसे बहुश्रुत साधु मुनीश्वर जो मनमें दोउ भाव लु आणे,
ज्ञान कहे तस पाय नमूं श्रुत पारग ये मन गर्व न आणे ॥१२॥

ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्तयेऽर्घ्यम् ॥ १२ ॥

पट् द्रव्य पंच कायत्वं सप्त तत्त्वं नवार्थता ।

कर्म प्रकृति विच्छेदो यत्र प्रोक्तः स आगमः ॥ १३ ॥

द्वादश अंग उपांग सदा गम ताकि निरन्तर भक्ति कराये ।

वेद अनूपम चार वहेतस अर्थ अले मन मांहि ठराये ।

पढो बहुभाज लिखो नित्र अक्षर भक्ति करामहु पूज रचाये ।
ज्ञान कहे निन आगम भक्ति करो सद्बुद्धि बहु सुम पाये ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं प्रवचन भक्तयेऽर्घ्यम् ॥ १३ ॥

प्रति क्रमस्तन्सुसर्गः समता वन्दना स्तुतिः ।

स्वाध्यायः पठ्यते यत्र तदावश्यकं मुच्यते ॥ १४ ॥

भाव धरे समता सत्र जीवन स्तोत्र पढे मनतै सुखकारी ।

कायोत्सर्ग करे मन प्रीतसौ वन्दन देव तणी भवहारी ॥

ध्यान धरि मद चूर करी दोउ बेर करे पडिकम्मण्य भारी ।

ज्ञान कहे मुनि सो धनवंत लु दर्शन ज्ञान चरित्र लधारी ॥ १४ ॥

ॐ हीं आवश्यकषरिहाणये अर्घ्यम् ॥ १४ ।

जिन स्नानं श्रुताख्यानं गीत वाद्यं च नर्तनम् ।

यत्र प्रवर्तते पूजा सा सन्मार्गं प्रभावना ॥ १५ ॥

श्री जिन पूजा रचै परमार्थ आगम नित्य महोत्सव ठानै :
गावत गीत वजावत ढोल मृदंग के नाद सुथान बखानै ।

संघ प्रलिष्ठा रचै जल जातरा सद्गुरु को साहमों कर आनै,
ज्ञान कहे जिनमार्गं प्रभावन भाष्यविशेष सुजानहि जानै ॥ १५ ॥

ॐ हीं मार्गं प्रभावनायै अर्घ्यम् ॥ १५ ॥

चारित्र गुण युक्तानां मृनीनां शील धारिणां

गौरवं क्रियते यत्र तद्वासल्यं च कथ्यते ॥ १६ ॥

गौरव भाव धरि मन में मुनि पुंगव को नित वत्सल कीजे,
शील के धारक भव्य के तारक तासों निरन्तर स्नेह धरीजे ।

धेनु यथा निज बालक को अपने निय छूटन और पसीजे ॥

ज्ञान कहे भवि लोक सुनो जिन वत्सल भाव धरै अघ छीजे ॥ १६ ॥

ॐ हीं प्रवचन वत्सलत्वाय अर्घ्यम् ॥ १६ ॥

कृतंभ्यानि सदंगानि केवली श्रुत केवली, समीपे तीर्थकृन्नाम भव्या नध्वन्ति भावतः ॥ १७ ॥

सुन्दर षोडश कारण भावन निर्मल चित्त सुधार के धारे ।

कर्म अनेक हरे अति दुद्धरं जन्म जरा भय मृत्यु निवारि ।

दृग् दारिद्र्य विपत्ति हरे भव सागर को पर पार उतारे

ज्ञान कहे यह षोडश कारण कर्म निवारण सिद्ध सुठारे ।

इत्युच्चार्य षोडश कारण यंत्रोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

निम्न मन्त्रो का जाप्य कर के अर्थ चढ़ावे ।

- १ ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धये नमः ॥ २ ॐ ह्रीं विनय सम्पन्नतायै नमः ॥
- ३ ॐ ह्रीं शील व्रतेऽपनतिचाराय नमः ॥ ४ ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगाय नमः ॥
- ५ ॐ ह्रीं संवेगाय नमः ॥ ६ ॐ ह्रीं शक्ति तस्थ्याय नमः ॥
- ७ ॐ ह्रीं शक्तिस्तपसे नमः ॥ ८ ॐ ह्रीं साधुरामाधये नमः ॥
- ९ ॐ ह्रीं वैयाघृत्याय नमः ॥ १० ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तये नमः ॥
- ११ ॐ ह्रीं आचार्य भक्तये नमः ॥ १२ ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्तये नमः ॥
- १३ ॐ ह्रीं प्रवचन भक्तये नमः । १४ ॐ ह्रीं आवश्यका परिहाण्यै नमः ।
- १५ ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावनायै नमः ॥ १६ ॐ ह्रीं प्रवचन वत्सलत्वाय नमः ॥

एभि मंत्रैर्नाप्यंकुर्यादर्थं चापि समुद्धरेत् ॥

❀ जयमाला ❀

भन भमण खिवारण, सोलहकारण, पयडमि गुण गण सारहम् ।
पण विवि तित्थंकर, असुह खयंकर, केवलशाण दिवारहम् ॥ १ ॥

॥ पद्वरी छन्द ॥

दिठ धरहु पढम दंसण विसुद्धि, मण वयण काय निरइयति सुद्धि
मा छंडहु विणउ चउ पयार जो छुत्ति वरांणण हियहि हार ॥ २ ॥
अणु दिणु परि पालउ सीयल भेउ, जो हुत्ति हरइ संसार हेउ ।

णाणोपयोग जो काल गभइ, तसु तणिय किति खुवणयहि भमइ ॥ ३ ॥
संवेउ चाउ जे अणुसरंति, वेएण भवणउ ते तरंति ।

जे चउविह देय सुपत्तदाण सो पावइ अणुकम अचलठाण ॥ ४ ॥
जे तव तवंति बारह पयार ते सग्ग सुरिदिह विविह सार ।

जो साहु समाधि धरंति थक्कु, सो हवइण काल सुंधुवक्कु ॥ ५ ॥
जो जाणइ वैयावचकरण, सो होइ संव्व दोसाण हरण ।

जो चितइ मण अरिहंत देव, तसु विसय अणंताकखण खेव ॥ ६ ॥
पववयण सरिस गुरू जेण मंति, चउगइ संसारण ते भमंति ।

बहु सुयह भचि जे णर करंति, अण्णउ रयणत्तय ते धरंति ॥ ७ ॥

जे दृढ आघस्पर्ई चित देय, सो सिद्ध पंथ सहरथ लेय ।

जेमग पहावण आइरंति ते अहविदंसण संभवंति ॥ ८ ॥

जे पत्रपण कब्ज समथ्य हति तह कम्म जिण्णंदह खवण भंति ।

जे वच्छ लच्छ कारण वंहति ते तित्यरत्तउ पुह लहंति ॥ ९ ॥

यथा-इह सोलहकारण कम्म णिवारण जे धरंति वयसील धरा ।

ते दिवि अमेरसुर पहुमि णरेसुर सिद्धवरंगण हियहि हरा ॥ १० ॥

ॐ हीं दर्शन विशुध्यादि षोडश कारणेभ्यो पूर्णाध्वम् ॥

एताः षोडश भावना यतिवराः कुर्वन्ति ये निर्मला,

स्ते वै तीर्थकरस्य नाम पद्मीमालुर्लभते कुलं ।

चित्तं कांचन पर्वतेषु विधिना स्नानार्चनं देवतां

राज्यं सौख्यमनेकधा वर तपो मोक्षं च सौख्यास्पदं ॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

ॐ अथ दश लक्षण धर्म पूजा ॐ

भवाम्भोधि निमगना जन्तूनां तारण क्षमम् ।

उत्तमादि क्षमाघन्तं यजे धर्म समूहकम् । १ ॥

ॐ ही उत्तम क्षमादि दशलाक्षणिक धर्म अत्रावतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ही उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिऋ धर्म अत्र तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ हीं उत्तम क्षमादि दशलाक्षणिक धर्म अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(दश लक्षण यंत्रं स्थापयेत्)

चञ्चत्काञ्चन भृङ्गार नालि निर्गम सज्जलैः

कृतमादि क्षमाद्यन्तं, यजे धर्म समूहकम् ॥ १ ॥ जलम् ॥

चन्दनैश्चैत्रैर्ब्रह्मण्डिषु मलयचल संभवेः ॥ उत्तमादि० ॥ चन्दनम् ॥

शालेयैः सान्द्रकैः शुद्धैः सकलैः सरलैः शुभैः ॥ उत्तमादि० ॥ अक्षतम् ॥

मंदार मालती पुष्पैः पारिजातैः सुवर्णकैः उत्तमादि० ॥ पुष्पम् ॥

नैवेद्यैः परमाहारैः स्वर्णं भाजन मध्यगैः ॥ उत्तमादि० ॥ नैवेद्यम् ॥

उद्योतित दिशाचक्रैर्दीपैः सद्धर्म पात्रगैः ॥ उत्तमादि० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

धूपैर्धूपितदिक्चक्रैर्दशांगैर्नर दुर्लभैः ॥ उत्तमादि० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

आम्रादि फल संघातैर्नासा नेत्र सुखाकरैः ॥ उत्तमादि० ॥ फलम् ॥ ८ ॥

तौर्यैर्गंधाक्षतैः पुष्पैर्दीपधूप फलादिभिः ॥ उत्तमादि० अर्घ्यम् ॥ ९ ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ्यं ॥

येन केनापि दुष्टेन पीडितेनापि कुत्रचित् ,

क्षमा त्याज्या न भव्येन, स्वर्गं मोक्षाभिलाषिणा ॥ १ ॥

ॐ हीं उत्तम व्रमाधर्मा गाय अर्घ्यम् ॥

धत्ता— उत्तम खम मद्दु, अज्जउ सच्चउ, पुण सउच्च संजम सुतऊ ।

चाउवि आक्किचणु, भव भय वंअणु, वंभ चेरु धम्मजु अएऊ ॥ १ ॥

उत्तम खम तिल्लोयह सारी, उत्तम खम जम्मो वहितारी ।

उत्तम खम रयणत्तयथारी, उत्तम खम दुग्गई दुह हारी । २ ।

उत्तम खम गुण गण सहयारी, उत्तम खम सुखिविंद पयारी ।

उत्तम खम बुहयण चित्तमणि, उत्तम खम संपज्जः थिरमणि ॥ ३ ॥

उत्तम खम मह णिज्ज सयल नणु, उत्तम खम मिच्छत्त विहंडणु ।

अह असमत्थह दोसु खमिज्जह, अहि असमत्थह णवि रूसिज्जह ॥ ४ ॥

अहि आक्कोसण वयण सहज्जह, अहि पर दोसण नण भासिज्जह ।

अह चेषण गुण चित्त थरिज्जह तहि उत्तम खम जिणे कहिज्जह ॥ ५ ॥

धत्ता— उत्तम खम जुया, सुरखग राया, केवलणाया लहंवि थिरु ।

हुयसिद्ध गिरंजण भव दुह भंजणु, अगणिय रिसि पुंगमजि चिरु ॥ ६ ॥

(भाषा सर्वथा)

पंच जिनेन्द्र धरुं मत्तमें जिन नाम खिये सब पातक भाजै,

शारद मात प्रथाम करुं, जाके हत्थ कमएडल पोथी विराजै ।

गौतम पाय नमूं मन शुद्धसौं, अंग उपांग बलाए हि गालै ।
सद्गुरु को उपदेश सुणयो हम, धर्म सदा दशलक्षण छालै ॥ १ ॥

केवल एक जमा विनही, तप संयम शील अकारथ जाणौ ।
पाक सुपाक बणयो सुथरो जैसे लोए। विहीन अनान्न को खाणौ ।
देव जिनेन्द्र कहे थुरतैं जगमें जए तारण मोक्ष यियाणौ ।

ज्ञान कहे नर अन्तर स्रक्त सार जमा दशलक्षण राणौ ॥ २ ॥

ॐ हीं उत्तम हमर धर्मांगाय महाधर्मम् ॥

सृष्टुत्वं सर्वं भूतेषु कार्यं जीवन सर्वदा ,
काठिन्यं त्यज्यते नित्यं धर्म बुद्धि विज्ञानता ॥ २ ॥

ॐ हीं उत्तम मादव धर्मांगायधर्मम् ॥

धत्ताः-मदव भव भद्गु, माणखिकंदंणु दय धम्मजु मूलहु विमलु ।
सव्वह हिययारउ, गुण गण सारउ, तिस उचळ संजम सयलु ॥ १ ।
मदव माण कसाय विहंडणु, मदउ पंचोदिय मण दंडणु ।

मदउ धम्मइ करुणा वल्ली, पसरइ चित्त महीरूह वल्ली । २ ॥
मदउ जिणवर भत्ति पयासइ, मदउ कुमइ पसर शिणणासइ ।

मदवेण बहु विणाय पवइइ मदवेण जए बइरी हइइ ॥ ३ ॥

मद्वेषण परिणाम त्रिसुद्धि, मद्वेषण त्रिहु लोयह सिद्धी :

मद्वेषेण दुई विह तव सोहह, मद्वेषेण तीजो गार मोहह ॥ ४ ॥

मदउ जिए सासण जाणिज्जह, अप्पा प(सरुव भासिज्जह ।

मदउ दोस असेस णिवारउ, मदउ जणण समुदह तारउ ॥ ५ ॥

आर्या-सम्मदंसण अंगु, मदउ परिणाम जु सुणहु ।

इय परियाण विचित्तं मदउयम्म अमल शुणहु ॥ ६ ॥

(भाषा सवैया)

मार्दन भाव न आगत जौ लग तौ लग धर्म कहा उभावे,

भाव छोर रहे घट भीतर नूतन पाप संयोग बढावे ।

आगत रौद्र वलें उमके मन पापैतें निश्चय दुर्गति पावे,

ज्ञान कहे सुदुभाव को धारके, फेरि संसार कबहुं नहीं आवे ॥ २ ॥

ॐं हीं उत्तम मार्दन धर्मांगाय अर्घ्यं ॥ २ ॥

आर्यत्वं क्रियते सम्यक् दृष्ट बुद्धिश्च त्यज्यते,
पाप चिन्ता न कर्तव्या श्रावकैर्धर्म चिन्तकैः ॥ ३ ॥

ॐं हीं उत्तम आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यम् ॥

वृत्ताः- धम्महवरलक्खणु, अज्जउत्थिरमणु, इरिय विहंउणु सुह जणणु ,

तं इत्थुलि किञ्जइ, तं पालिञ्जइ, तंरिग सुरिाञ्जइ खय जराणु ॥ १ ॥

जाि सुरिाजय चित्त वित्तञ्जइ, तारिसु अरणुहु पुण भासिञ्जइ ।

किञ्जइ पुण तारिसु सुह संचणु; तं अज्जव गुण गुणहु अवंचणु ॥ २ ॥

माया सल्ल मणहु गीसारहु, अज्जउ धम्मपवित्त वियारहु ।

वउ तउ माया भियउ गिरत्थिउ, अज्जउ सिवपुर पंथ सउत्थउ ॥ ३ ॥

जत्थ कुटिल परिणाम चइञ्जइ, तहि अज्जउ धम्मजु संपज्जइ ।

दंसण णाण सरूव अखंडो, परम अतिदिय सुक्ख करंडो ॥ ४ ॥

अप्पे अप्पउ भन्नह तरंडो, एरिसु चैयसु भाव पयंडो ।

सो पुण अज्जउ धम्मे लुब्भइ अज्जवेण वैरिय मण लुब्भइ ॥ ५ ॥

धत्ता-अज्जउ परमप्पउ, गय संकप्पउ, चिम्मिंतु सासय अभयपद्द ।

तं गिरुजाइञ्जइ, संसउहिञ्जइ, पाविञ्जइ विहिअचल वज्ज ॥ ६ ॥

(भाषा सवैया)

आर्जव भाव धरै मनमें जिससे भव ठार के मोक्ष सिधारै ।

इवत है भव सागर में तस हाथ गही पर पार उतरै ॥

संपत्ति देइ निवाज खडो करे, आर्जव कर्म को मान विगारै ।

ज्ञान कहै सोइ मूढ़ बडो भव मानव शायके आर्जव छारै ॥ ३ ॥

ॐ हीं उत्तम आर्जव धर्मांगाय महार्घ्यम् ॥ ३ ॥

असत्यं सर्वथा त्याज्यं, दृष्ट वाक्यं च सर्वदा ।

पर निन्दा न कर्तव्या भव्येनापिच सर्वदा ॥ ४ ॥

ॐ हीं उत्तम सत्य धर्मांगाय अर्घ्यम् ॥

वृत्ता-दय धम्म हु कारण, दोस णिवारण, इह भव पर भव सुक्खयरु ।

सच्चुजि बयणुल्लउ, भुवणि अतुल्लउ, वोलिज्जइ वीसास यरु ॥ १ ॥

सच्चुजि सव्वह धम्म पहाणु, सच्चुजि महियल गरुव विहाणु ।

सच्चुजि संसार रामुह सेउ, सच्चुजि भव्वह भण सुक्ख हेउ ॥ २ ॥

सच्चेणजि सोहइ मणुवजम्भु, सच्चेण पवित्तउ पुएण कम्मु ।

सच्चेण सयल गुण गण सहंति, सच्चेण त्तियस सेवा वंहति ॥ ३ ॥

सच्चेण अणुव्व महव्वयाइ, सच्चेण विणासिय आवयाइ ।

हिय मिय भात्तिज्जइ रिच्च भास, एवि मासिज्जइ पर दुह पयास ॥ ४ ॥

पर ना हायर भासहु ण भव्व, सच्चुणि छंडउ विगय गव्व ।

सच्चु जि परमग्ग अत्थि एवक्कु, सो भावहु भव तम दलए अक्कु ॥ ५ ॥

रुंधिज्जइ मुणिएणा वयणा गुत्ति, जंबया किइइ संसार आत्त ।

पुए सच्चेण पावइ सग्गुलं, धम्मेया लहइ कम्मक्खय भोखं । ६ ॥

आर्था-सञ्चुजि धम्म फलेण केवल याण। वहेइ थणु ।
तं पालहु भो भव्व, भणहुण अलियउ इह वयणु ॥ ७ ॥

(भाषा संवैया)

सांच नहीं बट भीतर सो नर क्यो नर की गिनती में गिनाये ।
राघ वसु जग देखत इबत दुर्गति पावत बोहर आये ।

भूठ वसै जिसके सुखमें नरते जगमें नरकै हि समाये,
ज्ञान कहै जग सत्य वड़ो पट् दर्शन में जिनराज कइये ॥ ४ ॥

ॐ हीं उत्तम सत्य धर्मांगाय महाध्यम् ॥ ४ ॥

भाह्वाभ्यंतरैश्चापि मनोवाक्काय शुद्धिभिः शुचित्त्वेन सदा भाव्यं पाप भीतैः सु श्रावकैः ॥ ५ ॥

ॐ हीं उत्तम शौच धर्मांगायार्थम् ॥

घचा:- सञ्चुजि धम्मंगो, तं जि अभंगो, मिएणंगो उवओगमई ।

जर मरण विणासणु, तिजय पयासणु काइज्जइ अहिणिसुजि थुई ॥ १ ॥

धम्म सउच्च होइमण सुद्धिय, धम्म सउच्च वयणधया गिद्धिय ।

धम्म सउच्च वंम वय धारणु, धम्म सउच्च लोह वज्जंतउ, धम्म सउच्च सुत्तव पहि जंतउ ॥ २ ॥

धम्म सउच्च वंम वय धारणु, धम्म सउच्च मयट्ठणिवारणु ।

धम्म सउच्च जिणायम भणणे, धम्म सउच्च सुगुण अणु मणणे ॥ ३ ॥

धम्म मउच्च सल्ल कयचाए धम्म सउच्चुजि णिम्मलभाए ।

धम्म सउच्च कसाय अहाने, धम्म सउच्च ण लिप्पह पावे ॥ ४ ॥

अहमा जिणवर पूज विहाणे, णिम्मल फासुय जल कयएहाणे ।

तं पि सउच्च गिहत्थउ भासइ यवि सुणिवरह कहिउ लोयासिउ ॥ ५ ॥

वत्ताः—भव सुणिवि अणिच्चउ, धम्म सउच्चउ पालिज्जइ एयगमणि ।

मिव मग्ग सहाओ सिव पयदाओ, अणुप चितहिं किंणिखणि ॥ ६ ॥

(भाषा संवेधा)

शौच करो जिन पूजन को मनशुद्ध रहै परमारथ करो ।

इन्द्रिय पांच रहै अपने तश कर्म कपाय को पाइत एरो ॥

मंत्र हो स्नान करै सुनि पुंगव, पवित्र नाहि संसार को फेरो ।

ज्ञान कहै जग शौच बडो, परमारथ सुमरन ज्ञान बडरो ॥ ५ ॥

ॐ हीं उत्तम शौच धर्मांगाय महाधर्मम् ॥ ५ ॥

संयमं द्विविधं लोके, कथितं सुनि पुंगवैः ।

पालनीयं पुनरिचते, भव्यं जीवेन सर्वदा ॥ ६ ॥

ॐ हीं उत्तम संयम धर्मांगाय अर्घ्यम् ॥

वत्ताः—संजम जणि दुल्लहु, तं पालिल्लहु, जो छंडइ पुण मूढ मई ।

सो भवै भवावलि, जरमरणावलि किम पावइ सुइ पुण सुगई ॥ १ ॥

संजम पंचेदिय दंडणेण, संजम नि कसाय विहडणेण ।

संजम दुद्धर तव धारणेण, संजम रस चाय वियारणेण ॥ २ ॥

संजम छववास नियंभणेण, संजम मणु पसरहु थंभणेण ।

संजम गुरु काय कलेसणेण, संजम परिगह गिह चायणेण ॥ ३ ॥

सजम तस थावर रक्खणेण, संजम तिया जियणियत्तणेण ।

सजम सु तत्थ परिरक्खणेण, संजम बहु गमण चयंभणेण ॥ ४ ॥

संजम अणुकंप कुणंतणेण, संजम परमत्थ वियारणेण ।

संजम पोसइ दंसणाहु अत्थु, संजम तिसहूणिरू भोक्ख पत्थु ॥ ५ ॥

संजम विणु एार भव सयल सुरणु, संजम विणु दुग्गई लिउपवणु ।

संजम विणु वडियम इत्थ जाउ, संजम विणु विहली अत्थि आउ ॥ ६ ॥

वत्ताः—इह भन्न पर भवणेण संजम सरणो, होज्जउ जिण णाहे भण्णिओ ।

दुग्गई सर सोसण, खरक्किरणोवम, जेण भवारि विसम हण्णिओ ॥ ७ ॥

भाषा (सवैया)

संयम दोय कहे जिन आगम, संयम से शिव मारग लहिये ।

पाप गले मन संयम सौंधरि, कर्म कठोर कषाय को दहिये ॥

संयम तें भव पार तिरै नर, संयम मृकित सखा जग कहिये ।

ज्ञान कहे यह संयम में त्रय कर्ण लगाय कहौ कि न रहिये ॥ ६ ॥

द्विविधं लोके, वाद्याभ्यंतर भेदतः । स्वयं शक्ति प्रमाणेन क्रियतेधर्म वेदिभिः ॥ ७ ॥

ॐ ही उत्तम तपो धर्मंगाय अर्घ्यम् ।

घत्ता-एर भव पावे थिणु, तच्चमृणोपिणु, खंडवि पंचेदिय समणु ।

णिव्वेउवि मंडिवि, संगह खंडिवि, तव किज्जइ जाये विवणु । १ ॥

तं तउ बहि परिगह खंडिज्जइ, तं तउ जहि मयणुजि खंडिज्जइ ।

तं तउ बहि षागत्तणु दीसइ, तं तउ जहि गिरिखंदर खिवसइ ॥ २ ॥

तं तउ जहि उवसग्ग सहिज्जइ, तं तउ जहि रायाड जिणिज्जइ ।

तं तउ जहि भिक्खइ सुंजिज्जइ, सावइ गेह काल णिव सिज्जइ ॥ ३ ॥

तं तउ जस्थ समिदि परि पालणु, तं तउ गुत्ति तयह णिहालणु ।

तं तउ जहि अण्णा पर बुडिभउ, तं तउ जहि भव माणुजि उज्झउ ॥ ४ ॥

तं तउ जहि ससरुव सुणिज्जइ, तं तउ जहि कम्मह गण खिज्जइ ।

तं तउ जहि सुर भत्ति पयासहि, पवयण्णत्थ भन्नि यण्ह पभासहि ॥ ५ ॥

जेण तवे केवल उववज्जइ, सासय सुक्ख खिच्च सपज्जइ ।

घत्ता-आरह विहु तउवरू, दुग्गइ परिहरू, तं पुजिज्जइ थिर गणिया ।

मच्छर मय छंडिवि, करणह दडिवि, तं विधरिज्जह गौरविणा ॥ ६ ॥

(भाषा संवेया)

दुद्धर कर्म गिरीन्द्र गिरावण, वज्र समान महा तप एसो ।

बारह भेद भणंत जिणेशुर पाप प्रखालन पानीय जैसो ॥

दुःख विहंडया सुख समर्पण, पंच चिह्नद्रिय रक्षण तैसो ।

ज्ञान कहे तपस्या विन जीव जु मोक्ष पदारथ पावेगो कैसो ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं कृतम तपो धर्मांगाय महाधर्म्यम् ॥ ७ ॥

चतुर्विधाय संधाय, दानं देयं चतुर्विधम् । दातव्यं सर्वथा सद्भिश्चित्तकैः पारलौकिकैः ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय अर्घ्यम् ॥

धचा-चउविह धर्मंगो, करहु अमंगो, णियसचिह् भनिय जणहु ।

पचह सुपविचह तव गुण जुचह धरगह संवलु तं सुणहु ॥ १ ॥

चाए आवागणणउ हट्टह, चाए णिम्मल किति पविट्टइ ।

चाए वयरिय पणभिइ पाये, चाए भोग मूमि सुह जाए ॥ २ ॥

चाउ विहिज्जह णिच्च जि विणए, सुयवयणे भासेप्पिणु पणए

अमयदाण दिज्जह पहिलारउ, जिमि णासइ परभव दुह यारउ ॥ ३ ॥

सथ दाण वीजो पुण किज्जह, णिम्मल णाण जेण पाविज्जइ ।

ओसह दिज्जह रोय विणासणु, म्ह विण पित्थइ चाहि प्मासणु ॥ ४ ॥

आहारे घण रिद्धि पविट्ठइ, चउविट्ठ चाउ जि एहु पविट्ठइ ।

अहवा दुट्ट वियग्गह चाए, चाउ जि एहु म्णहु समवाए ॥ ५ ॥

आर्या-दुहियदि दिज्जइ दाण, किज्जइ माणु जि गुणियणदि ।

दय भाविय अभाग, दंसण चिंतिज्जइ मएहं ॥ ६ ॥

(भाया सर्वथा)

दान पद्मे जगमें नर दान तें मानको पावत है जग मानव,

भूप दयाल भये सबहूँ अरि मित्र भये अरु सेवत दानव ।

दान तें कीर्ति बढै जग भीतर दान समान न और कहवे ।

ज्ञान कहै भव पार उता न दान चतुर्विध सार कहवे ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं उचम त्याग धर्मागाप महाधर्मम् ॥

चतुर्विंशति संख्यातो, यो परिग्रह ईरितः ।

तस्य संख्या प्रकृतव्या तृष्णा रहित चेतसा । ६ ।

ॐ ह्रीं उचसाक्चिन्ध धर्मागाप अर्थम् ।

व्रताः—आकिंचणु भावहु, अथा उक्तावहु देह धिएण उज्झाण मळ ।

निरुवम गयवणणउ, सुह संयणणउ, परम अर्तोदिय विगय भउ ॥ १ ॥

आकिंचणु चउसंगहणिविचि, आकिंचणु चउ सुज्झाणमत्ति ।

आकिंचणु चउ विय लियमभत्ति, आकिंचणु रयणत्तय पवित्त ॥ २ ॥

आकिंचणु आउ चि एहिचित्त, पसरंतउ इदियवणि विचित्त ॥

आकिंचणु देह हणेह चित्त, आकिंचणु जं भव सुइ विरत्त ॥ ३ ॥

तियामत परिणह जत्थणत्थि; मणिराठ विहिज्जइ तव अवत्थि ।

अप्पा पर जत्थ वियारसत्ति, पयडिज्जइ जहि परमेड्डि भत्ति ॥ ४ ॥

जह छंडिज्जइ संकप्प दुट्ठ भोयण वंछिज्जइ जह अणिट्ठ ।

आकिंचणु धम्म जि एम होइ तं उक्काइज्जइ णरु इत्थ लोई ॥ ५ ॥

यताः--ए द्हुज्जि पद्दावे, लद्ध सहावे, तित्थेसर सिव नयरि गया ।

ते पुणरिसि सारा, मयण वियारा, वंद णिज्ज एतेण सया ॥ ६ ॥

॥ भाषा सवैया ॥

आलस अंगतै दूर करि कर, नाम आकिंचन अंग धरावो ।

आल पंपाल तजौ बटतै मन शुद्ध करी समता धर आवो ॥

जप तीर्थ करी फल इच्छित होत समूल भये फल किंचित पावो ।

ज्ञान कहे नर को सुख दायक, शुद्ध मनै परमास्थ ध्यावो ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन धर्मांगाय महार्थम् ॥ ६ ॥

नवथा सर्वदा पाल्यं, शीलं संतोष धारिभिः ।

भेदा भेदेन संयुक्तं सद् गुरुणां प्रसादतः ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्यं धर्मांगाथ अध्वर्यम् ।

वृताः-वंभव्वउ दुद्धरु, धारिज्जइवरु, केडिज्जइ विसयासणिरु ।

विय सुक्खयरत्तो, मणकरिमत्तो, तं नि भव्व रक्खेहु थिरु ॥ १ ॥

चित्त भूमि मयणु नि उपवज्जह तेणजु पीडउ काइ अकज्जह ।

विषह सरीरइ बिदह सेवइ, यिय परणरि ण सुदउ वेवह ॥ २ ॥

णिवडइ णिरय मरादुह भुंजइ, भो क्षीणुजियं भञ्जउ भंजइ ।

इय जाणे विणु मण वयकाए वंभचेरु पालहु अणुराए ॥ ३ ॥

एव पयार सत्थिय सुहयारउ वंभन्वे विणु चउ तउ त्रिअ सारउ ।

वंभन्वे विणु काय किलेसइ विहल सयल भासिय जिणेसइ । ४ ॥

वाहिर फरसेदिय सुह रक्खउ, परमवंभ आभितर पिकखउ ।

एण उवाण लब्भइ सिवहरु, इम रडधू बहु भणइ विणय यरु ॥ ५ ॥

वृत्ता-जिण साह महिज्जइ, सुणिय यण विज्जइ, दहलच्छण पालीइ थिरु ।

भो खेम सियासुय, भव्व विणय जुय, होलि वम्मयहु करहु थिरु ॥ ६ ॥

(भाषा सवैथा)

शील सदा नरको सुख दायक शील समान बड़ो नहीं कोई ।

शील फलै अति शीतल पावक जानकी को जग देखत होइ ।

शाह सुदर्शन शूलि सिंहासन शील फलै भव साधत दोई ।

ज्ञान कहै नर सोई विचच्छ्र जो नर पालत शील समोई ॥१० ॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय महाधर्म्यम् ॥ १० ॥

(भाषा सवैथा)

सार ब्रमा अरु मर्दव आर्जव सत्य सदा जग शौच सहाई ।

संयम सार तयो तप भेदसु दान अकिंचन धर्म कहाई ।

ब्रह्म बड़ो भव तारण को दश लक्षण है सबको सुख दाई ।

ज्ञान कहे परमार्थ सौं न करे तिसको जिनराज दुहाई । ११ ॥

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

एभिर्मन्त्रैर्जाप्यं कुर्याद्

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रमा धर्मांगाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं उत्तम मर्दव धर्मांगाय नमः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्मांगाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय नमः ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय नमः ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय नमः ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं उत्तम आक्किचन धर्मांगाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं उत्तम त्रलवर्य धर्मांगाय नमः ॥ १० ॥

(अर्चं समुद्धरेत्)

❀ अथ जय माला ❀

इय क्काऊण णिज्जरं जे हयंति भव पिंजरं । नीरीयं अजरामरं ते लहंति सुक्खं परं ॥ १ ॥

जेण मोक्खल फल तं पाविज्जइ, सो धम्मंगो एहहु गिज्जइ ।

खम खमायलु तुंगय देहउ, सइउ पल्लउ अज्जउ सेहउ ॥ २ ॥
सच्च सउच्च मूल सजम दलु, दुविह महा तम णव कुसुमाउलु ।

चउविह चाउय साहिय परमलु पी णिय भवलोय छप्पइयलु ॥ ३ ॥
दिय संदोह सइकल कलयलु, सुराण वर खेयर सुह समयलु ।

दीणा णाह दीह सम णिग्गहु सुद्ध सोम तणु मिच परिग्गहु ॥ ४ ॥
वंभवेरू छायइ सुहासिउ, राय हंस नियरेहि समापिउ ।

एहउ धम्म रुक्ख लाखिज्जइ जीव दया वयणहि राखिज्जइ ॥ ५ ॥
भाणुट्ठाण भल्लारउ किज्जइ, मिच्छामई पवेस ण दिज्जइ ।

सील सलिल धारहि सिंचिज्जइ, एम पयच ण वड्ढारिज्जइ ॥ ६ ॥
घता- कोहानल बुक्कऊ, होउ गुरुक्कउ, जाइ रिसिदिय सिग्गई ।

जगताइ सुहंकरू धम्म, महातरू, देइ फलाइ सुमिट्ठमई ॥ ७ ॥

ॐ हीं उत्तम चमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो पूर्यार्घ्यम् ॥

यो धर्मं दशधा करोति पुरुषः, श्रीवाकृतोपस्तुतं,

सर्वज्ञध्वनि संभवं त्रिकरण, व्यापार शुद्धयानिशं ।

भव्यानां जयमालया विमलया, पुष्पांजलिं दापये,

नित्य सश्रिय मातनोति सकलं स्वर्गापवर्ग स्थितिः ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादः ॥

अथ पंच मेरु पूजा (वडी)

श्रीमन्नाभेय देवं जिनवरममलं विश्व विद्या प्रधानं,

कामेभोत्तंग कुंभस्थल इलन परं सर्वं सम्पन्निदानम् ।

नत्वा श्री मेरु पूर्वं जिनवर सगृहा संति शून्याष्टमेय,

स्तेषां पूजा विधानं प्रविबद् सुतरां स्थापयामि श्रमोदात् ॥ १ ॥

सुदर्शनाख्यः प्रथमश्च मेरु द्वीपे स्थितं जम्बूपदे पवित्रे,

लक्षैकसद्योजन तुंग बर्यश्चतुर्वनैः षोडशभिरच चैत्य ॥ २ ॥

द्वीपेद्वितीये विजया चलाख्यो मेरु च पूर्वापर सन्निविष्टो ।

चतुर्युतासीति सहस्रतुं गैस्तावद्वनैश्चैत्य युतैर्विंशति ॥ ३ ॥

द्वौ मन्दिरौ मंकिर विष्णुदादि मालीति संज्ञौ किल पुष्कराङ्क ।

द्वीपे तृतीये खलु वावदुच्चै, स्तावत्प्रमाणैर्वन चैत्यगेहे ॥ ४ ॥

मर्वाएयशीति संख्यानि, चैत्यान्युच्चैस्तरायलं ।

संति स्मर्णं मथान्युच्चै स्तोरणाध्वज राजितं ॥ ५ ॥

प्रत्येकं चैत्य गेहेषु सर्वज्ञ प्रतिमा वराः ।

अष्टोत्तर शतं तत्र नाना माणिक्य भासुरा ॥ ६ ॥

पंचा चाप शतोत्सेधाः सवशरु समचिता ।

पुष्पांजलि विधौ स्थाप्या पूजास्ताः शर्म हे तवे ॥ ७ ॥

(इत्युच्चैर्ष्यं पंच मेरु स्थापनार्थं पुष्पांजलि क्षिपेत् ।)

सुदर्शनहो विजयाचलाख्यो श्रीमदरो विद्युत् एव माली

एषां गिरिणां क्रिल पूर्व दिक्षुः सस्थापये चैत्य जिनेन्द्र विम्बान् ॥ ८ ॥

ॐ हीं पंच मेरुस्थ पूर्व दिशि विशति चैत्या लयान्यत्र अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ
ठः ठः । अत्र मम संन्नहितो भव भव वषट् ॥

स्वधुनि वर वारिभिः सुख कारिभि मल हारिभिः ।

केशरेन्दु सुधारिभिः ज्वर दारिभि रस सारिभिः ।

पंच मेरु जिनालयान् हरि दिग्भिमान्हरि वस्त्रभान्

पूजयेऽहमकृत्रिमान्गुण भूषणान्त दूषणान् ॥ बलं । १ ॥

सुन्दरैर्हरिचन्दनैरलिनन्दनैरभिन्दनैः कुंकुमागुरु मंडनैश्च खंडनैर्गत दंडनैः । पंचमे. ॥ चन्दनम् ॥

जैन वाम्य सुमंजुलैः शशिभोज्वलैर्वर तदुलैः

हेम पात्र समाश्रितैः कज वासितैरधिशासितैः ॥ पंचमे. । अक्षतम् ॥ ३ ॥
पारिजात महोत्पलैः कनकोत्पलैर्गति कोमलैः ।

सिंदुवार सुचम्पकैः स्फुट नीपकैरिव दिव्यकैः । पंचमे. ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥
हेम भाजन संस्थितै रधिकाश्रितैर्दृष्ट पाचितैः ।

दिव्य पोली नवोदनैः सुखनोदनै रभिसोदनैः ॥ पंचमे. ॥ नैवेद्यम् । ५ ।
तामसासुर नाशकै, रविनाशकै परि भासकैः

द्योतिताऽखिल दिङ्गमुखै र्मणि दीपकै गुण्डीपकै ॥ पंचमे, ॥ दीपम् ॥ ६ ॥
भेवका गुरु संभवै गुरु धूपकै बहु धूपकै

गंध लुब्ध शिली मुखैर्गत दिङ्मुखैर्हत कल्मषै. ॥ पंचमे. ॥ धूपम् ॥ ७ ॥
नालिकेर सदाफलै बहुधामलै वन सत्फलैः

बीजपूर सु जृंभलै रति पेशलै बहु कोमलैः ॥ पंचमे. ॥ फलम् ॥ ८ ॥

पाथो गंधाक्षतौघैः शतदल निचयैः आर नैवेद्य दीपैः
धूपैरामोदयुक्तैः रुचिर तरु फलै र्दंभ दूर्वावितानैः ।

मेरुना पूर्ध्व भागे जिनचर निलयान् विंशतीत्येव संख्यान्

नत्वा तुत्वा त्रिसंध्यं सुत्रिमल मनसा संयजे चन्द्रकीर्तिः ॥ अर्घ्यम् ॥ ९ ॥

॥ जय माला ॥

जग्गू घातकी पुष्करार्द्ध विषये, शक्रादि सं सेविते,

भीमन्नन्दन पाण्डुकादि सहिते, संतप्त हेम ग्रमे ।

नाना रत्न विचित्र वर्णे निचिते रम्याणि चैत्यानि चै,

तत्रस्थं जिनराज विश्व निकरं संस्तूयते भावत' ॥ १ ॥

किन्नर नाग अमर गण महितं, प्राविक्षार्थं वसुशोभा सहितं ।

पूर्व दिशि संस्थित जिनराजं, संस्तवेमि शिव सौख्य समालं ॥ २ ॥

संगीताकुल कृत बहु मानं, महा तुम्बर रचित सु वितान । पूर्व दि० ॥ ३ ॥

नृत्य महोत्सव विविधप्रकारं, वाद् घोष सप्त स्वर सारं ॥ पूर्व दि० ॥ ४ ॥

भविक जीव बांछित दातारं, ईन्द्रादिक सुर कृत जयकारं ॥ पूर्व दि० ॥ ५ ॥

भव पाथो निधि प्रापीत तीरं, किल्बिष पक विशोधन नीरं ॥ पूर्व दि० ॥ ६ ॥

(ईन्द्र वज्रा छन्द)

अकृत्रिमं मेरु महिघ्न संस्थ, प्राच्येव दिग्संस्थित मलयंच

सर्वज्ञ विम्बं प्रकरं भजामि श्रीभूषण ज्ञान षयोधिबंधं ॥ ७ ॥ अर्घ्यम् ॥

॥ द्वितीय जयमाला ॥

घत्ता-थुणमइ जिणदेवं, सुरकृत सेनं, पंच मेरु जिणधाम वरं ।

पूरव दिग सारं, जिण आगारं, पूजयामि तव सच्चि भरं ॥ १ ॥

सुदर्शनं विजया चल मेरुं, मन्दिर विद्युन्माली महीरुं ।
पूर्वादिशि विंशति आगारं, अमर खयर अर्चित मनहारं ॥ २ ॥

शद्रसाल नन्दन वन चंगं, सौमन पांडुक चार अभंगं ॥ पूर्व दि० ॥ ३ ॥
प्रति वन चउ उत्तम जिन गेहं, भवियण वन्दो पूजो तेहं ॥ पूर्व दि० ॥ ४ ॥
अष्टोत्तर शत प्रतिमा चंगं, प्रति चैत्ये वन्दौ मन रंगं ॥ पूर्व दि० ॥ ५ ॥
पन्च शतक वर धनुष उतंगं रत्न विनिर्मित तनु शुभरंगं ॥ पूर्व दि० ॥ ६ ॥
सात कुम्भ निर्मित जिन गेहं रत्नालकृत तोरण तेहं ॥ पूर्व दि० ॥ ७ ॥
रत्न पुजपरि धूप सुकुंभं, केतु पंक्ति सुर निर्मित शोभं ॥ पूर्व दि० ॥ ८ ॥
हेमालंकृत भुवनसुदारं, जडित रत्न सुक्ताफल सारं ॥ पूर्व दि० ॥ ९ ॥
ताल कसाल भल्लरिय फेरी, दुंडुभि ढोल निशानन भेरी ॥ पूर्व दि० ॥ १० ॥
पूजा अष्ट विधि सुखकारं गीत नाद नृत रचित उदारं ॥ पूर्व दि० ॥ ११ ॥
वासवेश नित चर्चित चरणं, नाग नरेश्वर गत पद शरणम् ॥ पूर्व हि० ॥ १२ ॥
जय जय जिनवर जगदाधारं जनमन मोहन भवदाधितारं ॥ पूर्व दि० ॥ १३ ॥

धचाः- श्री पूर्व दिगेशं, जिनवर ईशं, संभजामि भव भय हरणम् ॥

नरवर नृत चरणं, मुनि जन शरणं, कर जोडी गोविन्द कहियम् ॥

महाव्यम् ॥

॥ अथ दक्षिण दिशि पूजा ॥

(चम म तिलका वृत्त ,

श्री मसुदर्शन इमौ त्रिजया चलाख्या, श्री मन्दारश्च सुतडित्यद् पूर्व माली,
एषां हि दक्षिण दिशासु महा गिरिणां, सस्थापये विमल चैत्य जिनेन्द्र धिम्मान् ॥

ॐ ही पन्च मेरु दक्षिण दिशि विशानि चैत्यालयानि अत्रावतरागतर संशोषट् ।

अत्र तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम मन्निहितो भवा भवा श्पट् ॥

श्री मसुरेन्द्र तटनीवर गधनीरैः पाथोज केसर पराग पिशांगधारैः

श्री पंच मेरुवर दक्षिण दिग्भिषाग चैत्यालयान् जिनवरां प्रतिमान्यजेऽहम् ॥ जलं ॥

काश्मीर जन्म वनसार परागभिः श्री चन्दनैर्दशदिगाहृत च्चराकैः ॥ श्रीपंच, ॥ चन्दम् ॥

उन्निद्र कैरव सुधाकर चन्द्र रश्मि, प्रोफुल्ल कुंद धवलैः सरलाक्षितोवैः । श्रीपंच, । अक्षतम्

श्रीमत्सहस्रदल कुंद कदम्भजाति मंदार कैरव मनोहर पारिजातैः ॥ श्रीपंच ॥ पुष्पम् ॥

नानारस प्रसुग शाक विराजितेन, नव्योदनेन दृत्, क्षुप मनोहरेण । श्रीपंच ॥ नैवेद्यम् ॥

दुर्भेद्य तामसमहेम हरीश्वरेण माणोय दीप निवहेन महोज्वलेन ॥ श्रीपंच, ॥ दीपम् ॥

निर्धूम वह्निहितागुरु संभवेन सौरभ्यधूप निचयेननशः । प्रयेन । श्रीपच । धूपम् ॥

रंभाफलामल मनोहर नालिकेर जंवीर पूग सहकार सदा फलौघैः । श्रीपंच, ॥ फलम् ॥

जलैः परम पावनैः, सुरभिगंध पुष्पाक्षतै, प्रदीपचरु धूपकैः सरस चोच रंभाफलैः

सुमेरु यमदिग्गतान् स्वयुग संख्य चैत्यालयान्, यजामि भव भंजकान्, सकलचंद्रकीर्तिं प्रदान् ॥ अर्घ्यम् ॥

❀ जय माला ❀

सारे सारंग वर्णे, खचर गणकृता स्थान रम्ये त्रिविन्ने,

सन्नेरो दक्षिणस्यां दिशि जिनवर सद्गोह विम्बप्रजानां ।

कृत्वा शुद्धात्मचित्तं, सुरपतिरनिशं, सर्व पूजोपचार,

पूजामष्टप्रकारा, रचयति सततं, संस्तवे श्री जिनेन्द्रम् ॥ १ ॥

कर्म महागिरि वज्र समान सुमोह हरं, मोह महान्ध निवारण भानु रूचि प्रकरं ।

सुन्दर श्री जिन पद्भुज मव्यय सौख्यकरं, जन्म जराभय नाशन मंचति पापहरं ॥ २ ॥

दुरित महावन दावनिर्भ कल्पित वस्तु समर्पण कल्पातरू सदृशं ॥ सुन्दर. ॥ ३ ॥

छत्र त्रय शोभा प्रवृत्तं पांडुर चामर पंक्ति विराजित क्रांतिधरं । सुन्दर. ॥ ४ ॥

सुरगण सेवित चरण युगं, दुर्धर दुष्कृत पंक विशेषण सहस करं । सुन्दर. ॥ ५ ॥

निजित भव्य जनौघ मदं, चितित दायक मत विवर्जित धर्म प्रद । सुन्दर, ॥ ६ ॥

नरामरेन्द्रैः स्तुतपाद पंकजं, श्री भूषणार्थै सुनिभिः प्रवदितं ।

श्रीज्ञान पाथो निधि सौख्य दायधं संपूजयतिस्म पुरंदराः वरं ॥ ७ ॥ अर्घ्यम् ।

॥ द्वितीय जयमाला ॥

घत्ता=तिपयाडण दंति, विण उ करंति, भत्तिय जिण चउवीसयहं ।

विजई रयणांलि, हुक्ख उलांजलि, भत्तिये णिहय रसहः ॥ १ ॥

भिर संताणिहि रिसह जिणु जायहि अजिय जिणुंढु ।

जिणुं दहपय कमले इय कुसुमांजलि होय मणोहर मे लहिए ।
गिरि कैलासे जाइ पहावई जिम रलिए ॥ २ ॥

संभम जिणु सेवं तिपहि, अहियदण दवणेहि ॥ जिणुंदह, ॥ ३ ॥
सुमइ भंडार, असुर तरु हि, पउमप्पहु पउमेहि । जिणुदह० ॥ ४ ॥
मदारिहि सुपास जिणु, चंदप्पह चंपेहि । जिणुंदह० ॥ ५ ॥
भियल्लिय हुल्लिहि सुविहि जिणु सीयल सीय कुसुमेहि ॥ जिणुंदह, ॥ ६ ॥
जिणु सेयांस असोहियहि, वासुब्ज्ज विमलेहि ॥ जिणुंदह ॥ ७ ।
विमल भंडारउ कं इयहि, सु६ अवैहि अणुंतु ॥ जिणुंदह० ॥ ८ ॥
बहुमच कुंदहि धम्म जिणु । रत्तोप्पल शांति जिणुदु । जिणुंदह, ॥ ९ ॥

कुजय हुल्लिहि कुंधु जिणु अर जिणु पारिय हुल्लि ॥ जिणुदह, ॥ १० ॥
मल्लय हुल्लिय मल्लीजिणु, सुव्वयकचणहुल्लि ॥ जिणुंदह० ॥ ११ ॥
खुंम जिणुवरणेवधलिय धि तगरहियेमि जिणुंढु ॥ जिणुंदह० ॥ १२ ॥
पाडल हुल्लि पास जिणु, वड्डमाण कमलेहि ॥ जिणुंदह० ॥ १३ ॥
पोमिउ अज्जउ अठ लई अलियाि अवर चियार ॥ जिणुंदह० ॥ १४ ॥
इय रयणांजलि विणय सह जोणीयाह हुदेई ॥ जिणुंदह० ॥ १५ ॥

गुरु पय पुञ्जहुतिणि लहई जिमनयडउपंसार ॥ जिणंदह० ॥ १६ ॥
 भादय शुक्ल जा पंचमि ए पंचइ दिवस करेहि ॥ जिणंदह० ॥ १७ ॥
 अरजे विणु अमर सह, सो जिउशिवपुर जाया ॥ जिणंदह० ॥ १८ ॥
 इय कुमुमांजलि सयल जिणु मुनिवर अक्खइ एह । निणंदह० ॥ १९ ॥
 वचा-सुरनर वज्जहर, होति मणोहर, पुण्यांजलि विधि जेकरई ।
 तंसगी सुरेसुर पुहवि नरेसर मोक्ख महापुरि संचरई ॥

महाव्यम ॥

॥ अथ पश्चिम दिशि पूजा ॥

आद्यो मेरु जिनार मतोदर्शनांतः स पूर्वी ,
 मेरुश्चान्यो विजय उदितः संस्मृतोऽन्योऽवतारव्यः ।
 तूयोमेरुर्निबिड सुतरुर्मंदरोमाली नामा ।

हृयेतेपांविजलपतिदिशि स्थापये चैत्य विम्बान् ॥

ॐ हौं पंच मेरु पश्चिम दिशि त्रिंशति चैत्यालयानि अत्रावतरान्तर संवौषट् ।
 अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्रमम सन्निहितो भव भव षषट् ॥

सुधा समान शीतलैस्त्रिमार्गगा सरो जलैः सुनीश चित्त निर्मलेः सुवांशुधूलिपेशलैः ।

सुपंचमेरुत्रारुनी दिगाश्रितान् जिनालयान् यजामि तीर्थनायकन् स्मरेथ कुंभसिंहकाव । जलम्

अपूर्व चन्द्र केसरेहिमांशु पाद शीतलै,

र्महामनोज्ञ चन्दनैः द्विरेफराजिनन्दनैः । सुपंचने० ॥ चन्दनम् ॥

अखंड कोटि तंदुलैरेनेक शालि संभवेः

हिमांशु पाद पाण्डुरैः सुवर्ण पात्ररोपितैः । सुपंच. ॥ अश्रुतम् ॥

सरोज जाती चम्पकैः प्रफुल्ल मल्लि मालया ।

नपाप्रहत शालया अमद्विरेफ मालया ॥ सुपंच. ॥ पुष्पम् ॥

नवीन भव्य पापसान्न शर्करारसोचमैः

विचित्रशक नव्य गव्य स्रप भक्त सुंदरैः । सुपंच. ॥ नैवेद्यम् ॥

मसार भाजन स्थितै रनघर्त्तन दीपकैः

स्फुरन्म मृष रानितै विपाखतामसोत्करै । सु पंचमे. ॥ दीपम् ॥

सुपर्न दाह यक्षधूप काकतुंड संभवेः

प्रधूपधूम संचयैरन्त लुब्ध पट्टपदैः ॥ सु पंच. । धूपम् ॥

सदा फलात्र माधवी लङ्गिग पूग दाडिमै ।

सुनालिकेर वीजपूर कर्कटी कषिद्यकैः ॥ सुपंच. ॥ फलम् ॥

अर्भो गंधै रचतैः पुष्प हव्यै, दोषैर्धूपै श्रीफलैश्चन्द्र कीर्तिन् ॥

वारुण्याशा संस्थिताञ्जैन विम्बान् पंचाना श्री मंदराणां यजेहं ॥ अर्घम् ॥



॥ जयमाला ॥

श्रीमन्ना कि क्रीट कोटि क्शिणैरुवापित सर्वदा,
श्रीमन्मन्दर पर्वते चिरतरं शक्रः कृताराधनम् ।

त्रैलोक्योदर जीव सौख्य जनकं धर्माब्धि चंड प्रभं,
वन्देते जिन पुंगवं प्रतिदिनं देवाद्रि मूर्ध्नि स्थितम् ॥ १ ॥

प्रातिहार्यं गण नायक जय जय, अजरामर पद दायक जय जय ।

पाप तिमिर भर भंजन जय जय, विद्याधर गण रंजन जय जय । २ ॥
जनन पयो निधि तारण जय जय, कर्म कलंक निवारण जय जय ।

सुर समाज पद वंदित जय जय, दूषण निखिल निकंदित जय जय ॥ ३ ॥
क्लिष सुभट विखडन जय जय, त्रिशुवन मंदिर मंडन जय जय ।

मुक्ति रमणी वशी करण सु जय जय, सकल दोष परिहरण सु जय जय ॥ ४ ॥
अशरण शरण कृपाधर जय जय, भक्तिक जीव गण सुखकर जय जय ।

गज मद वंद निकन्दन जय जय, गणधर मुनिजान वन्दन जय जय ॥ ५ ॥
घत्ता-जय दोष विहडन, त्रिशुवन मंडन, निखिल जीव शीव सुख करण ।

श्री भूषण वन्दित, पाप निकंहित, ब्रह्म ज्ञान भव भव शरणः ॥ अर्घम् ॥

॥ द्वितीय जयमाला ॥

आर्या-ब्रह्म जिए शुण महं दलियं जिए मयण मणहि ।

समरे सरसति पायं चये वश्य किहिमा किट्टीः ॥

पंच मेरुह अस्सी भवनं, गयदत वीस आधार । भविषण भाव धरि ।

रत्नांकृत हेम जिनालय जिय धरे, पूजू अष्ट प्रकार कपूरे दीपकरे ॥ १ ॥

त्रीस भुवन कुल पर्वत ही, अस्सी गिरी चत्वार ॥ भवि० । २ ॥

सिचोरसु विजयारथ ही, कुरुद्रुमेहश होई ॥ भवि० ॥ ३ ॥

इक्ष्वाकार कुंडल गिरिए, मासुषोचर च्यार च्यार ॥ भवि० ॥ ४ ॥

रुचिके गिरि चक्र जिन भवना, नन्दीश्वर वावन्न । भवि० ॥ ५ ॥

मध्य लोक ए भवन कथा, चउसे अट्टावन्न ॥ भवि० ॥ ६ ॥

लाख चौसठ असुर तणए, चौरासी नागेन्द्र ॥ भवि० ॥ ७ ॥

सुप्रण लाख छिहोत्तर ए छिहोत्तर दीप कुमार ॥ भवि० ॥ ८ ॥

लाख छिहोत्तर स्तनीत कथा, उदधि छहोत्तर लाख ॥ भवि० ॥ ९ ॥

विधुत्कुमर लाख छिहोत्तर ५, रिगुराछहोत्तर लाख ॥ भवि० ॥ १० ॥

दीप कुंबर लाख छिहोत्तर ए छन्युवात कुमार ॥ भवि० ॥ ११ ॥

सात कोड़ी लाख छिहोत्तर ए अकृत्रिम आगार ॥ भवि० ॥ १२ ॥

सौधमें लाख बत्रीस ब्रह्मा, अट्टाबीस ईशान ॥ भवि० ॥ १३ ॥
 सनत कुमार लक्ष बारह कक्षा, आठ लाख माहेन्द्र ॥ भवि० ॥ १४ ॥
 ब्रह्म ब्रह्मोत्तर पुजिइये, चैत्यालय लक्ष चार ॥ भवि० ॥ १५ ॥
 लांतव अरू कापिण्ठे कक्षा, सहस्र पचास उदार ॥ भवि० ॥ १६ ॥
 शुक्र महा शुक्र चैद्यालय ए, पूजूं सहस्र च्यालीस ॥ भवि० ॥ १७ ॥
 षट् सहस्र सतार जुए, जिन आगार अकृत्य ॥ भवि० ॥ १८ ॥
 आनत प्राणत आरुणए,, अच्युत गिरि सतसात ॥ भवि० ॥ १९ ॥
 एकादश शत आगलाए, अधः त्रैवेयक उद्धार ॥ भवि० ॥ २० ॥
 मध्य त्रैवेयक जिन भवना, सात अधिक शतएक ॥ भवि० ॥ २१ ॥
 उर्ध्व त्रैवेयक जिन जाणिये, एफाणु अगार ॥ भवि० ॥ २२ ॥
 नव नवोत्तर नव भवना, पंच पचोत्तर पंच ॥ भवि० ॥ २३ ॥
 व्यंतर अरु ज्योतिष पटले, जाणो आगार असंख्य ॥ भवि० ॥ २४ ॥
 सहस्र कोटि जे जिनप्रतिमा, अकृत्रिम अरचेहिं । भवि. ॥ २५ ॥
 अष्टाषट् सम्मेदाचलए, पवापुरी महावीर । भवि. ॥ २६ ॥
 वासू पूज्य चम्पापुरीच, चरवों चन्दन भंग । भवि. ॥ २७ ॥
 ऊर्जयंत गिरि अरचा करोए, पूजो नेमि जिखद । भवि. ॥ २८ ॥
 शत्रुञ्जय शीखर सोहामणोए, अरचो अष्ट प्रकार । भवि. ॥ २९ ॥

मांगी तुंगी गिरि विद्ध हुवा, गजदधे मुनिराय । भवि. ॥ ३० ॥
 मुक्ता गिरि पात्रागिरिए, तारंगो तारक होय । भवि. ॥ ३१ ॥
 चन्दन चरचौ चूलगिरिए, रेवा तट ऋषिराय । भवि. ॥ ३२ ॥
 अंतरीक्ष श्रु पुञ्जिङ्ग, प्रणमुं लोढण पास । भवि. ॥ ३३ ॥
 सूर्यपुरे चन्द्रनाथ जिन, प्रणमुं पुजूं पाय । भवि. ॥ ३४ ॥
 इन्द्र भूषण अरचा करिए, हरपे गोविन्द गाय ॥ भवि० ॥ ३५ ॥

महाव्ययम् ॥

इति पश्चिम दिशि पूजा सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ उत्तर दिशि पूजा ॥

पर सुदर्शन मेरु रिहोदितः, सुविजयाचल मंदिर मालिनः ।

वनद दिक्षु सुमेरु महीभृतां जिन पतिन सकलान्विनवेशयत् ॥

ॐ हीं उत्तर दिशि विशति जिन चैत्यालयस्थ जिन प्रतिमा समूह अत्र अवतर अवतर
 संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥ अत्र यम सन्निहितो मव भव वषट्
 सन्निवापनम् ॥

हिम पर्वत संभत्र पद्म महानद सुन्दर शीतल नीर भरैः ।

मकरंद महाशर भारित सारस, केसर रंजित गौर तरै ॥

शुभ मन्दिर पंचक ध्यानद् दिग्गत हाटक त्रिंशति चैत्यगृहान् ।

प्रयज्ञामि मनोहर गान सुमंगल नृत्य महोत्सव बाद्यवरान् ॥ जलम्
धनसार सु कुंकुम मिश्रीत शीतल नंदन चन्दन पंक भरैः ।

वर गंध समाश्रित षड् षड् संतति मञ्जुल गुंजन रम्य तरैः ॥ शुभ. चन्दनं ॥
मचकुन्द कलाधर फेन समुज्वल निर्मल कोमल तन्दुलकैः ।

मणि भूषितं भासुर कांचन बन्धुर भाजन रोपित सौम्य तरैः ॥ शुभमं० ॥ अक्षतं ॥

नव कैरव केतक चरुपक पंकज कुन्द कदम्बक मन्त्रि सुमैः ।

स्फुट केसर रक्तकनकव्यल विगक, मेचक बालक मूल दलैः ॥ शुभमं० ॥ पुष्पम् ॥

वर मोदक सडक खज्जक पूषक हृषक व्यंजन हव्य रसैः ।

घृत दुग्ध महेच्छुति मिश्रित पायस तिवक्तक शाक सुखाद्य रसैः ॥ शुभमं० नैवेद्यम् ॥

दश दिग्गत लोचन बाधक तामस संचय भेदन हूर्य करैः ।

परितेजित रत्न कदम्बक शोभित दीर्घशिखाधर दीप वरैः ॥ शुभमं० दीपम् ॥

अपधूष धनंजय सुप्त सुगन्धि महागुरु निर्गत धूप चयैः ।

निल सौरभ लुब्ध मधुव्रत निर्मित सुन्दर निष्कण चारु तरैः ॥ शुभमं० ॥ धूपम्

सहकार लता फल दाडिमचिर्मट पक्व कपिथक पूग दलैः ।

कदली फल जम्बल चोच सदा फल गोस्त निकोमल निम्बु फलैः । शुभ० फलम्

विमल कमल धारा, गंध शाल्य ब्रतोधिः

विविध कुसुम हव्यैर्दोष धूपैः फलोद्वै. ॥

अखिल परममेरु दिविस्थितान् चैत्य विम्बान्,

परचर इह सु श्री भूपणशचंद्रकीर्तिन् । अर्घ्यम् ॥

❀ अथ जयमाला ❀

आनंदामृत संरूपं, चिदानंदं सदोदयं ।

नरामरेन्द्र संसेव्यं, सर्वज्ञं संस्तुवे शुदा ॥ १ ॥

शक्र गणैः कृत पूजन मष्ट विधंसुतरं, गर्भ कलक विमुक्त मनूपम सौख्य फर ।

श्री जिन विम्ब, गणं प्रयजे, चिर याग हरं, धर्म सुर द्रुम वर्धन पुष्कर वारि धरं ॥२॥

केवल लोचन दर्शित सुन्दर मूर्ति पथं, पंचमगत्युपसर्पण सत्वर धर्म रथ ॥ श्रीजिन० ३ ॥

दुर्गातिदुःख तमोभर भंजन भानु भरं, जन्म बरांतक वज्रित क्लिन्न पंक हरं ॥ श्रीजिन० ४ ॥

शुद्ध नयाश्रित तत्व प्रज्ञान स्रतरं, जन्म पयो निधि शोषण कुंभ भवं प्रवरं ॥ श्री जिन० ५ ॥

श्री आदि विवर्जित मूर्तिं मखंडित लक्ष्मी करं, अन्तविवर्जित रूपमन्त सुत्रोध धरं ॥ श्रीजिन० ६ ॥

विधाय पूजां जिन नायकस्य, शक्रोति भक्तया गिरिराज मूर्द्धिनं ।

श्री भूपणं मुक्ति पद प्रदेयात् सुखाधिकं ज्ञान पयोधि धम्मम् ॥ अर्घ्यम् ॥

॥ अथ द्वितीय जयमाला ॥

सुरनर पति वंधं, नाग नगेन्द्र वंधं,

सकल भविक सेव्यं, नत्तिकं नत्तिकीभिः ।

जनन जलधि पोतं, पापतापापहारं,

जिन वर वर चैत्यं, स्तौविकमार्गि हान्यैः ॥

वन्दौ नाग सुधन जिन दास, कोड़ी वि साठ बहत्तर लाख ।

व्यंतर ज्योतिष के जिन गेह, असंख्य भवियण वन्दौ तेह ॥ १ ॥

लाख चौरासी सत्ताण सहस, तेविसह वन्दौ स्वर्ग निवास ।

मेरू सुदर्शन मध्यह लोक, विजया चल दोये गत शोक ॥ २ ॥

मेरू चतुर्थह मंदिर नाम, विद्युन्माली छे जिन ग्राम ।

पंचह मेरू असी जिन गेह भवियण वन्दौ पूजौ तेह ॥ ३ ॥

षट् कुल जिनवर गेह छत्तीस, विजयार्थ सत्तर सुईश ॥

सहस्र कूट वन्दौ जिन देव, सीता सीतोदा करू कंठ सेव ॥ ४ ॥

अष्टापद वन्दौ जिनतार, आदि जिनेश्वर गय भव पार

वीध जिनेश्वर पूजो संत, सम्मेदाचल सुक्ति लहंत ॥ ५ ॥

वासपूज्य चम्पापुरी देव, वर्धमान पावापुरी सेन

गिरनारी छे नेमि जिनंद, पूबौ भवियण परमानंद ॥ ६ ॥

पाण्डु पुत्र मुनि अष्टद कोडि, शत्रुं जय वन्दौ कर जोडी ।

हस्तिनागपुर कुरू वंशी जिनंद, शांति कुंथु अर सेवें फणिन्द ॥ ७ ॥

गणारसी जिन पार्श्व सुपार्श्व, जे वंदे नाशे भव त्रास ।

नाग नरामर चर्चित पाद, लोहण पार्श्व हरे त्रिलवाद् ॥ ८ ॥

वंशस्थल गिरी जिनवर धाम, आगल देव धारा सन ठाम ॥

तेह नयर वन्दौ वर्धमान, अम्बापुरी चिंतामणि भाण ॥ ९ ॥

मुक्ता गिरि मुनि मुक्ति निवास. तुंगीश्वर पूरे मन आश ।

वन्दौ गज पन्था गिरिराय, वाघन गज विद्याचल ठाय ॥ १० ॥

कुलपाक वन्दौ माणिक देव, गोम्मट स्वामी करू नित सेव ।

नव निधि वन्दौ देहि शिव वास, सेल गांव कमेठश्वर पास । ११ ॥

अम्बापुरी श्री मल्लि जिनेश, पैठण सुखद मुनि सुत्रतेश ।

एरण्ड वेली नेमीश्वर देव, त्रिभुवन तिस्रक खंडव पुर सेव ॥ १२ ॥

अंतरीह वन्दौ जिन पाम, श्रीपुर नयर पूरे मन आश ।

होला गिरि वन्दौ शंख जिनेश, तारंगे पूजौ मुनि ईश ॥ १३ ॥

सुबुगढ़ जिन त्रिभुव मनोहार, आदि नाथ पालें भवपार ॥

वड़ावली पूजे अभी भरा पास, धुलेवनयर ऋषभजिन भाप । १४ ॥

पूजौ माण्डव गढ़ महावीर, उज्जयनि अर्वात थीर ।

मालव मण्डन मनसी पास; धरणेंद्र पद्मवाती सेवें जास ॥ १५ ॥

श्रवणाचल अही कीड़ी मुनीश, बड़गामपूजौ गौतम गणीश ।

जम्बू स्वामी मथुरा पुर थान, सेठ सुदर्शन पाटली पुत्र जान ॥ १६ ॥

ग्वालियर गढ़ वन्दौ जिनराय, बावनगज पुर छे सुख काय ।

वाठरड़े वन्दौ जिनदेव, अखिन्धो पार्श्व करे सुर सेव ॥ १७ ॥

जाम नयर लय सहित आदीश, वर्धमान सारंग पुर ईश ।

रावण पास अचलपुर राय, पूज्यपाद मुनि प्रथमित पाय ॥ १८ ॥

डूंगरपुर वन्दौ मल्लीनाथ, सागवाड़े आदि भव पाथ ।

वाह्य पूज्य बांसवाड़े धाम, खांधु नयर शीतल जपौ नाल ॥ १९ ॥

वन्दौ जलधिमांही जयवंत, काशगीउ बाहुवली संत ।

नन्दीश्वर जिन गेह भावन्द, कुण्डल गिरिवन्दौ जिनधन् ॥ २० ॥

पूरब पश्चिम जिनवर गेह, उत्तर दक्षिण वन्दौ तेह ।

बीस जितेश्वर क्षेत्र विदेह वन्दौ भवियण शाश्वत तेह ॥ २१ ॥

चन्द्र नक्षत्र सु भानु विमान, ताराग्रह वन्दौ जिन भान ।

त्रिभुवन मांहीं जिनवर सार, वंदत भवियण लहे भवपार । २२ ॥

धत्ता=जय जिनवर स्वामी, पदशिर नामि, फरजोड़ी मनभाव धरी ।

जय सागर वंदित, पाप निकंदित, रत्न भूषण गुरु नमस्करी ॥ २३ ॥

इति जय माला पूर्णार्धम् ॥

❀ समुच्चयाष्टकम् ❀

निर्मलेन यन्त्रेण, वाग्निना मल हरिणा, ।

पंच मेरुस्थं त्रिम्बानां, कर्मभ्यां पूजये मुदा ॥ जलम् ॥
 मलया चल जतेन, चन्दनेन सुगन्धिना ॥ पंचमे० ॥ चन्दनम् ॥
 धमलान्त पुंजेन, खड्ग वज्रित शोभिना ॥ पंचमे० ॥ अक्षतम् ॥
 जाति चम्पक पुष्पेन, केतकादिवनेन च ॥ पंचमे० ॥ पुष्पम् ॥
 द्रुत पाचीत पञ्चान्नैः शाल्योदनेन श्रीमतः ॥ पंचमे० ॥ नैवेद्यम् ॥
 तमैन्नगवि नाशाय, रत्न दीपेन द्योतिना ॥ पंचमे० ॥ दीपम् ॥
 सुगन्धी धूप वज्रेण नक्र प्रियेण सतां सटा ॥ पंचमे० ॥ धूपम् ॥
 श्री फलाञ्ज कपित्थादि, फलेन फलदायकान् ॥ पंचमे० ॥ फलम् ॥
 तोयादि षु द्रव्येण शिम सौख्य विधायकान् ॥ पंचमे० ॥ अर्घ्यम् ॥

॥ जयमाला ॥

जम्बू द्वीप वरे सुदर्शन इति, द्वीपे तथा धातकी,

खड्गे श्री विजया चलौ निगदितौ श्री पुष्कराङ्गे द्वये ।

द्वीपे मन्दर विद्युदादि पदतौ मालाह्वयो मन्दरौ,

तेषु श्रीबिन्दु मन्दराणि सततं सन्त्येव सवर्णयः ॥ १ ॥

भद्रशाल विपिनाश्रय मिष्टं, दिबुजतसपु जिन संदिष्टं ।

पंचसु मेरु जिनालय वारं, भव्य जनाय त्रिताघनिवारं । २ ॥

एकीकृत्य सु विशति संख्य, केवलनेत्र विलोकित संख्यं ॥ पंचसु, ॥ ३ ॥

बन्धन देश्च पिता दर्वा सेयं, सौमन शेष्व पितादृश जेयं । पंचसु ॥ ४ ॥

पाण्डुकारुम गहनैश्वधेयं, ह्येवमशीति जिनालयमेवं ॥ पंचसु ॥ ५ ॥

रत्न विनिर्मित बहु सोपानं, सोचित समतल कोमल मानं ॥ पंचसु ६ ॥ ६ ॥

दुर्गतय नाना विधि चित्रं, खात त्रय जल विम्बित चित्रं ॥ पंचसु ॥ ७ ॥

कांचन मय दृढ भिति विशालं, नाना स्तंभ विचित्र विशालं । पंचसु. ॥ ८ ॥

कांचन कुंभ विराजित शृंगं, बहुधा वृद्ध विकुंजित शृंगं । पंचसु ॥ ९ ॥

अंतरीक्षरि चूम्बित भागं, किन्नर तुम्बर गीत सुरागं । पंचसु. ॥ १० ॥

भवयान्तर्गत मानस्थंभं, गोपुर मंडित मानस्थंभं । पंचसु. ॥ ११ ॥

वृक्षा शोक विराजित मध्यं, कल्पवृक्ष कुसुमोच्चय मध्यं । पंचसु. ॥ १२ ॥

मेदुरनाद चतुर्विधनाद्यं, वीणवैणु मृदंग खाद्यं । पंचसु. ॥ १३ ॥

डिडिम कर्भर ताल कंसालं, मद्रतार ख मूर्छितमालं । पंचसु. ॥ १४ ॥

सुर ललना ललिता ख नृत्यं, हाव भाव रस विभ्रम कृत्यं । पंचसु, ॥ १५ ॥

नवरस नाटक लौला खेलं, परिहित नवा नव कोमल खेलं । पंचसु, ॥ १६ ॥

नंद नंद जय बहुराणं, पुष्पसु वृष्टि गत परिभाणं । पंचसु, ॥ १७ ॥

अभिनव बहुतर निर्मल दीपम् काला गुरु भव घट वरधूपं । पंचसु, ॥ १८ ॥
 निर्मल धतुं ल मौञ्जिक मालं, दशविध नाना केतन मालं । पंचसु. ॥ १९ ॥
 क्रोमल निष्कण किकथी नादं, भव्य मुख निर्गत साधुवादं । पंचसु. ॥ २० ॥
 चित्र विचित्रित तोरय नालं, विविध खनांचित वंदनमालं । पंचसु. ॥ २१ ॥
 सुरभि समुज्जल चामर वार, चैत्यधृत्त बहुधा सुखकारं । पंचसु. ॥ २२ ॥
 अष्टोत्तर शत हाटक कुंभुं, तावत्परिमित दर्पण लभं ॥ पंचसु. ॥ २३ ॥
 पीठोषविष्ट जिनवर देवं, सकल लोक विरली कृतमोहं ॥ पंचसु. ॥ २४ ॥
 भामण्डल मडित जिन देहं; भविक लोक विरली कृतमोहं । पंचसु. ॥ २५ ॥
 योगीश्वर सुविहित तनुयोगं, तदुपदेश बीतनुकृत भोगं । पंचसु. ॥ २६ ॥
 पुष्पाञ्जलि विद्यागत शक्रं, तदनुशांगत वरसु चक्रं ॥ पंचसु. ॥ २७ ॥
 भाद्रव शुक्ल तर पंचम घसे, सममारब्ध चतुर्विध रसे । पंचसु. ॥ २८ ॥
 त्रिसंध्यं विहित सकल सपर्यं, सोत्र सु जाप्यांचित परिवर्यं । पंचसु. ॥ २९ ॥

काष्ठा संघ पुरंदराद्रि महितान् श्री मेरु चैत्यालयान्

अहं द्विमन्त्र विराजितान् बहुतरान् श्री भूषणालंक्रतान् ॥

तीर्थं भोवर चन्दनाक्षत शुभैः नैवेद्य दीपैर्वै.

पूपैःपञ्च फलैर्महामि महतः श्री वन्द्रकीर्तिन्सदा ॥ ३० ॥

अर्घ्यम् ॥

॥ अथ द्वितीय जयमाला ॥

श्रीमद् वृषभ तीर्थेशो, त्रिनेद्रोऽनित नाम भाक्
संभवो भव संहारी, शर्म कार्योभिनन्दनः ॥ १ ॥

सुमतिः सुमतीशानो, श्रीमान्प्रब्र प्रभः प्रभुः ।

सुपाश्वो भगवान्पूज्यश्चन्द्रप्रभजिनेश्वरः ॥ २ ॥
पुष्पदत्तो लसत्कुन्द दन्तः शीतल तीर्थराट् ।

श्रेयान् श्रेयो विधाताच, वासुपूज्यो वृषार्चितः ॥ ३ ॥
विमलो मल संहर्ता, तीर्थेशोऽनंत दायकः ।

धर्मो धर्मं विदां मान्यः शांतिं षोडश तीर्थराट् ॥ ४ ॥
कुंथु कुंठित दुर्मागो, भगवानर संज्ञकः ।

मल्लिकाम महामल्लो, विश्वजिन्मुनिसुव्रतः ॥ ५ ॥
नमि नम्र सुराधीशो, नेमीर्मदन मर्दनः ।

पार्श्व पद्मेन्द्रसंपूज्यो, महावीरोन्त्य तीर्थकृत ॥ ६ ॥
एतेऽवसर्पिणी जताश्चतुर्विंशति तीर्थपाः ।

श्री ह्रीं तुष्टि महाकीर्तिं तुष्टिदाः सन्तु शाश्वतम् ॥ ७ ॥

॥ महार्घ्यम् ॥

सकल मेरु जिनालय वासिनो, गगन वेदपडाष्टमितार्जनाः ।
ददतु शर्म निरंतरमव्ययं, सकल भव्य जनेभ्य इहाचिंताः ॥
॥ इत्याशीर्वाद ॥

(इति पुष्पाञ्जलि विधानम्)

॥ पन्च मेरु उत्थापन विधि ॥

(यह विधि खास नर गुजरात प्रान्त में प्रचलित है)

भाद्रपद शुभला नवमी के दिन पूजनादि क्रिया हो जाने के पश्चात् निम्न विधि पूर्वक मेरु उत्थापन करे । सर्व प्रथम निम्न पाठ पढ़ते हुये नीचे से लगाकर ऊपर तक एक एक मेरु को हाथ लगावे (स्पर्श कर आशीर्वाद ले)

१ पन्च मेरु २ द्वाई द्वीप ३ एक सौ सितर क्षेत्र ४ अस्ती चैत्यालय
५ पद्मनावती माता कहती हैं, शासन देवी सुनती हैं यहां करे सो वहां पावे वहा करे सो यहां पावे ।

सलिल चन्दन पुष्प शुभाक्षरचरु सुदीपसुशूपफलाढ्यकैः ।

धवल मंगल गान रवाकुलैः जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अर्घ्यम् ॥

ऊपर का श्लोक पढ़ कर अर्घ्य चढ़ावे एवं आरती उतार कर निम्न आशीर्वाद पढ़े ।
पांचां मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करुं प्रणाम ।

महासुख होय, महा सुख होय, देखे नाथ परसुख होय ॥ १ ॥

पुष्पाञ्जलि चोपगकर नमस्कार करे एवं नीचे के मेरु की प्रतिमाजी को उत्थापन कर वेदी पर विराजमान करे । इसी प्रकार ऊपर के मेरु की भी अलग २ विधिकर (अर्घ्य चढ़ाना, आरती उतारना, आशीर्वाद व नमस्कार करके) पांचों मेरु की प्रतिमाजी उत्थापन करे ।

जम्बू धातकि पुष्कराद्ध वसुधा, क्षेत्र त्रये ये भवा
श्चन्द्राम्भोज शिखण्डि कण्ठ कनक प्राष्टुद्धनाभाजिनः ।
सम्यग्ज्ञान चरित्र लक्ष्यधरा दग्धाष्टकर्मैधाना
भूतानागत वर्तमान समये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।

ऊपर का श्लोक पढ़कर पुष्पाञ्जलि क्षेपण करे पश्चात् मेरुजी उत्थापन कर यथेष्ट स्थान में रखदे ।

॥ इति मेरु उत्थापन विधि ॥

❀ पुष्पाञ्जलि पूजा ❀

आदौ दर्शन यो मेरु विब्रयोप्यचल स्थितः ॥
चतुर्थो मंदिरोनाम; विद्युन्माली सु पंचमः ॥

ॐ ह्रीं पंच मेरुस्थ प्रतिमाभ्यो अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं ॥
ॐ ह्रीं पंचमेरुस्थ प्रतिमाभ्यो अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा, प्रविष्टापनं ॥

ॐ ही पंचमेरूस्थ प्रतिमाभ्यो अत्र मम सन्निहितो भव २ वपट् । सन्निधानं ॥

पुष्पांजलि षंत्र स्थापनम् ॥

स्थानान्सुनर्घ्यं प्रतिपति योग्यान्, सद्भाव सन्मान जलादिभिरच ।
पुष्पाञ्जलिभिर्द्रोपदादि मासे, समर्चयत्पंच दिनानि भक्त्या ।' ६ ॥ जलं ॥
श्रीखंड कर्पूर सु कुंकुमाद्यैः, गंधैः सुगन्धी कृत दिग्बिभागे ।

पुष्पांजलि भाद्र० ॥ चन्दनम् ॥

शाल्यचतै रक्षत दीर्घगात्रैः, सुनिर्मलैश्चंद्रकशावदतैः ॥ पुष्पांजलि० ॥ अक्षतं ॥
अंभोज नीलोत्पल पारिजातैः कदंब कुंदादि वर प्रसूनैः ॥ पुष्पांजलि. ॥ पुष्पं ॥
नैवेद्य कैः कांचन रत्न पात्रैः न्यस्तै रूद्रस्तै हरिणासुहस्तैः ॥ पुष्पांजलि० ॥ नैवेद्यम् ॥
दीपोत्करै र्ध्वस्त तमोभिद्यतैरूद्योदिता शेष पदार्थ जातैः ॥ पुष्पांजलि० ॥ दीपम् ॥
तरुत्थ कृष्णागुरु पद्मनाद्यैः संचूर्णै र्जैरुत्तम धूस वर्णैः ॥ पुष्पांजलि० ॥ धूसम् ॥
लंबिग नारिग कापित्थयूगैः श्रीमोचचोचादिफलैःपवित्रैः ॥ पुष्पांजलि० । फलम् ॥
श्रीखंड कर्पूर सुगंध वामिः, फलैश्च पुष्पाक्षत धूपनाद्यै ॥
पुष्पांजलि भाद्रपदादिमासे, समचयेष्वपंच दिनानि भक्त्या ॥ अर्घ्यं ।

॥ जयमाला ॥

घटा-पणविनि सुपसरणउ, कंचण वरणउ, रिसिह णाह णिञ्जिय मयणु ।
जगि धम्म पयासणु, कम्मविणासणु, असुरा सुर नर शुय वलणु ॥ १ ॥

वास्तुछंद-चउणीकायहं चउणीकायहं मिलिय सुर वरहिं ।

कैलास पव्वय सिहरे, भारे आसिजे जिण पयडिय ।

वरगीय मंगल रवे कणरहि, पुअणु पुज्जउ कंठिय ॥

पोमा वैजा विरु कहिय पव्भावई सुयसएण ।

मा कुसुमांजलि लेवि करि, जिण चौवीसह दिएण ॥

सु दिमि दिमि महल करड कंसाल, सुतिविलिय भल्लरी भेरी रसालं ।

सुगेय विलंबण देई सुरसत्ती, सुणच्चहिं कियणर सुरणर पत्ती ॥ १ ॥

जलंमि सुचंदण अक्वव सार, सु फुल्ल चरुमिय दीवय फार ।

सुगंधय धूव विचिच फलोहं, शुष्पांजलि णिम्ल दिएण ससोहं ॥ २ ॥

रिसिसर केवल णाय पयासु, सु पुउउहु संताण्हि दुहणसु ।

अणोवम जाई हि अज्जिउ जिणंदु, सेवतिहि संभव देव अणंदु ॥ ३ ॥

पयच्चहु अहिणंदणु दभणेहिं, णिवालिय सुमइ हि पूज रएहीं ।

पफुल्लहि पउप्पहु यउमेहिं, सुपास सुहंकरु वरदरोहिं ॥ ४ ॥

णिरंजणु सासय थाण णिवासु, सु चम्पय चंदप्पहु ससिभासु

सुवियलहि सुविहि जिणंदु अवाहु सुपरिमण पाडल सीयल णाहु ॥ ५ ॥

सेयंसु सुहंकरु वर मंदारि, सु पुज्जहु वासु पुज्ज कचणारि ।

सु किचिहि णिम्लू विमलू करंवि, अणंतु असोयहि णिरु णिकयंवि ॥ ६ ॥

सु कुञ्जय हल्लहि वम्भु अलेउ, रतुपलि संति जिणेसरु देउ ।

नगत मं कुं थु सुप्तजह कुंदि, जिणेसरु जासु वणहि अरु वंदि ॥ ७ ॥
वहुविहि मल्लिहिं मल्लि चयारि, सु वउलहि मुणिसुव्वय तिउरारि ।

सु मुज्जल आयीचरा णमि पायः करजलि येमि जिणह मुणाय ॥ ८ ॥
फणा मणि मडिउ पास जिणंठु, चडावहि वहुविहि वर मचकुंठु ।

जुदेवध दुल्लहु वर कणवीरु, सु लेवि जिणेसरु पुल्लहु वीरु ॥ ९ ॥
जि ईच्छहि सासय सुक्खु अतुल्लु, ति इणि परि जिणह चडावहि फुल्लु ।

जे मेरु हि असिय जिणेसर संति, ति वदमी विस जिजेगमदति ।
जोइसी कर्प्प, पुष्पांजलि ताह जिणेसर अप्पि ॥ १० ॥

कुल गिगि तीस अक्किट्टिम देव, वलारह असीयहं कियसुर सेयं ॥ ११ ॥
वियठिहि सत्तारि मउ जिणगेहं कुरुट्टिम जिणंदह गयमणोह ।

जे कुंजल पवयण जिण चचारि, रुजय गिगि चारि जिणेह चयारि । १२ ॥
चयारि मिईगा रव जगचंद, मणोत्तरि तेविय जाणि जिणंद ।

जे संठीय रांदीसरी वावणण, ति सासु सुहु महु देउ पसरण ॥ १३ ॥
अठाइयडिबिहि विहिमि समुह, पणारस कम्मपय भूमि जिणंद ।

अक्किचिम किच्चिम जे जिण भेहु, पुष्पांजलि ताहं जिणेसर देहु ॥ १४ ॥
णसुंसइ माघ मुणिसर चंडु अममणि माघव रांदि मुयिन्दु ।

आक्किचिम किच्चिम जे सुवकीत्ति, ति पयाविहु विमल पयासि विभत्ति ॥ १५ ॥

जिथेसरु वस मंगल संयसारू, ति ईसर मुत्ति रमणि गलि हारु ।
जि.णेसर जे पुष्पांजलि देई, सो सासय सुकलु अणंतु लहेई ॥ १३ ॥

घत्ता-सुरनर विज्जाहर, होति मणोहर; पुष्पांजलि विहि जे काहि ।
ते सग्गि सुरेसर, पुहवि णरेसर, मोक्ख महा पुरि संचरहि ॥ १७ ॥ पूणार्घ्यम् ।

॥ इति पुष्पांजलि पूजा समाप्तम् ॥

❀ अथ अष्टाहिका पूजा ❀

द्वीपेऽपि नन्दीश्वर संश्लेहि, गिरीन्द्रवर्जा जिन मुख्य संस्थान् ।

जिनेन्द्र गेहान् मणि हेम मूर्तिं, द्वियन्त्र सख्यः सहितान्नमामि ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर दीपे द्विपन्चाशज्जिनालस्थ प्रतिमा समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र
तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव षट् ॥

कर्पूर पूर परि वृरित भूरि नीर, धाराभिराभिरभित श्रम हारिणीभिः ॥

नन्दीश्वराष्ट दिवसानि जिनाधिपाना, मानन्दतः प्रतिकृतिं परिपूजयामि ॥ जलम् ॥
हृद् प्राण तर्पण परैः परि तर्प सर्वै, गर्न्धैः सुचन्दन रसैर्घन कुङ्कुमाद्यैः ॥ नन्दीश्व ॥ चन्दनम् ॥
उन्निन्द्र चन्द्र विलसत्किरणावदातै, सत्कुन्दकोरकमिमैः कलमान्ततौघै । नन्दीश्व ॥ अक्षतं ॥
मंदार चारु हरिचन्दन पारिजात संतान भूरुह भवैः कुसुमैर्विचित्रैः ॥ नन्दीश्व ॥ पुष्पम् ॥
सिद्धै विशुद्ध नव कांघन भाजनस्थैः पीयूषमिष्ट ललितैश्चरुभिर्विचित्रैः ॥ नन्दीश्व ॥ नैवेद्यम् ॥

ध्वस्तांधकारनिकैः कनकावदातै दीपैः प्रदीपित समस्त दिगन्तरालैः ॥ नन्दीश्व ॥ दीपम् ॥
धूपै रमन्दतर सौरभ बाल गुंजड्, भृंगकुलैरगुरु चन्दन चन्द्रमिश्रैः ॥ नन्दीश्व ॥ धूपम् ॥
कम्राप्रदाडिम मनोहर मालुलिंग, जाती फल प्रसृति सौरभ सत्फलाद्यैः ॥ नदीश्व ॥ फलम् ॥

नन्दीश्वरेस्मिन् विविधमणिगणा क्रान्तक्रान्ताङ्ग कान्ति ।
प्राग्भारप्रास्त चन्द्रद्युतिकर निकर, ध्वस्त मिथ्यान्यकारम् ॥
चैत्यालयारचोज्वल कुसुम फलाद्यैरनिन्द्य प्रभावै ।
भक्त्यायेभ्यर्चयन्वि स्फुटमसम सुखां ते लभन्ते विमुक्तिम् ॥

॥ अर्घ्यम् ॥

॥ जयमाला ॥

आर्या-कम्पित्वा शयरी मण्डणस्त विभलस्त विमलणालस्त ।
आरत्तियवर समये, एच्चति अमर रमणीओ ॥ १ ॥

॥ अन्द ॥

अमर रमणीउ एच्चति जिणमंदिरं, विविह वर ताल तेरहि संगमपुरं ।
जडिय बहु रयण चामीयरं पतयं, जोइयं सुन्दरं जिणव आरत्तियं ॥ २ ॥

रुण भडंकारणे वरघचल युष्टिया, मोतिया दामवच्छच्छले संठिया ।
गीय गार्थति एच्चंति जिणमंदिर, जोइयं सुन्दरं जिणव आरत्तियं ॥ ३ ॥

केस भरि कुसुम पय सरस ठोलंतिया, वयण छणइंद सम कंवविय संतिया ।

कमलदल रायण जिएा वयण पेखंतिया, जोइयं सुन्दरं जिएाव आरत्तियं ॥ ४ ॥
इंद धरिणिन्द जकखेन्द वोहंतिया, मिलिव सुर अरुर घण राभि खेलंतिया ।

केनि सिय चसर जिएा भिन्न ठोलंतिया, बोइयं सुंदरं जिएाव आरत्तियं ॥ ५ ॥

गथा-एांदी सुरम्मि दीवे बावणण जिएालयेसु पढिसायां
अट्टाहि वर पव्वे इन्दो आरत्तियं कुणइ ॥ ६ ॥

छंद-इंद आरत्तियं कुणइ जिएा मंदिरं, रयण मणि किरा कसले हि वर सुन्दरं ।
गीय गायांति राचवंति वर याडियां, तूर वजंति याया विहण्णडियं ॥ ७ ॥

गथा-एककेक्कम्मि य जिएाहरे चउ चउ सोलह वावीओ ।
जोयण लवख पमाणं, अट्टम रांदीसुरं दीवे ॥ ८ ॥

छंद-अट्टमं दीव रांदीसुरं भासुरं, चेत्य चैत्यालये वंदि अमरासुरं ।
देव देवीउ जह धम्म संतोच्चिया, पंचमं गीय गाधंति रस पोच्चिया ॥ ९ ॥

गथा-दिव्वेहिं खीर रां रेहि गंधट्टइहि कुसुममालाहि ।
सव्वसुर लोय सहिया पुज्जा आरंभए इंदो ॥ १० ॥

छन्द-इंद सोहम्मि सग्गाव वज्जोत्तयं, आपउ सज्जि एरावयं वर गयं ।
सव्व दव्वेहिं भव्वेहिं पूजा करा मिलिव पडि वक्खया तस्स विहु देसया ॥ ११ ॥

गाथा-कंपाल ताल तिमली, भल्लर भर भेरि वेणु विण्णाओ ।

वल्जति भाव महिया, भव्वेहि णउज्जिया सव्वे ॥ १२ ॥

छन्द-सव्य दव्वेहि भव्वेहिं कार ताडियं, सहए संभ्रिणण षिद्धाडयं ।

भ्रिगिनिजं भ्रिगिनिजं वज्जये भल्लरी, णव्वये इंद इदायणी सुंदरी ॥ १३ ॥

एयए कज्जल सलायामयं दिण्णयं, हेम हीरालयं कुंडलं कंकरणं ।

भ्रुण्ण भ्रुंः तंपि ये शेवरं, जिण्णव आरत्तियं जोइयं सुंदरं ॥ १४ ॥

दिट्ठिणामग्गि अंगुलिय दावंतिया, खिण्हिं खिया खयहिं जिण्ण विभव्व जोइत्तिया ।

णारि णव्वत्ति गायंति कोइल सुरं, जिण्णव्वआरत्तियं जोइयं सुंदरं ॥ १५ ॥

हणु भुणं करणे वरम कर कंकरण, णाइ अंपंति जिण्णणाहवे वहुगुणं ।

जुवइ णव्वत्ति सुप्रंति ण उ णिय घरं, जिण्णव्व आरत्तियं जोइयं सुंदरं ॥ १६ ॥

कंठ कदलीह मण्णिहार सुल्लंतऊ, जिण्णइ थुइ थुई सोणाय संतुट्टउ ।

विविह कोऊइल रयहि णारी एरं, जिण्णव्व आरत्तिया जोइयं सुंदरं ॥ १७ ॥

धत्ताः--आरत्तिय जोवइ, ऋम्मइ धोवइ, सम्भावण हल्लहु लहइ ।

नं नं मण भावइ त सुह पावइ, दीणु वि भासुया मासुयाइ ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीरवाद्दीपे, द्विपचाशब्दिनालेभ्यो अर्धं ॥

यावति जिन चैत्यानि, विद्यते भुवन त्रये ।

तावन्ति सततं भक्त्या त्रिः परीत्य नमाम्यहं ॥

॥ इत्याशीविद्धि ॥

॥ श्री नन्दीश्वर द्वीप पूजा ॥

मालिनीच्छंदः—श्रीमतीर्थार्थीश संपाद पद्मौ, नत्वा पूजामष्टमस्याष्टधाहं ।

वक्ष्ये भक्त्या द्वीप नंदीश्वरस्य द्वापंचाशच्छैल चैत्यानि तस्य ॥ १ ॥
पंचत्राध्वष्ट हव्या, सरसेव्यंक प्रमाणकैः, योजनैर्विस्तृतो द्वीगो, भाति नंदीश्वरोष्टमः ॥ २ ॥
पंचमाष्ट तु सप्तद्वि, हव्याशांतमितैरलं, तन्नाम्ना वेष्टितोऽब्धिना, योजनैर्विस्तृतो नवैः ॥ ३ ॥
तच्चतुर्दिल्लु चत्वारोजनाख्योमत्यगोत्तमः, षोडशैश्चतुर्दिल्लु दीर्घिकासत्य मुष्मिता ॥ ४ ॥
दधिमुखमिथाशैला, दीर्घिकामध्यसंस्थिता; षोडशा रेजिरे नित्यं, सागरे कलशा इव ॥ ५ ॥
तद्वापी कोणयोः संस्था, द्वौ द्वौ हि वापिका प्रति, द्वात्रिंशत्सिकृच्छैलास्ते सर्वेवन राजिताः ॥ ६ ॥
तत्रैकैकं समाख्यातं, चैत्य स्वर्णं मय जिनैः बाणाश्च योजनोतुंगं तदर्धं पूर्वं पश्चिमं ॥ ७ ॥
शतैक योजनायामं, दक्षिणोत्तर भागयोः द्वापंचाशत्सु चैत्यानि, द्वापंचाशत्तयोरपि ॥ ८ ॥
एवं मणि मयैश्चूर्णैः सप्त द्वीप युताष्टकं । लिखित्वा द्वीपमुत्तुंगं पूजयताह्वदन्वितं ॥ ९ ॥

॥ एतत्पठित्वा पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

❁ पूर्व दिशि स्थित चैत्यालयपूजा ❁

नन्दीश्वरे हरि दिशि स्थित कञ्जलाद्रि, मुख्य त्रयोदश गिरि स्थित चैद्य षंक्तिः
 संस्थापयामि शुचि कार्तिक फाल्गुणौरु शुक्लाष्टमी प्रभृति तो दिवसाष्ट कांतम् ॥
 ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे पूर्व दिशि संस्थित तांजनगिर्यादि पर्वत वर्त्यकृत्रिम त्रयोदश चैत्यालयानि
 अत्र अवतर अवतर संवौषट् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

सन्निधिकरणं ॥ पुष्पांजलिं विप्रेत् ॥

रेवा कलिन्द वनया सुर सिधु सिन्ध्रा, नीरैः सुगधतर वस्तुयुतैर्यजेऽहम् ।

नन्दीश्वरे हरि दिशि स्थित कञ्जलाद्रि, मुख्य त्रयोदश गिरि स्थित चैत्य गेहाम् ॥ जलम् ॥

काशमीरजागुरु सिताप्रसाधिमिश्रैः, संलेपयामि मलयोद्भूतचन्दनैश्च ॥ नन्दीश्व० ॥ चन्दनं ।

कुन्देन्दुहार हार हिम मौक्तिक तुल्य वर्णैः, गर्ग्येय पात्र निहितैः कञ्जसैर्यजामि ॥ नन्दीश्व० ॥ अद्भतं ।

पुष्पांध यौध परिपीत पराग सारैः, मंदार कुंदकलिकाभिरालं करोमि । नन्दीश्व० पुष्पम् ॥

शाल्योदनैरतिरां घृत स्रप मिश्रैः सह व्यंजनः रसभरैः परि तर्पयामि ॥ नन्दीश्व० ॥ नैवेद्यम् ॥

स्वीय प्रभा परितिरस्कृतमर्घपादैः, प्रघ्रातयामिमणि दीप चयै विंचित्रैः ॥ नन्दीश्व० ॥ दीपम् ॥

श्रीकाक तुंढ मणि गुरु यक्षधूपैः, संधूपयाम्यशुभ कर्म विनाशनाय ॥ नन्दीश्व० ॥ धूपम् ।

नारंग चोच कदली क्रमुकाप्र वीजैः, द्राक्षाफलैः प्रतिदिनं सफल्यी करोमि ॥ नन्दीश्व० ॥ फलम् ॥

नन्दीश्वर द्वीप पूर्वे, जिनवर । नन्दयाम्यंतरे श्री जिवेन्द्रान् ।

भक्त्या देवेन्द्र वधैस्त्रिविध परिणतैरंजनाद्याचलेषु ॥

द्रव्यैष्टाभिरेभिः गुण गण निलयान्पूजयत्यादायैः

ते शुकत्वा स्वर्ग मौल्यो पर पद मन्धं संश्रयति क्रमेण ॥

॥ अर्थ्यम् ॥

॥ जयमाला ॥

सुर नर कणि मूर्द्धा शेष मौलिद्ध तेजो, मणि निकर विभावाः क्षालितांबुजाता ।

जिन पति विधुवर्या यत्र तिष्ठति चैतन्निवसति जयमालां संकरिष्ये रसालां । १ ॥

दक्षिणे चोत्तरे योजनानां शति, विस्तुति विंधिते सुन्दरं येऽष्टकम् ।

अंजनाद्रौ स्थितान् वल्लि चन्द्रौ यमन्द्रीप पूर्वोन्मजे सर्वे चैत्यालयान् ॥ २ ॥

परिचमे यो ना नांव पूर्वेशके, ह्यस्ति पंचाशदा व्यासएषां सदा । अंजना, ॥ ३ ॥

उन्नता योजनै र्वाण सप्त प्रमै, तोरणैः गोपुरैः केमुभिर्ललिता ॥ अंजना, ॥ ४ ॥

रत्न भामंडल स्तेज सारांशिमि; जैन विम्बा वरा यत्र समात्यलम् ॥ अंजना, ॥ ५ ॥

आत पत्र त्रयैः पूर्वं चन्द्रोपमैः, यत्र तैः रेजिरे रम्य सुवता फलैः ॥ अंजना, ॥ ६ ॥

नील शोभ भुताशोक वृक्षेण ते, पृष्ठ भागस्थिते नैव यत्रा वसुः ॥ अंजना, ॥ ७ ॥

हेम सिंहासनं रत्नभालाश्रितं, संश्रिता यत्रते सार शोभां दधुः ॥ अंजना ॥ ८ ॥

क्षीर सिंधुञ्चलद् वीचि मालोपमै, भर्त्यलं यत्र ते वीलिताश्चामरैः ॥ अंजना ॥ ९ ॥

कुर्वाणाचलाद्रिस्थ, चै यानां जय मालिकां, ।

तेभ्यः सर्वज्ञ युक्तानांः दत्तार्धं प्राथयेत्शिवं ॥ १० ॥ पूर्णाधिम् ॥

॥ अथ दक्षिण दिशिस्थित चैत्यालय पूजा ॥

नन्दीश्वरे यम दिशि स्थित कञ्जलाद्रि, मुख्य त्रयोदश गिरि स्थित चैत्य पक्तिः ।

संस्थापयामि शुचि कार्तिक फाल्गुणौह, शुक्लाष्टमी प्रभृति तो दिग्मसाष्टकान्तम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि सस्थितांजनगिर्यादि त्रयोदश पर्वत वर्त्यकृत्रिम चैत्यालय स्थापनार्थं पुष्पांजलि चिपेत् ।

अमृत जलधि तोयैः केशराब्जादि मिश्रै, मुनिवर गुरु चेतः शीतलै कुंभसंस्थैः ।

अमित कुधर मुख्यगणोन्दु संख्याग संस्था, लयगत जिन विम्बान्द्वीपयाम्यान्यजामि ॥ जलं ॥

प्रकृति सुरभिदेहान् छिन्नसंसार मोहान्, भलय विपिन जातैश्चन्दनैः कुंकुमाद्यैः ॥ असित. ॥ चन्दनं ॥

हिमकर दधिहाराकारधारारखडै, विमल कनक पात्रन्यस्त शालीय पु जै ॥ असित. ॥ अक्षतं ॥

कमल कुमुद दाम्ना चंपकानेरु धारना सुमति प्रवर भूमना भालती संमहिम्ना । असित. ॥ पुष्पं ॥

दशदिशि गत गन्धै निरसरद्वाष्प जालै, वितत सुरभिसर्पे पायसे शर्करादुयै ॥ असित. ॥ नैवेद्यम् ॥

जिनपति शुभवोधोद्भासकैः रत्नदीपै, निहित तिमिर दृन्दैर्ऽजसक्रांत दिक्वै ॥ असित. ॥ दीपम् ॥

अगुरु सुरभिक्राष्ट च्छेद संजात धूपै, विपुल दहन संगाद्धू म जालं बहद्भिः ॥ असित. ॥ धूपम् ॥

हृदय नयन नासा प्रीतिदौ काप्रगंधै, क्रमक पनस मोचा चोच सन्मातुलिगै ॥ असित. ॥ फलम् ॥

(इन्द्रवजा)

श्री द्वीप नन्दीश्वरयाम्य काष्ठा, शीतादिवह्निद्रग चैत्यमाला ।

तोयादिभिः शारद चन्द्र कीर्ति, संपूज्यंत्वादरतो जनौघाः ॥ अर्घ्यम् ॥

॥ जयमाला ॥

(शार्दूल विक्रिडित छन्द)

विस्तीर्णा शत योजनैः स्थिर तरास्तद्वलिणे चोत्तरे । पूर्वे पश्चिम भाग एव समलं व्यासं तदर्धं श्रिताः ॥

उत्तराः योजन पंचसत्यभिरभोजादि विचित्रान्विता ,

स्तान्सेवे किल संति यत्र सुभगाः सर्वज्ञ चैत्यालयाः ॥ १ ॥

(विद्युन्माला)

अष्टोत्तरसत भुंगारौधं, गणिय यमनद्य मणि संघं ।

नन्दीश्वर यम दिशि नगराजं, सेवे धृत जिन वसति समाजं ॥ २ ॥

तत वितत शुपिरघनयुत तालं, पूव स्थान्वित सर्व विशालं ॥ नन्दीश्व० ॥ ३ ॥

उत्तम मणि नद्य कनक कुंभं, पूर्व गुणान्वित कृत वै शौभ ॥ नन्दीश्व० ॥ ४ ॥

वातान्दोलित केतु व्रातं, दर्शन मात्र विदर्शित सातं ॥ नन्दीश्व० ॥ ५ ॥

कुंभसु शोभा भर सु प्रतीकं, मोहित किन्नर देवानीकं ॥ नन्दीश्व० ॥ ६ ॥

कांचन दंड सुशोभित छत्रं, तेनो निर्जित कैरव मित्रं ॥ नन्दीश्व० ॥ ७ ॥

अनघरत्न युत दर्पण स्तूपं, विम्बित देव नरोरग रूपं ॥ नन्दीश्व० ॥ ८ ॥

छलना विजित सु चामर मालं गंगा वीचि समुल्लवालं ॥ नन्दीश्व० ॥ ९ ॥

भुंगारा द्यष्टभिर्द्रव्यैरष्टोत्तर शतै र्युताः । एभिश्चैत्यालयानद्यैर्हतामर्चये मुदा ॥

॥ अर्धम ।

॥ पश्चिम दिशि पूजा ॥

(वसत तिलका वृत्तम्)

नन्दीश्वरे वरुण दिग्गत कञ्जलाद्रि, मुख्य त्रयोदश निरिस्थित चैत्य पंक्तिः
संस्थापयामि शुचि कार्तिक फाल्गुणौरु शुक्लाष्टमो भृति सदिवसाष्ट कान्तम् ॥
ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिम दिशिस्थितां जन गिर्यादि त्रयोदश चैत्यालयस्थापनार्थं
पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

(इन्द्रवज्रा)

सुरापगा तीर्थः जलैः सुगन्धैः, काश्मीर कर्पूर वराग मिश्रे ।
प्रतीच्य शुभ्रा दिशि खीन्दु सख्या, गस्थालयस्थान् जिन पार्ववायैः ॥ जलम् ॥
सुगंधीकाश्मीर रसौघ पीत्ते, श्री चन्दनैराहृत पट्पदौघैः । प्रतीच्य ० ॥ चन्दनं ॥
लुपार हारेन्दु निभैखंडैः, सचंदुलैर्यक्कृत मौकित कौघैः ॥ प्रतीच्य ० ॥ अद्भतम् ॥
मंदार कुन्दाब्ज कदंब पुष्पै रोलां गजीकुन्मौकितकौघैः ॥ प्रतीच्य ० ॥ गुष्पम् ॥
गंगेय पात्रे निहितैर्गन्धैः, पक्वान्न शाल्योदन हूप शकैः ॥ प्रतीच्य ० ॥ नैवेद्यम् ।
जगत्त्रयध्वान्त विन.श दत्तैः, दीपैर्लसत् कांचन पात्रसंस्थैः ॥ प्रतीच्य ० ॥ दीपम् ॥
सुमधि काला गुरु धूप गंधै वर्गामोदिताशाखिल खेचरास्यैः प्रतीच्य ० ॥ धूपम् ॥
रसाल मोचामल मातुलिगै र्जंघीर राजदन नालिकैरैः प्रतीच्य ० ॥ फलम् ॥

तत्पाश्चात्यांजनमुखनगानीन्दु संख्यालयस्थान् । देवाधीशान्सलिल कुसुमैः, पूजयित्वा प्रमोदात् ॥
स्वस्थो भूत्वा जिनवर पुरो ध्यानमंगी करोति, भव्यो योसौ भव निधि तटं याति सत्त्वन्द्रकीर्तिं ॥

॥ अर्थम् ॥

॥ जयमाला ॥

(इन्द्र वज्रा)

तत्परिचमाशांजन मुख्यशैल, रचैत्यस्थितान्शुद्ध सुवर्णं वर्णान् ॥

स्तुवे जिनेन्द्रान् जयमालयाहं, संसार पाथो निधिपारमाप्तान् ॥ १ ॥

निज दृष्टि विलोकित लोक हितं, विचरे हरि शंकर काम सुतं ।

सुतदं जन मुख्य जिनेश गृह, स्थितवंत मनंत जिनेन्द्र महं ॥ २ ।

सकलामल बोध सुसंगधरं, भविनां भव पाप विनाश करं । सुतदं० ॥ ३ ॥

सुख सागर भग्नमनंत सुखं, प्रणमामि मनोहर मुक्ति नखं ॥ सुतदं० ॥ ४ ॥

निरहंकृतमंत विकास करंः बहुवीर्यधरं तमकौघ हरं । सुादं० ॥ ५ ॥

हत मोह तमोभर मान बलं, सुतपोवन धौत कु कर्म जलं । सुदं० ॥ ६ ॥

शरदोज्वल दक्ष पवित्र सुखं, विरति द्रुम पल्लव रक्त नखं । सुतदं० ॥ ७ ॥

सदयं सदयं सनयं सनयं. परमं परमं पर हंसमयं सुतदं० ॥ ८ ॥

पदपंकज संसृत देव नरं, वर भोग कदंबक लब्धिकरं । सुतदं० ॥ ९ ॥

रलोरु-नन्दीश्वर।पराशास्तां-जनाद्रिस्थ सु वेभसु ।

स्थितान्पर्वान् जिनाधीशान्, पूर्णविं. पूजयाम्यहं ॥ १० ॥

॥ अर्च्यम् ॥

❁ उत्तर दिशि पूजा ❁

(वसत तिलका)

तस्योत्तरांजन नगादि शिखीन्दु संख्या, शैलस्थ चेत्य भवनानि मनोहाणि ॥
संस्थापयामि शुचि कार्तिक फाल्गुणौरु, शुभलाष्टमी प्रभृति सद्विवाष्टकान्तम् ॥

ॐ हीं नन्दीश्वर द्वीपे उचर दिशि संस्थितांजन गिर्थादि त्रयोदशपर्वत्रयार्थकृत्रिम चैत्यालय
स्थापनार्थं पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

(विष्टुन्माला छन्द)

निर्जर गगा वरतर तोयै, गंध विभिन्त्रैः कलिमल हान्यैः ।
श्री तदुदीच्यां जन मुख वह्नि, ग्लौमित शैला लय जिनभर्चे ॥ १ ॥ जलम् ॥
केशर माला सुरभी रसोद्यै, श्वन्दन पंकै र्मधुकर रागैः ॥ श्रीतदु० ॥ चन्दनम् ॥
तंदुल पुंजैहिंमकर रोचि मौषितक तुल्यैः परिमल सारैः ॥ श्रीतदु० ॥ अक्षतम् ॥
घमक माला शत दल कुन्दै. चेतक जाली कुवलय सारै ॥ श्रीतदु० ॥ पुष्पं ॥
पापस शाल्योदन नव सैपं, मोदक दृष्यैर्मणिमय मिष्ठैः ॥ श्रीतदु० ॥ नैवेद्यम् ॥

दीपकलापै विद्युरस जातै, स्तामस भैदैः रवि कर तुल्यैः ॥ श्रीतदु० ॥ दीपश्च ॥
 धूप कलापैरगुरुममुच्चै, धूम नितानैर्जलधर नीलैः ॥ श्रीतदु० ॥ धूपश्च ॥
 दाडिम रानादन फलसारैराश्रकपित्यैः शिव पदसिद्धयैः । श्रीतदु० ॥ फलश्च ॥

(इन्द्र वज्रा)

नन्दीश्वरेदिक् स्थितकज्जलाद्गी, खीन्दु प्रभागास्थित चैत्य संस्थान् ।
 यजाभ्यनर्थ्यान् बलचन्दनार्थैः, सर्वज्ञ वर्यान् शरदिन्दुकीर्तिन् ॥

॥ अर्घ्यम् ॥

॥ जयमाला ॥

आर्या-नन्दीश्वराष्टमद्वीपांजन प्रमुख त्रयोदश नगेषु सुवर्णं भया क्रत्रिम त्रयोदश चत्यालयाः ।
 संति तत्राहंप्रति मानां, जयमाला पूजा विधि वक्ष्ये ॥ १ ॥
 पञ्चम सागर श्रीतला वारा, स्नान विधि विदधुः सहदारा ।
 फाल्गुण मास पुरन्दर वर्या, उत्तर शैल जिनात्र सु पर्या ॥ २ ॥
 लिप्तसु पद्मिन चन्द्र रसौघा, रेजुर रहत कर्म मलौवा ॥ फाल्गुण ॥ ३ ॥
 न्यस्त मनोहर तंदुल मंजा, रेजुरिवाहृत मौक्तिक मुंजाः ॥ फाल्गुन ॥ ४ ॥
 दौक्षित पन्कज चम्पक माला रेजुर रंजित गीत रसाला ॥ फाल्गुण, ॥ ५ ॥
 स्वादित मोदक पायस भक्ता मेनिर आत्म सु पुण्यभक्तता फाल्गुण, ॥ ६ ॥

घोषित रत्न कदम्बक दीपाः, रंजुर रंवर नाक महीपाः ॥ फाल्गुण. ॥ ७ ॥
 धूपित पेशल गंध सुरुपाः रेजुरहत घृत मोहन रुपा. ॥ फाल्गुण. ॥ ८ ॥
 अर्पित चोच रसाल कदंबाः रेजुरहंत करमल दंभाः ॥ फाल्गुण. ॥ ९ ॥

(वसत तिलका)

नन्दीश्वरोत्तर गतांजन मुख्य शैल, वहीन्दु मान शिखर स्थित चैत्य संस्था ।

वेदात्र वेद कुमिता प्रतिमा जिनानां संपूजयापि जलत्राचत चन्दनाद्यैः ॥

॥ महार्घ्यम् ॥

॥ समुच्चष्याटक ॥

विमल कांचन कुंभ विनिस्सरध्रुव कुंकुम विंजर वारिणा ।
 रस हिमांशु रसेषु भितांश्चतान्, जिन्नवरान्दिव साष्टक पूजयेत् ॥ जलम् ॥
 शुभ हरिन्मणि संश्रित कुंकुमैः, रस तरै रिव नाल गतारुचैः ॥ रसहि० ॥ चन्दनम् ॥
 कनक पात्र गतोज्वल तन्दुलै, विधुकरै रिव नैषध सगतैः ॥ रसहि० ॥ अलतम्
 सलिल जन्य कदम्बक चपकै, अर्भर धोरिणि पीतपरागहैः ॥ रसहि० ॥ युष्पम् ॥
 हरि हविः सम पायस संचयैः, घृत वरेच्छु रसैः रसनेष्टकैः ॥ रसहि० ॥ नैवेद्यम् ॥
 नित्रिड पाप तप्तो भर नाशकै, मुनि विबोध समै र्मणि दीपकैः ॥ रसहि. ॥ दीपम् ॥
 त्रिदिव मार्गं गतैरगुरुद्भवैः सुरभी धूम भ्रै अमर प्रियैः ॥ रसहि० ॥ धूपम् ॥
 क्रमक दाडिम चोच लतोद्भवैः रस विशेष युतै र्मधुरैफलैः ॥ रसहि० ॥ फलम् ॥

द्वारंपचाशचैत्य गेहीय सर्वान्शुभ्राषाढे कार्तिके फाल्गुनाख्ये ।

स्वष्टाक्ष वै पूजयन्त्यष्टधा धे, भव्यास्ते वै सुवित भाजाः भवन्ति ॥

॥ अर्घ्यम् ॥

॥ जयमाला ॥

घत्ता-सकल सुह कारणु, दुग्गह वारणु, पुञ्जहु ण्दीहर दीवं ।
आसाढह मासउ, कातिय मासउ फागुण अठमी जिण सेवं ॥ १ ॥

(मणुयणाइन्द की चाल)

सुहम कप्पादिया, मिलवि सवि सुंदरा, चालिया अट्टमं दीव ण्दीसुरा ।
छित्त संरत्तिआ सव्व भत्ति मरा, देव देवी जुआ जोइहा वितरा ॥ २ ॥

इन्द एरावयं चट्ठिय सोहावणं, वंट स किंकिणि चामरा ढोलणं ।
कुन्थ संभार सिन्दूर संलेपणं, णच्चए आण्छरा देव देवी गणं ॥ ३ ॥

वज्जए ताल कंसाल वर महला, गज्जए ढोल नीसाण श्रीणा दला ।
भेरी संताडिया संख कोलाहला, सद्दए सोहिआ काहला भूंगला ॥ ४ ॥

काविवि वज्जए वंससिरि मंडला, काविवि गावए नीत रागा कुला ।
काविवि णच्चए धरीय एकाउला काविवि द्वावए रम्म सुत्ताहला ॥ ५ ॥

हार चंदामला जिण गुणा सेयला, बोलए काभिणि करिष मण णिम्मला ।

पंचमं गायए रागसुर किएणरा यारया लुं वरा दाह ब्रूहु वरा ॥ ६ ॥
तिन्थ चारि वरं पंम संवासियं, खिम्मलं सीयलं पाव परिण्णसियं ।

धोवए कोमलं जिय पय जु अलं, दीव णं दीसरे ते सुरा सीयलं ॥ ७ ॥

गंध संकम्मियं भभर भुयंगमं, भूरि कप्पूर संवासियं संगमं ।
वच्चए चंदणं जिय पयनु अलं, मग्गए ते सुरा तुम्ह गुण पेसलं ॥ ८ ॥
अप्पुया उज्जला हार मृत्तोपमा, खंड संवड्जिया पंच मेरोपमा ।

पुंन संढौकया जियवर अग्गए, अरक्कयं ठाययं ते सुरा मग्गए ॥ ९ ॥
मोगरा चंपथा रम्म गंधालया कूंद मंदारया पोम्म संमालया ।

जाई जूई मयानीय निमालया पुज्जए तच्छिया तेह विवालया ॥ १० ॥
वाष्प संधूरया कूर सप्पियरा पायसा पावना गोरसा सर्का ।

त्रिय संपाविया फेणया धेवरा दीव एदी सुरेतेठवे वावरा ॥ ११ ॥
भूरि कप्पूर वहिय उज्जालणं, फार अन्धार स फडणे कारणं ।

संठिया दीवया रयण मग्गयणं द्योतए ते जियं कम्म संचूरं ॥ १२ ॥
धूव सिल्लारसं अगार संघससणं, पूरमा कम्मियं भिग सिंधोरणं ।

दुट्ट कम्मह विदेयणां जालणां, धूवए जियारं दिव्व पूजालणं ॥ १३ ॥
नालिकेराभया पूरा वीजोरया, वीमडा खिरणी मूल कुम्हंड्या ।

गोत्थनी दाडिमा तिडुका केलया, दीव यांदीसरे पुज्जए एलया ॥ १४ ॥

अथ उच्चारये भावने हृत्थ संजोडिया णामणं ते जिणा ।

दीन रांदीसरे बेहरा वावणा, मग्गए सासयं ठाण सोहामणा ॥ १५ ॥

यत्ता-इह रांदीसर भावळ, पुज्ज सुहावळ अठमिदिणाइ पुन्निमापयणं ।

सिरिभूमण भिस्सउ, रविसम दिस्सउ, चन्द कीत्ति सोहावयणं ॥ १६ ॥

महार्थम् ॥

नन्दीश्वरेष्टमेद्वीपे, सर्वेऽहंतस्त्रिधाचिंताः । पुनातु त्रिजगत्सर्वं शांतिधारा त्रयेण वै ॥

(इति शांति धारा त्रयं दृष्यात्)

नाना हाव विलास विभ्रमवान् दारासु रम्यांगजात् ।

दुर्यारान्मदनेन्दुरान्गजावीन्, वारान्मनोरंहसः ।

कीर्तिं कांतिं मनेकधामरलस च्छत्रांकितं सद्रमा ।

मेतत्पूजन तत्पराः शुभजनां संप्राप्तुवंतु ध्रुवं ॥

इत्याशीर्वाद्ः ॥

अस्ति श्री काण्ठ संघो यतिजन कलितो गच्छ नन्दी तटाख्यो,

विद्या पूर्वे गणान्तेऽजनिशत गुरभो रामसेनश्चतस्मिन् ,

तदंशेरेजिरेवै मुनिजन सहिता ह्यरयो विश्व सेनाः ,

विद्याभूषाख्य ह्यरिर्जिनमति रभत्रचल्पदांभोधिवन्द्रः ॥ १ ॥

तल्पद्वेदय भूधैरुक्तरणि, पंचैवरण्यारणिः । श्री श्रीभूषण छरिराट् विलयते सर्वज्ञ विद्या चणः ॥
तच्छिष्यो जिन पाद पद्म मधुपः श्री चन्द्रकीर्ति वरः । तेनाचार्य वरेण निर्मितमिदं नन्दीश्वर श्यार्चनं ॥ २ ॥

॥ श्री रत्नत्रय पूजा विधान ॥

श्रीमन्त्रं सन्मतिं नत्वा, श्रीमतः सुगुरुनपि । श्रीमदागततः श्रीपद्मच्ये रत्नत्रयार्चनम् ॥ १ ॥
अनन्तान्त संसार, कर्म सम्वन्ध विच्छिद्धे । नमस्तस्मै नमस्तस्मै, जिनाय परमात्मने ॥ २ ॥

श्रीव्योत्पादव्ययानेक, तत्त्व संदर्शनवित्पे ॥ नमस्तस्मै० ॥ ३ ॥

संसारार्णवमगनानां, यः समुद्धर्तुं शीश्वरः ॥ नमस्तस्मै० ॥ ४ ॥

लोकालोक प्रकाशात्मा, यश्चैतन्य मयो महः ॥ नमस्तस्मै० ॥ ५ ॥

येन ध्यानाग्निना दग्धं, कर्म दत्तमलक्षणं ॥ नमस्तस्मै० ॥ ६ ॥

येनात्मात्मनि विज्ञातः, परं परमिदं वपुः ॥ नमस्तस्मै० ॥ ७ ॥

य एव परमं ज्योतिः, परं ब्रह्म मयः पुमान् ॥ नमस्तस्मै० ॥ ८ ॥

सर्वानन्दमयो नित्यं, सर्वसत्त्व हितंकरः ॥ नमस्तस्मै० ॥ ९ ॥

इत्याद्यनेकधा स्तोत्रैः, स्तुत्वा सज्जिन पुंगवम् । कुर्वे ह्यवोधचारित्रार्चनं सन्नेपतोऽधुना ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि अत्र अवतर अवतर संशौषट् ।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

संसार दुःख ज्वलनावगूढ, प्ररुढ संतापमलोप शान्धै ।

सदर्शनज्ञान चरित्र पंक्तेर्जलस्यधारां पुरतो ददामि ॥ जलं ॥ १ ॥
रत्नत्रयं भूपित भव्य लोक, -सशोकमन्तर्गत भावगभ्यं ।

कार्शमीरकर्पूरसुचन्दनाथैः, सुगन्धिगन्धैरहमर्चयामि ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥
आर्या छन्दः—अनन्तमन्त्रत पुञ्जैः, शाल्यैः शुद्ध गन्धिभिः शुद्धैः ।

उद्गतोच्छ्वन्दः—भिकसित कुद कुसुम शत पत्र सु जात समूह शोभया,
अलिङ्गुल रणित कलित मधुर ध्वनि, श्याम समूह रसालया ।
धन कर्पूर नीर शुभ चन्दन, चर्चित चारु गंधया ।
दर्शन बोध चरित्र त्रितयं तन्संयजे भक्तया ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥

सुकलितभातनौमि रत्नत्रय, मत्र पवित्र मालया ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥
इन्द्रवज्रा—प्रसिद्ध सद्ब्रह्मव्यमनन्य लभ्यं, वचो गुरुणामिव साधुसिद्धं ।

सद्दृष्टि सद्बोध चरित्र रत्न, त्रयाय नैवेद्य महं ददामि ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥
दीपैः सुकर्पूर पराग भृंगैर्गङ्गिर्गन्धु ति दीप्यमानैः ।

सद्दृष्टि सद्बोध चरित्र रत्न, त्रयं त्रयावापिकरं यजामि ॥ दीपम् ॥ ६ ॥
आर्याछन्दः—धूपैः कालागुरुभि त्रिशुद्ध संशुद्ध कर्म संधूपैः ।

दर्शन बोध चरित्र त्रितयं संधूपयामि सं शुद्धयै धूपं ॥ ७ ॥
इन्द्रवज्रा—पूगैरनर्द्यैर्वर नारिकेलैः, नारंग जम्बीर कपित्थ पुञ्जैः ।

रत्नत्रयं तर्पित भव्य लोकं, शक्यावलोहं तदहं यजामि ॥ फलं ॥ ८ ॥

आर्या अंद्र-जल गंधात्रय पुल्लेश्वरु दीपैर्धूप सत्फलैः सर्वे ।
दर्शन त्रीध चरित्र, त्रितय त्रीधा यजामहे भक्त्या ॥ अर्घ्यं ॥

मोहाद्रि संकट तटी विकट प्रपात, संपादिने सकल सत्व हित कराय
रत्नत्रयाय शुभ हेति सम प्रभाय, पुष्पांजलि प्रविमलां ह्यभ्रतारयामि ॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

❀ अथ सम्यग्दर्शन पूजा ❀

पाश्याभिमुखी श्रद्धा, शुद्ध चैतन्य रूपतः । दर्शनं व्यग्रहारेण, निश्चयेनात्मनः पुनः । १ ॥

द्रुतविलम्बितच्छन्दः=पदधिगम्य नरः शिव संपदा, मधिपदं प्रतिपद्य विरेजिरे ।

तदिह मानसतापरसेलसद्विशु दर्शनमष्ट विधं मम ॥ २ ॥

ॐ हां हीं हूँ जौं हें हः अष्टांगसम्यग्दर्शनत्रावतरावतर स्वाहा ॥ पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

अनंतानंत संसार सागरोत्तार कारणम् तीर्थतीर्थकृतामत्र, स्थापयामि सुदर्शनम् ॥ ३ ॥

ॐ हां हीं हूँ हों हं हः अष्टांगसम्यग्दर्शन अत्र तिष्ठ ठ ठः स्वाहा ॥ प्रतिष्ठानं ॥

अष्टाङ्गैरष्टधापूत-मष्टैक गुण संयुत । मदाष्टकं विनिर्गुक्तं, दर्शनं सन्निधापये ॥ ४ ॥

ॐ हां हीं हूँ हों हं हः अष्टांगसम्यग्दर्शनं । अत्र भमसन्निहितं भव भव वपत् । सन्निधिकरणम् ॥

दर्शनं यत्र स्थापनम् ॥

शरदिन्दु समाकार , सारया जल धारया । सम्यादर्शनमष्टांगं , संयजे संयन्नावहम् ॥ जलं १ । १ ॥

चारु चन्दन काशमीर, कर्पूरादि विलेपनैः । सम्यग्० ॥ चन्दनं ॥ २ ॥
 अखंडैः खंडिता नेक, -दुरितैः शालितंदुलैः । सम्यग्० ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥
 शत पत्र शतानेक, चारु चम्पक राजभिः । सम्यग्० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥
 न्यायैरिव लिनेन्द्रस्य, सञ्जाज्यैः पुष्टि कारभिः । सम्यग्० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥
 चञ्चत्काञ्चन संकाशै दीपैः सदीप्ति हेतुभिः ॥ सम्यग्० ॥ दीपं ॥ ६ ॥
 कृष्णागुरुमहाद्रव्य, धूपैः संघृषिताशुभैः ॥ सम्यग्० ॥ धूपं ॥ ७ ॥
 पूग नारिङ्ग जम्बीर, मातुलिङ्ग फलोत्करैः । सम्यग्० ॥ फलं ॥ ८ ॥
 जलगंधाक्षतानेकः पुष्पनैवेद्य दीपकैः ॥ सम्यग्० ॥ अर्घ्यं ॥ ९ ॥

॥ इन्द्र वज्रा ॥

यस्य प्रभावाब्जगतांत्रयेऽपि, पूज्या भवतीह घना जनौषा ॥

सुदुर्लभायामर पूजिताय निः शंकिताङ्गाय नमोस्तु तस्मै ॥ १ ॥
 ॐ ह्रीं निः शङ्किताङ्गाय इदं जलं गंधं पुष्पं, अक्षतं चरुं दीपंधूपं फलं समर्पयामि स्वाहा ॥
 सुदर्शनं येन विना प्रयुक्तं, मन्तःफलं नैव भवेज्जनानां ।

सुदुर्लभायामर पूजिताय; निः कांचिताङ्गाय नमोस्तु तस्मै ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं नि कांचिताङ्गाय जलाघर्ष ।

यदंगतः संयम वृच सेकी, तस्मात्फलं संलभते शरीरी ।

सुदुर्लभायामर पूजिताय, निनिन्दतांगाय नमोस्तु तस्मै ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं निर्विचिक्रिप्तितांगाय जलाघर्षं ॥

यदुज्झित चाह चरित्र मेतत् सिद्धयैभवेन्नैव सुनीश्वराणां ।

सुदुर्लभायामर पूजिताय, निमूर्ढतांगाय नमोस्तु तस्मै ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं अमूर्ढदृष्ट्यङ्गाय जलाघर्षं ॥

सुरेन्द्र नगोन्द्र नरेन्द्रवृन्दै-र्वंधंपदं यद्वसतो लभन्ते ।

सुदुर्लभायामर पूजिताय, निमूर्ढतांगाय नमोस्तु तस्मै ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं उपगूर्हनांगाय जलाघर्षं ॥

भवन्ति वृद्धा गुण वृद्धि सिद्धा, येनानु वृद्धा जगति प्रसिद्धाः ।

सुदुर्लभायामर पूजिताय, सुस्थापनांगाय नमोस्तु तस्मै ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं स्थितिकरांगाय जलाघर्षं ॥

सुरत्नवद्दलेभवामुपेतं, भव्यावनौ यत्प्रतिभासमानं ।

सुदुर्लभायामर पूजिताय, वात्सल्यतांगाय नमोस्तु तस्मै ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं वात्सल्यतांगाय जलाघर्षं ॥

प्रबंधभूयिष्ठमलञ्चकार यच्छासने शासित भव्य लोकः ।

सुदुर्लभायामर पूजिताय प्रभानांगाय नमोस्तु तस्मै ८ ॥

ॐ ह्रीं प्रभानांगाय जलाघर्षं ॥

॥ समुच्चयाष्टक ॥

सौरभ्याहत सङ्गं, सारथा जल थारथा ।

निःशंकितादिकान्यस्य, सद्गानि यजामहे ॥

ॐ ह्रीं निःशंकिता द्यष्टांगाय जलं निर्वपामंति स्वाहा ॥ १ ॥

चारु चन्दन कारमीर कर्पूरादि विलेपनैः ॥ निःशंकि० ॥ चन्दनं ॥ २ ॥

अन्नैरन्नतानंल सुख दान विश्रायकैः ॥ निःशंकि० ॥ अन्नतं ॥ ३ ॥

जाति कुन्दादिराजीव, चम्पकानेक पल्लवैः ॥ निःशंकि० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

खाद्यैराद्य पदैः स्वाद्यैः सन्नाज्यैः सुकृतैरिव ॥ निःशंकि० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दशाग्नैः प्रस्फुरद्रूपैर्दीः पुण्य जनेरिव ॥ निःशंकि० ॥ दीपं ॥ ६ ॥

धूपैः संधूपितानेक कर्मभिः धूपदायिनां ॥ निःशंकि० ॥ धूपं ॥ ७ ॥

नारिकेलाम्रपृग्दि फलैः पुण्य फलैरिव ॥ निःशंकि० ॥ फलं ॥ ८ ॥

(आर्या) जल गद्य कुसुम मिश्रां, फल तन्दुल कमल कलित ललिताढ्यं ।

सम्यक्त्वाय सुभव्यां, भव्याः कुसुमानलि ददतु ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

(पुष्पांजलिक्षिपेत)

जाप्य ९ कुर्यात् ॥ ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं निःशंकितांगायनमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं निःशंकितांगाय नमः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं निर्विघ्निक्रित्स्वितोपाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं निर्मोह्याय नमः ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं उगगूहनाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं स्थितिरूपाय नमः ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं वात्सल्याय नमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं प्रभावनांगाय नमः ॥ ९ ॥

एभिर्मन्त्रैर्जाप्यं कुयादर्घं चापि समुद्धरेत् ॥

॥ जयमाला ॥

श्रद्धाछन्दः=तत्वानां निश्चयो यस्तदिह निगदितं दर्शनं शुद्ध बुद्धे,
स्तस्मादानष्टकर्माष्टकघनतिमिरो जायते ज्ञान धरः ।
ज्ञानातिसिद्धि प्रसिद्धि भ्रुवि वचनमिदं शाश्वतं सिद्धि सौख्यं ।
चक्रवन्द्रांशु शुद्धं तदहमिहमहे दर्शनं पूजयामि ॥ १ ॥

जय सम्यग्दर्शनदर्शिताश, कमलाचिंतितहतषनकर्मपाश ।

जयनिःशंभित निश्चित सुतत्व, शतपत्र शताचिंत सुदितसत्व ॥ १ ॥

जय निःकांतित वज्रित विभार कुन्दाचितकृतसंसारपार ।

जय निर्विचिकित्सित भाव भंग, कुमुद प्रसून पूजित सुसंग ॥२॥

जय निर्मुटांग महाप्रहृढ, शुभ चम्पक चंचित चारु रुढ ।

जय २ उपगूहन परम पत्न, वर मन्त्रिकार्वर्चदंशिब सुसद ॥ ३ ॥

जय २ सुस्थित सुस्थितीकरण, जातीकुसुमाधित दुःखः ह्यस्य ।

आत्सल्यमल्ल जय २ विशाल, वैतकदल पूजित दलित काल ॥ ४ ॥

प्रतिभावनानांग जय २ वरेण, जय वसुविध कुसुमाधितसुरेण ॥

(धत्ता) इति दर्शनवर्ग, भावनिसर्ग, दर्शनमिष्टमनिष्ट हरं ।

सुमनः सत्पुञ्जं, शर्म निकुञ्जं, भव्य जनाय ददातु वरं ॥

ॐ ह्रीं अष्टाङ्ग सम्यग्दर्शनाय महार्घं ॥

पंचाति चाराति भतं प्रपूतं, पन्चप्रदं पंचम बोधहेतुं ।

सद्दर्शनं रत्नमनर्घ्यमर्ध्यं. भक्तया सुरत्नैरहमर्चयामि ॥ रत्नाञ्जलि विपेत् ॥

मुक्ताः श्रेयिगताविभाति नितरां, यत्प्रस्तुरत्तेजसा,

येनालंकृत विग्रहं गृहमुचं सिद्धयंगनाऽऽबुञ्चति ॥

यत्संसार महाण्ये भवभृतां दुष्प्राप्यामपृच्छतः,

तत्ससन्धक्त सुरत्नमर्चितधियां, देयादनिघं पदं ॥ रत्नाञ्जलि देयात् ॥

मालिनीछंदः=अतुल सुख निधानं, सर्वकल्याण वीजं, जनन जलधिपोतं, भव्यसत्त्वैक पात्रम्

दुरिततरु कुठारं, पुण्यवीथं प्रधानं, पिबतुजिन विपत्तं, दर्शनाख्यं सुधाम्बु ।

श्याशीर्वाद

॥ अथ सम्यग्ज्ञान पूजा ॥

प्रणम्य श्री जिनाधीश, -मधीशं सर्वसम्पदां । सम्यग्ज्ञान महारत्नपूजां वक्ष्ये विधानम् ॥ १ ॥
श्रीत्रिनेन्द्रस्यसद्भिन्नम्, -मृत्तरेण महाधियः । पुस्तक स्थापनीयं चेत्तस्यैवादर्शमध्यमम् ॥ २ ॥
कल्पनातिगता बुद्धिः परभावा विभाषिका । ज्ञाननिश्चयतो ज्ञेयं, तदन्यदव्यवहारतः ॥
ज्ञानाचारोऽष्टधापुंसां, पवित्री करण क्षमः । प्रभावेन तु पूजायै समागच्छतु निर्मलः
ॐ हां हीं हूं हौं हः अष्टांग सम्यग्ज्ञानाचार अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ आह्वाननं ॥

सम्यग्ज्ञान प्रभापूठ, कर्म कव्व क्षयानल । पूजा क्षणेतु गृहणतु, स्थित्वाऽङ्गामनिन्दिताम् ।
ॐ हां हीं हूं हौं हः अष्टांग सम्यग्ज्ञानाचार अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ, ठः स्वाहा ॥ प्रतिष्ठापनं ॥
अचिन्त्यमाहात्म्यमचिन्त्य वैभवं, भवार्णवीर्तीर्णं विसारि सर्वत ।

प्रबोध चारित्रमिहान्तरान्तरं निरंतरं तिष्ठतु सच्चिदौपम ॥
ॐ हां हीं हूं हौं हः अष्टांग सम्यग्ज्ञानाचार अत्रमम सन्निहितो मत्र भव वषट् । सन्निधिक ॥

शरदिन्दु समाकार साया जल धारया । बोधतत्त्व समाचारं, सयजे संयजावहम् ॥ जलं ॥ १ ॥
कर्पूर नीर काश्मीर मिश्रसत्त्वन्दनैर्धनैः । बोधतत्त्व ० चन्दनं ॥ २ ॥
अखण्डैः खंडितानेक-दुरितैः शालि तन्दुलैः । बोधतत्त्व ० । अक्षतं ॥ ३ ॥
शतपत्रशतानेक चारु चम्पक राजिंभ ॥ बोधतत्त्व ० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

न्य. वैरिव त्रिनेन्द्रस्य सान्नायैः शुद्धिकारिभिः । बोधतत्व० ॥ ५ ॥
 चञ्चत्काञ्चन संकाशैः दीपैः सद्दीप्ति हेतुभिः । बोधतत्व० ॥ ६ ॥
 कृष्णागुरु महाद्रव्य, धूपैः संघृषिताशुभैः । बोधतत्व० ॥ ७ ॥
 पूग नारिंग जम्बीर मातुलिंगफलोत्करैः । बोधतत्व० ॥ ८ ॥

वसततिलकाच्छंदः—मोहाद्रि संकट तटी विकट प्रघात, सम्वादिने सकलमत्त्व हितकराय ।
 बोधाय शक्त शुभ हेतु समप्रमाय पुष्याञ्जलिप्रविमलांघ्रिवतारयामि ॥ अर्घ ॥

सुव्यञ्जनैर्व्यञ्जित च्यंगभाः, प्रभाजना भावित भाव वृद्धयै
 सुदुर्लभायामर पूजिताय, प्रबोधतत्वाय नमोस्तु तस्मै ॥

ॐ ह्रीं व्यञ्जन व्यजिताय इदं जलं गंधं पुष्पं अक्षतं नैवेद्यं दीपंधूपं कलमित्याद्यर्घ ॥ १ ॥

पदार्थं सम्वंधमुपेत्यनीतः समग्रतामग्रपदप्रदायि । सुदुर्ल० ॥

ॐ ह्रीं अर्थ समग्राय इदं जलं गंध मित्याद्यर्घ ॥ २ ॥

शब्दार्थं श्रद्धान विधानमान, द्वयेन बन्धं सुनिबंधमिति । सुदुर्ल० ॥

ॐ ह्रीं तदुभय समग्राय इदं जलं गंधमित्याद्यर्घ । ३ ॥

पत्रिकालाध्ययन प्रभाव प्रदर्शितानेक कला कलापं । सुदुर्लभा० ॥

ॐ ह्रीं कालाध्ययन पत्रिनाय इदं जलं गंधमित्याद्यर्घ ॥ ४ ॥

समृद्ध शुद्धोपधि शुद्धसिद्धं, सुभासंतः स्फुरद्वह्मणम् ॥ सुदुर्लभं ॥
ॐ ह्रीं उपाध्ययनोपदिताय इदं जलं गंधमित्याद्यर्थं ॥ ५ ॥

विनीत चेतो वितनोतिनीति प्रणीतमानन्त्यमनन्तरूपम् ॥ सुदुर्लभां ॥
ॐ ह्रीं विनय लब्ध प्रभावनंगाय इजं जलं गंधमित्याद्यर्थं ॥ ६ ॥

अपन्हुते निन्हुति तो गुरुणां गुरु प्रभावोपदितान्धकार ॥ सुदुर्लभं ॥
ॐ ह्रीं गुंधेध्ययनानप ह्वय समृद्धाय इदं जलं गंधमित्याद्यर्थं ॥ ७ ॥

अनेकधामान्यवितानवृद्धं प्रभावितानंतगुणं गुणानां । सुदुर्लभं ॥
ॐ ह्रीं बहुमानोन्मुद्रिताय इदं जलं गंधमित्याद्यर्थं ॥ ८ ॥

सौरभ्याहृतसद्भृंग, सारया जल धारया ।

व्यञ्जनाद्यमलागानि संयजे बन्ध विच्छिदे ॥ जलं ॥ १ ॥
चारु चन्दन कार्शरीर कर्पूरादि विलेपनैः ॥ व्यंजनां ॥ चन्दनं ॥ २ ॥
अन्तैरक्षतानंत सुखदान विधायकैः ॥ व्यञ्जनां ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥
जाती कुन्दादि राजीव चम्पकानिक पल्लवैः । व्यञ्जनां ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥
खाद्यैराद्य पदैः स्वाद्यैः सन्नाज्यैः सुकृतैरिव ॥ व्यंजनां ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥
दशाश्रुः प्रस्फुरद्रूपैदीपैः पुण्य जनैरिव ॥ व्यंजनां ॥ दीपम् ॥ ६ ॥
धूपैः संधूपितानेक कर्मभिर्धूपदायिनां व्यञ्जनां ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

नालिकेराप्रपूगादि फलैः पुष्य फलैरिव ॥ व्यंजना० ॥ फलं १८ ॥
जलगंधाक्षतानेक पुष्प नैवेद्य शालिना ॥ व्यंजना० ॥ अर्घं ॥ ६ ॥
मोहाद्रि संकट तटी विकट प्रगत, संपादिने सकल सत्वहितकराय ।

बोधाय शक्र शुभ हेति समग्रभाय पुष्पांजलि प्रविमलां ह्यवतारयामि ॥ पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥ जा.व्य १ कुर्यात् ॥
ॐ ह्रीं सस्यज्ञानाय नमः । १ । ॐ ह्रीं व्यंजन व्यजिताय नमः ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं अर्थममत्राय नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं तदुभयसमत्राय नमः ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं कालाध्ययन पत्रित्राय नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं उपध्ययनोपहिताय नमः ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं विनय लब्ध प्रभावनानां गाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं गुर्वचनपह्वव समृद्धाय नमः ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं बहुमानोन्मुद्रिताय नमः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं एभिर्मन्त्रैर्जाप्यं कुर्यात्, अर्घं चापि समुद्धरेत् ॥

॥ जयमाला ॥

सुधराच्छन्दः—व्योम्नीव व्यक्त रूपं, विगत धन मल, भानि नक्षत्र मेकं,
जीवाजीवादि तत्त्वं स्थगित गल मलं, यस्य हृग्गोचरस्थम् ।

तत्त्वज्ञैः प्रार्थ्यते यत्प्रविपुलमतिभिर्मोक्षसौख्याय जज्ञे
तद्भव्याम्भोज भानुं ललित गुण मणि बोधमभ्यर्चयामि ॥ १ ॥

धन मोह तमः षटलापहरं, यम संयम संगम भार धरं ।
भुवि भव्य पयोज विकासमहं, प्रणमामि सुबोध दिनेश महं ॥ २ ॥

कृत दुष्कृत कौशिक चार हरं, भृतभूरि भवार्णव शोष करं । भुवि० । ३ ॥
 निखिलामल वस्तु विकास पद, हत दुर्भर दुर्जय काण्ट पदं ॥ भुवि० ॥ ४ ॥
 कलिऋत्पपत्तम शोष करंहृदयादव सपित कर्म जलं ॥ भुवि० ॥ ५ ॥
 जडता तम हारक सूर्य समं, सुमनोमव संग विभंगसमं ॥ भुवि० ॥ ६ ॥
 हृदयामललोचन लक्षमितं, निजभासुर भानु सहस्र युतं ॥ भुवि० । ७ ॥
 अलि कज्जल नील तमाल तमं, प्रति मद्धिक धाव निशापगमं । भुवि० ॥ ८ ॥
 निज मण्डल मण्डित लोक मुखं, नत सत्व समपित सर्वसुखं ॥ भुवि० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं अष्टाङ्ग ज्ञानाचाराय इदं जलंगंधं पुष्पं अक्षतं चरुं दीप धूपं फलं यजामहे स्वाहा ॥
 स्तुतेति बहुधास्तोत्रैर्बहुमक्ति परायणः नाना भव्यैः समंवीमानर्घ्यं चापिसमुद्धरेत् ॥
 संसार पाथो निधि शोष कारि, प्रबंध भूयिष्ठमनंत रूपं ।
 सज्ज्ञान रत्न बहु रत्न भृंगैः रत्नैः शुभैरर्चितमर्चयामि । रत्नाब्जलि ॥

चिन्तामूल महादृढस्तदमल स्थूलस्थल स्कंधमा, नंगोपांग सदागमैक विसरच्छालोपशाखान्वितः ।
 एकानेक विधावधि प्रभृतिभिः सत्पत्र पुष्पैर्वै, देगाद्बोधतरु शिवः शिवसुखं न्यासे त्रितोऽनेकशः
 मालिनीच्छंदः—दुरिततिमिर हंसं, मोदल सरोजं मदन भुजग मंत्रं वित्त मातग सिंहं ।
 व्यसन घनसमीरं, भिषव तत्त्वैक दीपं, विषय शफर जालं ज्ञानमाराधत्वं ।

॥ इत्यशीर्वाद ॥

॥ सम्यक् चारित्र पूजा ॥

देवश्रुत गुरुन्नत्वा कृत्वाशुद्धिसथात्मनः । सम्यक्चारित्र रत्नस्य वक्ष्ये संक्षेपलोचनम् ॥ १ ॥
 सम्यक् रत्नत्रयस्याय, पुस्तकं चोत्तरेणतु गणेश पादुका युग्मं, स्नपयित्वासहोत्सवे ॥ २ ॥
 गौर्णं चारित्रसाख्यातं यत्सावद्य निवर्तनं । आनन्द सान्द्रसानात्मा पवित्रं परभार्थतः ॥ ३ ॥
 त्रयोदश विधानेक भव्यलोकैक पावनं । चारित्राचारकर्मैत कर्मलं विमलं शिवः ॥ ४ ॥
 ॐ हाँ हीं हूँ हौं हं हः त्रयोदश विध सम्यक चारित्राचार अत्रात्तरावतर स्वाहा ।
 स्थाप नोपरि पुष्पाञ्जलिं लिपेत् । आह्वाननं ॥

विषय कर्म महाकुल पर्येत, प्रकट कूट विभञ्जन सत्तपः ।

य इह तिष्ठतु जन्म मयान्तऋत्रिमल ह्यारि चारित्र महामहः । ५ ॥

ॐ हाँ हीं हूँ हौं हं हः त्रयोदश विध सम्यक्चारित्राचार अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । प्रतिष्ठारनं ।

सकल भव्य पयोज विकास कृत् प्रकटिताखिल भाव विभावकः ।

प्रबल मोह निशाचर चारहचरण भातुरुदेतु मनोम्बरे ॥ ६ ॥

ॐ हाँ हीं हूँ हौं हं हः त्रयोदश विध सम्यक्चारित्राचार अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधि
 करणं ।

॥ चारित्र यंत्र स्थापनम् ॥

शरदिन्दु समाकार सरया जलधारया ।

सञ्चारित्र समाचारं संयजे संयजावहम् ॥ जलं ॥ १ ॥

कर्पूर नीर काशमीर मिश्रसञ्चन्दनेर्धने ॥ सञ्चारित्र० ॥ चन्दनं ॥ २ ॥

अखंडै. खडितानेक दुरितैः शालि तंदुलै. ॥ सञ्चारित्र० ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥

शतपत्र शतानेक चारु चम्पक राजिभिः । सञ्चारित्र० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

न्यायैरित्र जिनेन्द्रस्य, सन्नायैः पुष्टि कारिभि. । सञ्चारित्र० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥

चञ्चक्रांचन संकाशैर्दीपैः संदीप्ति हेतुभिः ॥ सञ्चारित्रः ॥ दीपं ॥ ६ ॥

कृष्णागुरु महाद्रव्यैः धूपैः संधूपिताशुभैः । सञ्चारित्र० ॥ धूपं ॥ ७ ॥

पूग नारिग जम्बीर मातुलिंग फलोत्करैः ॥ सञ्चारित्र ॥ फलं ॥ ८ ॥

कर्माणि हि महारोगा नश्यन्ति यत्प्रयोगतः । सञ्चारित्र० ॥ अर्घ्यं ॥ ९ ॥

पाशातिपातरिति, रूपं सर्वत्र तत्त्वत । पूजयामि समीचीनं, चारित्राचार मच्चितं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अदिशा पूर्णं महाव्रतायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

असत्य विरतिप्राप्त परभागमनेकधा ॥ पूजया० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं स य महाव्रतायार्घ्यं० ॥

चैर्याद्यावृत्त वृत्तात्मा, सर्वथा सुमनीषिणाम् ॥ पूजया० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं अचौर्य महाव्रतायार्घ्यं ।

ग्राम्य धर्मं विनिष्ठुं क्तं यद्वदं विदशैरपि ॥ पूजया. । ४ ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यं महाव्रताधार्यं ॥

सर्वं ग्रंथं विनियुक्तमनेकग्रंथ संसृतं । पूजया० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं अपरिग्रहं महाव्रताधार्यं ॥

सौरभ्याहृतं सद्भृंगं, सारया जलधारया ।

अहिंसाव्रतं पूर्वाणि तदंगानियत्रापहे ॥ जलं ॥

चारु चन्दनं कार्शमीरं कर्पूरादि विलेपनैः । अहिंसा० ॥ चन्दनं ॥

अक्षतैरक्षतानंतं सुखदानं विधायकैः ॥ अहिंसा० ॥ अक्षतं ॥

जाती कुन्दादि राजीव, चम्पकानेकं पल्लवैः । अहिंसा० ॥ पुष्पं ॥

ल्यायैरिव जिनेन्द्रस्य, सन्नाज्यैः शुद्धिकारिभिः ॥ अहिंसा० ॥ नैवेद्यं ॥

चञ्चत्काञ्चनसंकाशैः दीपैः सदितिहेतुभिः ॥ अहिंसा० ॥ दीपं ॥

धूपैः सन्धूपितानेकं कर्मभिः धूपदायिनां ॥ अहिंसा० ॥ धूपं ॥

नारि केल्लादिभिः पूगैः फलैः पुण्य फलैरिव ॥ अहिंसा० ॥ फलं ॥

कर्माणि हि महारोगा नश्यन्ति यत्प्रयोगतः ।

सुचारिशौषधायांस्मैददापि कुसुमाञ्जलिम् ॥ अर्थं ॥

अधृष्यं सर्वं लोकानां यन्मनस्तन्नियामकं

पूजयामि सभीचीनं चारित्राचारमर्चितं ॥

ॐ ह्रीं मनोगुप्तये इदं जलं गंधमित्याद्यर्घं ॥

यद्वागव्यापारजानेक दोष संगविवर्जितं । पूजया० ॥

ॐ ह्रीं वागुप्तये इदं जलं गंधमित्याद्यर्घं ॥

शरीराश्रत्रसंचार परिहाग्विनिर्मलं ॥

ॐ ह्रीं काय गुप्तये इदं जलं गंधमित्याद्यर्घं ॥

ईर्यासमिति संशुद्धमतिवार विवर्जितं ॥ पूजयामि० ॥

ॐ ह्रीं ईर्या समितये अर्घं ॥

चतुर्विध महाभाषा शुद्ध संयम संगतं ॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं भाषा समितये अर्घं ।

एषणाशुद्धि संशुद्ध, यत्प्रवृद्धं विभागतः ॥ पूजया० ।

ॐ ह्रीं एषणा समितये अर्घं ॥

यस्मिन्नादान निक्षेपौ स्यातां संयम वृद्धये ॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपण समितये अर्घं ॥

व्युत्सर्गेण विशुद्धं यत्कर्म व्युत्सर्ग कारणं ॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं प्रतिष्ठापनासमितये अर्घं ॥

सौम्यहृतसदंसृग सारया जलधारया ।

मनोगुप्ति, प्रपूर्वाणि तदंगानि यजामहे ॥ जलं ॥
 चारु चन्दन कश्मीर कर्पूरादि विलेपनैः ॥ मनोगु ॥ चन्दनं ॥
 अक्षतैरक्षतानंत सुखद न विधायकैः ॥ मनोगु० ॥ अक्षतं ॥
 जाती कुन्दादि राजीव चम्पकानेक पल्लवैः । मनोगु० ॥ पुष्पं ॥
 खाद्यैराद्य पदैः स्वाद्यैः सन्नाज्यैः सुकृतैरिव । मनोगु० ॥ नैवेद्यं ॥
 दशाश्रैः प्रफुल्लद्रूपैदीपै पुष्प जनैरिव ॥ मनोगु० ॥ दीपं ।
 धूपैः संधूपितानेक कर्माभः सुख कारिभिः ॥ मनोगु० ॥ धूपं ॥
 नालिकैरास्रपृष्णादि फलैः पुण्य फलैरिव ॥ मनोगु० ॥ फलं ॥

कर्माणि हि महारोगा नश्यन्ति यत्प्रयोगतः ।

सञ्चारित्रौषधायाम्भै ददासि कुसुमाञ्जलिम् ॥ अर्घं ॥

(जाप्य १३ कुर्यात्)

ॐ ह्रीं अहिंसा पूर्व त्रयोदश विधि सम्यक्चारित्राचाराय नमः ॥ १ ॥
 ॐ ह्रीं असत्यविरत महाव्रताय नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं चौर्यविरत महाव्रताय नमः ॥ ३ ॥
 ॐ ह्रीं मैथुनविरत महाव्रताय नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं परिग्रहविरत महाव्रताय नमः ॥ ५ ॥
 ॐ ह्रीं मनोगुप्तये नमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं वाग्गुप्तये नमः ॥ ७ ॥
 ॐ ह्रीं काय गुप्तये नमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं इर्या समितये नमः ॥ ९ ॥
 ॐ ह्रीं भाषा समितये नमः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं एषणा समितये नमः ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं प्रादान त्रिचेपथ समितये नमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं प्रतिष्ठापना समितये नमः ॥ १३ ॥

॥ एभिर्म त्रैर्जाप्य कुर्यात् ॥ अर्घं चापि समुद्धरेत् ॥

॥ जयमाला ॥

अथराच्छंदः-नद्वेपोद्वे षट्तिन्यरुणदृशिक्कृतानेऋघोरोपसर्गे,

यस्मिन्रागोपि नस्यान्मलयजकुसुमं, दीयते भक्ति भाजा ॥

स्वर्णे लीर्णे तृणेवा, भवतिसमतुला, पुरय पापाश्रवेऽपि ।

सम्यक्चारित्र्यमेतत्तदहमिदमहे, पूजयाम्यादरेण ॥ १ ॥

स्वात्मानं योगिनो यस्माल्लभंते शुद्ध चेतसः ।

नमः समस्त माराय चारित्रायामलत्रिये ॥ २ ॥

यानि कानि तु सौख्यानि जायन्ते तानिउद्धृशात् ॥ नमः सम० ॥ ३ ॥

दौर्गतानि तु दुःखानि यदृते लभते नरः ॥ नमः सम० ॥ ४ ॥

लोकालोक विभागत्मा यतः प्राप्नोति केवलं ॥ नमः सा० ॥ ५ ॥

यच्छूद्धानान्नुषां जन्म सफलं सफलं भवेत् ॥ नमः सग० ॥ ६ ॥

लक्ष्मी लोचन लक्ष्याङ्गं यत्करोति नरं वरं ॥ नमः सम० ॥ ७ ॥

चक्रिणां तीर्थं कर्तृणां येनयाति पदं नरः ॥ नमः सम० ॥ ८ ॥

सुक्त्वायन्नापर किञ्चित् योगिनो योग जन्म कृत ॥ नमः सम० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्र्याचारय महार्घं ॥

विधायैथं सना पूजां चारित्रस्य विशुद्ध धीः ।

करोमि पूर्ववत्सर्वं मद्यर्थादिक्रमनिन्दितम् ॥ १ ॥

स्तुत्विति बहुधा स्तोत्रै बहु भक्ति परायणः ।

नानाशब्दैः समं लोके करोत्यानद नाटनम् ॥ २ ॥

अलंकृतयेन सदाश्रयंति सत्साधवः सिद्धि वधूवरत्वम् ।

मालामुपचिष्य सुरत्न पूतां, चारित्र रत्नं परिपूजयामि ।३॥

॥ रत्नाञ्जलि. ॥

अन्तर्लीन मल्लीमस प्रसरजिञ्जलीलोल्ल सत्केवलं,

लोकालोकविलोकन, क्रमगुण, ग्रामैक शुद्धि नयत् ॥

येनालंकृत विग्रहाः, चणमपि; क्षीणा नरानिर्मला ।

नैर्मल्यं प्रतिपद्य शाश्वत तमं, वन्दे० चरित्रं च तत् । ४ ॥

वतोऽपि गुरुणा दत्ता-माशिषं शिरसा सुधीः ।

गृह्णाति व्रतनिमुक्तोः मुक्तये व्रत कारकः ॥ ५ ॥

अनंतानन्त संसार कर्म विच्छिन्ति कारकम्

देयाद्दः संपदः श्रीमच्छरणं शरणं नृणाम् ॥ ६ ॥

॥ मालिनी ॥

विरम विरम संगान्मुश्च मुश्च प्रपञ्चं, विसृजमोहं विद्धिविद्धि स्वतत्वं ।

कलय कलय धृत्नं पश्य पश्य स्वरूपं । कुरु कुरु पुरुपार्थं निवृत्ता नन्द हेतोः ॥ ७ ॥

इत्याशीर्वादः ।

❀ जयमात्रा ❀

वृत्ता-रमणत्तय सारउ, भव्व पिघारउ, सयलह नीवह दुरियहरो ।

मुखियण गण महियउ, गुण गण सद्धियउ, मिच्छमोह मयणास करो ॥ १ ॥

पणवीस दोस वज्जिउ पवितु, अइयार रहिउ वसुगुण विजुत्त ।

अठ्ठ'गई णिम्मल विप्फरंति, जो तिरहं देवत्तण विलिनि ॥ २ ॥

णारइयवि तिस्थयरा हवति देव वि ए इन्दिय पउ लहंति ।

जे मिच्छत्तय सम्मत्त हीण, दालिहय णासिय ते धणीण ॥ ३ ॥

मइ सुय अवही मणपज्जणाण, केवलु वि कहिज्जइ मट्टयाण ।

अणणाणे तिएणइ भणइ नोइ, कुच्छिय मिच्छत्त जईम होइ ॥ ४ ॥

वोभुव णिम्मल पवणुवि असंग, परि अजिउ विकणयर सुत्ति संग

लोया लोहाविनयउ णियोइ बहु भेयह जउ चारित्त होइ । ५ ॥

पंचाइ महच्चय सभिदि पंच, गुणणउ त्तिणि पय जिय अवंच ।

पुण पचायार तिभेय जुत्त, मुणि धम्म कहहि देविब्द बुत्त ॥ ६ ॥

घत्ता-जिहि तिएणि विणर चिरू, गहणमुणे मइ, अंधउ आलस्पउपगुलवि ।

जिणवर भासिय, तिएण तरइ विणु, मुत्तिण मएणइ गणपइ वि । महार्इ. ॥

इन्द्रज्जानदुरंत संसार वने विषण्णे, वम्भ्रम्यते येन विना जनोयं ।

भवाम्बुधौ तद्भुवि नामरत्नं, रत्नत्रयं नौमिपरं पवित्रं ॥ १ ॥

अलक्ष्य लक्ष्य प्रतिबंधभेदी, योगीश्वरो यद्वशतः क्षणेन ॥ भवाम्बु० ॥ २ ॥

अनेक पर्याय गतेरभावाद्यस्मादनंतं लभते शरीरी ॥ भवाम्बु० ॥ ३ ॥

जनोभवेद्ये नजितान्तरंगं, स्वर्गापवर्गामलसैख्यस्त्वानि । भवाम्बु० ॥ ४ ॥

तं नारकं दुःखमसह्यमस्मादुपासकानां विलयं प्रयाति । भवाम्बु० ॥ ५ ॥

प्रभावतो यस्य पृथग्जनौघाः, स्वर्गाधिपत्यं क्षणतो लभते । भवाम्बु० ॥ ६ ॥

हत्वा विघ्नानि सर्वाणि यानि कानिपुरा कृतैः ।

सम्यग्रत्न त्रयं पूतं, मंगलं वितनोतु वः ॥ ७ ॥

नरामर कृतानेकरूपसर्गं निवारकैः ! । सम्यग्रत्न० ॥ ८ ॥

त्रिपत्संपत्ति नाशाय संपत्संपत्ति करणम् ॥ सस्यग्रत्न० ॥ ९ ॥

तुष्टि तुष्टि करं नित्यं, सर्वं रोगापहारकं ॥ सम्यग्रत्न० ॥ १० ॥

यद्वाग्द्रिय महाबल्ली दहनैक दवानलं ॥ सम्यग्रत्न० ॥ ११ ॥

संकल्प कल्पितानेक दान कल्प द्रुमोपमं ॥ सम्यग्रत्न० ॥ १२ ॥

यद्भाः शुद्धि सामान्यं, दुर्लभं द्रव्य कोटिभिः ॥ सम्यग्रत्न० ॥ १३ ॥

मंगलानां हि सर्वेषां, यदेवामल मंगलं, ॥ सम्यग्रत्न० ॥ १४ ॥

दुर्भिक्षादि महादोष, निवारणं परापरं, कुर्वन्तु जगतः शांतिं, जिनश्रुत मुनीश्वराः ॥ १५ ॥

सम्यक्सं पूजकानां हि श्रयच्छंभनघं पदं । कुर्वंतु० ॥ १६ ॥
 यस्य स्मरणमात्रेण विघ्ना नश्यन्ति मूलतः । कुर्वन्तु० ॥ १७ ॥
 पदार्थान्नामतेप्राणी यत्प्रासादैः प्रसीदतः । कुर्वन्तु० ॥ १८ ॥
 दृष्टाः पृष्टाः स्मृताः संतो येनंतसुखदायकाः । कुर्वन्तु० ॥ १९ ॥
 येषामाराधका नित्यं, नजेयास्त्रिदशैरपि । कुर्वन्तु० ॥ २० ॥
 सिद्धा बुद्धा विशुद्धा ये प्रसिद्धा जगतां त्रये । कुर्वन्तु० ॥ २१ ॥
 नानागुण महार्त्ना-लंकृता निरलंकृताः ।

कुर्वन्तु जगतः शांतिं जिन श्रुत मनीश्वराः ॥ २२ ॥

विसर्जन मन्त्र ॥

❀ सप्त ऋषि पूजा ❀

श्रीमद्गणेश्वर हिमश्मुख निर्गताया, मुनि प्ररक्षरिति चारु विनिर्गतायां,
 स्नाताननेक विधि धर्म तरंगिकायां, योगीश्वराननघरत्नधारान्समर्चे ॥
 ॐ ह्रीं दक्षिण योगीन्द्र स्थापनार्थं सुमनाञ्जलि क्षिपेत् ।

॥ श्री दक्षिण योगीन्द्र पूजन प्रतिज्ञा ।

त्रिपथगा यमनानघनमर्दा, प्रभृति पुण्य अलाशयजैर्जलेः ।

सुजन चित मधुव्रत रजित, गुरु पदाम्बुज युग्ममहंयजे । जलम् ॥

सुरभिताखिल दिङ्मुख नन्दन प्रभव चन्दन सौरभहारिभिः ।

परिभलोक्त कुङ्कुम चन्दनैश्चरणयोर्गुरु पूजनमारभे ॥ चन्दनम् ॥

विगत खंडमुखैर्धवल प्रभैः कमलबीजप्रयैर्विष्टुषाक्षतैः ।

अति नवैरिव पुण्यलवैभजे, पुरुवरांघ्रि सरोजयुगं शुभम् ॥ अक्षतं ॥

विक्रमनोत्तमवासविलोभितैरविकृतैर्भ्रमरालि निसेवितैः

शुचितरैः कुसुमैरहमादरात्-परिचरामि पदे परमं गुरोः ॥ पुष्पम् ॥

पुरट मंडन भाजनगैः शिवै, शवरुवरैर्घृतपूर सुधूरितैः ।

अमृतजैरिव पिंड चयैर्यजे, सुनिवर क्रम पंकजसुत्तमम् । नैवेद्यं ॥

महित सुप्रमथोत्प्रभतारका-चलिकयेव सुदीपक मालया ।

अरूण गगनरवांशुसमञ्ज्वलं, परिचरेभुज पाद युगं गुरोः । दीपम् ॥

अविरलैरप धूमकृशासुजै, गगनजैर्वर धूप संसुचयैः ।

अगुरुजैर्हरिचन्दन गंधिमिर्यतिपते पदवारिजमर्चये ॥ धूपम् ॥

नयन भुंग महोत्सव कारिभि परिणतैः सुधयौत्र विनिमित्तैः

मधुर चित्रसैर्विधिवैफलैः कृतमनो विनया जयमर्चये ॥ कलम् ॥

विद्या सागर पार दर्शन वराः ; काष्ठान्वयोद्योतिनः ।

स्वानंदं परमगताः कृतवपो-ध्यानाः कृपाम्भोधनाः ॥

येन प्राप्तनकर्म दाव दहने मेयामहेन्द्रामिधं

कीर्तियामनुकंपयंतु गुरवः, पुष्पाञ्जलिः प्रार्थिता ॥ अर्घ्यं ॥

इति इक्षिणयोगीन्द्र पूजा ॥

॥ अथ वाम योगीन्द्रार्चनम् ॥

योगार्यमोदय वलेन निहल्य दूरं. मोहान्धकारमखिलं नयनानुरोधं ॥

दोः संयतैः सकल वस्तुमयो हि लोको, दृष्टस्वदधियजनं वरमत्रकुर्वे ॥

ॐ ह्रीं वाम योगीन्द्र स्थापनार्थं पुष्पाञ्जलि चिपेत्

॥ श्री वाम योगीन्द्र पूजन प्रतिज्ञा ॥

परम गंधमनोहर शी करेत्याद्यष्ट कं देयं ॥ इति वाम योगीन्द्रपूजा ॥

प्रथमः सुर मन्सुरच, भीमन्सुहि द्वितीयक. ॥

अन्यः श्री निचयोनामा, तुरीयः सर्व सुन्दरं ॥

पंचमो जयवान् ज्ञेयः षष्ठोविजय लालसः

सप्तमो जय मित्राख्यः सर्वे चारित्र सुन्दराः ।

चारणद्धि समरुदाः वसुधुर्ये सुनीश्वराः ॥

स्थापयित्वा प्रपूज्येह, तान्सुदा शांति हेतवे ।

इत्युच्चार्य लिखितनां सप्तषिंशसुपरि कुंकुमाक्षतानि विक्रियेत् ॥

(उक्त श्लोक पढ़कर सप्त ऋषि की स्थापना के लिये पुष्प तथा अक्षत देपण करे)

॥ अथ प्रत्येक पूजा ॥

श्री ससुचारित्र विभूषितयं, तपोनुभावाच्चित व्योममानं ।

आद्यं मुनिनां भव संख्यकानां, समाह्वयेत् सुरमन्यु संज्ञं ॥

ॐ ह्रीं सुरमन्युषे अत्रावतरावतर संधौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनं ।

अत्र मम सन्निहितोभव २ वषट् सन्निधिकरणम् ॥

ॐ ह्रीं सुरमन्यु ऋषये जलम् । गंधं, इत्यादि सर्वत्र प्रयोज्यं ॥

इस प्रकार ॐ ह्रीं इत्यादि मन्त्रपढ़कर अलग २ आठों द्रव्य चढ़ावे । एवं आगे मी इमी प्रकार सातों ऋषियों की अलग २ स्थापना कर के मन्त्र पढ़ कर आठों द्रव्य चढ़ावे ।

नैकद्यतो यस्य दभूव लोको, निरामय सत्यतपोधनस्य ।

श्रीमन्यु रिंग्याख्य तथा द्वितीयं, तमाह्वये शांति करं नराणाम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्यु ऋषये अत्रावतरावतर इत्यादिना स्थापनं ।

ॐ ह्रीं श्रीमन्यु ऋषये जलं इत्यादि ।

ध्यानान्निदग्धाऽशुभकर्मकत्वं, निःसंगवृत्तं बहुशील पात्रं ॥

प्राज्ञं बुधानां सुखदं प्रजाया, आरोग्यये श्रीनिचयं तृतीयं ॥

ॐ ह्रीं श्री निचय ऋषये अत्रावतरावतरेत्यादिना स्थापनं ।

ॐ ह्रीं श्री निचय ऋषये जलामित्याद्यष्टकं देयं ॥

अनेकधा संयम तोयसेकैस्तपो नगो यस्य पुधर्मशास्त्र ।

आर्षः फलैः संकलितस्तुरीयां, संस्थापये सुन्दरमादि सर्वम् ॥

ॐ ह्रीं सर्व सुन्दर ऋषये अत्रावतरा वतेरत्यादि ।

ॐ ह्रीं सर्व सुन्दर ऋषये जलमित्याद्यष्टकं देयं ॥

वचो यदीयं बहु भव्यसंघ, प्रमोदयामासजिनेशमार्गे

ऋषि गणेशगमनेत्र निष्ठ, सः पंचमःसंजयवान् ऋषिणाम्

ॐ ह्रीं जयवान् ऋषये अत्रावतरावतरेत्यादि

ॐ ह्रीं जयवान् ऋषये जलमित्याद्यष्टकं देयं ।

मेधागमे यो मथुरा नगर्यां, न्यग्रोधमूलेसह पण्डुनीन्द्रेः ।

संस्थाप्य रस्याम्बर चारणद्धिं संस्थायै वैभयलालसं तं ॥

ॐ ह्रीं विनयलालस ऋषये अत्रावतरावतरेत्यादि० ॥

ॐ ह्रीं विनयलालस ऋषये जलम् । इत्यादि अष्टकं देयं ।

यन्नामतो माथुरसर्व लोको, विषुव्य रोगान् बहु दुःख देयान् ।

सुखी हृषीक बहुधा प्रपद्ये, त्वमेव शान्त्यै जयमित्रं संज्ञं ॥

ॐ ह्रीं जयमित्र ऋषये अत्रावतरावतरेत्यादि ॥

ॐ ह्रीं जयमित्र ऋषये जलम् इत्याद्यष्टकं ॥

❀ समुच्चयाष्टकम् ❀

अंभोभिरंभो जयरागमिश्रै, रोते वसुग्रैर्यन्तिस्रमानैः

अमर्त्य मंथादि मुनीश्वराणाम् प्रक्षालयामो वरपादयज्ञम् ॥

ॐ ह्रीं सप्तर्षिभ्यो जलम् यजामहे स्वाहा ।

सुचन्दनैश्चन्द्रगतैश्चशीतैः ऋषीश्वराणां वचनानुगीतैः ॥ अमर्त्यं मं० ॥ चन्दनम् ॥

ब्रह्माक्षतैर्निस्तुष धौतरस्यैः, नासाक्षि सौद्गम्यकरैश्चदीर्घैः ॥ अमर्त्यं० ॥ अक्षतम् ॥

तपः प्रभावाजितकाम स्वक्तैर्गतातुमोदैरिव पादलग्नैः ॥ अमर्त्यं० ॥ पुष्पम् ॥

त्यक्तं यतीशौरिवसर्पिपूर पूरःस्थितं भाति रसैः समृद्धम् । अमर्त्यं० ॥ नैवेद्यम् ॥

तपः प्रदीप्यैव विनिर्जितायै, प्रदीपिका सेवितुमागतांस्तान् । अमर्त्यं० ॥ दीपं ॥

वैराग्य भावेन निवेषितायै, मुनीश्वरैस्तानपिधूप धूमनान् । अमर्त्यं० ॥ धूपम् ॥

आसादितारंग मुभोच सोचै रस्यैर्नूनैर्बहुभेद युक्तैः । अमर्त्यं० ॥ फलम् ॥

सद्धत्तामलरत्न भूषण भृतांः स्वसंयतानां वराम्

इज्या सज्जल चन्दनाक्षत चयैः पुष्पान्न संदीपकैः ।

धूपैर्दिव्यफलैर्मुभक्ति मनसो, ये कुर्वते तेनराः ।

सर्वोपद्रव व्याधिभेद रहिता. यान्धेवसौख्यं परम् ॥ अर्थं ॥

ॐ ह्रीं सुरमन्यु ऋषये नमः । ॐ ह्रीं श्रीमन्यु ऋषये नमः । ॐ ह्रीं श्री निचय ऋषये नमः ।

ॐ ह्रीं सर्व सुन्दर ऋषये नमः । ॐ ह्रीं जयत्रान् ऋषये नमः । ॐ ह्रीं विनयलालस ऋषये नमः ।
ॐ ह्रीं नयमित्र ऋषये नमः ॥ एभि मंत्रै जीष्वां कुर्यादर्वचापि समुद्धरेत् ॥

(स प्रकाऽ ७ जाप्य देकर अर्घ चढ़ावे)

॥ जयमाला ॥

ऋषिनिकर महं सारं, नाकेश्वर सकल सौख्य दातरं ।
इज्ययति गुण हारं, निर्मलध्यानान्नि दहति संसारं ॥ १ ॥
अयमनिराश, जित चित्तदोषगतकर्मपाश ।

जय जयनिष्काम, संयत सुरमन्यु सुसौख्य धाम । २ ॥
भाजित सुभाव, निर्नाशित पीन समेश्वराव । श्री मन्युदेव, जयनिहित दविश्वरस्मचर सेव । ३ ॥
श्रीनिचयनोसि, सुखदातानिर्मलगततमांसि । नष्टानिवेही, जय बोधिसत्वो मे देवदेही ॥ ४ ॥
निखिलैर्नतोसि; लोकैर्भक्त्या जय तव तपांसि । जनतापहानि, सर्वादिसुन्दर सौख्यदानी ॥ ५ ॥
चारित्रनीर, विद्यापितकामानल सुधीर । जयवान ऋषीश, जयमोह नाग विषनाग विष ॥ ६ ॥
दुर्गोपसर्ग, दूरीकृत तर्पितभञ्जवर्ग । तत्त्वार्थ भाव, वैनयलालस जय निरभिलाष ॥ ७ ॥
ज्ञानोष गेह वरचारणद्धिमृषित स्वदेह । नष्टोरुुरोग, जय जय जयमित्र सुत्यक्त भोग ॥ ८ ॥

धत्ता=इति जयमाला, भक्ति विशाला, येषठंति भनियणनराः ।

ते सन्निखलसक्ता, गुण गण रक्ता, यातिमुख बहु विघ्नहराः ॥ महार्घ ॥

येषां संग समुद्य सुद् गतमहघ्राताच्चसंपूर्णितो. वंधो भूरि नरादि कालनिचिते
 शुक्लमर्णां क्लेशदे । तेभ्यो भव्यजना वपोधन चराः सप्तर्षिं संज्ञाभृतो । नित्यं पुत्र
 कलत्र धान्य धनदा कुर्वतु वीसंगलं ॥

इत्याषिर्वादि ॥

॥ श्री अनंत व्रत पूजन विधान ॥

प्रणिपत्य महावीरं, वक्ष्ये पूजा विधानकम् ।

अनंत व्रतत्वस्या, -नंत सौख्यस्य सिद्धये ॥ १ ॥

चतुर्दशं तीर्थकरेषुबंधं, समाह्वयाम्यत्र जिनेन्द्रवर्यं ।

अनंतनाथं जित मोह मारं, चतुष्टयानंत विभूषितगं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री रिपभ नाथ तीर्थंकर अत्र अत्रतर अत्रतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री रिपभ नाथ तीर्थंकर अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्

ॐ ह्रीं श्री रिपभ नाथ तीर्थंकर अत्र सम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(ऊपर का श्लोक पढ़ कर इसी प्रकार चौदहों पुजाओं में अलग २ भगवान की स्थापना करे)

॥ अनंत यंत्र स्थापित करे ॥

देव सिन्धु यमुनादि संज्जलैः सुरभिवस्तु मिश्रितैः ।

षावनैरमृतसौख्यदायकम् तीर्थं नाथ वृषभं यजाम्यहं ॥ जलम् ॥

गंधलुब्ध मधुपैः सु चन्दनैः, कुंकुमाद्य वनसार मिश्रितैः ।

बन्म मृत्यु भव ताप हारकैस्तीर्थनाथ वृषभं यजाम्यहं ॥ चन्दनम् ॥

कुंद चन्द्र का हार शुभ्रकै, स्तन्दुलैः सुरभि शालि संभवै ।

देव मानव मुनीन्द्र सेवितम्-तीर्थनाथ । अक्षतम् ॥

मालती कमल कुंद केतकी, पाटला त्रकुल चम्पकोदगमैः ।

काम कुंजर निघात तोद्यतैस्तीर्थनाथ ॥ पुष्पम् ॥

पायसाज्य घृत पक्व पूरिका, धेवरोदन सुशाकफान्वितैः ।

पावनैश्चरुभिरिष्ट सिद्धये, तीर्थनाथ ॥ नैवेद्यम् ॥

मोहतामस हरैः शिखोज्ज्वलैश्चंद्रवति घृत तैल निमितैः ।

दीपकै विंभल केवलीश्वरम् तीर्थनाथ ॥ दीपम् ॥

कर्म काष्ठ दहने हुताशनं, चंदनागुरुसुधूपृथ्म्रकैः ।

गंध व्याप्त दश दिक्प्रदेशकैः तीर्थ नाथ ॥ धूपम् ॥

मोच चोच कदली सुमाधवी पूगचिर्मट सुचूतसत्फलैः ।

नासिका नयन चित्त तोषदैः, तीर्थ नाथ ॥ फलम् ॥

पानीय चन्दनवरोद्रगम तन्दुलोद्यैः, नैवेद्य दीप शुभ यूप फलार्घ्य पादैः ॥

सं पूजयामि वृषभं जित मोह मल्लं, श्री नाभिराज तजुजं जयकीर्ति धारम् ॥ अर्थ ॥

❀ जयमाला ❀

रिपञ्च जिनेन्द्रं गतभवतन्द्रं, सुर नर पूजित यद्द कमलम् ।
भ्रमजलतारं सुख विस्तारं, मनः सुसिद्धयै गुण विमलम् ॥ १ ॥

शुचि पाप तमो भव बाल दिनं, भुवनत्रय पूजित षाड् जिनं ।
वृषभं प्रणमामि जिनेन्द्रवरं, शिव सौख्य सुधारस पान करं ॥ २ ॥
शतपंचक चापसु दीधं तनुं, शुभ लक्षण हाटक वर्णं तनुं । वृषभं, ॥ ३ ॥
नृप नाभि कुलाभार चन्द्रनिभं, मरू कुक्षि मसुद्भव रत्न विभं । वृषभं ॥ ४ ॥
धन देव विनिर्मित कोष्ठसभं, जिनकांति विनिर्मित तिग्म विभं । वृषभ, ॥ ५ ॥
शत शक्र सप्तचित पाद कर्जं, रथ भूमिनिपातितमानसजं । वृषभं ॥ ६ ॥
वचनामृत तर्पित भव्य जनं, गगनांगण दुंदुभिनाद धनं । वृषभं ॥ ७ ॥
निज दर्शनजीव कुवैरी हरं, शत योजन सौम्य सुभिलकरं । वृषभं ॥ ८ ॥
अतिमायितमानव देव भरं, भुवनातिग संस्थित भुवितवरं । वृषभं ॥ ९ ॥
धत्ता-जय वृषभ जिनेन्द्रं ध्वनिघन केन्द्रं, जन्म जरान्तक भय हरणं ॥
त्रिभुवनमणि भूषं, गतधव दूषं: जयकीर्ति विद्धि हि शरणम् ॥ १० ॥

॥ श्री अजित नाथ पूजा ॥

त्रिपथगामृत सागर वारिणा, सुरभिभवस्तु शीतल कारिणा ।

जनन मृद्यु जराभय हारिणा, परियजे ऽजितनाथमहं थियैः ॥ जलम् ॥

प्रचुर कुंकुम पंक विभिभ्रितै, मलय पर्वत संभव चन्दनैः ।

विविधथाप हरै शुर्वनाधिपं, परियजे०... ०... ॥ चन्दनम् ॥

सुरभि शालिज वंदुल पुंजवैः कुमुद, वन्लमहार द्विमोज्ज्वलैः

कनक पात्रगतैर्कमलाधिपं, परियजे०... ०... ॥ अक्षतम् ॥

विकसिताब्जसुकैरवमल्लिका, वकुल चंपक मोगर पुष्पकैः ।

मधुर गंधसमाहृतपट्पदैः परियजे०... ०... ॥ पुष्पम् ॥

कटक घेवर मोदक पूरिका; बहुल पायस गन्ध वरोदनैः ।

नयनचित्तहरैर्मधुरैर्नवैः परियजे०... ०... । नैवेद्यम् ॥

शशि दिवाकर धामसमानकैः, परमकांति तिरस्कृततामसैः ।

सुघनसारविनिर्मित दीपकैः परियजे०... ०... ॥ दीपम् ॥

अगुरु चूर्णं सु चनदन धूपकैः विगतधूमसु पावक संगतैः ॥

सजल नीरद पंक्ति समानकैः, परियजे०... ०... ॥ धूपम् ॥

ऋमुक्त जंभल निम्बुक चोचकैः, प्रसुख कानन मध्य समुद्रभ्रवैः ॥

सुरभिपक्व फलैनयन प्रियैः परियजे०... ०... ॥ फलं ॥

विमल सलिल धारा, गंधपुष्पाद्गतोद्यैः,

विविध चरुमिरुद्यदीप धूपैः फलोद्यैः ।

अजित जिनवरेंद्रं पूजयाम्यर्घ्यदानैः

सकल विमल बोधं श्री . याद्यंत कीर्तिः ॥ ६ ॥ अर्घ्यं ॥

॥ जयमाला ॥

विगत मल कलंकं, विष्टपेशं विशंकं,
धृतं चरण सुभारं, प्राप्त संसार पारं ।

हत मदन मदेभं, स्वीकृतापेन्द्र शोभं,
विनमित सुरनाथं, कीर्तये लोक नाथं ॥ १ ॥

केवल नयन विलोकित लोकं, ध्वस्त पापरिपु जन्मित कुशोकं ।
अजित विजित कर्मारि समूहं, वन्दे सुनुतसु सुर नर व्यूहं ॥ २ ॥

ध्यानानल भस्मी कृत कामं, शरणागत केवल विश्रामं ॥ अजितवि० ॥ ३ ॥
प्रथम बाण हतकर्म कठारं, निजमत निजित परमत शौरं ॥ अजित० ॥ ४ ॥

श्री जितशत्रु महीपतिनुजं, विजयादेवी मोहित मनुजं ॥ अजित० ॥ ५ ॥
गगनान्दोलित चामर वृन्दं, शिरसि धृतच्छत्र त्रयबंधं । अजित० ॥ ६ ॥

रत्न त्रय संयम शुभचित्तं, मुक्ति वधूरस लिप्त सुचित्तं । अजित० ॥ ७ ॥
सूर्य कोटि भामण्डल भासं, इयाकलानिधि विमलाकाशं । अजित० ॥ ८ ॥

वचनानृत तर्पित गुण तानं, मानस्तंभ दलित परमानं, । अजित० ॥ ९ ॥

आयुः सन्वति पूर्वा सु लक्षं, संस्तुत साक्रेतापुर रत्नं ॥ अन्विउ. ॥ १० ॥

मालिनी=अजित जिनवरयोन्मुक्ति कांतवरस्य
विरचित जयमालां, भावपुष्पै विशालां ।

पठति विमल भक्त्यायो जनः शुद्ध वेत्तां,

स भवति भक्तुक्तः श्री जयाद्यंत कीर्तिः ॥ पूर्णार्थम् ॥

॥ श्री शंभवनाथ पूजा ॥

गांगा वीराब्धिप्रतौयैर्मुनि वचन समैर्धर्मतापाप नोदैः ।

सद्यः तृष्णा प्रहारैः कलिमल हरणैः शुद्ध कर्पूर गौरैः ॥

श्रीगर्भोज्जन्मदीना, सभवसृति सभा केवला लोककाले ।

सेव्यं देवेन्द्र वृन्दैः त्रिनपतिममलं संभवं पूजयामि ॥ नलम् ॥ १ ॥

प्रसन्नः पापापनोदैर्मलयवन भवै, श्वन्दनैः केशराढ्यैः ।

गंधाकुण्डेभ कु भस्थल गत मधुपै, घ्राणपैर्यैर्नराणाम् ॥ श्रीगर्भो० ॥ २ ॥

शुभ्रवृत्ताफलाभैर्हिमशशिक्रियोद्भासुरैः शुभ्रवृत्तैः ।

प्रोच्चकुन्दावदातैः शकलविरहितैर्गंधशालेयपुत्रैः ॥ श्रीगर्भो० ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥

भन्दारैः पारिजातैर्भकुल कुवल्यैश्चम्पकैश्चारुगंधैः ।

संतानैः पाटलाद्यैर्विकसित कुसुमैः सिन्धुवारैरनिन्द्यैः ॥ श्रीगर्भो० ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

सर्वे गर्वैः पवित्रैश्चरुमिरतिरां व्यंजनैर्गंधवद्भिः ।

नित्यं वाष्यायमानैः घनरस निचितैः सुपशाल्योदनज्यैः श्रीगर्भोः ॥ ५ ॥

कर्पूरं व्रात गतैः किसुरत्रि क्रिणैः केवलज्ञान तुल्यैः

दीर्घैर्ध्वस्तान्धकारैः कनक मणिमयैः पात्रमद्यधिर्दुः ॥ श्रीगर्भोः ॥ ६ ॥

धूम्रैः कृष्णागुरुत्थैः सुरपति कमलं शीघ्रमाकृष्टकामै-

र्भ्राम्यद्भृंगार नोर्धैरिव पवन वशात् प्रोच्छ्रिचै व्योममार्गैः ॥ श्रीगर्भोः ॥ धूपम् ॥

सोचा बोचाप्रराजादन पनसलं सन्माथवी मातुलिंगैः ॥

जम्बीराबोट पूगादिकफल निवहैमुक्ति कान्ता कुवामैः ॥ श्री गर्भोः ॥ फलम् ॥

पाथोगन्ध प्रसूनाक्षत शुभचरुभिर्दीपधूपैर्फलोद्वैः ।

दूरीभूतोद्भवन्धं विविधरिपुजयोत्कीर्तये रत्नभूषं ॥ श्री गर्भोः ॥ अर्घं ॥

❀ जयमाला ❀

चतुस्त्रिंशदक्षिण्यै, रष्ट प्रातिहार्यकैः ॥

भूषितं संभवंस्तौमि धृतानंतचतुष्टयम् ॥ १ ॥

निखिलामर पूजितपादकनं, त्रक्तेशरि संहत कामगजं ।

प्रणमामि भवोदधिनीरवरं, जिनि संभवमंहः पुन्जहरं ॥ १ ॥

भवदुःख दवानल मेघ जलं, हतमोह महारिपु दुष्ट बलं । प्रणमामि ॥ २ ॥

अत्राय निमेष सुदेहधरं, श्रुत शुद्ध सुसंयम भारवरं ॥ प्रणमामि० ॥ ३ ॥
 नर केश विवर्धन संरहितं, विविधद्विविभूषण संमहितं ॥ प्रणमामि० ॥ ४ ॥
 सकलामय वज्रित संवपुशं, कनकोज्ज्वलतूर्यशतं धनुषं ॥ प्रणमामि० ॥ ५ ॥
 सुशोचर पन्च गणेश नुतं, सुर मानव चञ्चित कीर्ति युतं ॥ प्रणमामि० ॥ ६ ॥
 वचनामृततोषित भव्य जनं, फल पुष्प सुपल्लव नम्र वनं ॥ प्रणमामि० ॥ ७ ॥
 भुवने कुमताख्यतमस्तरणं, विगताश्रय देह भृतां शरणं ॥ प्रणमामि० ॥ ८ ॥

मालिनीछंद-परमगुण निधानं, कर्म बल्ली कुठारं, ।

त्रिशुवनपति सेव्यं सर्व लोकप्रदीपम् ।

दुरित तिमिर मानुं संभनं मंदश्रेहं ,

मनसि विगत सेव्यं, श्री जयद्यंत कीर्तिं ॥ ६ ॥ पूर्णार्घ्यं ॥

॥ श्री अभिनंदननाथ पूजा ॥

विविध जन्म जरान्तक शांतये, विविधया मलयया जल धारया ॥

शिशिरसीकर जालहतां हसा, समभिनंदन पाद युगं यजे । जलं ॥ १ ॥

अतिहिमैहरि चन्दन घर्षजे. पटलितैर्वरगंधसुचन्दनैः ।

असुर दारुचयेक विभावसुं समभिः० ... ॥ चन्दनं ॥ २ ॥

विलसदक्षत धाम लताङ्कुर प्रकर बीजमयैः सितभाक्षतैः

रुचिकरैर्भवं दारुणता हरैः समधि०..... ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥

रतिमिवारचयद्भिभरलित्रजै-मधुर गुञ्जित कैवल्यान्वितैः

वकुल चंपक मोगर पंकजैः समभि०..... ॥ पुष्पं० ॥ ४ ॥

वितुषशालिज भक्त मयैर्नवै, रचरुधिराचित पाचित संस्तुतैः ।

बहुविधैर्विमलैर्घृत पायसैः, समभि०..... नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

मण्डिगणैः प्रभयाजिततारकैः रिवसुरालयजैस्त्विमिरापहैः ।

परिसर प्रसृत प्रभदीपवैः, समभि०..... ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

सुरपतेः श्रियमात्रजितुं जनादवनितोऽम्बर मध्यगजैरिव

विततधूम्रभिषेणसुधूपकैः समभिषंदन०..... ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

अमृतजैरिव रत्न रसायनै

सुभवमैर्वर मोद विधायकैः

फलवरैर्फलवत्फल लब्धये, समभिनं..... ॥ फलं ॥ ८ ॥

सलिल चन्दन पुष्प सुतंदुलै-रचरु सुदीप सुधूपफलोच्चयैः ।

प्रवरभक्ति चयोपहृतैसुंदा, समभि०..... ॥ अर्घ्यं ॥ ९ ॥

❀ जयमाला ❀

आर्याछंद-अभिनंदनमधहार, सुवन त्रय वन्द्य सौख्य दातारम् ।

नौम्युज्वल गुण धारं, ध्यानानल दग्ध संसारम् ॥

विबंध निसंध विरोप विदोप, पिकाय त्रिमाय वितोप विशेष ।

सुरोरग नेत्रमदाकृतसेव, जयाभिस्तुन्दन तीर्थ सुदेव ॥ १ ॥
विरोग विभोग वियोग विदेह, विपुत्र विशत्रु विदृह विगेह ॥ सुरोरग ॥ २ ॥
विमंत्र विपत्र वितत्र दिगंध, विरोध विशेष विबोध विबंध ॥ सुरोरग ॥ ३ ॥
विनेत्र विमित्र विशत्रु विदार, विमृत्यु विभृत्य विनृत्य विभार ॥ सुरोरग ॥ ४ ॥
विचित्त विवित्त विपस्त्य विमोह विशस विदश विवंश ॥ सुरोरग ॥ ५ ॥
विमास विपास विदास विलोक, विक्लेश विदेश विवेश विशोक ॥ सुरोरग ॥ ६ ॥
विदान विमान विपान विगीत, विधमं विकर्म विशर्म विभीत ॥ सुरोरग ॥ ७ ॥

घत्ता-अभिनंदन जिनदर, मुक्ति वधुवर, नाशित कर्म कलंक भर ॥

जयकीर्ति सुखाकर, धर्मदयाधर, जय जय भवजल नीरतर ॥ ६ ॥ महार्घ ॥

❀ श्री सुमति नाथ पूजा ❀

सुरवास समुद्भूतैस्तोयैः कर्पूर वासितैः ।

हेमशृ गार नालस्थैः सुभति शार्चयाम्यहं ॥ जलम् ॥ १ ॥

सुगन्धद्रव्यसम्पिम्श्रै, रचन्दनैर्मलयोद्भवैः ।

सुगालवास घृष्टैश्च, सुभति..... ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षतैः शालि संभूतै रुज्ज्वलैश्चन्द्र संनिभैः ।

कुशशालालितसारैः, सुभति..... ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥

नैनही पातिजित्स्वः चर्मरश्चोम रंजुकैः ।
 मन्द कुन्दोद्भवैः पुष्पैः सुमति ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥
 नानाभिधरन पकान्ते, गद्यमनन घृतोद्भवैः
 विशिष्टैर्मोदकैर्वर्धैः, सुमति ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥
 हेमपासव
 स्थानैः, दीपैर्दीप्तप्रभासरैः
 विपुला लोच कर्दीपैः; सुमति ॥ दीपम् ॥ ६ ॥
 कृष्णगुरु भवै र्ध्वैः ध्रुवैर्वीमितदिङ्मुखैः
 धूम्रमात्रा विद्यासाल्यैः; सुमति ॥ धूपम् ॥ ७ ॥
 नारिकेलानि नागैः, कपित्थैर्वीजपूरकैः ।
 कश्मूकाम्र फलैर्भक्ष्यैः सुमति ॥ फलम् ॥ ८ ॥
 नीरंश्चन्दन संयुतं. सुकुमुमैः, शाल्यक्षतैरक्षतैः ।
 नानाज्यादि गुणक गंधसहितैः नैवेद्यसार त्रयैः ।
 भास्वदीपसुधूपसंगुत फलैः, रचं निधेनित्यशः,
 स्तेनै वाञ्छित प्राप्नुवतिसततं, जयकीर्ति चन्द्रोपिचम् ॥ अर्थं म ६ ॥

॥ जयमाला ॥

राज्यंराज्य गजादिः कामकमला, गेहं तुरज्जान्वितम् ।

यः धीमानभिरूप वस्तु निवितं, त्यक्त्वाहितो सर्वतः ॥

श्रापण्यं समन्त्राप काल मयं, ज्योतिः परं प्राप्तवान्,

भद्रंनो सुमति प्रयच्छतुरां तीर्थेश्वरः सोऽधुना ॥ १ ॥
गुण गण भूपितृज्ञान करंडं, संसाराम्बुधितरणतरुं ।

वन्दे प्रशमित कुनय समूहं, सुमतिप्रदलित कर्म समूहं ॥ २ ॥
गर्भाधानेहरिशत सेव्यं, दिक्कुमारिकृतमावुनियेयं । वन्दे प्रश० ॥ ३ ॥
मेरुशिखरकृतजनुरभियेकं, रोधः प्रसरित कीर्ति निषेकं । वन्दे० ॥ ४ ॥
त्रिभुवन जन नयनोरपल चन्द्रं, ध्यानाध्ययनविनिर्जित तन्द्रं ॥ वन्दे० ॥ ५ ॥
रूधिर दुग्धचित चर्मसुपात्रं व्यंजन लक्ष्ण ललित गात्रं ॥ वन्दे० ॥ ६ ॥
वज्र दृपभ नाराच शरीरं, समचतुरस्राकार गंभीरं ॥ वन्दे० ॥ ७ ॥
मलवर्जित समभात्र स्वरूपं, निस्वेदं ज्ञानामृत कूपं ॥ वन्दे० ॥ ८ ॥
पट् चत्वारिंशद्गुण गौर, कौसलपुर परिपूरित पौरं ॥ वन्दे० ॥ ९ ॥
दुर्धर योग चरित्रसुधारणं, कृतसम्भेदाचल शिववरणम् ॥ वन्दे० ॥ १० ॥

मालिनीच्छेद-अनुपम सुखकर्ता, दुःख संत षहतां,

प्रहत जनन कालः, स्फोटित ध्वान्त जालः ।

स जयतु जिन नाथ. पंचमः प्राञ्जिवात्मा,

सकल विमल मूर्ति. श्री जयाद्यंत कीर्ति ॥ महाद्यं ॥ १ ॥

॥ श्री पद्म प्रभ पूजा ॥

विलिम्प धति वाहिनी, प्रमृतितीर्थ रम्योदकैः,
सुरेन्द्र वचनोपमैः सुवनसार संवासितैः

अमेयमहिमाकरं विक्रच पद्म भासां निधि
महासिगुर सेवितं जिनवरेन्द्र पद्मप्रभं ॥ जलम् ॥ १ ॥

प्रभूत मलयोद्भवैः सरग केशरालि श्रितैः
मिलिन्द निकरोद्भवत्सरस रस्य भङ्गारकैः ॥ अमेय० ॥ चन्दनं ॥ २ ॥

तुषार हेम नुक्ताम सिथरी श्रुकोज्ज्वलै,
सुगंधवन शालिजैः सुद्विमथित वीजाङ्कुरैः ॥ अमेय० ॥ अद्भुतम् ॥ ३ ॥

कदम्ब सुव मन्त्रिका वक्त्रा कुन्द नीलोत्पलैः,
मेरु सुसुमोकरैर्विकच सिन्धु वाराम्बुजैः ॥ अमेय० ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

निराज्य परिपचितैर्वटक मूष शाल्योद्भवैः
बुधायनिवारकैर्विमल हेम पात्रस्थितैः ॥ अमेय० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥

दिशंत निमिराण्डैः मिहिर कोटि राशी प्रभैः
प्रयोधनिकरैरिव स्फुरित दीप रत्नैः रत्नैः ॥ अमेय० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

मिलिन्द सुख कारणैरगुरु संगधृषोद्भवै
रसगुरुधूपकैर्निचित सर्व काष्ठाग्निः ॥ अमेय० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

रसाल फल मंडली ऋतु ऋचराजादनैः

महापथुर माधवी फल सु चित्तपूगदिते ॥ अमेय० ॥ फलम ॥ ८ ॥

पयः सुरभिषुष्यंकरचरुभिरुचैर् दौषकै

फलांतुल्यपूषकै र्जयति कीर्तिं संक्रीतित्थ् ॥ अमेय० ॥ अर्थं ॥ ९ ॥

॥ जयमाला ॥

वृत्ता-जयवीर दयाकर, गुणरत्नाकर, सुखकर निर्मलशीलधरं ।

जिनकमलद्विवाफर, कालिमल हरजिन, पद्मप्रभ श्यम नारी वरं ॥ १ ॥

अजरागर केवलं लब्धिवर, शिवसौख्य सुभारस पानकरं ।

प्रणमामि यमोद्दधिगारकरं, जिनपद्मन विभासुर नादवरं ॥ २ ॥

यमसंयम भावकमारधरं, शतयोजनसौम्य सुभिक्षकरं; ॥ प्रणमामि० ॥ ३ ॥

कलि कल्मष पंक सुशौचकर, भवनाजितगद्युवर्णधरं ॥ प्रणमामि० ॥ ४ ॥

निज भासुर भानु सहस्र रूचि, कृतदुर्धर काम कलत्र शुचिं ॥ प्रणमामि ॥ ५ ॥

अभिमान महोरुह तोदकरं, गुस्वरत्न नदीपानिसारतरं ॥ प्रणमामि० ॥ ६ ॥

सन्निवेश गृहं हत मृन्युमदं, कुमवान्धतमोपहृद्यानपद ॥ प्रणमामि० ॥ ७ ॥

कमलांकितसुन्दर देहधरं, कमलापञ्चि सेवित बोधभरं ॥ प्रणमामि० ॥ ८ ॥

हरि शकरधातु सुदर्प हरं, हरितापघंसंयम लब्धिवर ॥ प्रणमामि० ॥ ९ ॥

शादूर्ल विक्रिडितछंद-विद्यासागर पार दर्शन परः काष्ठान्द्रयो द्योलकः,

स्वाह्मानद पयोधिमध्य विलसत्कल्लोलकेली करः ।

भास्दिह्य पयोज कांति कलित पद्मप्रमः सधूम

जीयाद्रन्ध्रुनीश दीक्षित त्रयोक्तीस्त्रुतः संततम् ॥ महावर्चं ॥

॥ श्री सुपार्श्वनाथ पूजा ॥

श्री क्षीरसागर सुग्म्य तरण जातैः भृंगार सारमुख निजित चारुतोयै ।

देवेन्द्र चन्द्र चुत पाद पयोजयुग्म, तीर्थकरं जिनसुपार्श्व मवयजामि ॥ जलम् ॥

सद्गंधद्रव्यगारपूरित चन्द्रनौवैः, सत्कुङ्कुमाभवनसार विमिश्रितगौ ॥ देवेन्द्र, ॥ चन्दनम् ॥

क्षीरोद वारिज समञ्जल फेन कल्पैरिन्दु प्रभा निकर निर्मल तंदुलौघैः ॥ देवेन्द्र ॥ अक्षतम् ॥

संदार चरुपक पयोज कदम्ब जातैः घृन्दारक प्रथित वृक्ष विशेष पुष्पैः ॥ देवेन्द्र ॥ पुष्पम् ॥

आज्य प्रपक्व घन चारुतरोद्यमोज्यैः, सद्घेवरादिभिरनीक विधानबुक्तैः ॥ देवेन्द्र ॥ नैवेद्यम् ॥

दीपैः सुहंसततिदीप्यभिधाम तुल्यैः अष्टापद प्रभृतिनिमित्तमानस्यै, । देवेन्द्र ॥ दीपम् ॥

श्रीमङ्गिरीन्द्र मलयोद्भवचारुधूपैः, गंधोरुभिर्हयमि समाहृत पट् पदोघै ॥ देवेन्द्र ॥ धूपम् ॥

द्राक्षा फल प्रभुखदाडिम मातुलिंगैः, कम्प्राप्रपूग कदली फल नारिकेलैः ॥ देवेन्द्र ॥ फलम् ॥

वार्णधपुष्प शुभ तन्दुल भोज्यदीपैः, धूपैर्फलघल्लिभिरेव जयाद्यकीर्तिः ॥ देवेन्द्र ॥ अर्घ्यं ॥



❀ जयमाला ❀

जिनेन्द्रं शंकरं स्वौमि, सुपार्श्वं नाम धारकम् ।

सुतरां सेवितं पार्श्वं, यत्पदं शिव सौख्यदम् ॥ १ ॥

त्रिभुवन पतिव्रत चरण सरोजः व्रञ्चचर्यजित सजल मनोजं ।

वन्दे स्वस्तिक लोच्छन्न देहं, केवलज्ञान सुधारस मेहं ॥ १ ॥

नील वर्ण सुन्दर शुभकार्यं, निर्जित मोह महाभटमायं । वन्दे० ॥ २ ॥

परम निरंजन कृतपदवासें, दिनकर कोटि तिरस्कृत भासें । वन्दे० ॥ ३ ॥

द्वादश गण धर्मासृत पोषं, दिव्यध्वनि योजन शुभ घोषं ॥ वन्दे० ॥ ४ ॥

श्लेशध्यानसु शुक्ल सुधरणं, भव भीतानां निर्भय शरणं ॥ वन्दे० ॥ ५ ॥

अष्टादश दोषैश्चाधमुक्तं, संख्यातीत गुणैः संयुक्तम् ॥ वन्दे० ॥ ६ ॥

मालिनीछन्द-अखिल गुण निधानं, मंयतानां प्रधानं, दुर्गतिमिरंहमं, मोह माया प्रणाशं ।

जगति जगति सारं मुक्ति नार्यं ग हारं, जिनवर वर नार्थं श्रीसुपार्श्वं नमामि । महार्घं

॥ श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजा (८) ॥

'स्वर्गं सिन्धु दारिणा, सुधाम गौर धारिणा

मुक्ति सौख्य कारिणा, कयोपमृत्यु हारिणा ।

निर्जराहि मर्त्यानाथ, सेवितांशिमष्टम चन्द्रभास मर्त्यामि तीर्थनाथ भीश्वरं ॥ जलम् ॥ १ ॥

शीतलेन चन्दनेन, केशरेणवासिना,

गंध लुब्ध षट् पदेन, पाप ताप हारिणा । निर्जरा, ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥

पुष्यशालि बीजकै, रिवाजहारपाण्डुरैः

वन्यशालि संभवैरखण्ड कोटि तन्दुलैः । निर्जरा ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥

सिन्धु धार कर्षिका, पुण्डरीक मल्लिका ।

वारिजात केतकी, कदम्ब कुन्द चम्पकैः । निर्जरा० ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

नव्य गव्य स्या तूष भक्त सप्त षायसैः

व्यञ्जनाद्य पूरिका सुषोढ कादिभिर्वैः ॥ निर्जरा० ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपकैः सुरलज्जत, विभितैः शिखोजलैः,

वारघात वज्रितैः सुपात्रभव्यसंस्थितैः । निर्जरा० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

व्योम क्षण मंगलैरनघै बूष धूम्रकैः

नीरदालि सन्निभैः कुकर्मा मर्म दाहकैः । निर्जरा० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

कमकास नारिकेल मीजपूष कर्कटी

गोस्तनी कपित्थ पुंगराभ्यश्च दाडिमैः । निर्जरा० ॥ फलम् ॥ ८ ॥

नीर गंधपुष्पकाकतादि हव्य दीपकैः ।

धूप धूम्र सत्फलैः जयाद्य क्रीतिं सेवितम् । निर्जरा० । अर्घ्यं । ९ ॥

॥ जयमाला ॥

चन्द्रप्रम त्रिन जय, इतसंश्रुतिमय, जन्म बरादि विप्रचिह्नं ।

वन्दे शशिदेवं, त्रिगतमंदेहं, सर्वं जीव करुणा चिह्नरमू ॥ १ ॥

जग चन्द्रप्रम चंद्रांशु वर्णं, जय चन्द्रपुरी सुगधित्र करुण ।

जय वज्र वृषभ वारान क्षय, जय क्षीर रूधिर वलित दयाप ॥ २ ॥

आदिस संस्थान निःस्वेद खेद, मल वजित तजित पुरुष वेद ।

जय जय स्वरूप शुभ लक्षणांग, अग्रमित वीर्य प्रिय वचनसंग ॥ ३ ॥

अतिशय इत राजित महज गात्र, जय घाति कर्म ऋषि विजय ध्वज

जय देव निर्जिवा विशयशेम, वसुप्रादिहार्यं भूषित सुदेश ॥ ४ ॥

सदनन्तचतुष्टय धरखवीर, जय सहस्र नाम सागर गंभीर ॥

जय संसंतमद्र सुख करणरूप, वाराणसि प्रणमित सकल भूप । ५ ॥

घत्ता-अष्टम तीर्थंका, पाष तिमिर हर, चन्द्रप्रम शशि कातिधरं ॥

जय रत्नसु भूपण, भुवन विदूषण, जयकीर्त्ये जय लक्षकरं । महार्घं ॥

॥ श्री पुष्पदन्तनाथ पूजा ॥ ६ ॥

दुधाम्बुधि प्रमुख तीर्थं सधुद्भवैश्च, तोयैः सुशीतल करैः परिपिनरासैः ॥

गोवीण सार नरनाथ मुनीन्द्र सेव्यं, श्री पुष्पदंत जिननाथ महं यजासि । जलम् ॥ १ ॥

श्री चन्द्र नैर्मलवभूधर संभवेशच, काश्मीर चन्द्र मिलितैरलि अंकृतैवे ॥ गीर्वाण० ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥
 श्री राज भोगवत् शालि समग्र जातै, श्री तन्दुलैरमृतफेन हिमाम्बु वर्यैः । गीर्वाण० ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥
 संतान चम्पक नमैरु कदम्ब पुष्पैः सौरभ्यरागमिलितालिकदम्बकैश्च ॥ गीर्वाण० ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥
 शाल्योद्भन प्रचुर गव्यसुतूप शकैः, रन्यून वेवर युतैश्च हविर्विचित्रैः । गीर्वाण० ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥
 दीपोत्करैस्तिमिर राशि विनाशदज्ञैः सहस्रवर्ण पात्र सुगतैर्मणि आसुरांगैः ॥ गीर्वाण० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥
 कृष्णागुरु प्रमुखशुद्ध सुगंध द्रव्यैः धूपैर्विदीपित दिगंतर शुभ्रदेशैः । गीर्वाण० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥
 श्रीनारिकेल पनसाम्र सुवीज पूरैः, राजादनादि कदली फल दाडिमैश्च ॥ गीर्वाण० ॥ फलम् ॥ ८ ॥
 पानीय गंध कुसुमाक्षत पक्व हर्ष्यैः दीपैश्च धूप फलकैर्जयकीर्ति सेव्यं । गीर्वाण० ॥ अर्घ्यं ॥ ९ ॥

॥ जयभारता ॥

घत्ता-श्री सुविधि लिनेन्द्रम् परमानंदं, सेवित सुरनर वर निररं ।
 वन्देऽहं गुणहं, त्रिशुवनसजं, दर्शनज्ञान चरित्र धरम् ॥ १ ॥
 जगन्नाथ सेव्यं, जगद्धं धादं; जगन्निमत्र सान्यं, हताशेष सद्धं ।
 यजे भावशुद्धयान्वहं पुष्पदंतं, शुभैरष्ट द्रव्यैः शसिज्योति कान्तं ॥ २ ॥
 विमोहं विशोकं विरोगं विदेहं, विमार्यं विकायं विलोभं विलेहं ॥
 महाधीर वीरं, महाबुद्धिरूपं, महाज्ञान भानुं नरेन्द्रादि भूपम् ॥ ३ ॥
 महाशीलधारं भवाल्लब्धधारं, महानव्य हारं महाकर्म कारं ॥

महासेतु शिखरे कृतस्नानमानं, परं देवैः स्तुतध्यान मानं ॥ ४ ॥

समानंद रूपं सदानंत वीर्यं, सहानंत साच्च्यं सदानंत धैर्यं ।

सदा सिद्धि बाहं सदाकर्म दाहं, तदा मोह भानुं सदा कामराहुं ॥ ५ ॥

घृता-जय सुविधि स्वामिन् शिवाद्गामिन् हरिहर चचित पदकमल

अफकीर्तिं सु जयकर, कलिमल चयहर, चीर नीरसम कीर्तिधर ॥ महार्घं ॥

॥ श्री शीतल नाथ पूजा ॥ १० ॥

अमर सिन्धु समुद्भव सज्जलैः, सुवचनसार पराग विर्माश्रितैः ।

परम पंचम व्रीध निधानकं, दशन तीर्षकरं परिपूजये ॥ जलम् ॥ १ ॥

मलय भूधर संभव चन्दनैः, सरस केशर चन्द्र सुगन्धितैः । परम ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥

शशिकरामृतफेनसमानकैः, सुरभिशालि समुद्भव तण्डुलै ॥ परम ॥ अन्नतम् ॥ ३ ॥

परिमलाहृत पट् पद पंक्तिभिः वकुल चम्पक भोगर पुष्पकैः । परम ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

प्रवल वायस गव्य सितान्वितैः, सुरभिभाजन मध्यसप्ताश्रितैः ॥ परम ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

सघनसार समुज्वलदीपकैः, वरितिरिच्छत दिग्गज तामसैः ॥ परम० ॥ दीपन् ॥ ६ ॥

अनल साहुतं धूपसु पादकैः, गगनमार्गगतैरलिभ्रंक्षुतै ॥ परम० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

फलसु चोच रसाल मुनिम्बुकैः, प्रमूल दाडिम पक्व फलैर्वृैः ॥ परम ॥ फलम् ॥ ८ ॥

शालिनीच्छन्दः—नीरामोदैः, पुष्पकैस्तं दुलोचैः हव्यैर्दीपैः सत्फलैः धूप धूपैः ।
पूज्यं श्रीमच्छीतलंपूजयामि मोहाद्भिन्नं श्री जयाद्यं वकीर्तिः । अर्घं ॥ ६ ॥

❀ जयमाला ❀

आर्पच्छिन्द— वितनोत्सुख ममूहं, शीतलनाथस्तीर्थकृतां दशमः ।
वाञ्छित फलच दध्यात् अव्यानांतीर्णं भव-मिन्दु । १ ॥
शीतलनाथं श्रीपति वंधं, वन्देऽहीन्द्रनरेन्द्र विमन्द्यम् ।
नवति चापमित रम्य शरीरं, हेमरूचं गुण वृद्धि करीरं ॥ २ ॥
श्रीःदृढ भूपति देहसुभूतं, मातृसुनन्दोदर परिसूतं ।
एक लक्ष पूर्यायुः सहितं, सम्पेदाचलशुक्ति सुमहितं ॥ ३ ॥

एकाशीशतगणपति राजं, त्रिशक्तीशसभाविभ्राजं ❀

वत्ता-जय शीतल नाथः, चातक्रपाथः भवजल तारण कर तरणं ।
जय भव भय भंजन, जनतारंजन, जय कीर्ते निश्चल शरणं ॥ अर्घ्यं ॥

॥ श्री श्रेयांसनाथ पूजा ॥ ११ ॥

रथोद्धताच्छन्दः—स्वर्धुनी प्रमुख तीर्थ सज्जलैः, - मिश्रितै सुरभिन्नस्तु शीतलैः ।
पावनैरमृतसौख्य दायकम् श्रेयसः पदयुगं यजाम्यहं ॥ जलं ॥ १ ॥

चन्दनैर्मलय भूधरोद्भवैः केशराढ्य वनसार विधितैः ।

काम कुंजर महा मृगेश्वरं श्रेयस ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥

दार कुन्द कलिका समुज्जलैः, पेशलेश कलशालितंदुलैः

वीरसागर गभीरमीश्वरं, श्रेयस ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥

मल्लिकार्जुनल निकुन्द केतकी, पारिजात नव मोगरादिभिः

वांछितार्थं फल लब्धिहेतवे, श्रेयस ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

नासिका नयन चित्त तोपदैः, पूरिका घृतशरेन्द्र स्नाढुकैः

पावनैश्चरुभिरर्घं संपदे श्रेयसः ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

सूर्यधाममदशैः शिखोज्वलैः दीपकै सुघनसार मिधितैः

देव नाग नर नाथ सेवितं, श्रेयसः पद ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

वह्निसार गुरु धूप धूम्रकैः, व्याप्तुवह्निरजुलं नभोगणं ।

मोहनीय घनवल्लि वारणं, श्रेयसः ॥ धूपं ॥ ७ ॥

श्रीफलात्र कदली सुसाधत्री, वीजपूर परिपक्वनिम्बुकैः ।

मोक्षरुपफलसिद्धिकारणं, श्रेयस ॥ फलं ॥ ८ ॥

मालिनीच्छंदः—विमल सलिल धारा, गंधपुष्पाक्षतोषैः, शुभचक्ररदीपैः धूपयुक्तैर्फलोषैः

सुखकरजिनश्रेयांसं यजे चार्घदानैः त्रिभुवनमणिभूषं, श्रीजयाद्यंतकीर्तिम् ॥ अर्घं ॥ ९ ॥



॥ जयमाला ॥

श्रेयान् दिशतु वः श्रेयो० धर्मासृत पयोनिधिः
एकादशो जिनोध्येयः मुनीन्द्रोद्धान निश्चलः ॥
जय जिन श्रेयान् जिनदेव नमः, जयधीर कृतामर सेव नमः ।
जय सर्वं कर्मफल रहित नमः, जय २ त्रिशुवनपति सहित नमः ॥
जय सकल गुणाकर वीर नमः, जयशुक्लध्यानधर धीर नमः ।
जय सदन दवानल मेघ नमः, जयनिराधार जन नाथ नमः ॥
जय गुण गण सेवित पाद नमः, जय जलधर ध्वनिसमनाद नमः ।
जय पुण्यांभोनिधिचन्द्र नमः जय सम्यक्चारित धरण नमः ॥
जय कनक कांतिवर काथ नमः, जय त्यक्त मोहसद माय नमः ।
धृता—श्रेयान् श्रेयोवः, कर्मकलंक दह दृक्काकुल मंडनं ।
जयकीर्ति जयकृत, दुरित तमोहत, पन्चेन्द्रियमन दंडनं ॥ महार्घं ॥

॥ वासू पूज्य जिन पूजा ॥

शालिनी छंद— गंगा रेवा सिन्धु तोयैः, तृष्या तापघ्नैर्घदानालुभाजं ।
चित्त्यं दिव्य प्रातिहार्याष्टकाढ्यं, तीर्थेशं तं वासूपूज्यं वजामि ॥ जलं ॥ १ ॥
श्री खंडैश्च कुंकुमाधै रनिर्घैः, भुंगोद्वृत्तैः कबुरैश्चन्द्रकाद्यैः ॥ नित्यं दिव्यं ॥ चन्दनं ॥ २ ॥

मुक्ताकारैस्तन्दुलैः सत्यरास्वैः कोटिद्वन्दं संश्रिते पेरालांगै ॥ नित्यं दिव्यं ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥
 श्री सतानैर्भूजसत्पारिजातैः, देवद्रूणां गंधवद्भिः प्रसूनै ॥ नित्यं दिव्यं ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥
 दिव्यापोद्दै प्राज्य नैवेद्यवर्षैः दिव्यद्योति गर्गंध नाभ्यायमानैः ॥ नित्यं दिव्यं ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥
 सन्माणिक्यै र्वन्ध कर्पूर जातैः स्निग्धैर्दीपैद्योति ताशाखिलांगै ॥ नित्यं दिव्यं ॥ दीपम् ॥ ६ ॥
 गंधोदारैः धूप जालं वहद्भिः, व्याप्तैर्धूपै शुद्ध कृष्णागुरुत्थै ॥ नित्यं दिव्यं ॥ धूपम् ॥ ७ ॥
 लंबीरास्रै कस्य नारिंग पूरै, पक्वैर्विश्रे. श्रीफलै वीज पूरै ॥ नित्यं दिव्यं ॥ फलम् ॥ ८ ॥

शादुर्लविक्रिडित छंद-वार्गधोद्गमतंदुलैः शुभ चरु, दीपैश्च धूपै फलैः

रघ्वैर्दोष विधजितं जिनवर, श्री वाह्य पूज्यं यजे ।

काष्ठासंध, सुरत्न भूषणपदद्वन्देऽलिच्छोपमं ।

स्वरि श्री जयकीर्ति सेवित पदं, श्रद्धादिभक्तया मुदा ॥ अर्थ ॥ ९ ॥

॥ जयमाला ॥

इन्द्रवज्रा च्छन्दः-श्री वासुपूज्यो विदधातु शांतिष् श्री, संघकस्येह सदा जिनेन्द्रः ।

चम्पापुरी प्राप्त महोदयश्च, पूर्वार्गधारी शिशु ब्रह्मचारी १ ।

वसुपूज्य कुलाम्बर पूर्ण शशी, रवि वंश त्रिभूषण त्रित्त वशी ।

वितनोतु सुखं वसुपूज्यसुतः शिव साधक धर्मक्षमादियुत ॥ २ ॥

हरि शंकर सेवित पाद कज शुभचिंतन नाशितः पापज । वितनोतु ० ॥ ३ ॥

धनराज विनिर्मित ससुखदः, विफलीकृत काम कपाय मदः ॥ ४ ॥
 निज केवल बोधित लोकभरः, निज सेवक वांछित सौख्यकारः, वितनोतु ॥ ५ ॥
 धरणी धर पूजित तीर्थ वरः, वरत्रोथ पिनाशित मोहभरः । वितनोतु ॥ ६ ॥
 घत्ता-वसुपूज्य जिनेश्वर, वर तीर्थेश्वर, भुवनेश्वर चर्चित चरणं ॥

जयकीर्ति सुखाकर, दुरित विमिर हर, त्रिभुवन वर मंगल करणं ॥ ७ ॥ महार्घ ॥

❀ विमलनाथ पूजा ❀

सकल तीर्थ समुद्रव वारिभिः, सुरभि शीतल भावविशेषकैः
 विविधताप हरैः सुख हेतवे, विमलतीर्थकरं परि पूजये ॥ जलं ॥ १ ॥
 सकल गंध समन्वित चन्दनैः, परम ताप निवारण कारणैः ।
 परिमलाहृत पटपद पवितभिः विमल..... ॥ चन्दनं ॥ २ ॥
 अनुपमैरमृताभि समुज्ज्वलैः, सुरभि शालि समुद्रभव तदुलैः ।
 तमय पक्ष विखंडित कोटिभिः, विमल..... ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥
 परिमलोत्कट पुष्प शरैर्वरैः; बहुल नम्पक पाटल मल्लिका ।
 कमल मोगर जाति समुद्रभवैः, विमल..... ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥
 कनक वर्णं घृतैः फल माजन श्चल्लवैर्वटकाज्य सुपायसैः ।
 नयनचित्त सु नासा तोषदैः विमल..... ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

रवि विमान गमान सुनिर्मलैः विमल केवलज्ञान समानकै ।

सुवनसार विनिमित्त वर्तिभिः विमल० । दीपम् ॥ ६ ॥

मलय पर्वत ऋत समुद्भवै रति सुगंध पदार्थ विमिश्रितैः ।

गगन मार्ग गतै शुभ धूपकैः विमल० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

फलभरै भुंवि दाडिम मोचकैः पनस ऋत्र कपित्थ कलिन्दकैः

परिमलोद्य सुपञ्चव मनोहरैः विमल० ॥ फलम् ॥ ८ ॥

जलादि सच्चन्दन पुष्पकोधैः सदक्षतेहंज्य सु दीपधूपैः

फलैर्यजे श्री विमलं जिनेन्द्रं, जयादि कीर्ति प्रणतं महान्तं ॥ अर्थ ॥ ९ ॥

❀ जयमाला ❀

॥ मालिनीच्छदः -विमलतर सुकीर्तिं, तैजस व्याप्त मूर्तिं । राकलगुणगरिष्ठं, प्राप्तलब्ध्या वरिष्ठं ॥

विमल जिनवरेन्द्रम्, सिद्धयेस्तौम्यतन्द्रं, त्रिभुवन पतिबन्धं, भव्यवृन्दाभि बंधं ॥ १ ॥

श्री जिन मन्दिरे, भावना संयुतं, नृत्यये अप्सरा हावभावान्वितं ॥

भावनी ह्यंती, खेचरी, भूचरी, कल्पदेवी मरी, ज्योतिषी किन्नरी ॥ १ ॥

विभ्रमादि विलासैः सदा मंडितैः, कोकिला कंठला सप्त स्वर मंडितैः ।

मादिमा घेई घेई पादसंचारणं, धमपधौ धमपधौ मादलाधारणं ॥ २ ॥

योगणि योगणि गण्डयेन्मन्दलं, शब्दये भौं भौं भौं भौं भूंगलं ॥

दुमि दुमि दुमि दुमि दोदलं गजत्रये, भूमिकैः भूमिकैः घूघरी घूमरैः ॥ ३ ॥

रेणुकैः रेणुकैः भृङ्गलरी भ्रूमये, तूर वज्जति णाणा विहृष्याडिपं ॥

पीयमी पीयमी वंश विशालये, खीण्णिपी खीण्णिपी कंस कंसालये ॥ ४ ॥

द्रुं द्रुमं द्रुं द्रुमं शंख घन शब्दये भौमि भौमि भौमि भौमि रव शब्दये

भेरवा सु पंच राग मेव मल्हारये, राग षट्त्रिंश संगीत सद्धारये ॥ ५ ॥

नीर गंधादिभिः द्रव्यकै रचारये, गीत नाट्यादिभिः पुष्पकैरचये ।

श्री विमल नायको देव देवीश्वरैः भूजितोऽष्टधा विशु द्रव्यसत्समुत्करैः ॥६॥

घचा-निखिल यतिनिसेव्यं, देव देवेन्द्र सेव्यं, विमलगुण समुद्रं, केवलज्ञान चन्द्रं ॥

अमितगुणगणेन्द्रं. षोड कृष्णा दिनेन्द्रं, नमति भजति नित्यं, श्री जयाद्यं तकीर्तिः ॥ महार्घं ॥

॥ श्री अनंत नाथ पूजा ॥

सुर नदी नद तीर्थ समुद्रभवैः कञ्जपराग सुपिंजरितै जलैः ।

स्फुरदशोक धराल्ब संश्रितैः परमनन्दजिनेन्द्रमहंयजे ॥ जलं ॥ १ ॥

सुघनसार विमिश्रित चन्दनैः, परिभलागत भृङ्गसमाकुलैः ।

त्रिविध तापहरैः शुभकारकैः परमनंत ॥ चन्दनं ॥ २ ॥

विशद मौक्तिक संनिभ शालि जै, मधुर दिव्य वचो मृत वर्षणैः ।

परि निषिक्त सुरांदिश दो गणं, परमनंत ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥

प्रचुर रत्नपरिष्कृत सत्करणैः, कनक दंड सु किंकरिक्का युतैः ।

नव कलैश्चमरैः परि वज्रितैः परमनंत ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

बटक मोदक घेवर पायसै रचरुवरै घृतशर्करयान्वितै
त्रिविधमुक्कट विष्टरमाश्रितैः परमनंत ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

तिमिर नाश करै मण्णिदीपकै, निञ्जमह परिधीकृत चन्द्रकैः ।
कनक कोटि प्रभा वलयांक्रितैः, परमनंत । दीपम् ॥ ६ ॥

अगुरु चन्दन धूप भरैवरैरदित नदन ठाडित डुंढुभि ।
ध्वानि घटाहृत देव नरोरगैः परमनंत ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

सुकदली फल चीच रसालकैः, कनक चन्द्रयुतातप वारणैः ।
त्रय विभूषित सुन्दर विग्रहं, परमनंत ॥ फलं ॥ ८ ॥

शालिनी छंद-पाथोगधैः पुष्पकै स्तंदुलोधै हव्यैदीपैर्धूपकै श्रीफलाद्यैः ।

स्वभूनाथैरचितो नंत नाथो, देयान्मोच ओ जयाद्य तकीर्तिः ॥ अर्घ्यं ॥ ९ ॥

जिस कलश में अनंत रक्खी हों उसमें : ॐ ह्रीं अहं हं सः अनंत केवलिने नमः, इस मंत्र के १०८ जाप्य देकर लाल वस्त्र से कलश का मुंह बांधकर कलश मांडने पर विराजमान करके पश्चात् जयमाला पहना चाहिये

॥ जयमाला ॥

शार्दूल विक्रीडितच्छंद-यो भोगेऽखिल भूप वंदित पदो, राज्यं परं प्राप्सवान् ।
भक्तिप्रकृत सुरेन्द्र सुन्दर शिरः, कोटी प्रभाद्योतकं ॥

परचाद्यश्च निरम्बरः किलभवच्च तत्त्याज्य सर्वं मुदा ।
श्रीमत्तीर्थमनंत माशु शिवदं, तं तीर्थनाथं भजे ॥ १ ॥

स्वर्ग विमानात् कृत भू वासं, कृत मथ्यामत पंचक नाशं ।
नौमि चतुर्दशकं जिनदेवं, देवासुरर

सुरपति वंदित गर्भ कल्याणं, मेरु शिखर कृत जन्म स्नानं ॥ २ ॥
दीक्षा समये शिविकारुढं, भूचर खेचर पति सु व्यूढं ॥ नौमि० ॥ ३ ॥

ज्ञानावसरे सभा प्रवेशं, धनपति विरचित कोष्ठ निवेश ॥ नौमि० ॥ ४ ॥
मानस्तेभ विदारितमानं, चिन्तर युगली कृत वर गानं ॥ नौमि० ॥ ५ ॥

छत्र त्रय लोक त्रय शोभं, इरीकृत मायामद लोभं ॥ नौमि० ॥ ६ ॥
दिव्यध्वनि नाशित पर मोह, वैर विवर्जित जी विद्रोहं ॥ नौमि० ॥ ७ ॥

क्रोश चतुष्टय दुख निर्वाणं, लोह त्रय भव सागर तारं ॥ नौमि० ॥ ८ ॥
अशोक तरु दर्शनहतशोक, भामण्डल प्रति विम्बित लोकं । नौमि० ॥ ९ ॥

समेद शिखर मुक्ति श्री वरणं, जयकीर्तेज्य कारण शरण ॥ नौमि० ॥ १० ॥
शालिनीच्छन्दः—विवरति भवनाशं, दुष्ट कर्मरिपाशं जिनवर वर चन्द्रोऽनंत नाथो विंतद्रो ।

त्रिसुवन शुभकीर्तिः, रत्नभूषाप्त मूर्ति, रगुणित सुख भूतिः श्रीजयाद्यंत कीर्ति ॥
महार्चः ॥

एतेनाग नरामरेन्द्रमुकुटः सघृष्ट पादाम्बुजा ,

नामैयादि जिनाः प्रशस्त वदनाः प्रांतस्त्वन्तारुयकाः ।

श्री रत्नादि विभूषण प्रतिदिनं, प्रार्थ्यं जयोत्कीर्त्तिनः ।

भवतया संस्तु सदा चतुर्दश जिनाः कुर्वतुनोर्मंगलं ॥

इत्याशिर्वादः ॥

अनंत व्रत के जाप्य

(एकादशी के जाप्य)

ॐ ह्रीं अहं हंस. अनंत केवलने नमः ॥

(द्वादशी के जाप्य)

ॐ ह्रीं बीं ह्रीं ह्रीं हं हं स. अमृत वाहने नमः ॥

(त्रयोदशी के जाप्य)

ॐ ह्रीं अनंत तीर्थं कराय हां ह्रीं हू ह्रीं हः असि आउसा सर्वशांतिं कुरु २ स्वाहा ।

(चतुर्दशी के जाप्य)

ॐ ह्रीं अहं हंस! अनंत केवली भगवान अनंत दान लाभ मोक्षोपयोग वीर्याभिवृद्धि
कुरु २ स्वाहा ॥

(अनन्त मोचन मन्त्र)
 ॐ ह्रीं श्रीं अहं सर्वं कर्म विमुक्ताय अनन्त सुख प्रदाय अनन्त तीर्थं कराय नमः
 पूर्वानुबन्धित सूत्र मोचनं करोमीति स्वाहा ॥

ऊपर के मन्त्र को पढ़ कर पहले का बन्धा हुआ अनन्त सूत्र छोड़ना चाहिये ।
 (अनन्त बन्धन मन्त्र)

ऊपर के मन्त्र को पढ़ कर नवीन अनन्त बांधना चाहिये ।
 (अनन्त बनाने की विधि)

अनन्त सोना, चांदी अथवा सूत्र की बनानी चाहिये जिसमें १४ गांठे नीचे लिखे
 अनुसार १६६ गुणों का चिन्तवन करते हुये लगानी चाहिये प्रत्येक गांठ पर क्रम से
 चौदह २ गुणों का चिन्तवन करे ।

१४ तीर्थंकर	१	१४ जीव रत्ना	८
१४ प्रतिकरण	२	१४ नदी	९
१४ कुलंकर	३	१४ भव्य जीव राशी	१०
१४ अतिशय	४	१४ रत्न	११
१४ पूर्व	५	१४ स्वर	१२
१४ गुणस्थान	६	१४ तिथि	१३
१४ मार्गणा	७	१४ अन्तराय निवारण	१४

इस प्रकार १६६ गुणों का चिन्तवन कर १४ गांठ वाली अनंत वना पश्चात् अनंत व्रत का मांडना मांडकर श्री अनंतनाथ तीर्थंकर की प्रतिमात्री विरालमानकरे एवं नवीन अनंत फो भी कलश में रखकर कलश को भगवान के समक्ष मांडने पर विराजमान करे । पश्चात् श्री अनंत नाथ भगवान का अभिषेक कर पूजन करें । पूर्णाहुति के बाद अनंत व्रत की कथा पढ़कर भोचन मंत्र द्वारा पूर्व की अनंत छोड़कर बन्धन मंत्र पढ़ते हुवे नवीन अनंत दाहिनी मुजापर धारण करे ।

अनंत वनाते समय पढ़ने के १६६ गुण (मंत्र)

(अनंत व्रत के उद्यापन में इन्हीं १६६ गुणों के अर्थ चढ़ाये जाते हैं)

१ चतुर्दश तीर्थंकर मंत्र

- १ ॐ ह्रीं सद्धर्म प्रवर्तकाय ऋषभनाथ तीर्थंकराय नमः ।
- २ " " कर्माष्टक रहिताय अजित जिन देवाय नमः ।
- ३ " " शिवंकराय संभ्रत तीर्थंकराय नमः ।
- ४ " " बोकाभिनंदकाय अभिनंदन जिनाय नमः ।
- ५ " " क्रौंवाद्यु न्मथकाय सुमति तीर्थंकराय नमः ।
- ६ " " पद्मप्रभ तीर्थंकराय नमः ।

- ७ कन्दर्बोन्मथकाय श्री सुषार्ष्व तीर्थंकराय नमः ।
 ८ श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकराय नमः ।
 ९ श्री पुष्पदंत तीर्थंकराय नमः ।
 १० श्री शीतलनाथ तीर्थंकराय नमः ।
 ११ श्री श्रेयांस तीर्थंकराय नमः ।
 १२ श्री वासुपूज्य तीर्थंकराय नमः ।
 १३ श्री विमल नाथ तीर्थंकराय नमः ।
 १४ श्री अनंत नाथ तीर्थंकराय नमः ।

२ चतुर्दश प्रकीर्णक मंत्र

- १५ ॐ ह्रीं सामायिक क्रिया युक्त मुनये नमः
 १६ ॥ चतुर्विंशति जिन स्तुति प्रतिपादकाय मुनये नमः ।
 १७ ॥ त्रिकाल देव वंदना युक्त मुनये नमः ।
 १८ ॥ प्रतिक्रमण क्रियायुक्त मुनये नमः ।
 १९ ॥ गुर्वादि क धर्मशुद्धि विनय क्रिया युक्त मुनये नमः ।
 २० ॥ दीक्षाग्रहण शिखादि युक्त मुनये नमः ।
 २१ ॥ दशवैकालिकोपदेशकाय मुनये नमः ।

- २२ ॐ ह्रीं उत्तराध्ययन रत मुनये नमः ।
 २३ " कल्प व्यवहार युक्त मुनये नमः ।
 २४ " कल्पारूप युक्त मुनये नमः ।
 २५ " महाकल्पोपदेशकाय मुनये नमः ।
 २६ " पुण्डरी कोपदेशकाय मुनये नमः ।
 २७ " महापुण्डरीकोप देशकाय मुनये नमः ।
 २८ " अशीति कोपदेशकाय मुनये नमः ।

३ चतुर्दश कुलंकर मंत्र

- २९ ॐ ह्रीं प्रातश्रुति कुलंकराय नमः ।
 ३० " सन्मति कुलंकराय नमः ।
 ३१ " चोमंकर कुलंकराय नमः ।
 ३२ " चोमंधार कुलंकराय नमः ।
 ३३ " सीमंकर कुलंकराय नमः ।
 ३४ " सीमंधार कुलंकराय नमः ।
 ३५ " त्रिमलवाहन कुलंकराय नमः ।
 ३६ " चक्षुष्मान् कुलंकराय नमः ।

- ३७ ॐ ह्रीं यशस्वत्य कुलंकाम्य नमः ।
 ३८ " " अभिचक्र कुलंकाम्य नमः ।
 ३९ " " चंद्राय कुलंकाम्य नमः ।
 ४० " " मण्डिय कुलंकाम्य नमः ।
 ४१ " " प्रसेन भिन् कुलंकाम्य नमः ।
 ४२ " " नाभिमय कुलंकाम्य नमः ।

४ चतुर्दश अनिचय मंत्र

- ४३ ॐ ह्रीं यशोदि मासथी मासाथी असाथी नमः ।
 ४४ " " मथी मृशमथ असाथी नमः ।
 ४५ " " मथं अथुं कथ मृशमथ विमथ नमः ।
 ४६ " " आदिंमथि मथिअथ मथीथ मृशमथ असाथी नमः ।
 ४७ " " मथिनिमथिअथमथ विमथ नमः ।
 ४८ " " मथं अनामंमथमथ विमथ नमः ।
 ४९ " " विमथं मृशमथ मृशमथ विमथ नमः ।
 ५० " " विमथ मथंमथं मृशमथ विमथ नमः ।
 ५१ " " मथंमथं मथं मथंमथं विमथ नमः ।

- ५२ " त्रीद्यादि शस्य संपत्ति युक्तस्य जिनाय नमः ।
 ५३ " निर्मल गगनातिशय युक्ताय जिनाय नमः ।
 ५४ ; अन्यदेवाह्वानन युक्ताय जिनाय नमः ।
 ५५ " धर्म चक्र युक्ताय जिनाय नमः ।
 ५६ " अष्ट मंगल द्रव्य युक्ताय जिनाय नमः ।

५ चतुर्दश पूर्व मंत्र

- ५७ ॐ ह्रीं एक कोटि पद प्रमाणाय उत्पाद पूर्व्याय नमः ।
 ५८ " परणवति लक्ष पद प्रमाणाय अश्रायणी पूर्व्याय नमः ।
 ५९ ; सप्तति लक्ष पद प्रमाणाय वीर्यानुवाद पूर्व्याय नमः ।
 ६० " षष्ठी लक्ष पद प्रमाणाय अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व्याय नमः ।
 ६१ " एकोन कोटि पद प्रमिताय ज्ञान प्रवाद पूर्व्याय नमः ।
 ६२ " षडधिक कोटि पद प्रमाणाय सत्य प्रवाद पूर्व्याय नमः ।
 ६३ " षड् विशति कोटि पद प्रमाणाय आत्म प्रवाद पूर्व्याय नमः ।
 ६४ " अशीति लक्षाधिक कोटि पद प्रमाणाय कर्म प्रवाद पूर्व्याय नमः ।
 ६५ " चतुरशीति लक्ष पद प्रमाणाय प्रत्याख्यान पूर्व्याय नमः ।
 ६६ " षष्ठी लक्ष द्वि कोटि पद प्रमाण विद्यानुवाद पूर्व्याय नमः ।

- ६७ ॐ ह्रीं पङ्क विशति कोटी पद प्रमाण कल्याण वाद पूर्व्याय नमः ।
 ६८ " त्रयोदश कोटि पद प्रमाय प्राणानुवाद पूर्व्याय नमः ।
 ६९ " नव कोटी पद प्रमाण क्रिया विशाल पूर्व्याय नमः ।
 ७० " सार्द्धं द्वादश कोटी पद प्रमाण लोक विन्दु पूर्व्याय नमः ।

६ चतुर्दश गुणस्थान मंत्र

- ७१ ॐ ह्रीं विद्ययात्थ गुणस्थान स्थितानंत भव्य जीव राशये नमः ।
 ७२ " सामादन गुणस्थान वति सद्यगृष्टि जीव राशये नमः ।
 ७३ " मिश्र गुणस्थान स्थित भव्य जीव राशये नमः ।
 ७४ " अविगत गुरुस्थान स्थित सद्यगृष्टि भव्य जीव राशये नमः ।
 ७५ " देशन्नत गुरुस्थान स्थित भव्य जीव राशये नमः ।
 ७६ " अमत्त गुणस्थान स्थित मुनिभ्यो नमः ।
 ७७ " अप्रमत्त गुणस्थान स्थित मुनिभ्यो नमः ।
 ७८ " अर्ध करण गुणस्थान श्रेणि द्वय मुनिभ्यो नमः ।
 ७९ " अनिष्टति करण गुणस्थान स्थित मुनिभ्यो नमः ।
 ८० " सूक्ष्म साधाराय गुणस्थान स्थित मुनिभ्यो नमः ।
 ८१ " उपशांत कषाय गुणस्थान स्थित मुनिभ्यो नमः ।
 ८२ " क्षीण कषाय गुणस्थान स्थित मुनिराशये नमः ।

८३ ॐ ह्रीं सयोगकेवली गुणस्थान स्थित मुनिभ्यो नमः ।
८४ ॐ ह्रीं अयोग केवली गुणस्थान वर्ति मुनिभ्यो नमः ।

७ चतुर्दश मार्गणा मंत्र

८५ ॐ ह्रीं स्वर्गादि गति हेतुपदेशकेभ्यो नमः ।
८६ ॐ ह्रीं एकेन्द्रियादि जीव रत्नकेट्यो नमः ।
८७ ॐ ह्रीं पट्काय जीव रत्नक मुनिभ्यो नमः ।
८८ ॐ ह्रीं योग मार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः ।
८९ ॐ ह्रीं वेद त्रय रहित मुनिभ्यो नमः ।
९० ॐ ह्रीं कर्पाय विध्वंस केभ्यो नमः ।
९१ ॐ ह्रीं ज्ञानोपयोग युक्त जिनेभ्यो नमः ।
९२ ॐ ह्रीं सामायिक संयसोद्धारक मुनिभ्यो नमः ।
९३ ॐ ह्रीं चक्षुरादि दर्शन ज्ञापकेभ्यो नमः ।
९४ ॐ ह्रीं पट् लेश्योपदेशकेभ्यो जिनेभ्यो नमः ।
९५ ॐ ह्रीं भव्याभव्य मार्गणा प्रकाश केभ्यो नमः ।
९६ ॐ ह्रीं मन्मत्तवोपदेश केभ्यो नमः ।
९७ ॐ ह्रीं संज्ञा सज्ञि मार्गणा भेद कथ केभ्यो नमः ।
९८ ॐ ह्रीं आहारक मार्गणोप देव केभ्यो नमः ।

८ चतुर्दश जीव समास मंत्र

- ६६ ॐ हीं पर्याप्त पृथ्वीकायिक जीव रक्षकेभ्यो नमः ।
 १०० ॥ अर्प्याप्तक पृथ्वी कायिक जीव रक्षकेभ्यो नमः ।
 १०१ ॥ पर्याप्तक अपकायिक जीव रक्षकेभ्यो नमः ।
 १०२ ॥ अर्प्याप्तक अपकायिक जीव रक्षकेभ्यो नमः ।
 १०३ ॥ पर्याप्तक तैजस कायिक जीवरक्षकेभ्यो नमः ।
 १०४ ॥ अर्प्याप्तक तैजस कायिक जीव रक्षकेभ्यो नमः ।
 १०५ ॥ पर्याप्तक वायुकायिक जीव रक्षकेभ्यो नमः ।
 १०६ ॥ अर्प्याप्तक वायु कायिक जीव रक्षकेभ्यो नमः ।
 १०७ ॥ पर्याप्तक वनस्पति जीव रक्षकेभ्यो नमः ।
 १०८ ॥ अर्प्याप्तक वनस्पति जीव रक्षकेभ्यो नमः ।
 १०९ ॥ पर्याप्त द्विन्द्रियादि विकल त्रय रक्षकेभ्यो नमः ।
 ११० ॥ अर्प्याप्तक द्विन्द्रियादि विकलत्रय रक्षकेभ्यो नमः ।
 १११ ॥ पर्याप्तक पञ्चेन्द्रिय जीव रक्षक मुनिभ्यो नमः ।
 ११२ ॥ अर्प्याप्तक पञ्चेन्द्रिय जीव रक्षक मुनिभ्यो नमः ।

॥११६॥

६ चतुर्दश नदी मंत्र

- ११३ ॐ ह्रीं जिन विम्ब समन्वित गंगा नद्यै नमः ।
 ११४ " जिन विम्ब समन्वित सिन्धु नद्यै नमः ।
 ११५ " जिन विम्ब समन्वित रोहितायै नमः ।
 ११६ " जिन विम्ब समन्वित रोहिताय्यै नमः ।
 ११७ " जिन विम्ब समन्वित हरित् नद्यै नमः ।
 ११८ " जिन विम्ब समन्वित हरिकांत्यै नमः ।
 ११९ " जिन विम्ब समन्वित सीता नद्यै नमः ।
 १२० " जिन विम्ब समन्वित सीतोदा नद्यै नमः ॥
 १२१ " जिन विल्व समन्वित नारी नद्यै नमः ।
 १२२ " जिन विम्ब समन्वित नरकांता नद्यै नमः ।
 १२३ " जिन विम्ब समन्वित सुवर्णकुला नद्यै नमः ।
 १२४ " जिन विम्ब समन्वित रुद्र कुलायै नमः ।
 १२५ " जिन विम्ब समन्वित रक्ता नद्यै नमः ।
 १२६ " जिन विम्ब समन्वित भक्तोदा नद्यै नमः ।



१० चतुर्दश भुवन भव्य जीव मंत्र

- १२७ ॐ ह्रीं निगोदस्थ भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।
 १२८ " महातमः प्रभोद्भूत भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।
 १२९ " तमः प्रभोद्भूत अथ्य जीव राशिभ्यो नमः ।
 १३० " धूम प्रभोद्भूत भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।
 १३१ " पंक प्रमाश्रित भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।
 १३२ " बालूका प्रमास्थित भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।
 १३३ " शर्करा प्रमास्थित भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।
 १३४ " रत्न प्रमाश्रित भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।
 १३५ " तिर्यग्लोगस्थित भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।
 १३६ " द्योतिर्पटलाश्रित भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।
 १३७ " कल्पवासी भव्य देव राशिभ्यो नमः ।
 १३८ " शैवेयकाश्रित भव्याहमिन्द्रेभ्यो नमः ।
 १३९ " नवानुदिश निमानथाहमिन्द्रेभ्यो नमः ।
 १४० " विजयादि पंच विमानथाहमिन्द्रेभ्यो नमः ।

११ चतुर्दश रत्नाधिपति चक्रवर्ति मंत्र

- १४१ ॐ ह्रीं सेनापति रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।
 १४२ " स्थपति रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।
 १४३ " हर्म्यपति रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।
 १४४ " द्वीप रत्ने कृतासनेभ्यश्चक्रवर्तिभ्यो नमः ॥
 १४५ " विजयादूर्ध्वपन्नाश्वाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः " ॥
 १४६ " स्त्री रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ॥
 १४७ " पुरोहित रत्न संसेवित चक्रवर्तिभ्यो नम ॥
 १४८ " चक्र रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ॥
 १४९ " चर्म रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नम ॥
 १५० " मणि रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नम ॥
 १५१ " काङ्किणी रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।
 १५२ " छत्ररत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।
 १५३ " असि रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।
 १५४ " दंड रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।

१२ चतुर्दश स्वर मंत्र

१५५	ॐ	ह्रीं	अकार	स्वर	वादिने	वृषभाय	नमः
१५६	"	"	आकार	स्वर	वादिने	वृषभाय	नमः
१५७	"	"	इकार	स्वर	वादिने	वृषभाय	नमः
१५८	"	"	ईकार	स्वर	वक्त्रे	वृषभाय	नमः
१५९	"	"	उकार	स्वर	भेद	कथकाय	नमः
१६०	"	"	ऊकार	स्वर	भेद	ज्ञायकैभ्यो	नमः
१६१	"	"	ऋकार	स्वरोपदेष्टे		वृषभाय	नमः
१६२	"	"	ॠकार	स्वरोपदेशकाय		वृषभाय	नमः
१६३	"	"	लृकार	स्वरस्य	प्रवक्तार	वृषभाय	नमः
१६४	"	"	लृकार	स्वरोच्चारकाय		वृषभाय	नमः
१६५	"	"	एकार	स्वर	देशिने	वृषभाय	नमः
१६६	"	"	ऐकार	स्वर	प्रकाशकाय	वृषभाय	नमः
१६७	"	"	ओकार	स्वरोपदेश	काय	वृषभाय	नमः
१६८	"	"	औकार	स्वर	कथकाय	जिनाय	नमः

१३ चतुर्दश तिथि मंत्र

१६६	ॐ	हीं	प्रतिपदि स्वरुप निरुपक अष्टादश दोपरहिताय जिनाय नमः ।
१७०	,		द्वितीयांतिथिमाश्रित्य सागारानगर धर्माय नमः ।
१७१	,		तृतीयां तिथि माश्रित्य दर्शनादि रत्नत्रयाय नमः ।
१७२	,		चतुर्थी तिथि माश्रित्य प्रथम्रात्रुयोगादि वेदेभ्यो नमः ।
१७३	,		पंचमी तिथिमुद्दिश्य पंच परमेष्ठीभ्यो नमः ।
१७४	,		षष्ठी तिथि माश्रित्य सर्वज्ञोदित पट् द्रव्येभ्यो नमः ।
१७५	,		सप्तमी तिथिमुद्दिश्य सामाधिक्यादि सप्त संयमेभ्यो नमः ।
१७६	,		अष्टमी तिथिमाश्रित्य भिद्भाष्ट गुणेभ्यो नमः ।
१७७	,		नवमी तिथिमाश्रित्य सर्वज्ञोक्त नव नयेभ्यो नमः ।
१७८	,		दशमी तिथिमाश्रित्य दशलाक्षणिक धर्मेभ्यो नमः ।
१७९	,		एकादशी तिथिमाश्रित्य एकादशानेभ्यो नमः ।
१८०	,		द्वादशी तिथिमाश्रित्य द्वादश विधतपेभ्यो नमः ।
१८१	,		त्रयोदशी तिथिमुद्दिश्य त्रयोदश प्रकार चारित्र्येभ्यो नमः ।
१८२	,		चतुदशी तिथि माश्रित्य अनंत तीर्थंकराय नमः ।

१४ चतुर्दश मल त्यक्ताहार मुनि मंत्र

१८३	ॐ	हीं	पुयमलातिरिक्ताहार	ग्राहक मुनिभ्यो	नमः
१८४	"	"	अस्र मल रहित	आहार ग्राहक मुनिभ्यो	नमः
१८५	"	"	पल मल रहित	पिएड	विशुद्धये नमः
१८६	"	"	अस्थि मल रिक्त	पिंड	विशुद्धये नमः
१८७	"	"	चर्म मल रहित	पिएड	विशुद्धये नमः
१८८	"	"	नरव मल रहित	पिएड	विशुद्धये नमः
१८९	"	"	कच मल रहित	पिएड	विशुद्धये नमः
१९०	"	"	मृत विकलत्रिक मल	रहित	पिंड विशुद्धये नमः
१९१	"	"	स्त्राणादि बंदमूल	त्यक्त	पिएड विशुद्धये नमः
१९२	"	"	यव गोधूमादि बीज	मल रहित	पिएड विशुद्धये नमः
१९३	"	"	मूल मल रहित	पिएड	विशुद्धये नमः
१९४	"	"	बदर्यादि फल	मल रहित	पिएड विशुद्धये नमः
१९५	"	"	तुष कण मल रहित	पिएड	विशुद्धये नमः
१९६	"	"	कुंडमल रहित	पिंड	विशुद्धये नमः

॥ इति अनंत निर्माण मन्त्राणि ॥

❀ अथ महा भिषेक ❀

अद्देव्य अद्दुरया, अद्दु सहसाइ अद्दु कोडी ऊ ॥
रखंतु मे सरीरं देवायुर पणमिया सिद्धा ॥१॥

❀ आत्सांग प्रत्यग परा मर्शन मन्त्र. ❀

ॐ अर्हन्मुल कमल वासिनी पापांत कारिणी श्रुत उवाला सहस्रा प्रज्वलिते
सरस्वति मम पापं हन हन दह दह दौं दौं दूं दौं क्षीर धवले अमृत संभवे
वं वं हू फट् स्वाहा ॥

❀ अथ शुची करण विधा द्वय मन्त्र. ❀

ॐ नमो वायु कुमाराय सर्वे विघ्न विनाशने मही पूतां कुरुधाशु सुगन्धी
मृदुनात्मना हू फट् स्वाहा (इति भूमि सशोधनम्)

ॐ प्रचालयामि भूभाग, मग्निमुद्दीपयाम्यहं ॥
पण्डि नाग सहस्राणि, भूतलेस्मिन्चरन्ति ये ॥
तेषां संबोधनायात्र, तेषामाह्वाननाय च ॥
प्रतिचाम्यमृतेनेमां भूमि सम्मार्जयाम्यहम् ॥ (भूमि संमार्जनं)

ॐ मेघ कुमाराय अं हं सं वं ठं टं त्तः कटं स्वाहा, इति भूमि संमार्जनम्,
सौ गन्ध्य संग मधुत्रत ऋंकृतेन । संवर्ण्यमान मिव गंधमनिदसा दौ ॥
आरोपयामि विद्युशेखर धृंद वंध, पादार विन्दमपि वंध जिनोत्तमानाम् ॥

(देवस्या मनश्च चंदन तिलकं कुर्यात्)

प्रत्युप्त नील कलशोत्पलपञ्चराग, नियंत्करप्रकर बद्ध सुरेन्द्र चाप ॥
जैनाभिषेक समयेऽगुलि पर्व मूले, रत्नगुली यक्रमहं विनिवेशयामि ॥

☀ इति मुद्रिका धारणम् ☀

सम्यक् पितृ नव निर्मल रत्न पंक्ति, रोचिवृहद्वलय जात बहु प्रकाशं ॥
कल्याण निर्मितमह कटकं जिनेशं, पूजा विधान ललितैस्वकेरकरोमि ॥

☀ कंकण धारणम् ☀

पर्व पवित्र तर सुव्रविनिर्मितं यत्, प्रीतः प्रजापति रक्ल्प चदंग सांगः ॥
सद्भूषणं जिनमहं निजकंधाराय, यज्ञोपवीत मह मेप तदा तनोमि ॥ यज्ञोपवीतं ॥
पुन्नाग चंपक महीरुह किंकरात्, जाति प्रसून नव केसर कुंददृष्टं ॥

देव त्ववीय पद पंकज सप्रसादात्, मूर्ध्नि प्रमाणवति शेखर कंदधेऽहम् ॥ शेखरं ॥
ये संतिके विदिह दिव्य कुल प्रसूताः, नागा प्रभूत वत्न दर्प युताव बोधाः ॥
सं रक्ष णार्थम मृतेन तेषां । प्रचा लयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम् ॥ भूमिशोपनम् ॥
क्षीरार्त वस्य ययसां शुचिभिः प्रवाहैः, प्रचालितसुर वरैर्य दन्तवारम् ॥

अत्यु द्यमु द्यतमहं जिन पाद पीठं, प्रचालयामिभव संभव वाप हारिः ॥ पीठ प्रचालनं ॥
 प्रत्यग्र तार तर मौक्तिक चूर्णं वर्यै, भुंगार नाल मुखनिर्गत चारु गंधैः ॥
 शीतैः सुगंधभिरतीव्र जलनैर्जिनेन्द्रं, विवोत्सवे स्नपनसार समारभेऽहं ॥ मलस्नपनं .
 इंद्राग्नि दंडधर नैऋतपाश शशि, वापूत्तरेण शशिमौलिफणींद्र चंद्रम् ॥
 आगत्य यूय मिह सानु चराः सचिन्हाः, एवं स्वं प्रतीच्छतु वलि जिनयाभिषेके ॥ दिग्पालचर्चनम् ॥
 पुण्याह मधसुम हांति च मंगलानां, सर्वं प्रहृष्ट मनसश्च भवंतु भव्या ॥
 पुण्यो दकेनभगवंत मनंत कान्ति, मर्हन्त मुज्वल तनुं परि वर्तयामि ॥ पुष्या क्षतोद कावतारणम्
 नाथ त्रिनोक महिताय दरा प्रकार, धर्मान्बु दृष्टि परिषिक्त लग्न त्रयाय ॥
 अर्धमहार्ध गुणरत्न महार्णं वाय, तुम्यं ददामि कुसुमैर्विंश दाल्लैश्च ॥ पुष्याक्षतावतारणं ।
 जन्मो त्सवादि समयेषु यदीय कीर्ति, सेन्द्राः सुराः अमद भार नुताः स्तुवंति
 तस्या प्रतो जिनपते परया विशुध्या, पुष्याञ्जलि मलय जाद्र मुपाक्षिपेहं ॥

॥ पुष्याञ्जलि श्री खंडा वतारणम् ॥

(अथ अर्हं त्यक्तिमां नेतुं गत्वा पूजां कृत्वा इहंस्तोत्रं पठयमान मानीयते)

आगत्य देव्यैर्जननीं प्रपूज्य, नीच्या वि भूत्या नगराज मूर्ध्नि ॥

मृगेन्द्र पीठे वर पाण्डु कार्यां, निवेश्य पूर्वाभिमुखं जिनेन्द्रम् ॥ १ ॥

क्षीरोः तोषैरमरोप नीतैः, प्रियंगुसच्चंदन पद्म मिश्रैः ॥

आपूरिता नष्ट सहस्र संख्यान्, प्रगृह्य सत्कांचन रत्न कुंभान् ॥ २ ॥

अतोद्य

गीतधनि मिन्द्र धोषैः, रवेशुरितै नन्द जयेति शब्दैः ॥

वि कुर्यं शक्र कृत कर्म काण्ड, प्रकाशयन् भक्तिरयंविषेवे ॥ ३ ॥

नीच्वा सुरै र्यः परथा विभूत्या, मेरो त्रिशाले शिखरे विचित्रे ॥

संस्नापितो रत्न मयैश्च कुम्भै, सौत्रयैर्कैश्चन्दन चचिंतांगैः ॥ ४ ॥

स्वयं भुवं तीर्थकरं प्रधानं, हिरण्य गर्भं पुरुषं पुराणम् ॥

हितावहं नित्य मनन्त कीर्तिं, सद्योगिनं ध्यान विशुद्धिगम्यं ॥ ५ ॥

सुदर्शिनं दर्शित सर्वं तत्त्वं, लोकेस्वरं शान्त तनुं सुरूपं ॥

ज्ञानात्मकं ज्ञान सयस्त तत्त्वं, निरम्बरं बीत समस्तरागं ॥ ६ ॥

भवाणोर्बोत्तीर्णसुदार सत्यं, सत्यं च कल्याण विभूति युक्तं ॥

आताम्र नेत्रं वरयद्भूम पाणिं, रजोमल स्वेद विमुक्त गात्रं ॥ ७ ॥

पूतं च पुरयं सुगतं महान्तं, कल्याणकं मंगलमुत्तमं च ॥

तपोनिधि चाति दयोपपन्नं, समाधिनिष्ठं अत भूरि धारं ॥ ८ ॥

अनंत धामाचार मिन्द्र जुष्टं, सुराहतानेक सुतारनर्ध्यम् ॥

छत्रेण पूर्येन्दु निभेन गीतं, अशोक वृक्षेण सुपल्लवेन ॥ ९ ॥

भामंडलेन प्रतिमा प्रभेण, तथागिरा चामर चारु पंक्या ॥

विभाति नित्यं सुर पुष्प वृष्ट्या, तं देव देवं मुनि वृंदबंधं ॥ १० ॥

वेदेषु शास्त्रेषु तमेव गीतैः, भूतै सुभाष्यैरिति वर्तमानैः ॥

पुर्यैस्तुतं देव निकाय मुखैः, निरंजनं शाश्वतमव्ययं च ॥ ११ ॥

मंत्रा चरान्निर्गत वाग्भिरुच्चैः, सुवर्णं रत्ना हत पुष्पपाणि ॥

त्रिनेन्द्र चंद्रं पाया विभूत्या, संस्नापयामि प्रवरासन स्थम् ॥ १२ ॥

॥ अथ प्रतिमा स्थापनं ॥

यः पांडुकामलशिलागतमादि देव, संस्नापयन्सुर वराः सुर शैलमूर्द्धनि ॥

कल्याणमीणपुरमहमन्नततोयपुष्पैः, संभावयामि पुर एव तदीय त्रिभुवं ॥

इति प्रतिमा स्थापनम् ॥

ॐ श्वेतवर्णं स्फटिक मणि विनिर्मित सहस्र योजन प्रमाणं पंच क्रोश प्रमाणं मुखं क्षीरो
दधि जलपूर्णं पूर्वोत्तरस्यां दिशि कलशं स्थापयामि

ॐ ह्रीं अनन्त महा अनन्त गुरु गर्जित नादं नंद नाम प्रथम कलशं स्थापयामि कलशेषु
स्थापितेषु सोदकानि सपुष्पाणि साक्षतानि सहिरण्यानि क्षिपामि स्वाहा

ॐ पूर्व दक्षिणस्यां दिशि नील मणि विनिर्मित सहस्र योजन प्रमाणां भद्र नाम द्वितीय
कलशं स्थापयामि,

पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण पार्श्वभायां दिशि पीत वर्णं विनिर्मित सहस्र योजन प्रमाणं जय नाम
तृतीय कलशं स्थापयामि, शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ पश्चिमोत्तरस्यां दिशि रक्त मणि विनिर्मित नहस्र योजन प्रमाणं विजय नाम चतुर्थं
कलशं स्थापयामि, शेषं पूर्ववत् ॥

सत्पल्लवाचिंत सुखान् कलधौत रौप्य ॥

ताम्राकूट घटिताञ् पयसा सुपूर्णान् ॥

संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान् ॥

संस्थापयामि कलशान् जिनवेदिकान्ते ॥

कलशेषु स्थापितेषु सोदकानि रुष्पाणि सात्तानि विषामि स्वाहा,

चर्चिताश्चन्दनैः पूर्णाः श्वेत घृत्रुभिवेष्टिताः ॥

शोभिताः कलशाः ये च, पुष्प पल्लव धारिणः ॥

एतत्पठित्वा चतुः कोशेषु स्थापित कलशानामुपरि पुष्पाणि विपेत्

दध्नुञ्जलात्त मनोहर पुष्प दीपैः ॥

यात्रार्पितं प्रतिदिशं महतादरेण ॥

त्रैलोक्य मंगल सुखालय कामदाह ॥

मारुतिं कं तव विश्वेश्व तारयामि ॥

मंगलार्तिकवतरणम् ॥

ॐ मघोनः ककुब्भाणे, दर्भं निर्भन विघ्नकं ॥

भोगैश्वर्या भिवृद्धयर्थं, क्षिपामि क्षिप्र कल्मषं ॥

इति इन्द्र दर्भः ॥

ॐ पूर्वस्यां दिशि कुंडलांशु निचय, व्यालीङ्ग गण्ड स्थलम् ॥

शक्रं सूर्यानि वद्ध साधु मुकुटं, सरूढ मौरावतम् ॥

पत्नी बांधवभृत्य वर्गं सहिवो, देवं समाह्वानये ॥

षाद्यार्षां चत दीप गंध कुसुमं, दत्तं मया गृहताम् ॥

ॐ पूर्वस्यां दिशि क्षीर जलधि संजात डिण्डीर पिएड पाण्डुर शरीर शोभां, गुणनिर्मित चारु चाप सहशोन्नत पृष्ठ वंश पार्श्व वित्निम्बितं, घंटा युगल कराल टंकारं मुखरित दिगन्तरं, सुयर्णं रूचिर नक्षत्र माला विरान्वित कुंभस्थल अमस्तल तुंग तरूवपुष्पाण मौरावत मभिराज मारुहं, कर कलश कुलिश रश्मि रंजित समस्त भुवनं, नाना विध महामणि रचित शिखर शेखर विन्यास शोमि तोत्तमांगं, प्रसाद चित्त महत्तर सुर परिषदाजुयातं पौलोम सहितं, सपरिजनं सपरिवारं इन्द्र देव माह्वानयाप्रहे, स्वाहा ॥ हे इन्द्र आगच्छ २ इन्द्राय स्वाहा ।

इन्द्र महत्तराय स्वाहा, इन्द्रपरि जनाय स्वाहा, इन्द्रानु चराय स्वाहा, अग्रनये स्वाहा, अनन्ताय स्वाहा, सोमाय स्वाहा, वरु णाय स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, ॐ स्वाहा भूः स्वाहा, भुवः स्वाहा, स्वः स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्वस्व धायै स्वाहा, इन्द्र देवाय स्वगण परि वृताय इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं चरुं वलिमचतं स्वस्तिक यज्ञभागंच भावाञ्जिवेदितं यजामहे प्रतिगृ ह्वां प्रतिगृ ह्वामिति स्वाहा

❀ इन्द्र लोक आहानन मंत्रः ❀

यस्यार्थं क्रियते कर्म, सुप्रीतो भव मे सदा ॥
शांतिकं पौष्टिकं चैव, सर्वं कार्येषु सिद्धिदः ॥ छुमांजलि क्षिपेत् ॥

ॐ संतापपनोदार्थं, प्राणिनां प्रक्षिपाम्यहं ॥
दर्भं हुताशनायां च, सर्वज्ञानपनोस्त्वेव ॥ इति अग्नि दर्भः ॥

ॐ अग्नि पालित पूर्वं दक्षिण दिशं, पिणोश्नेत्रद्वयं ॥
छागारोहणमन्नं सत्र वलय; व्यश्रोग्रहस्तांगुलिम् ॥
स्थाहा संयुत सुज्वलांगमहसं, संशब्दये संभुदा ॥
देवाधीश महेशदासमुचितं, गृह्णातु दीपादिकं ॥ पादार्घ्यं ॥

ॐ पूर्वं दक्षिणस्थां दिशि चल चतुर्गुरु पृथुल प्रोथभाभि नवमील नीरज वर्णं तस्करं
कार्तस्वर मयमथुर बहु च्चरिक मालिका, परित कंठ कंदलं महंतं छागमारुहं, ज्वल ज्वलन
स्फुलिंगं, पिंगल विलोल लोचन युगलं, मलयज वलत्वाच्च मालि कोयलक्षित दक्षिणकराग्र.
अखंड कर्मडल मंडिल वाम हस्त प्रक्रीण्डं, प्रहृष्ट सुंदर दार परिवार परिगतं, यज्ञोपवीत पवित्र
देहं, अग्नि देवमाह्वानयामहे; स्वाहा, हे अग्नि आगच्छ २ आग्नये स्वाहा ॥

तीक्ष्णं दक्षिणाशापं, दर्भं लक्ष्या समीक्षितं ॥
क्षिपाम्यभिषेकारंभे, यमारंभ विधित्तया ॥
इति यम दर्भः ॥

ॐ आसीनं सिति वर्णभाजि महिषे, वैवस्वतं च स्वयं ।

दूरोत्लासित दंड मंडित युजां, तं दक्षिणस्यां दिशि ॥

उग्रं व्यग्रं परिग्रहं निजनिजेः कर्मव्यथा कारये ॥

गृह्वाच्चेप बलि बलि जिनयते, स्नानेय मानीयुतः ॥ पाद्धार्यः ॥

ॐ दक्षिणस्यां दिशि अत्रन धरणी धर समाना कार निष्ठुर खुर पुटपात निर्दलित कुलाचल शिलातलं, दर्पोद्भट विरुट विपाण क्षोडि विलेखन स्फुटित सुर शैल कटकं, त्रिगुणी कृत भुजंगभूषणं, परिणद्धनंधं, विपभ तम शीलं, महिषमारुढ़ं, प्रचंड भुजदंड, अमित दंडोऽमरित सकल मही मंडल, क्रूर परिवारं, मित्र कलत्रो पेतं, यमलोकपालमाह्वानयामहे स्वाहा, हे यम लोक पाल आगच्छ २ यमाय स्वाहा ॥

ॐ नरा रोहृथ दिग्भागे । नि. शेष क्लेश नाशनं ॥

विदधे दर्भं सारब्ध । जिनेन्द्राभिषवक्रिया म् ॥ हति नैऋत्य दर्भः ॥

ॐ आशां दक्षिण परिचसां निज बला, दाक्रम्य लोके स्थितं ॥

नैऋत्यं दृढ़ सुगद्गूर प्रहरणं, भीमं कला वृद्धगं ॥

अस्मिन्पुण्यमहोत्सवेऽह. मन्त्रादामं त्रये सक्रमा ॥

दात्ता सय माव शेष कलितं, पत्न्यादि युक्तं चरुं ॥ पाचार्यः ॥

ॐ दक्षिण पश्चिमायां दिशि धूमधूप्र सटा टोप भासुरोरुच्युषं, अभिनवविशदरोदनासु
कारावजनित समस्त जन कौतुकं, निपुणोप लक्षितं स्रज्जम स्रज्जमान्त्र बुध युगं रक्षण रुद्रं
जरठ कलाप कुसुम सम देह दीप्ति संशयेत, नव जलद पटलं; सकल परिच्छिद समन्वितं,
नैऋत्य देवमाह्वानयामहे स्वाहा, शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ त्रैलोक्य नान्नाय, नमस्कृत्य जिनेशिने ॥
वरुणस्य हरिद्वारे, स्थापयेदमर्जद्भुतम् । वरुण दर्भः ॥

ॐ पद्मिभन्याश्रित दंत दंति सकरा, रुद्रं भुजंगायुधं ॥
शुक्ताभिद्रुमभूषण चवरुणं, काष्ठां प्रतीच्याश्रित ॥
भार्या संयुतमाह्वायापि जगता, मीशस्य पूजा क्षणे ॥

प्रीतः स्वीकुरुतामसा वपिमया, संपावमर्धादिकम् ॥

ॐ पश्चिमायां दिशि संतत जलनि मज्जन जनित पांडुर कपिल वर्णं, उदंऽशुंऽडाग्र पुष्कर
निर्गत शोकर सार विन्दु इन्तुरित कुंभ पीठं, कठोर केतकी विशद दंत किरणां कुर तिरस्कृत
कपोत स्रद मलिनभाव, जलकिरणमारूढं; निर्मल मुक्ता फलोपचिच तार हारि वृक्षः स्थलं,
सजव नागराज पाशपात्त प्रारब्धं, शक्र दोर्मद शालि संपन्नं, पत्न्यादि संयुतं वरुण देवं, समा
वूनयामहे । स्वाहा, हे वरुण आगच्छ २ वरुणाय स्वाहा ॥ शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ मातरिस्व विदिर्मागे, विश्वविश्वं धरा प्रभो ॥
अभिषेक समारंभे, दर्भं गर्भं प्रकल्पये ॥

वायु दर्भः ॥

ॐ एकरूप्यामपि पश्चिमोत्तर दिशि, स्थानेसदा सर्वगं ॥

वायुं तुंगं कुरंगं पृष्टं गमनं, हस्तस्य वृत्तायुधं ॥

देवं संप्रवलच्छ रीर घटने, दारैरुद्धारैः समं ॥

सम्यक् संप्रति बोधयामि भवता, पाद्यादिकं गृह्यतां ॥

ॐ पश्चिमोत्तरस्थांदिशि चलाचल चरणाभि घात स्फुटित धराधर शिखरदेशं, नत्र यौनन
चल समुद्भूत स्वेदोदधिन्दु प्रसर प्रशमित मार्गं पांशुपद्रवं, निज जव निर्जित मनोवेगं, हरिण
मारुद्, सहज गमनारंभ संरंभ, प्रकंपमानं, समस्त देहावयव हस्तप्राप्तं, महीरुढ महा युद्ध कृत
रिपुवल प्रभंजनं, शशि भाजनंच, वायु देवं समाहूवात्रयामहे स्वाहा ॥ हे वायु आगच्छ २ वायवे
स्वाहा, शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ यत्न रीक्षत सत्क्षेत्रे, क्षिपामि क्षणविक्षणम् ॥

याग दीक्षाक्षणे क्षेमं, विधिक्षुदर्भं मुत्तमम् ॥ यत्न दर्भः ॥

ॐ हंसौ धेन समुह्यमान मनघं, प्रैस क्षिमानध्वजैः ॥

आरूढं पृथु पुष्पकं धनपतिः, प्रोच्चैरु दीच्यांदि श ॥

कान्तैरधरसां कुलैः परिगतं, शक्यायुधं बोधये ॥

गंधं वंधरधीः प्रतीच्छुतरा, मत्रार्हतः पूजने ॥ पाद्यार्घः ॥

ॐ उत्तरस्यां दिशि रंभाद्य सरकर चरणाभरण मणिगण भयत्कार श्रवण विहित सुर गण
रण रणकं, अनेक विधध्वज पट पवन विदारित; जीमूत घटलं, रसना बंधन प्रबल सुक्तामय, दाम
शोभमान हेम दंडोपेतं, पुष्पक विमानमारूढं, अनोदर सुकत शक्ति प्रहारोपाजित, सगर संघट्ट
विजय मुकुट संघटित रत्नकिरण, विरचिता खंडल चाप प्रपंच धन देव्यादि दिव्य महा पुण्य, परिवारो
पेतं, कि कुवेर देवमाह्वानयामहे स्वाहा, हे कुवेर, आगच्छ २, कुवेराय स्वाहा ॥ शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ सर्वस्य शतये शांतं, नत्वा श्री वृक्ष लक्षितं ॥

वर्धमाने समैशानं, विदधे दक्षिणी दिशां ॥ ईशान दर्भः ॥

ॐ ईशान वृष षष्ठं गणशतै, रावश्च मृष्टार्जलि ॥

हस्तो दस्त कराल शूल भयदं, पूर्वोत्तरस्यां दिशि ॥

नागैराभरणै रलंकृत मलं. काले ह्वयामि स्वकं ॥

पात्रं द्राक्प्रति गृह्यतामिहमहे, पुष्पादि क्षाम्यर्चनम् ॥ पाद्यार्घः ॥

ॐ पूर्वोत्तरस्यां दिशि दर्पोद्धारित मंदाक्षिणी पंकज मंडित विशंकट कुटिल विषाण कोटि
उत्कृष्ट हाटक घटित कल, कूयित किंकरी सनाथ प्रलवमान गल कंबलोन्नतैः पूर्णकं धरं, धराधर
कैलाश धवलिमा लंघयंतं, वृषभमारूढं, भुजंगराज रज्जू संयुतं, केतकी कुसुमदल दाम सुरभि मौलि
सरल शुभा युद्धोत्पादित प्रतिकुलवर्ति सर्वांग शूलं दिव्य कुल योषित् अक्षेप विभूषित समाजन
समेतं ईशानदेवं समाह्वानयामहे ॥ स्वाहा

हे ईशान आगच्छ २ ईशानाय स्वाहा ॥ शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ प्रज्वाल्य पवित्राग्नि, प्रमिच्याम्य स्ततोऽन्ति ॥
तृप्त्यैः पण्ठी महाहीनां, सहस्राणांच तानतां ॥ नाग दर्शः ॥

ॐ तिष्ठन्तं दमठस्य निष्ठुरतरे, पृष्ठे धराशा प्रभुं ॥
नागेन्द्रं फण चक्र ताल मणिभि, ध्वस्तांधकारोदयं ॥
आरक्त द्विसहस्र लोचनमुखं, क्रूरं करोम्यग्रत ॥
स्तन्नाम्नैव मनु प्रियेण बहुधा, गधेन संप्रीयतां ॥ पादार्धः ॥

ॐ अधस्तां दिशि कठिन चक्रा कारोन्नत मध्य पृथु पृष्ठकं कुल सामथाष्ट गुण शरीर
सामर्थं, चारु चरण संचरण पराजित पवन रभसं, कूर्मराज पृष्ठमारूढं, शिर सहस्र चूडामणि
मरीचि विडंबितं, शरत्समय विमल नक्षत्र चक्रः स्थूल भ्रूतं मुक्ताफल हारालंकृत, परीत कंठ
कंदलं सपद्मामति परिजनं, भूत धात्री धरणं धरणेन्द्रदेवं, समाह्वानयामहे ॥ स्वाहा ॥
ॐ धरणेन्द्र देव आणच्छ २ , धरणेन्द्राय स्वाहा ॥

ॐ दर्भकांड समादाय, विश्वविध्नौषखडनम् ॥
क्षिपामि त्रमहणः स्थाने, भक्त्या वाह्ये महामहे ॥ सोम दर्भः ॥

ॐ ऊर्ध्वीयां दिशि सिंह वाहन मुहु त्राताजुजातं स्फुरत् ॥
कांति कैरवदास रम्य वपुषं सोमं, सवित्र्या समम् ॥
अत्युग्र ग्रहमण्डलस्य सकल, व्योमैक चूडामणि ॥

पूजास्वा गमये प्रतीच्छतुरा मे, षोडशधादिकम् ॥ पादार्धं ॥

ॐ ऊर्ध्वायां दिशि कुटिल दंष्ट्रा रूप बाल, चन्दांशु धमलित, दिक्प्रदेशं, खर नखर
 कुटिल जर्जरित गर्जद्बे वृन्दध्वनान्त, धनसदृश सटाटोप भासुरोरु वपुषं, केशरिण्यमारुहं,
 निरुपम काय कांति संदिह्यमान, कुमुद स्नजं, तार तारागण परिवार परिगतं, रोहिणी समन्वितं सोम
 देवं, समाह्वानयामहे, स्वाहा ॥ हे सोम आगच्छ २ सोमाय स्वाहा, शेषं पूर्ववत् ॥

❀ इति दश लोक पाताह्वाननम् ❀

ॐ स्थानास नार्ध्यं प्रतिपत्ति योग्यन्, सद्भाव सन्मान जलादिमिश्र ॥
 जैनाभिषेके समुपागतानां, करोमिपूजामिह दिक्पतीनां ॥ जलम् ॥
 श्रीखंड कर्पूर सुकुं कुमार्धैः, गंधैः सुगंधी कृत दिग्विभागेः ॥
 जैनाभिषेके समुपागतानां, करोमिपूजामिह दिक्पतीनां ॥ चंदनं ॥
 शाल्यक्षतैः रक्षतदीर्घांत्रैः, सुनिर्मलैश्चंद्र करा वदतैः ॥
 जैनाभिषेके समुपागतानां, करोमिपूजामिह दिक्पतीनां ॥ अक्षतं ॥
 अंभोजनीलोत्पलपारि जातैः, कदंब कुंदादि वर प्रसूनै ॥ जैनाभिषे ॥ पुष्पं ॥
 नैवेद्यकैः कांचन रत्न पान्त्रैः, न्यस्तैरुदस्तैर्हरिणा सुहस्तैः ॥ जैनाभि ॥ नैवेद्यं ॥
 दीपोत्करैर्ध्वस्त तमोभिघातैः, रुद्योतिता शेष पदार्थं जातैः ॥ जैनाभि ॥ दीपं ॥
 तमार कृष्णागुरु चंदनार्धैः संचूर्ण जैरुतम धूपवर्गैः ॥ जैनाभि ॥ धूपम् ॥
 लवंग नारिंग कपित्थ धृग, श्रीमोच चोच्चादि फलैः पवित्रैः ॥ जैनाभि ॥ फलम् ॥

भी चंदना चत चरु चर दीपमिश्रै, विकास पुष्पांजलिनामुन्नतया ॥
जैनाभियेके समुपागतानां, करोमि पूजामिह दिव्यतीनाम् ॥ अर्घं ॥

ॐ संस्थाप्य पीठं शशिखंख शुभ्रं, सपीप देशे जिन पठिकल्प ॥
ग्रहान वादित्य मुखानथैतान्, यजामि गंध प्रमथात्तौघैः ॥
मध्ये तु भास्करं स्थाप्य, शशिनं पूर्वं दक्षिणे ।
दक्षिणे लोहितगिंब, बुधं पूर्वोत्तरेण तु ॥

उत्तरेण गुरुं त्रिधात्, पूर्वैशैव तु मार्गवं ।
पश्चिमे तु शनिं विधात्, राहुं दक्षिण पश्चिमे ॥
ॐ पूर्वस्थां दिशि सप्तदंडकनतु, छेद कुसुम प्रभं ।
पश्चिमे तु शनिं विधात्, राहुं दक्षिण पश्चिमे ॥
ॐ पूर्वस्थां दिशि सप्तदंडकनतु, छेद कुसुम प्रभं ।

पृथ्वी तीष्ट शतं विहाय गगने, यो यो जनानां व्रजेत् ॥
यद्दृष्ट्वा दुगणं प्रभोन्नततनु, स्यात् श्री भृद्वज्रा करः ।
कालश्च प्रमितश्च येनभुवने; स्वर्धां दर्मं ददे ॥ स्वर्गं दर्भः ॥
यस्मात्त्वान्त ममुग्भिमतं जगदिदं, निर्दोषं माभासते ।

यस्योत्सर्गाम योगिनामभि चतुः, शंखै र्हस्तैः क्रमात् ॥
सिंहे मोक्ष तुरंगमा क्षति भृतां, यानैः प्रति स्यन्दनं ।
विम्बं यस्यतु सप्तमांशसहितं, कोशस्य कोशत्रयम् ॥

पत्न्यं वर्षसहस्रत्र युक्तमुदितं, यस्मिन्स्थितं जीवितम् ॥

रक्तैश्चामर वस्तु केतु कुसुमं, अत्रध्वजैराजितम् ॥

आत्मीयायुध बंध वाहन धनु, भृत्यौव पूर्वान्वितैः ॥

अस्मिन्पुण्य महोत्सवे जिनपते, सर्व्यांबुजानंदनैः ॥

अर्को बंधन पक्कभक्त पयसा, सप्ति गुडा संयुतं ॥

श्री खंडागुरु कुंकुमैः सतुहितै, रेखावरांगोऽकृष्टैः ॥

पूर्वैर्किंशुक पाटलोत्तम जपा, बन्धूक पद्मादिभिः ॥

तोयैर द्रव दीप धूप सफलैः, त्वां संयजे भास्करम् ॥

हे सूर्य आगच्छ २ सूर्याय स्वाहा अर्कं काष्ठे वीर खांड द्रुत २ रक्तध्वजा ॥ सूर्य ग्रहानुचाराय
स्वाहाः सूर्य महत्तराय स्वाहा, आदित्याय स्वाहा, सोमाय स्वाहा, भौमाय स्वाहा, बुधाय स्वाहा,
बृहस्पतये स्वाहा, शुक्राय स्वाहाः शनैश्चराय स्वाहा, राहवे स्वाहा, केतवे स्वाहा, ॐ स्वाहा, भूः
स्वाहा, भुवः स्वाहा, ॐ भुर्भुवः स्वस्वधाय स्वाहा, ॐ सूर्य देवाय स्वगुण परिश्रुताय इदमर्घ्यं
पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरुं बलिमद्वतं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रति गृह्यताम् प्रति
गृह्यतामिति स्वाहा

यस्यार्थं क्रियते कर्म, सुप्रीतो भव मे सदा ॥

शांतिकं पौष्टिकं चैव, सर्व कार्गेषु सिद्धिदः ॥ कुसुमांजलिं चिपेत ।

ॐ आग्नेयां दिशि सप्तचाप वपुष, रौप्याद्रि दीपयान्वितम् ॥

धर्मलान सप्त कैरवनेन, नाना प्रमोदप्रदं ॥

पल्यं वत्सर लक्ष युक्त मुदित, यस्यायुरा वेदितम् ॥

अष्टाशीति बल ग्रहैः परिदृतं, रात्र्यंगना नायकम् ॥

अष्टाविंशति संख्य धिषण्य सहितं, पंचाननाधिष्ठितम् ॥

पटुषट्कार्य सहस्र नद शतकं, पंचोचरा सप्ततिः ॥

कोटा कोटिमिरात ताम्बर तले, तारागणैः सेवितं ॥

उत्पाट प्रभवं जिनेश्वर महं, सोमं समाह्वानये ॥ सोम दर्भः ॥

ॐ विम्ब यस्यतु योजनंतु विततं, क्रोश त्रिधागाबिन्वतं ॥

सार्सत्पण्ड शतेषु योजन वरैः, पृथ्वीतलावास्थितं ॥

यस्योच्छ्वच चतुःसहस्रमितिभि, यनैः प्रतिस्यन्दनम् ॥

पंचास्येन वृषाश्वकाकृति धरैः, भक्त्याभि योग्यासरैः ॥

अस्मिन्पुर्य जिनाभिषेक समये, भार्यादिभिः संयुतं ॥

शुभ्राश्रोपम चामराभ्रधरैः, क्षत्रध्वजालंकृतं ॥

पालाशोत्थसमिप्रपक्व चरुभि, दध्याज्य क्षीर धृतैः ॥

सधूपैः सरलान्वितश्च, सलिलाद्यर्चाभिरिन्दुं यजे ॥

हे सोम आगच्छ २ सोमाय स्वाहा शेषं पूर्ववत् ॥ नैवेद्यं कारम्बु पलाश ईंधनश्चेतध्वजा

ॐ दक्षिणस्यांदिशि तस्थि वासं, निर्धूम धूमध्वज देह दीप्ति ॥

उत्पादनं सप्त धनुः प्रमाणं, चक्रं यजे पत्न्य दलायुषतं ॥

उत्तार गोलार्द्धं निभं नयाधं, द्विक्रीशमात्रद्विमहस्रसंख्या ॥

सिंहेम गोशवा कृतयो भियोग्या, वहन्ति यानं प्रतियस्यबिम्बं ॥ भौमदर्भः ॥

अत्र रक्तध्वजा खदिर ईधर सहित नैवेद्यं

त्र्यूयेन दशभि विहाय बलुधा, यो योजनानाम्बरे ॥

पत्नी बाधव भृत्य वाहन सुहत, शत्रायवर्गान्वितं ॥

तोयै लोहित चन्दनै सुष्टसणै, दीपैश्च रक्ताक्षतैः ॥

धूपैर्ष्वं जुंरसैलुगुल गुड, स्थोषेण कर्पूरजैः ॥

नैवेद्य गुड शर्करा घृत युतैः, शीतोदक प्लावितैः ॥

गंधाह्वैर्यव सक्तुभिः सुखदिरां, गार प्रजुष्टै र्मनाक ॥

द्राक्षेत्ताम्रु रसैः रसांक कुसुमै, संसेवनाच्चै फलैः ॥

यज्ञे ऽस्मिन् परितर्पयामि बहुशः, श्रीलोहितान्नं ग्रहं ॥

हे मंगल आगच्छ २ मंगलाय स्वाहा शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ पालुधानि दिशं स स्थितिज्ञ ग्रहं पुस्तकं न्यस्त हस्तं स्मितास्यास्तु जंचारु ह्यत्र तयालंकृतोरः

स्थलं दर्भोद्भिभवार्यहस्तोऽहमाह्वानये ॥ बुधदर्भः ॥

ॐ नैऋत्यां दिशि सप्त कामुकं तनु, भिनैन्द्र नील द्युतिः ॥

साष्टाशीति मुताष्ट संख्य शतकै, र्वस्यार्ध क्रोश प्रभं ॥

ध्यायं दिव्य हरीम गोश्वनि करैः, भौमोक्त संख्येः रथैः ॥

पल्याद्धार्थुर कल्मषां बहुविधां, बुद्धि सदेयाद्बुधः ॥

नीलैरातप वारणाम्बर लसद्यज्ञोपवीतध्वजैः ॥

नीलाम्मोरुह दाम चारु चमरै राराजितः सर्वतः ॥

सत्वीरैः स्वर मंबरी भव समीत्पक्वैः सशाल्योदनैः ॥

धूपैर्बुर्जुर सान्वितै बुर्धमहं, छागाधिरूढं यजे ॥

हे बुध आगच्छ २ बुधाय स्वाहा शेषं पूर्ववत्

ॐ परिचमायां दिशि संस्थितं वाक्पतिसद्ग्रहं पंकजाख्यं वलिद्वान्द्रामलाकरं गंत्रं शाल्य
चत पुष्प धूपप्रियां चार्ध हस्तो महास्मिन्महेशं शब्दये गुरुदभंः समडि ईंधन नील ध्वज सहितं नैवेद्यम् ॥

ॐ पल्यैकायुधमष्टविंशति, करोत्सेधं सुवर्णं प्रभं ।

धात्रीतोरसवर्जितेनवशते, शत योजनानां दिवि ॥

ज्ञेयं पश्य रथं सुमेरुमभित, स्तोकेन क्रोश प्रभं ।

मुष्टांगैर्हारि हस्ति गोऽश्वनि करै, दिव्यौ सहस्राष्टकैः ॥

हस्तं न्यस्त सु पुस्तकं बहु मति, यज्ञोपवीतां किं तं ॥

पीतैरंशुक पुष्पदाम चमरैः, क्षत्रध्वजै भूर्पितं ॥

अश्वत्थोत्थ समित्प्रपक्व चरुभिः, शाल्योदनाद्यै रहम् ॥

पद्मस्थं प्रयजे जिनेश्वरमहं, वाचस्पति संग्रहं ॥

हे बृहस्पति आगच्छ २ बृहस्पतये स्वाहा, इति पीपल ई धन पीत ध्वजसहित नैवेद्यम् ॥ शेष पूर्ववत् ॥

ॐ आयु देवोपिताशा श्रितं, स्फुर द्रोचि ज्वालाचल नागपाशाभुधं ॥

दिव्य भंडूक पृष्ठे समाधिष्ठितं, व्याहरामो हसस्मिन्स्मितं सद्ग्रहं ॥ शुक दर्भः ।

ॐ वायव्याशा धितोयः, शशिविशद तनुः सप्तचाप प्रमाणं ॥

देहोत्सेधोचमाला परिकरि प्रकरो, ब्रम्ह सूत्रांकितोरः ॥

सूर्यादिको नक्त्याभुपरिगतो, योजनानां जनोयं ॥

दृष्टोयं जीव लोके परिचयन, जिनस्थापनाधं करोति ॥

दिव्यं यस्योद्भवन्ति फुरदमलरुचि, क्रोशमत्र विमानं ॥

सिंहेभ्यो चाश्व मुख्य तुहिन किरण, जश्चाद्द संख्या प्रमाणं ॥

यस्मिन्पल्यं प्रतिष्ठं शऽ युत मरुजै, लीवितं वत्सराणाम् ॥

पालाशोत्सेधपक्वैः सष्टत गुरु युतैः, सांस्थितं तर्पयामः ॥

हे शुक आगच्छ २ शुक्राय स्वाहा, खे ध्वजई धन नैवेद्यं, शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ उत्तरस्यांदिशि स्फुरन्धेव काण, द्युतिं कृष्ण यज्ञोपनीतादिभिः ॥

भूपितं चाल्पदास्त्रभन्वितं, देव देवाभिषेकेशनिमब्दये ॥ शनिदर्भः ॥

ॐ उदीच्यांदिशि संस्थितोऽज्जननिभः, पल्याद्धं नीवीमतो ॥

मंद सप्तशरामनोन्नत तनु, नेत्राल देशचित्तः ॥

मातएडात्मत्र योजनो परिगतं, कृष्णाम्बराद्यैर्युतं ॥

यस्य स्पंदन माहवति सत्ततं, क्रोशाद्धं मात्रं दिवि ॥

दिव्यांगादिवि साद्धिमद्धं मितयः, विहेभगोवा जयः ॥

सच्छत्रैः सुशमी समद्धिरोशतै मर्षै, स्थिलैस्तंदुलैः ॥

साल्यैरवारु गुडैः शनीश्वर महं, संतर्पयामो वयं ॥

धूपैः सज्जं रसोत्कटैर्गुरु युतैः, सुतेतरा वार्ये ॥

हे शनीश्वर आगच्छ २ शनीश्वराय स्वाहा इति कृष्णाब्जसहितं नैवेद्यम्

पूर्वोत्तरस्यांदिशि चाष्ट विशति, करोन्नतां दिव्य तन्दूपातियः ॥

आजानु बाहुनिज शक्ति वान्स्तभः, सर्वं गृहीध्वात्रिपडा यगोस्तुमे ॥ राहुदर्भं ॥

ॐ किं चिद्धीन जिनोक्त योजनमितं, चन्द्राद्भोगं सदा ॥

दिव्यं यस्य विमान मंजननिभः कृष्णं करोत्यैदवं ॥

विम्बं रश्मिभिरुद्धर्गाभिरमलं, पर्ववसानेष्वपि ॥

श्री मद्राहु महाग्रहं जिनमहे, दूर्वादिभिस्तं यजे ॥

हे राहु आगच्छ २ राहवे स्वाहा शेषं पूर्ववत्

ॐ केतुः स्फुरत्केतु सहस्र विग्रहो, रिष्ट ग्रहाख्यो रश्मिडलादधः ।

ब्रजेदरिष्ठान विमान संस्थितं, जिनाभिषेके बसुदर्भं मादधे ॥ केतु दर्भः ॥

ॐ ईषन्नू न तरैक्यो जनमितं, धूम्रौथ धूम्रत्रिषम् ॥

यस्य स्पंदनसूद्धर्षं गासित करै, राच्छादये द्वाक्किम् ॥

दर्शान्ते प्रतिपत्तिता बुद्दयनि, षण्मासि षण्मासितम् ॥

रिष्टं सप्त धनुस्तनुं ग्रह महं, केतुं च सम्पक् यजे ॥

हे केतु आगच्छ ३ केतवे स्नाहा ॥ शेषं पूर्ववत् ॥

स्थानासनार्ध्यं प्रति पत्ति योग्यान्, सद्भावसन्मान जलादिभिश्च
जैनाभिषेके समयेसमेतान्, नवग्रहान्शान्ति करान्यजामि ॥

जलं गंधं अन्नतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं पुष्पांजलिं क्षिपेत्

क्षीरार्णवो चुंग तरंगमौरं, कस्तूरि का मोद विक्कृष्ट तुंगम् ॥

रजोपनोदाय ददामिधौतं, भक्त्या ग्रहेभ्यो वर वस्त्र सुख्यं वस्त्रम्

॥ अथ क्षेत्र पालार्चनम् ॥

सर्धे नाति सुगन्धेन, स्वच्छेन बहुलेन च ॥

स्नपनं क्षेत्रपालस्य, तैलेन प्रकरोम्यहम् ॥ तैलाचनम् ॥

शश्वत् सुमौषण्ड्य सुनिर्मलेन, सद्येन तैलेन गुडान्वितेन ॥

श्री क्षेत्रपालं बहुविधेन शान्त्यै, संनोमि सिंदूर कृतातु लेपम् ॥

पानीये घनसारकैः सुमनसै, रचंद्रा चैतरक्षतैः ॥

नैवेद्यैर्वर दीप धूप विविधै, नानाविधैः श्री फलैः ॥

संक्लीष्टा समपात नाशनपरैः, क्षेत्राधिपस्याग्रतः ॥

तद्द्व्यभाक्ति पदार विंदमभितः, संचर्चयामोवयम् ॥

॥ इति क्षेत्र पालार्चनं ॥ अर्घ ॥

इत्ये लोके पालाः ये, समाहूताः मयाधुना ॥

निजासनेषु ते सर्वे, सम्यक् तिष्ठंतु सादराः ॥ १ ॥

विघ्नान्निहत्य निःशेषान् सहायाः संतु ते मम् ॥

सप्त धान्यैस्तथैतेषां, जले दद्यात् ममाहुतिः ॥ २ ॥

सद्यस्तन प्रलघु गोमय पिडिकाभिः, यत्पारि वर्त्तक मिद क्रियते तिनस्य । तत्क्ष्नेहजटभितमहो
नहि लौकिकेन, रक्षादिनाक्रिमपिमाध्यमिहस्तदेवैः ॥

❀ इति गोमय पिड का वतरणम् ❀

सुस्मिथ कुंद कल्मिकोज्वल चारुभयत, पिडान खंडगुणमंडित विग्रहं अस्यादरादिः नपतेरथ
तारयामि, निवीण संभवमहासुख लब्धयेऽहम् ॥

ॐ इतिभक्त पिडिका वतारणम् ॐ

पूता वनौ पतिक शीतल भूति पिडिश्चंद्रांशु खंडधवलैः कर कुड्मलस्थै, भास्मार्थमष्टयिधकस्र
भहेन्धनस्य, लोकेश्वरस्य परिघर्तनमा तनोमि

ॐ इति भस्म पिडिकावतारणम् ॐ

हस्त द्वयाग्र कलितामलतांणं जूढः कोटिस्थितेन शिखिना सुख दर्शनेन ॥
निर्दग्ध कर्म रजसो जिननायकस्य, नीराजनं सदिति दूरत एव कुर्वे ॥

ॐ इति नीराजनाः वतारणम् ॐ

दूरावनम्र सुर नाथ किरीट कोटि, संलग्नरत्नकिरणच्छविधूसरांघ्रीः ॥
प्रस्वेद तापमल सुवतमपि प्रकृष्टै, भक्त्या जलैजिनपति बहुधाभिषिञ्चे ॥

ॐ जिन पतिमतिरिव सर्वजन जीवनैः,

सज्जन मनोभिरिव स्वच्छ तमैः,

तर्क शास्त्रै रिव बुद्धि बद्धनैरनुपचार प्रसादित,

स्वामि सन्मान दानैखिसंतर्पकैः,

यौवना रंभैरिवमनोहरैः ,

चतुरस्र बन्धु जनं संसृते, रिव सदा कलादने हेतुभिः,

शशिकिरण प्रकरैरिवातिशीतलैः , नदीनद बापी कूप तडागसरोवरादि,

शुचिर्तमः प्रदेश संभूते ,

शुक्लभिरं भोभनेभिः ॥

ॐ एतानि जितानांगसंग संगला निदाद्य तप तप्त सकल जगतापापनोदन दधानि,
नि चरणाराधनां शक्रस्य, संवद्धेन कराणि, स्वान सलिलानि जगतः, शांति कुर्वन्तु स्थाहा, ॥
जलस्नपनम् ॥

पुर्यै वीभिः प्रसर्पत, परिमल सहितै, रक्षतै रक्षतांगै;

पुष्पै पुष्पद्विरन्त रचरुभिः, शुभवै, दीपयद्भिः प्रदीपैः ॥

धूपैः सद्भ्य नव्यै रूप हत गुणै, संफलैः संफलाढ्यैः ॥

पुष्प जल्योप युञ्जतै, स्त्रियुवनमहितं, संयजे देव देवं ॥ अर्घ्यम्

उत्कृष्ट वर्णं नव हेम रसाभिराम, देह प्रभावलय संगम लुप्त दीप्तं ॥

धारां घृतस्य शुभ गंध गुणानु मेयां, वंदेऽहं, सरभ संस्नपनोप युक्तां ॥

ॐ विलीनि जात्ररूप रस धारा समुज्ज्वलायाः, उदयगत बाल तरणि किरणारुणारुवा,
नवजल धरधीर ध्वनि हेतु समुन्मिरवतरल तांडहंड विडम्बन कारियया, श्रेष्ठ मंजिष्ठाः निर्यास वर्ण
सुपहसन्त्या, मन शिलासंग समुत्थित रेणु पिंजरयानि सुख सहकार हरि द्राग्रंथि निषण्ण मनो
हरया, सुगंधि कमल मकरंद कणिका रजपुंजपिरितमिवासन्न देशं, निजद्युति विभवेन, जनयत्या
मृदुपवन त्रिसर्पमान, परमापोद सुरभि कृत, समस्त ककुभागया, धनसार सौरभर समुद्रहंत्या

स्निग्ध शुचि विमल घृत धारया, भगवन्तमर्हन्ते संस्नाष याम् ॥ धर्मं स्निग्धमनोज्ञशाकं विदधातु
भगवानिति स्वाहा ॥

★ इति घृतस्नपनम् ॐ पुण्यै वीभिरित्यादिना पुष्पाञ्जलि ★
संपूर्ण शारद शशांक मरीचि जाल, स्यन्दैरिवात्म यशसामि वसुप्रवाहैः ॥
क्षीरैर् जिनाः शुचि तरैभिपि च्यमानाः, संपादयंतुमम चित्त समीहितानि

ॐ अथ विष्कथित बलयौत द्रव्य सन्निभेन, सरसमयं प्रसन्न मरुत्पथ, प्रस्थित राजहंस
श्रेणि सदृशेण, चन्द्रविवाङ्गितामृतरस प्रवाहानुकारिणा, स्निग्धोपहसित, सरस्वतिहसितेन,
षवनान्दोलित दुग्ध सिधु प्रयाह लोल कल्लोल लीलां दधानेन, जिन दर्शन कुतूहलेन, रसातल
सन्हायागतस्य शेषस्य शरीरेण, यद्दीधी भूतेन धवलितस्नायत्र, सर्वभेद जिनायतनं शंख दर्भादि
बोक्कीर्ण पुण्य हृदयादिस्नाहनं, बुद्धि नांशु विम्ब मिबोदितं, नीहार गिरि निर्दूर प्रचालितमिव,
देवराज मत्तंग जदंत मध्यमिव, चन्द्र शिलाइचित मिव प्रकुर्वाणेन, शरदत्र वृन्देनैव, द्रव्याभूतेन,
यज्ञोपवीतेन, क्षीरोदधि सर्व स्वनेन, शुचिना क्षीर पूरेण, भगवन्तं अर्हंतं स्नापयामः, निरवधि यशः
अस्माकं करोतु भगवानिति स्वाहा ॥

❀ इति दुग्धस्नपनं पुण्यै वीभिरित्यादिना अर्घ्यम् ❀
दुग्धाब्धिधीचि चय संचय फेनराशि, पांडुत्व कांतिमव धीरयतामतीव ॥
दहनंगता जिनपतेः प्रतिमां सुधारा, संपद्यतां सपदि वाञ्छितसिद्धयेः ॥

ॐ पुंडरीक खंड केतकी प्रखनदलाप्रदातेन, स्फटिक मणि कुट्ट मन लीनिपतीव, चंद्रावप
 प्रकारेण, कनक महीधर तट विरूट कोटि घटित नचत्र चौद विशदेन, कुसुम कुंदा मित सिंदु वार
 छायो पामितेन, अमृत्वफेन पिड इव पांडुरी कृतेन, पारद रस धाराभिरिव धौतेन; परमर्षिध्यान
 संपद्दिशे पेषेव, कृतमूर्ति परिग्रहेन जिननाथ यशसेव भुवने मयमानेन, पिडी भूतेन कास
 कुसुमविकास कांति कान्तेन, सर्वं शुक्लैरिव विहित संविभगेन, कैलाशोपल पट लेनेव, कोमल
 तामापत्रेन, दध्ना भगवन्तमहन्तं स्नापयामि, शुभ शीतल ध्याने नारुभाकं संयोजयतु, भगवानिति
 स्वाहा ॥ दधि स्नपनं ॥

ॐ भक्त्या ललाट तट देश निवेशितोच्चैः ॥

हस्तैः स्तुता. सुर वरा सुर मर्त्य नाथैः ॥

तत्काल पीलित महेलु रसस्य धाराः ॥

सवः पुनातु जिनविभ्र गतैव युष्मात् ॥

ॐ सकल मनोभिरुचित स्वादु भावेन; राजा वर्तशिला घर्षिताः कल्याण रेखापि संगेन,
 विविध सुगन्धि द्रव्य संचय परिमला मौदरिस्कृत कञ्जुवलयेन, निरयत्रादेन, इत्तु रसेन,
 भगवन्तमहन्तं स्नापयामि स्वाहा निर्मलमज्ञानं अस्माकमुत्पादयतु भगवानिति स्वाहा ।

❀ इति इत्तुर स स्नपनम् ❀

सुखादु ऋष्य गुरु कोमल नारि केल, स्थूल प्रभूत फलनिमंल वारि पूरैः ॥
 संसार सागर समुत्तारणैक सेतु, भूतं जिनेन्द्रमभिद परिषेचयामि, ॥

ॐ निरुामहत सुमहत जेरत मधुरत रस धूपत प्रति नवा परिस्लाः । स्निग्धमश्रुतण्चगुण
 ग्राम समग्रता समधिक स्पृह णियानां निखिल भुवन जन निवह नयनसंदो होव मानंददा
 व्यसनानां, केषांचित्संफुल्ल सेफालि कोल्ल सुल्लोहित क्वांतीनां, अथरित धिराण पवारागं घट
 सौष्ठवानां; केषांचित्समुल्लसत्पीत शरीरीप्र पुष्प भरित घृतीनां, न्यक्कृत विद्यो द्योतमान सरकत
 कलश विलासनां, केषांचित्प्रविक्रासित चंपक प्रसव प्रीति दीप्तीनां; अभिभूत शुभशात कुंभ कुंभि
 सौभाग्यानां, प्रभूत भूरिवारि गंभीरोद्धर कुहराभ्यन्तरामानां, लक्षणा विरच्यमान परिनिमित रुचिर
 द्वार, प्रणाल सनाथ सुललित निजाग्रभाग, सरध सदुरोत्पत्ति तत्पति नव तर नीर दुर्दिव्यनव्यति
 काराणां, नारि केलि फलोत्काराणां, कर्तुं जन्माविषेकं विबुध परि वृद्धा संगता, यस्य कीर्ति लोकै
 कृष्णेऽपि चन्द्रा तपशिवद रुचा चेलि ते, जात शंका ॥

सूर्ध्वे वो तुंग भावा त्कनक शिखरिणं, पृष्ठ सौधर्मधाम्ना ।

दुग्धाब्धिः शंकयै वस्फुतरमविद्युः, पंचमं चार्णवानां ॥

प्रोध द्राक्षा मृगांक प्रति नव किरण, श्रेणि संभेद भूरि ।

प्रश्च्योतश्चंद्रक्वांतोपद्यविसल जला, सार पूर प्रपन्नैः ॥

प्रालेयांस्पृणाली मलयज कदली, हार कलहार शीतैः ।

रेतैस्तोय प्रधाहैः जग दधिपति, तंजिन स्नापयामः ॥

श्री मज्जैनेन्द्र गात्रक्षिति धरणि पत, त्रि जरांभः प्रवाहः ।

श्च्योतत् पपूष राशी द्रव रस विभव, स्फाडिं माधुर्यं धुर्यः ॥

विश्वामेनां प्रमर्यं द्रहल कल कलं, मेदिनीं वरशु वानः ।

स्तादेनः शातयेनः चपित जगदध, चोच तोयौघ एषः ॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एं अहं वं वं हं सं तं तं वं वं हं हं सं तं तं पं प भत्रीं भत्रीं
द्रीं द्रीं द्रौं द्रौं द्रावय द्रावय नमोर्हतेभगवते श्रीमते पवित्रर नालि केर रसेन जिनमभिषिच
यामि स्वाहा,

॥ इति नालि केर रसेन स्नपनं ॥

श्री शात कुंभ कलशोद्धृतशुद्ध वर्यैः, सकुंकमाभ मधुरात्रास प्रवेकैः रागादि वैरिपरि मर्दन
लब्ध कीर्तिं, रवेती कृता समधुवंनपयामि वीरं ।

ॐ निरुपम मद कल कल कंठ वचन रचन चातुरि चमत्कार सहकाराणां, आमोद भर
भरित दिगंत राल विवर संधानां अनेक शुक पिक कंठ माधुर्यं धुरीणां, पंचम कोका कलित ललित
श्रुतीनां, विभूति बहुत परिमल पृथुल फलभाराणां, अभिनव धन पटल श्यामल द्वेदीतीक्षां निंदी
वीर मधुर भंकार मुखरित शाखास्तमृगाणां, गगन चुम्बितां दोलित पल्लवानां, निजमहिम
विनिजित तज्जितरुणां, अमंदभ करंद अर्धधारित शुद्ध बोधैः मिद्धरसै रियाखिल सिद्ध कारकैः मरकत
मय कपि कार फल संमृत्यै रुचस्त सुवर्ण प्रभैरप्यामोद सुभगैः धनद निर्मित पंचाश्चर्यैरिव माणिवय
पुष्पराग प्रवाल विद्युद्दक्षितं रत्नत्रयाश्वर्यैरिव सुदर्शन पर्वताग्र स्थितमहं द्रुम्भा भिषेकोत्सव मनोहरै
रति पवित्र तमात्र रसैः फल संभूतैः ॐ तुष्टि करैः पुष्टि करैः पक्व पुष्पैर्मधुरैर्मनोहरैः गुरुचनैरिव
गुरुभिरचात्ररसै र्नापयामि स्वाहा ॥

आत्र रस स्नपनम् ॥

ॐ संस्नापितस्य घृत दुग्ध दधीलुवाहैः ॥

सर्वाभिरौषधिभिरहं तमुज्ज्वलाभिः ॥

उद्धतिं तस्य विदधास्यभिषेक मेला ॥

कालीय कुंकुम रसोत्कट वारि पूरैः ॥

ॐ बलाति बला सहदेवी, मलयजा जात्य कुंकुम एला लवंग कंकोल नाग केशर महौषधि पृष्ठाः पणि शाला पथिं मुद्गपणिं माषपणिं जय विजया अमृता सुगंधा सुरदारा बीवक ऋषभक काकोली क्षीर काकोली विशदा मोहिनी शता वरी ही बेलि कादि औषधिगण मिश्रितेन इन्द्र हस्तोयनिता मरण विमिश्रितैराजित श्रोत्रप्रवाहं पञ्च बर्णं खिट्गत शोभा प्राप्त साश्चर्येण अनेक देवांगना विरचित जय जय शब्दात्यन्त कोलाहला गत भव्य जीव कृत श्रु द्धानेन, बहु शुभ सुगंध वस्तु निक्षिप्ता जीव जल प्रवाह मंदाकि नी प्रमाणेन, नानाविधे शोत्पम सर्वौषधि परिसल सुगंधि कृत समस्त चैत्य अत्रनेन, सर्वौषधिपयः पूरेण सकल विमल केवल ज्ञान दर्शन जिनेश्वरं संस्नापयामि, चतुर्गति क संसार दुःख मस्माकं भगवान् स्फोट यत्त्वामंति स्वाहा ।

॥ सर्वौषधि मंत्र. ॥

ॐ असौ हते भगवते श्रीमते त्रैलोक्य गुरवे त्रिदशेश्वर मणि मुकुट मस्तक स्पष्टी कृत विमल रुचिर धर कनक विकृत स्फुट लटह मुकुट किरीट कोटि परिमंडित मरकतेन्द्र भील महा नील चन्द्रक्षीं सूर्य कान्त पद्मराग पुष्पराग वज्रवैडूर्य शम्भुति विविध प्रकारानेक रत्न चूडामणि गुणगणो-

दय रफुद्गुरु विद्युद्विलास लोल उवाला कुल प्रभा कलाप मालालंकृत पाट पंकज दयाल धर्म
 तीर्थं कराय धर्म नायकाय श्री मत्सिद्धार्थ राज कुलाश्वरोदिताय विभिन्नेक विमल सम्पूर्ण
 लावस्य गुण गणोदयाभिरामाति शय विशेष केवल ज्ञान किरण प्रकाशित सकल जगत्त्रय मव्य
 जन प्रति बोधकाय श्री वद्धमान दिवा कराय असुर सुर मुनि गण मनुज प्रतिमोह प्रकरपमति
 संशय मूढ संकल्पान्ध कारोच्छेदन कराय इहास्यां अक्सर्पिययां सर्वज्ञानां सर्वदर्शितां अष्टो
 तसहस्र तन्त्रेण व्यंजनविधि सूत्रित जलदमल कमल विलाहविश्वद्धि ल रुचिर वर चरणानां
 चतुर्विंशति तीर्थं काराणां धृपस जिनेन्द्रा दीनां वीर जिनाधीश पर्यन्तानां अत्र
 बुधोत्पत्ति मतुलया परम भक्त्या देवाश्चतुर्षिंकायाम हसिगण भवन वासी व्यन्तर
 ज्योतिर्गण विधाधर चक्रवर्ती बलदेव वासुदेव सिद्ध चारण किन्नर कि पुरुष
 महोरग गरुड गान्धर्व यक्षराक्षस भूत पिशाच गज गहय महिष वृषभवर तुरंग मकर रवकर भवमर रुह
 करीण वराहाष्टापद पुरु व्याघ्र हरिगरुड कुम्भकट कुरुर कारंड सारस कलहंस चक्रवाक बलाका पर्वत
 रथवान विमान बाहनाधिरूडा वर कनक किर्किण काना मुकुट मुक्तादाम कलाप मालालंकृत विद्युधा
 कीर्णविभाग शरदमल पूर्ण चंद्रद्युतिहर वर विक्रतोद्धृत चत्रायुधं चामरमणि ध्वजयताकावर शंख षटह
 दुन्दुभिभेरी तालकाहल मृदंग तुर्य वेणु वीणा पल्लव बल्लरी प्रमुखोत्कृष्ट कलकल प्रलुभित
 समुद्र योपसिंह निनाद सहर्षा तुल घोष कोलाहल समंतोन्य द्युति विभमान् विभ्रता स्पृद्ध इव दर्श-
 यन्तां विमल रूचिर माणिक्य कनक रजतमय ज्वलदमल ॥ लंकार प्रलंब वर हार कुडलां-
 गद मणि केयूर कटक कटि सूत्र मुकुट धरा रूचिर आपूर्ण नव यौवन मदनोन्मादक विमल
 जलावति विमल गंभीर नाभि प्रजाय मानसिति रूचिर वर रोम राजि विभूषित त्रिवलित रंगतनु

मध्यांजन नील केशर भार कमलायतन यान सकल शशि वदन धीनोन्नत पयोधर विम्बाधर विपुल जघन
 शृंगार वेषविभूषित स्मित हसित विमल विलास लावण्य हावभाव ललित पृथु शिथिल रसना गुण गुण
 कलादिभिर्दिव्य देवांगनाभिरचाप्सरोगण सहिताभिः शक्र प्रबोधिताः देवगणाः मत्तभ्रमद्भ्रमर क्लिकि
 ली मृदु मधुर वचन लसित फुल्ल बल्की गुल्म द्रुमपतित पुष्प वासिता नेक द्रुम मंडप कानन वनदरी गुहारण्य
 तल निवन्ध्न संशोभित मंदर हृष्टे अनेक रत्नोज्वल कूट कोटि परि मंडितो विधिना सिंहासने संपादपीठो
 निक्षिप्यतान् जिनेन्द्रास्त्रै लोक्त्र महितान् त्रैलोक्योद्योतकरान् देवाधिदेवान् स्नापयाञ्चक्रिरे । यथा
 कोकनद कुमुद कुवलय कल्हार सौगन्धिक चंपक पुनाग बहुल तिलक सहकाराशोक कुरवक कर्णिकारक
 केतकी कुल्ल शाल तमाल दाडिम मातुलिंग प्रियंगु नव यूथिकाः वासंतिका जाति मल्लिका माथवी कृंकुंम
 रक्तोत्पल कुटज कोरंट पाटली कुंद मंदार कदंब कदली सिन्दूरार प्रभृति जल स्थल जनानेक पंच वर्ण सुरभि
 कुसुमोपहार पुष्प वास धूप दीप विचित्र नृत्य गीत दिव्य स्तोत्र मंत्र वचित्र मंगलाभिधानैः क्षीरोदधि
 सलिल कुसुमपरिपूर्ण मंगल रजत कलशैः एवं कृताभिषेका, इहाप्यनेक गंधोदक परिपूर्ण कलशैरभिषेचनं
 प्रतिगृह्यतामिति स्वाहा

इति सर्वौषधि स्तपनम् ।

इष्टैर्मनोरथ शतैरिव मध्यपुंक्षां, पूर्णैः सुवर्ण कलशै निखिलाग्रसानैः ॥
 संसार सागर विलंबन हेतु सेतु, माप्लावये त्रिभुवनैक पतिं जिनेन्द्रम् ॥

ॐ जांबूनदरजातादि मय कलश वदन विनिर्गतेन वज्रोपल संघातेनेव द्रव्यतामुपादितेन
 प्राप्तेय गिरिणेव द्रवी भूतेन जिनेन्द्रपनाय स्वयमागतेन घनांत हरिण लांछन मरीचि कलापेनेव रासी भूतेन

वच्छतया दयाधन मुनिमनोभिरिव निमित्तेन नवी नवीनाकुश छायापहारिणां हारि हरिण तरलतर
 नोचनप्रभा प्रवाहिणा, परकीय यशः प्रकाश सज्जन गुण विमलेन मुक्ता फलांशु जाला मालाकालयता
 नीयूपरसेनैव, सर्वेन्द्रियाणां प्रणिन, करेण निर्मल तथा लोचनानंदमुत्पादयता सुगंधि कमल संवंचितया ध्राणे
 न्द्रियाप्यायनमादधत तां समु चित शिशिर तथा स्पर्श सुख मुय जनयता गंध जिश्रासयानुयातु मधुकर
 ऋंकारेण श्रवणमानंदयता शुचितया चांतः करणमावर्ज्जतां, रजनी पति ज्योति परि स्पष्ट चंद्र कान्त
 शलाह्व सम्मिश्रितेन अञ्छ स्फटिक छाया शुभ्रेण सलिलेन भगवन्तमर्वन्तं स्नापयामः, सर्वमभिलषित
 रस्माकं करोतु भगवानिति स्वाहा ।

इति ऋतुः कलश स्नपनम् ॥

द्रव्यैरनल्प धनसार ऋतुः समाढ्यै, रामोद वासित समस्त दिगंतरालैः ॥
 मिश्री कृतेनषयसां जिन पुंभवानां, त्रैलोक्य पावनमहं स्नपनं करोमि ॥

ॐ यथा लब्ध सुगंध वदार्थ संयोग सुंदरेण केनचि इन्निन्द्रारविंद मकरंद रचित चारु चंद्रि-
 न, केनचित्पुष्पित कुशुद कुचलय रज कषाया मोदितेन, केनचित्प्रचल दलि कलिध कारी सौगंधिकगंध
 मन्वन्धेन, अपरैरपि जलजात वसुभिर्वहुल परिमला कारिभिः सुरभि कृतेन, समर पर्याश्रित लवंग वृद्धाव
 णित रस पुष्प निष्पंद संग संजनित हृद्य गंधेन, प्रविक सञ्चंपक कुसुम समूह वासितेन, साधुगंधा ध्राणे
 मुदित मधुकर फुल्लरवि चावालितेन, मृदुपट्ट निमज्जदौरानतदान संक्रान्ति सुरभी कृत मंदाकिनी प्रवाह
 रराजय कारिणी करि कलशभग्न चंदनानोकुह स्थांघ देश विनिश्रित रस धारा विलासेन, कुंकुम कर्पूरदि

संसर्गेण, सुगंधिना बहुविधेन गंधोदकेन, भगवन्तमहन्तं स्नापयामः, सुरभित भुवनांत कीति मस्मावां करोतु
भगवानिति स्वाहा ।

❀ अष्टक ❀

इति गंधोदक स्नपनम् ॥

सद्गंधवीयः परि परितेन, श्री खंड मालादि विभूषितेन ॥

पादाभिषेवं प्रकरोमि भूत्यै, भृंगार नालेन जिनस्य भक्त्या । जलं ॥

काशमीर पंक हरि चंदन सार सांद्र, कर्पूर पर रचितेन त्रिलेपनेन ॥

अव्याज सौख्यय तनोः प्रविमां जिनस्य, संचर्चयामि भव दुःख विनाशनाय ॥ चंदनं ॥

तत्काल भक्ति भमुपाजित सौख्य बीज, पुण्यात्मरेणु निकरैरिव संगलद्भिः ॥

पुञ्जैः कृतै प्रतिदिनं कलयन्नतोद्यैः, पूजां पुरोविरचयामि जिनाधिपानां ॥ अद्भुतं ॥

अम्भोज कुंद बहुलोत्पल पारि जात, मंदार जाति विदलनवमालिकाभिः ॥

देवेन्द्र मौलिविरजी कृतपादपीठं, भक्त्या जिनेश्वर महं परि पूजयामि । पुष्पं ॥

अत्युज्वलं सकल लोचन हारि चारु, नानाविधा कृति निवैद्यमनि द्यगंधं ॥

वाण्याय माम मनणीयासिहेम पात्रे, संस्थापितं जिन वराय निवेदयामि ॥ नैवेद्यं ॥

निष्कज्जल स्थिर शिखा कलिकाकलापैः, माणिक्यरश्मि शिखराणि विडम्बयद्भिः

सर्पभिरुज्वल विशाल तरावलोके, दीपै जिनेन्द्र भवनानि यजे त्रिसंध्यं ॥ दीपं ॥

कर्पूर चंदन तरुक्त सुरेन्द्र दारु, कृष्णागुरु, प्रभृति चूर्णवि धानसिद्धम् ॥

नासाविक्रम मनसां प्रिवधूमं वति, धूपं जिनेन्द्र पुरतो बहुधा त्रियेहं ॥ धूपं ॥

वयं नवानि नयनोत्सवमावहति, यानि प्रियाणि मनसोरस संपदा च ॥

गंधेन सुष्ठु रमयति चयानि नासां, तैस्तैः फलैर्जिनपते विंदयामि पूजा ॥ फलं ॥

एवं यथाविधिप्रनामपि यः सपर्यामहंस्वस्तव पुरस्तर मातनोति ॥

कामं सुरेन्द्रनरं नाथ सुखानिभुंक्त्वा, मोक्षांतमप्यभयनंदि पदं सयाति ॥ अर्थ ॥

घसा-सिखिव निम्मलु हाजा, सिबंछ प्रभामंडलु पिहब, बस तरु असोने सुर कुसुम वरसिणु,

वर चामर धूप द्वय पंसरू ॥ दुं दुहि पुरे इन हंगणु,

केसरि आसण दिव्य धुणि, अट्टई पयडइ नाह ।

इह कुसुमांजलि दिनमई, भक्तिय अरहंताह ॥

जेहि दट्टई अठ कम्माई, परकाल विकल्पीमलई ॥

अपठहि सुह जणि निम्मल जाहं एकठ बहुगुण सहिउ

अच्छि नाणु सु पसिद्धं, केगलु ताहं शरीर विवज्जियहं ॥

सासय मुख वजुयाहं, राय समुदय दिनमई ॥

कुसुमांजलि सिहाय जणीय जणं, मणायम् ॥

दसब्भाव छत्तीस गुण, परिवार संगहय जलहि पारय ॥

सिद्धं व आगम कुसल । नवययच्छ सन्भावभावय ॥

जिवय संयम नियमधर । पंचायार समुन्नतहं

आयरिय एह कुसुमांजलि नई दीन ॥ ११ ॥

जेहिं वसि किउमाण, मायंगु अयंदुडुउ कोहजिन ॥

कवडु वसहु दुब्बार नठऊ सम्मतु मणुधिरु करविहि लोहू ॥

पसरंतु रूधन भवियहं, भववणि भुल्लाहं ॥

सुगदेस्य दाहं, दिन्नपचये, पाठ यहं इय कुसुमांजलि ताह ॥ १२ ॥

जियपरिसह मोह परिचित्त, वारस विहित तवत्रिय कषाय ॥

भयसंग वज्जिय जिय इदिय विसय, सुह काम कोह नियमणु विसज्जिय

जीव दयावर गुण निलय, विणय समुज्जय चित्त ॥

एह कुसुमांजलि समर यहं, तेह साहुई मई खित्त ॥ १३ ॥

विमल कोमल कमलदल नयणी, कमला लय मुहि कमलहछ

कमल किया सखि, जाविणय संघयधरहं

दुरिय दुरक दोहग नासखि, जाजिण वयण, विणग्गाई सयल पयासई ।
लोहितहिं देवीहिं, सिरि सयही एह, कुसुमांजलि होई ॥ १४ ॥

जाह निम्मणु हियई सम्मतु जेसब्ब उवव हरई

जीव इसन कय विइछइ पर धरणी णिय जणणे

समर्पण समाणु पर दन्तु पिच्छई जेषि सिभोयण वज्जिया
दिति सुपत्त हंदाणं तहं साचयह सक्करोमिहळ कुसुमांजलि सम्माणु
जेहि मन्निचई धम्म दयामूल षिग्गथ रिसि परमगुरु सुहपयास संतास वज्जिय ।
जेसइहयइ देउजिणळ अट्टारस दोस वज्जिन ।
जे सामिय वळला चंकि महिय न जाहं, एहसम थुप दिन्नमई कुसुमांजलि भवियाह ॥

❀ अथ शांतिकम् ❀

अथ चतुर्विंशति का पुरतः शतपत्रैस्तंडुलैः श्रीखंडादिभिः शांतिं कुर्यात्

ॐ पुण्याहं ३ प्रीयतां ३ भगवतोर्हतम्रै लोक्ष्य वंध्यास्त्रिलोक पूज्यास्त्रिलोकोद्योत
कराः ऋषभादयो वद्धमानांतरचतु विंशति अर्हन्तः सर्वज्ञः सर्व दर्शिनः समिन्न नमस्कारा देवाधि
देवता ऋषभाजितसभवाभिर्नंदनसुभतिपद्मप्रभ सुपाशर्व चंद्रप्रभ पुण्यदंत शीतल श्रेयांस वासु
पूज्य विमलानंत धर्म शांति कुन्थु अरह मल्लि मुनिसु व्रत नमिनेमिनाथ पार्श्वनाथ बंधमानांठाः
सशिष्य वर्गाः शान्ति कराः भवन्तु मुनयश्च दृढव्रतः शान्तिं प्रयच्छन्तु, श्री ही धृति कीर्ति बुद्धि
लक्ष्मी वनदेव्यो विद्या साधन प्रस्थान करणादिषु स्वगृहीत नामानि सर्व कार्य माधनेष्विह चान्यत्र
सिद्धाः सिद्धि काराः भवन्तु, सर्व देव रिपु जय दुर्गा कांतर विषमे षु जयन्ति विनेन्द्र चंद्राः परम
मांगल्य भूताः परम कल्याण दायिनो नित्यमाचार्यः साधवरचातुर्वर्णा भ्रमण संघ सहिताः शान्तिः
प्रयच्छन्तु ।

अथ दिक्पालानां ग्रहाणां पुरतो बलि विधान बलिभिः कुर्वीत प्रहा. सूर्य चंद्रांगारक वृध
 बृहस्पति शुक्र शनि राहु केतु सहिताः साष्टाविंशति नक्षत्राः अश्विनी भरणी कृत्तिका रोहिणी
 मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य अश्लेषा मघा पूर्वा फाल्गुनी उत्तरा फाल्गुनी हस्त चित्रा स्वाति विशाखा
 अनुराधा ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढा उत्तरा षाढा श्रवण धनिष्ठा शतभिषा पूर्वाभाद्र पद उत्तरा भाद्रपद
 रेवती अभिजित सलोकपाला यम वरुणा कुवेर वासवाद्याः रुद्र विनायक दक्षिण कोश कोष्ठा
 गारा दीनां आयुर्वर्द्धताम् धर्मो वर्द्धतां पुण्यं वर्द्धतां कुलगोत्रं वाभिवर्धताम्, पुर राष्ट्र ग्राम
 च ए चक्रं तस्कर दुर्भिक्षमारोति कलइ वैरी रोगाद्युपद्रव विनाश नाय नित्यमहन्तो
 मंगलं प्रयच्छंतु,

पुनः सदा दान पतीनां श्रावकाणांच आतु पुत्र मित्र कलत्र स्वजन संबंधी बन्धु वर्ग सहितानां
 धन धान्यैश्वर्य यशो विभूति कांति धन्युद्युति कीर्तयो वर्द्धन्तां, सर्वस्मिन् जिनायतन मंडले श्री
 कीर्त्यैश्वर्य महाभिषेकोत्सवे पूजाभिवर्धये च यतीनांच तत्र निवासिनां रोग शोक व्याधि उपसर्ग
 दुःख दौर्बल्य पर हनानि विनाशवन्तु । पापानि नश्यंतु घोराणि निघ्नंतु प्रति शत्रवः पराङ्गु-
 मुखाः संतु देशाश्च निरुपद्रवाः भवंतु सर्व कालमयी सर्व कल्याण सम्राप्तिरस्तु भूयोभूयः श्रेयः
 प्राप्तिरस्तु सुखं हितैश्वर्यमेवास्तु शिवंच सत्वानां ऋषि ऋषभादयः सदादिशंतु स्वाहा ॥
 इति शांति मंत्रः पुनरपि जिनाग्रे । ॐ अर्हद्भ्यो स्वाहा, ॐ सिद्धेभ्यो स्वाहा, ॐ छरीभ्यो स्वाहा,
 ॐ पाठकेभ्यो स्वाहा, ॐ सर्व साधुभ्यो स्वाहा, अतीतानागत वर्तमान त्रिकाल गोचरानंत द्रव्य
 गुण पर्यावात्मक वस्तु परिच्छेदक सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्र्याद्यनेक गुण गणधार पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः

पुनरपि दिक्पालानां ग्रहाणां पुरतः पुण्याहं ३ प्रीयतां ३ वृषभादि वर्धमानांताः परम तीर्थं
 कर देवाः स्वसमय गालिन्यो प्रतिहव चक्रेश्वरी, रोहिणी, प्रज्ञप्ती, वज्र श्रृंखला, पुरुष दत्ता मनो
 वेगा कालिका ज्वाला मालिनी जया विजया अपरमजिता गह्वरस्थिणी चासुंढा अम्बिका पद्मावती
 सिद्धायिकाश्चतुर्विंशति शासन देवताः गोमुख यक्ष प्रभृति चतुर्विं शति यक्षाः आदित्य चंद्र मंगल
 बुध बृहस्पति शुक शनिराहु केतु प्रभृत्यष्टाशीति ग्रहाः वासुकी शेषपालक वैकोटक पद्म कुलीशा
 नंत तक्षक महापद्म जय विजय नागौ देवनाग यक्ष गंधर्व ब्रह्म राक्षस भूत व्यंतर प्रभृतयश्च
 सर्वयते जिन शासन धर्म पालकाः ऋष्याजिका भावक श्रावि का यज्ञ क्रिया यज्ञक राजा मंत्री
 पुरोहित सामंत रक्षक प्रभृति समस्त लुलोक समूहस्य शांति वृद्धि पुष्टि तुष्टि क्षेम कल्याणैश्वर्य
 आयुरारोग्य प्रदा भवंतु सर्व भौख्य प्रदा भवंतु देशे राष्ट्रे पुरे च सर्वदा एव चौरासीमारीति दुर्मिच्छ
 विग्रह विघ्नौघ दुष्ट भूत शाकिनी प्रभृत्य शेषानिष्टानि विलयं प्रयान्तु राजा विजयी भवतु राजा
 सुखी भवतु राजा प्रभृति समस्त लोकाः सततं जिन धर्म शीला पूजा दान त्रत शील महा मोहत्रा
 व प्रभृति प्रजाम्भतु यत्रस्थिताः भव्य प्राणिनः संसार सागर लीलयोत्तीर्यानुपममं सिद्धि सौख्य
 मन्त कालमनुभवन्ति, तदा शेष प्राणीगण शरण भूता जिनशासनं दक्षिंति स्वाहा ।
 बलि विधानमंत्र इति शांति काण्ठीया.

आयाताः यूयमेते, प्यमर परिवृता, प्राप्तसन्मान दाना. ॥
 स्थाने स्वस्मिन्समान्, प्रमुदितमनसो, लब्धरत्ना धिकाराः ॥
 निघ्नन्तो विघ्न वर्गान्, परि जन सहितो, योगभूमि समन्तत् ॥

दिवपाला पालयध्वं, निधिरमि श्रवणे, वर्ततां वर्धमानः ॥

इति दिवपाल क्षमा पत्र मंत्रः ॥

(अथ लवणोत्तारणम्)

रयथायरितं लेवेति, जंकिषि सिध हितणुछजंति ॥

कंयि सइं भरी सुगन्धऊ, अगारिदि आणी यउ विवहं रसहं ॥

जंमभि चंगलंनि जगजिणो सरसंति कर उत्तारहि नः लुण ॥

उपावदी द्विपर चंचलीय, फीइई लवणि खणिणा ॥

जन्मोत्सवे जिनवरस्य सुमेरु श्रंणे ॥

शांतैः सुरै लवण तोय निधैगृ हीच्चा ॥

आरभ्यते सकल दोष निवारणाय ॥

सुचारणं भव हरं लवणस्य सद्यः ॥

(अथ जलोत्तारणम्)

खीर सायरजं लिप्तु पवित्तु, जंनिभमल सुरसरहि जजितु

कंधी असिधस्स तुल्ल उत आणीऊ अमराहिव इह छकल सऊ

खित्तभल्लऊ जोतिय लेहि पुंज इहसंति

सुहुं करवीरु तिणिवार जिण सामिइहं उतारीह वर नीरू ॥

दुग्धाशुधेः तल्लिङ्गमुल्लसतोरुगंधं ॥ कर्पूरं पूरं परिपांडुरिति जनस्य ।,

उच्चार्यते निज करेण निवेदयामि ॥ शक्रेण भक्तिं भरतो भव शोपणाय ।,

जलोत्तारणम् ॥

क्षेमं सर्वं प्रजानां प्रभवतु बलवान्, धार्मिको भूमिपालः ॥

काले कालेव सम्यक् वपंतु मघवाः, व्याधवो यान्तु नाशम् ॥
दुर्भिक्षं चौर मारी चयमपि जगतां, मास्मभूज्जीव लोके ॥

जैनेन्द्रं धर्मं चक्रं प्रभवंतु सततं, सर्वं सौख्यं प्रदायी ॥

प्रथयतु मुदमंतः क्षेममारोग्य मायु, -वितारतु शुभ बुद्धिं पाप बुद्धिं धुनोतु

सफलयतु शुभवांछां पूजकानां जनानां, जगदधिपति पूज्यः धूजितोयंजिनेन्द्रः ॥

शिवं मस्तु सर्वे जगतः, परहितं निरतः भवंतु भूतगुणाः ॥

दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखो भवंतु लोकाः ॥

मंगलार्थं समाहूताः, विसर्ज्याः क्लिष्टदेवताः ॥

विसर्जनाख्य मंत्रेण, वितीर्य कुसुमांजलिः ॥

॥ इति श्री महाभयैक पाठ समाप्त ॥

❀ अथ क्षेत्र पाला पूजा ❀

श्रीमद्विजेन्द्र यज्ञे स्मिन्, क्षेत्राधिपतये सदा ।

बलिं ददामि सौख्याप्त्यै, द्रुष्ट विघ्न विनाशिनै ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं जय त्रिजय अपराजित मानमद्र क्षेत्रपाला; अत्र अवतर २ रसंवौषट् । अत्र
विष्ट २ ठः ठः । अत्रमम सन्निहिताः भव २ वषट् ॥

शुद्धेनाऽति सुगंधेन, स्वच्छेन बहुलेन च ।

स्नपनं क्षेत्र पालस्य; तैलेन प्रकरोम्यहं ॥ तैल स्नपनं ॥

सिन्दूरैरुष्णकारैः पीतवर्णसु संभवैः ।

चर्वनं क्षेत्र पालस्य, सिन्दूरेण करोम्यहं ॥ सिन्दूरार्चनं ॥

सद्यः पूतैर्महा स्निग्धैः, सुष्ट मिष्ट सुपिण्डकैः, ।

क्षेत्र पाल मुखे देयं, मोदकं दुःख हानये ॥ मोदक दश्यात् ॥

तिल पिण्डस्य पिंडेन, माषादि बहुलेन च ।

ददामि क्षेत्र पालाय, विश्व विघ्नौघ शांतये ॥ तिल पिंडस्थापनं ॥

भो क्षेत्रपाल जिनाः प्रतिमांक भाल,

दंष्ट्रा कराल जिन शासन रक्षपाल ।

तैलादि जन्म गुड चन्दन पुष्प धूपैः

भोगं प्रतिच्छ जगदीश्वर यज्ञ काले । अर्घम् ॥

दुग्धाभ्युधेः तलिल मुञ्जलसतोरु गंधं ॥ कूर्पूर पूर परिपांडुरितं जनस्य ।,
उत्तार्यते निल करेण निवेदयामि ॥ शक्रेण भवित भरतो भव शोषणाय ।
जलोत्तारणम् ॥

क्षेमं सर्व प्रजानां प्रभवतु वलवान्, धार्मिको भूमिपालः ॥
काले कालेच सम्यक् वपंतु मघवाः, व्याधयो यान्तु नाशम् ॥
दुर्भिक्षं चौर मारी क्षणमपि जगतां, मास्मभूज्जीव लोके ॥
जैनेन्द्रं धर्म चक्रं प्रभवतु सततं, सर्वं सौख्य प्रदायी ॥

प्रथयतु मुद्मंतः क्षेममारोग्य मायु, -विंशतु शुभ बुद्धिं पाप बुद्धिं धुनोतु
सफल्यतु शुभवांछां पूजकानां जनानां, जगदधिपति पूज्यः धृजितोर्यजिनेन्द्रः ॥

शिव भस्तु सवे जगतः, परहित निरतः भवंतु भूतगुणाः ॥
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखो भवंतु लोकाः ॥
मंगलार्थं समाहूताः, त्रिसर्व्याः किलदेवताः ॥
त्रिसर्जनाख्य मंत्रेण, त्रितीर्यं कुसमांजलिः ॥

॥ इति श्री महर्षिभ्येक पाठ समाप्त ॥

❁ अथ क्षेत्र पाला पूजा ❁

श्रीमज्जिनेन्द्र यज्ञे स्मिन्, क्षेत्राधिपतये सदा ।

बलिं ददामि सौख्याप्तये, रुष्ट विघ्न विनाशने ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्रौं जय विजय अपरालित मानमद्र क्षेत्रपाला; अत्र अत्रतर २ रसंबौषट् । अत्र
लिष्ट २ ठः ठः । अत्रमम सन्निहिताः भव २ वषट् ॥

शुद्धे नाडति सुगंधेन, स्वच्छेन बहुलेन च ।

स्नपनं क्षेत्र पालस्य; तैलेन प्रकरोम्यहं ॥ तैल स्नपनं ॥

सिन्दूरैरूणाकारैः पीतवर्णसु संभवैः ।

वर्चनं क्षेत्र पालस्य, सिन्दूरेण करोम्यहं ॥ सिन्दूरार्चनं ॥

सद्यः पूतैर्महा स्निग्धैः, सुष्ट मिष्ट सुपिण्डकैः, ।

क्षेत्र पाल मुखे देयं, मोदकं दुःख हानये ॥ मोदक दध्यात् ॥

तिल पिण्डस्य पिंडेन, माषादि बहुलेन च ।

ददामि क्षेत्र पालाय, विश्व विघ्नौघ शांतये ॥ तिल पिंडस्थापनं ॥

भो क्षेत्रपाल जिनयः प्रतिमांक भाल,

तैलादि जन्म गुड चन्दन पुष्प धूपैः
दंष्ट्रा कराल जिन शासन रत्नपाल ।

भोगं प्रतिच्छ जगदीश्वर यज्ञ काले । अर्घम् ॥

❀ अथाष्टकम् ❀

क्षीर हीर गौर नीरपूर वारि धारया, मंद कुन्द चन्दनादि सौरभेन सारया ।
 भूत प्रेत राक्षसादि कष्ट दुष्ट नाशनं शान्ति सिद्धि ऋद्धि वृद्धि क्षेत्रपाल चर्वनं ॥ जलम् ॥
 अर्क तर्क वज्रितैरमर्ष्य चन्दन द्रवैः
 कुंकुमादि मिश्रितैरनल्प पटपदाश्रितैः ॥ भूतश्रे, ॥ चन्दनम् ॥
 औषधेन सिन्धुफेन हारभा समुज्ज्वले.—
 रचतैः सुलक्ष्णैरजात खंड वज्रितैः । भूत श्रे ॥ अक्षतम् ॥
 पारि जात पार्श्विच कुन्द हेम केतकी,
 मालती सुचम्पकादि सार पुष्पमालया ॥ भूत श्रे, ॥ पुष्पम् ॥
 व्यजनेन पायसादिभिः समंच घट रसैः ॥
 मोदकोदनादिभिः सुवर्ण भाजन स्थितैः ॥ भूत श्रे. नैवेद्यम् ॥
 रत्न सोम सर्पिणादि दीपकैः शिखोत्पलैः ।
 वात घात ताप कोप कंपरुप वज्रित । भूत श्रे. ॥ दीपम् ॥
 सिद्धिहकानितायुरु प्रधूपकैरलिश्रितैः,
 वात मान वर्द्धमान मानिनी समोद्भैः । भूत श्रे. ॥ धूपम् ॥

श्री कलात्र कव्ठी सुदादिमादिभिः कलैः

वर्गो मिष्ट सौरभादि चक्षुगादि मोदरोः । भूत श्रे. ॥ कल्पम् ॥

जीवनासिमा सुखभावात् प्रकृतिके, चारु चारु न प्रदीप प्रपश्य अस्मिन् ।

सुवर्ग्य भाजन स्थिते रमा रमा रमा विदे, श्री दान भूषणम् (समासोदिक विन्दे) । १७००००॥

ॐ अथमाला ॐ

लक्ष्मीपामकरं जगत्सुकरं, संदीर्घं कर्णं वरं ।

सर्पौ जामरं वाहनं, सुकरं करालजामं पारणं ॥

निर्निर्गन्धं गन्धं नाशनं पामकरं, भूषणं चामित्करं ।

वेदि श्री शिवा सेवकं चक्षुकरं, श्री क्षेत्रं पालं सदा ॥ १ ॥

सुसुप्तं सेनरं पञ्चिणं पादं, अथवाकरं सुकरं सुकरं चारुं ।

पनीतरं पञ्चमं पंक्तं विद्यालयं, सदा ॥ अथवाकरं चामित्करं सुसुप्तं ॥ २ ॥

सुसुप्तिकिन्नी चामित्की जामन नीरं, विनिर्गन्धं पञ्चमं सेवकं पीरं ।

अथवाकरं चामित्करं पञ्चमं चामित्करं, अथवाकरं ॥ ३ ॥

सुसुप्तिकिन्नी चामित्की पञ्चमचारं, सुसुप्तं पञ्चमं सुसुप्तं चामित्करं ।

अथवाकरं चामित्करं चामित्करं चामित्करं, अथवाकरं ॥ ४ ॥

सुसुप्तं चामित्करं अथवाकरं, अथवाकरं चामित्करं सुसुप्तं चामित्करं ।

सदामल कोमल केलि विशाल, सदासु..... ॥ ५ ॥

सुविक्रक कुंजर सागर पार, सुदुर्जन शोषण शत्रु संहार ।

सुकंपित क्लिन्न भूत रसाल, सदासु..... ॥ ६ ॥

सु वृद्धि समृद्धि सुदायक शर, सु पुत्रक मित्र कलत्र सुपूर ।

सुरंजित नागिनि कामिनि बाल, सदासु..... ॥ ७ ॥

सुकेशू कुर्यडल हार सुवाद, सुशेखर सुस्वर किंकिणी नाद ।

भयंकर भीषण भासुर काल, सदासु ॥ ८ ॥

सु कामिनी खेलत दिव्य शरीर, सुवाहन हासन मोहन धीर ।

सुभाषण रंजित विश्व रसाल, सदासु..... ॥ ९ ॥

सुथापित निर्मल जैन सुवाक्य, निकंदित दुर्मति दुर्मति वाक्य ।

प्रकाशित शासन जैन रसाल, सदासु..... ॥ १० ॥

सुभाषित श्रेय सुभव्य सु हंस, महोदय जैन सरोवर धंश ।

महा सुख सागर केलि विशाल, सदासु ॥ ११ ॥

असम सुरद सारं तीक्ष्ण दंष्ट्रा करालं,

सकल सुकृत जटिलं, जिह्वा दीर्घ करालं ।

सुघट विघट वक्रं, शांतिदास प्रशस्यं ।
भजतु भजतु जैनं भैरवं क्षेत्रमालं ॥ १२ ॥ महाधर्मम् ॥

॥ अथ भैरवाष्टक स्तोत्रं ॥

यं यं यं यक्षराजं, दश दिशधिगतं, भूमि कम्पाय मानं,
सं सं संहार मूर्ति, शिर सुकूट भटा शीखरं चन्द्र विम्बम् ॥
दं दं दं दीर्घ कायं, बिकृतिगत नखं, उर्ध्व रोमं करालम्
पं पं पंपाप नाशं, प्रशमति सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥ १ ॥

रं रं रं रक्त वर्णं, कर कुन भटिलं तीक्ष्ण दंष्ट्रा करालम् ।
घं घं घं हंष घोषं घट घट घट घटितं घर्घरा राव घोषं ।
कं कं कं काल रूपं, धिग धिग धिग धिगतं ज्वालितं उग्रतेजं,
तं तं तं दिव्य देहं, प्रणमति..... ॥ २ ॥

लं लं लं लम्ब लल ललितं दीर्घ जिह्वाकरालम्,
धूं धूं धूं धूम वर्णं स्फुट विकूट मुखं भास्वरं भीम रूपम् ।
रं रं रं रुण्डमालं रुधिर मय मयं, ताम्र नेत्रं विशालं,
नं नं नं नं नग रूपं प्रणमति..... ॥ ३ ॥

वं वं वं वायुवेगं, प्रलय परिणतं ब्रह्मरूप स्वरूपं,
खं खं खं खड्ग हस्तं, त्रिभुवन निम्नयं काल रूपं प्रशस्तं ।
चं चं चं चंचलत्वं, चल चल चलितं चालितं भूतवृन्दं ।
मं मं मं माय रूपं प्रथमति सततं..... ॥ ४ ॥

शं शं शं शंख हस्तं, शशिकर धवलं यत्न सम्पूर्णं तेजं ।
मं मं मं माय मायं कुल सकुल कुलं, मंत्र मूर्ति सु तत्वम् ।
घं घं घं भूत नाथं किल क्लित वचा, गृह्य गृह्या लुल्लवं,
अं अं अं अंतरीक्षं प्रणमति सततं ॥ ५ ॥

खं खं खं खंग भेदं त्रिषमसृत करं, कालकीलान्धकारम् ।
दं दं दं त्रिप्रवेगं, दह दह दहनं नेत्र संदीप मानं ।
हं हं हं हुंकार नादं, हरि हरि सहितं एहि एहि प्रचंडं,
मं मं मं मं सिद्धनाथं प्रणमति ॥ ६ ॥

सं सं सं सिद्ध योगं, मकल गुण मयं देव देव प्रसन्नं,
यं यं यं यत्ननाथं हरि हर नादं चन्द्र सूर्याग्नि नेत्रं ।
जं जं जं जंख नादं, वस वरुण सुरा सिद्ध गंधर्व नागं,
रुं रुं रुं रुद्र रूपं प्रथमति सततं ॥ ७ ॥

हं हं हं हं हं हंसि त कुहकुरा रावरो रात्र हंसं ।

यं यं यं यं यन्न रूपं सिर कनक महा षड् खड्गांग नाशं

रं रं रं रं रंगं, प्रहसित वदनं पीग कस्म स्मशानं, ।

सं सं सं सं सिद्ध नाथं प्रणमति सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ ८ ॥

इत्येऽ भाव युक्तं पठन्निच नियतं भैरवस्याष्टकं हि,

निविधनं दुःख नाशं, असुर कुत भयं शाकिनी डाकिनीनां

त्रासोन व्याघ्र सर्पं धृति वहसि सदा राज त्रासोपिन स्यात् ।

ज्ञानं प्राप्नोति दूराः ग्रह गण विषमार्श्चिता स्वेष्ट सिद्धिः ॥

॥ इति क्षेत्र पाल स्तोत्रम् ॥

❀ अथ पद्मावती देवी पूजा ❀

ॐ ह्रीं शक्ति रूपे भगवती वरदे, देवी आगच्छ पंठे,
पद्नाभे पद्म नेत्रे सपरिजन युते, एहि एहि सुशक्ते ।

धूपं गंधाष्ट द्रव्यं परमफल प्रदं, भोग वस्त्राद्यनेकं,
भक्तानां देहि सिद्धिं मम सकल भयं देव दूरी करध्वम् ॥ १ ॥

ॐ आँ कौं ह्रीं श्रीपद्मावती देवी अत्रागच्छ आगच्छ ।

ॐ आँ कौं ह्रीं श्री पद्मावती वेत्री अत्र तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ आँ क्रीं ह्रीं श्रीं पद्मगङ्गी देवी अत्र मम सन्निहिता भव २ वपट ।

अमल पद्म द्रहे समुद्भव कनक कुंभ सुधारया ।

रिद पाद समान शीतल कमल वासित वारया ।

नरवरा नृप खेचरा श्रुत विधन कोटि विनाशिनीम्,

पूजयेत्पद्मावतीपद रिद्धि सिद्धि नियासिनीम् ॥ १ ॥ जलम् ॥

हेम कुंकुम मिश्रीतैः मलयाख्य भूधर संभवे,

परम ताप निवार चंदन गंध गंधित दिङ्मुखैः ॥ नरवरा नृ० ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥

कुन्द हार तुषार सुन्दर गगन तारक संनिभैः,

सिन्धु फेन समान उज्ज्वल खंड वज्रित तंदुलैः । नरवरा० ॥ अन्नतम् ॥ ३ ॥

पद्म जाति मनोज्ञ चंपक साह्यती मच कुन्दकैः,

कनक केतकी पारिजात सुगंध लुब्ध शिलीमुखैः । नरवरा० ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

पायसान्न वरोदनादिक खज्ज मंडप वेवैः,

सूप तूप मनोज्ञ मोदक व्यंजनाद्य रसाढ्यकैः । नरवरा० ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

तिमिर पटल विकार वज्रित कोटि भानु प्रकाशनैः,

घृत मखि मय कनक माजन प्रगट दीप सुज्योतिकैः । नरवरा० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

काक तुंग गिरीन्द्र संभव निविड जलधर संनिभैः,

अत्र धूप सुदीपकाष्ट मनोज्ञ ध्वाण प्रमोदकैः । नरवरा० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

आम्र काम्र जम्बीर फलसह पूग चिर्मट लिम्बुकैः ।

गोस्तनैक कपित्थ दाडिम पक्व भिष्ट फलोपकैः । नरवरा० ॥ ८ ॥

अंबु चन्दन अन्नताब्ज चरुत्कटैर्वर दीपकैः,

धूप पक्व फलोर्ध संचय नैक भूषण संयुतैः ।

श्री लक्ष्मीसेन सुरेन्द्र संस्तुत विनिड खलु तिमिरापहं,
षाद पंकज वंज गोविन्द मणित सस्तक मोददैः ॥ अर्घ्यम् ॥ ९ ॥

ॐ आँ क्रौं हीं एं क्लीं ह्रीं पद्मावत्यै नमः । इस मंत्र के ९ जाप्य देवे ।

❀ जयमाला ❀

श्रीमत्पद्मावती वन्दे, नत्वा खेचर नर वर चरणे, ।

संस्नापय पद्मावती चरणं, सेवक नरवर असरण शरणम् ।
बिजशासन उद्धरणे, श्री जिन पार्श्व विम्ब धरणे ॥ १ ॥

दुःख दाधानल दूरी कृत दलनं, संतत जन सुख सम्पत्ति करणम् ॥ २ ॥
संक्रुट विकट कोटि सत्र नाशे, तुम्ह नामे सुख सम्पत्ति वासे ।

ग्रह एकोन नडे तुम्ह नामे, विषम व्याधि दुख दूरे वासे ॥ ३ ॥

तल निधी थल होने तुम्ह नामे, वैरी व्याघ्रसिंह दूरे बसे ।

हयः रथ मंगल लहे महमत्ता, तुम्ह नामे नव निधि सम्पदा ॥ ४ ॥

ट रोगशवासादिक नाशे, शाकिणी सर्व न आवे पासे ।

जय जग में अग दम्बादेवी, सेवक तुम्ह चरथाम्बुज सेवी ॥ ५ ॥

शुवन में तुम्ह नाम विख्याता, नहीं को जननि तुम्हसमजाना ।

तुम्ह गुण तर्णोंन लाधे पारं, बय पद्मावती नाम विचारं ॥ ६ ॥

गुरु तुम्ह गुथा पार न जाणे मूख मानव केम बखाणे ।

पाप फलै दुःख दारिद्र आवे, ते तुम्ह दर्शन दूर पलावे ॥ ७ ॥

ल्य बुद्धि हूँ काई न जाए, फवण गति सति तुम्ह नाम बजाए ।

तू जिन शासन जन सुखकारी, दुःख दावानल दूरीकृत ॥ हारी ॥ ८ ॥

स्तक मूर्ति श्री जिन पार्थे, संतत जन मन पूरण आशे ।

भाग्य फले तुम्ह दर्शन पामी, कहे गोविन्द नमो शिरनामी ॥ ९ ॥

ताता - इह वर जयमाला, भावविशाला जे पठति नित भावधारी ।

ते अशुभ प्रयाशे, सुरतरु बासे, मनवांछित फल पूर्णकरी ॥ १० ॥

पारोप्यं धन धान्य सम्पदकरी, दारिद्र निर्नाशनी ।

मौली पशुर्षी जनिन्द्र विम्व धरणी, बालार्कवद्भासिनी

संक्लिष्टा भय नाशिनी परि रमा, ममल्य सहायिनी
श्रीधरखण्डे शशि पराक्रम युते, पद्मावती भारी ॥ इत्याशीवदिः ॥

॥ अथ पद्मावती की आरती ॥

श्री स्याद्वादू मताब्ज वर्धन करी, भव्याब्जमुद्दीपनी ।

पद्मे पद्म दले निवास यदिते दारिदु निर्नाशिनी ।

मौली पार्श्व जिनेन्द्र बिम्ब धरणी, पद्मावती भारती ।

ते देवी नित पाद पंकज नमी बद्ध्ये मुदा आरती ॥ १ ॥

प्रगट पीठ पद्मावती, परतोपूरण हार

कलियुगमें अतिशयधर्यो, बाँछिब फलदातार ॥ २ ॥

अष्टभेद पूजा भली, नित करे नखर चंग ।

अमर कुमरी धरी आरती, करती मन तणे रंग ॥ ३ ॥

चाल-मणि सुकता फल भरि हेम थालं, घृत करपूरा दीप विशालं ।

अमर कुमरी मन आनंद धरती, पद्मावती प्रति आरती करती ॥ ४ ॥

वस्त्रादिक बहू भूषण धरती, अमिय समान वाणी मुखे भरती । अमर कु० ॥ ५ ॥

ढाल चँवर ऊभी इन्द्राणी, आरती त्रिभुवन शिवसुख दानी । अमर कु० ॥ ६ ॥

धरणीराय पद्मावती राणी, पार्श्वनाथ केरी यक्षाणी / अमर कु० ॥ ७ ॥
सेवकनी संभाल जु करनी, तुष्ट थई ने माता कष्ट जु हरनी । अमर कु० ॥ ८ ॥

अर्घ भरी करूं आरती मनधरी प्रेम अपार
श्री जिनार चरणे नमि करूं आरती मनहार ॥

❀ पंच परमेष्ठी की जयमाला ❀

मणुय-णाहन्द सुर धीरय छत्त तथा, पंचक ब्लाण सुक्खावली पत्ताया ॥
दंसणं णाण भाणं अणंत बलं, तेजिणा दिंतु अम्हं वरं मंगलं ॥ १ ॥

जेहि भाणग्गि वाणेहि अइ थहयं, जम्म जर मरण णय रत्तयं दहपं ॥
जेहिं पत्तं सिवं सासयं ठाणयं, ते महा दिंतु सिद्धा वरं णाणयं ॥ २ ॥

पंच हाचार पंचग्गि संसाहया । बार संगाइ सुय बलहिं अत्रगाहया ॥
मोवख लच्छी महंती महं ते सया । सूरिणोदिंतु मोक्खं गया संगया ॥ ३ ॥

धीर संसार भी माडवी काणणे । तिवख वियरालणह पाव पंचाणणे ॥
णट्टमगाण जीवाण पह देसया । वंदिमो ते उव उक्काय अम्है सया ॥ ४ ॥

उग्ग तव यरण कारणेहिं भोणं गया । धम्म वर भाणसुक के भाणं गया ॥
खिअरं तत्रसिरी ये समा लिंगया । साह ओ ते महा मोक्ख यह मग्गया ॥ ५ ॥

❁ अथ शांति पाठ ❁

शांति जिनं शशि निर्मल वक्त्रं, शील गुणव्रत संयम धाम्नं ।

अष्ट सहस्र सुलक्षण गात्रं नौमि लिनोत्तममम्बुन नेत्रं ॥ १ ॥

पंचम मीप्सित चक्रधराणां, पूजित मिन्द्र नरेन्द्र गणैश्च

शांति करं गण शांतिमभीप्सु, षोडश तीर्थ करं प्रथमामि ॥ २ ॥

दिव्य तरुः सुर पुष्प सु वृष्टि दुर्दुभिरासन योजन धोषौ ।

आतप वारण चामर युग्मे, यस्य विभाति च मंडल तेजः ॥ ३ ॥

ते जग दचित शांति जिनेन्द्रं शांति करं शिरसा प्रथमामि ।

सर्वं गयापतु यच्छतु शांति मह्यपरं परमांच ॥ ४ ॥

येभ्यचित्ता मुकुट कुण्डल हार रत्नैः, शक्रादिभिः सुर गणैः स्तुत पाद पद्माः ।

ते मे जिनाः प्रवर वंश जगत्प्रदीपा, त्तीर्थकराः सतत शांति कराः भवंतु ॥ ५ ॥

संपूजकानां प्रतिपाल कानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां ।

देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शांति भमधान् जिनेन्द्रः ॥ ६ ॥

अशोक वृक्षः सुर पुष्प वृष्टिः, दिव्य ध्वनिश्चामरमासनंच ।

भामंडलं दुर्दुभिरात पत्रं सत्प्राप्तिहार्याणि जिनेश्वराणां ॥ ७ ॥

क्षेमं सर्वं प्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः,

काले काले च सम्यग्वर्षतु मन्त्रवा व्याधयो यांतु नाशम् ।

दुर्भिक्षं चौर मारीच्य क्षणमपि जगतां मास्मभ्रूज्जीव लोकैः,

जैनेन्द्रं धर्मं चक्रं प्रभवतु सततं सर्वं सौख्यं प्रदायि ॥ ८ ॥

प्रध्वस्त धाति कर्माणिः केवल ज्ञान भास्कराः ।

कुर्वन्तु जगतः शांतिं दृषभाद्याः जिनेश्वराः ॥ ९ ॥

अथेष्ट प्रार्थना प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः,

शास्त्राभ्यासो जिन पति व्रतिः संगतिः सर्वदार्यैः ।

सवृत्तानां गुण गण कथा दोष वादे च मौनं,

सर्वस्यापि प्रियहितं वचं भावना चात्मतत्त्वे ।

संपद्यंतां मम मन भवे यावदेतेऽपवर्गः ॥ १० ॥

तर्षुपादौ मम हृदये मम हृदयं तव पद द्वये लीनम् ।

तिष्ठतु जिनेन्द्र तवत् यावन्निर्वाण सम्प्राप्तिः ॥ ११ ॥

अकस्मिन् पयत्थ हीणं, मत्ता हीणं च जं मए भणियं ।

तं खमउ णाण देव दुक्ख खओ मयं दिन्तु ॥ १२ ॥

दुख खत्रो कस्मकखत्रो, समाहि मरणं च बोहि लाहोय ।

मम होऊ जगत वंधव, तव जिणवर चरण शरणेण ॥ १३ ॥

❀ श्री ऋषभनाथ की आरती ❀

आज मेरे मन मंगल है, मैं तो भेख्या ऋषभ जिनंद ।

परसत पाप पलाइये, प्रभु पूजो परमानन्द ॥ आज मेरे म. ॥ टेक ॥

पिता धन्य नाभिनन्दजी, धन्य मरु देवी माताजी ।

नगरी अयोध्या धन्य भली, तहाँ जनम्या त्रिभुवनराया ॥ आज मेरे म. ॥ १ ॥

समव शरण मध्य शोभता, प्रभुचार दिशामुख चार ।

प्रभु विशंभर जीव बोधिया हैं तो जीव दया व्रतधार ॥ आज मेरे म. ॥ २ ॥

दोष रहित गुण शोभता, प्रभु अतिशय के अधिकार ।

अष्ट मंगल ध्वनि गोपुा हांजी मानस्थंभ विशाल । आजमेरे० ॥ ३ ॥

पंच कल्याणक सुरकरे प्रभु आप गये निरवाण ।

हपे भयो त्रिभुवनमें जय जयकार बलाण ॥ आजमेरे० ॥ ४ ॥

साटि नार को विनाद सुमानुं नेव चटा गरजंत ।

निरत करे अति अपहरा. रूमजुम नाद ठम कंत ॥ आज मेरे० ॥ ५ ॥

सुरनर तिरयंच नारकी, आरती ले मनभाव
 रतन कपूर घृत मेली के सब आरती हरि जिनराय ॥ आज मेरे ॥ ६ ॥
 चक्रवर्ति इन्द्र कशीन्द्रजी सुरनर मुनि सभासार
 अम्हेभी जिन प्रमुध्यावहि शोभेसार सरोवर तार ॥ आज मेरे ॥ ७ ॥
 मंगल गावे नरनारी, पुत्र कलत्र सभी कोई ।
 आनंद घन नव निधि यावहि शिव सुगति वधु पति होई ॥ आज मेरे ॥ ८ ॥
 मंगल गायोरे म्हें तौ भावसुं हुंतो श्री जिन कागुणपासुं ।
 मुनि शुभचद्र प्रभुविनवे मुजने दीजो सुगति विसराम ॥ आजमेरे ॥ ९ ॥

॥ अथ विसर्जन पाठ ॥

ज्ञानतो ज्ञानतो वापि, शास्त्रोक्तं न कुतंमया
 तत्सर्वं पूर्णं मेवास्तु त्वत्प्रसादा जिनेश्वरः ॥ १ ॥
 अज्ञाननं न जानामि नैव जानामि पूजनम् ।
 विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वरः ॥ २ ॥
 मंत्र हीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैवच ।
 तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वरः ॥ ३ ॥

आहूता ये पुरा देवाः लब्ध भागायथाक्रमं
ते मयाभ्यर्चिता भक्त्या सर्वैर्यातु यथास्थितिम् ॥ ४ ॥

॥ लघु होम (यज्ञ) विधान ॥

वेदी-घर के किसी उत्तम भाग में या मंडप के अग्रभाग में आठ हाथ लम्बी, आठ हाथ चौड़ी, और एक हाथ ऊँची तीन कटनी वाली वेदी बनावे । इस वेदी के ऊपर पश्चिम की ओर तीन कटनी की एक हाथ लम्बी एक हाथ चौड़ी और एक हाथ ऊँची एक छोटी वेदी बनाने । इस छोटी वेदीपर श्री जिनेन्द्र देवकी प्रतिमा स्थापन करे एवं दाहिनी तरफ यज्ञ तथा बाई ओर यक्षिणी विराजमान करे । वेद कच्ची ईंट तथा गारे से ही बनवानी चाहिये फिर उसे खड़िया आदि से पोत कर विविध चित्र बना कर रंग देना चाहिये ।

नोट-इस विधान में जिसदिशा में भगवान का का मुंह हो वह पूर्व दिश मानी जाती है । तदनुसार अन्य दिशाएं भी समझ लेनी चाहिये । मंडप या स्थान संर्षीर्ण हो तो ४ हाथ की वेदी से ही काम चला लिया जाय कदाचित वेदी बनाने की असुविधा होती उतनी ही मीन लीपकर उसपर रंग द्वारा लाहनें करके वेदी की कल्पना करलेना चाहिये । वेदी को चदोबा, चित्र, तोरण, बन्दनवार, पुष्पमाला आदि से सुसज्जित बनादेना चाहिये चवं चारों कोनोंपर कदली स्तंभ (केल के थम्भे) इशुदंड भी लगादेना चाहिये ।

❀ हवन कुण्ड ❀

उक्त छोटी वेदी के सामने एक हाथ जगह छोड़कर निम्न प्रकार तीन कुण्डों की रचना करनी चाहिये ।

तीर्थंकर कुंड-मध्यभाग में एक अरति चौड़ा, एक अरत्नी ऊँचा चतुर्भुज कुण्ड बनाने जिसे तीर्थंकर कुण्ड कहते हैं कुंड की गहराई आधी तो वेदी के भीतर ऊँची हो एवं आधी की ऊपर तीन कटनी होंगे । “ बद्ध मुष्टि करोऽरति ” मूढी बांधे हुंवे एक हाथ को अरति कहते हैं जो कि आधुनिक नाप के हिसाब से १८ इंच १८ इंच होता है तदनुसार १८ इंच लम्बा चौड़ा एवं १८ इंच ऊँचा कुंड बनाने जिसमें से ६ इंच तो जमीन में ऊँचा हो एवं ६ इंच में क्रमसे ३॥ इंच, ३ इंच तथा २। इंच की ऊंची व उतनी ही चौड़ी इस प्रकार ३ कटनी बनाने बड़े कुण्डों में भी मेखलाओं (कटनियों) की चौड़ाई व ऊँचाई इसी प्रकार प्रथम कटनी की ५ मात्रा द्वितीय मेखला की ४ मात्रा एवं तृतीय मेखला की ३ मात्रा के प्रमाणसे होना चाहिये ।

इसकी अग्नि को गार्हपत्य कहते हैं । सामान्य केवली कुण्ड-बौकोर कुण्ड के दाहिनी तरफ दची नापका अर्थात् एक अरति लम्बा एक चौड़ा व एक अरति ऊँचा त्रिकोण कुंड बनाने इसे सामान्य केवली कुण्ड कहते हैं इसकी तीनों मुजाएँ एक एक अरति लम्बी होंगे । इसकी अग्नि को आहवनीय कहते हैं ।

गणधर कुण्ड-चौकोर कुण्ड के उत्तर की ओर गोल कुण्ड बनाने जिसे गणधर कुंड

कहते । जिसका व्यास तथा गहराई एक-एक अरत्नि, ही हों तथा मेखला भी उसी प्रमाण से ३ हों । इस कुण्ड की अग्नि दक्षिणाग्नि कहलाती है तोनों कुण्डों के भीतरी भाग की दीवारों को बराबर रखना चाहिये । एवं कुंड को रोली (गुलाल) से रंगदेना चाहिये । यद्यपि तीन कुण्ड बनाने की विधि लिखी है परंतु संक्षेप में करना हो तो एक ही चतुष्कोण कुण्ड बनाकर उसमें सय आहृतियों देनी चाहियें । यदि वैसा भी संभव न हो तो वृथीपर ही रंगावली से चौकोर कुण्ड बना लेना चाहिये ।

❀ सूक् और सूवा ❀

अग्नि में जिस पात्र से साक्षरूप (होम द्रव्य) डाला जाता है उसे सूवा कहते हैं तथा जिरासे घी होमा जाता है उसे सूक् कते हैं । सूक् बरगद को लकड़ी का तथा सूवा चंदन का बनवाना चाहिये या दोनों पीपल की लकड़ी के बनावे पीपल की लकड़ी भी न मिले, तो पीपल के पत्ते काम में लेवे ।

॥ समिधा ॥

होम में जो लकड़ियां डाली जाती हैं उसे समिधा कहते हैं । आक, ढाक, आम, पीपल, शमी, बरगद, खदिर (खैर,) अपामार्ग आदि की सूखी घुन रहित लकड़ियां तथा रक्तचंदन, सफेद चंदन आदि की पतली व सीधी लकड़ियों को समिधा बनानी चाहिये ।

॥ साकल्य ॥

वदाम पिप्ता खर्चूर मंजा वै नारि केलकः ३ ।

दुग्धं प्रचुर सपिश्व शर्करा द्राक्षयन्त्रितम् ।

लवंग कर्पूर सुमिश्रितानां, चूर्णं सितैलादि सुगंधजातैः ।

युक्तं जिनेन्द्रस्य मते प्रशस्तं, होमार्हकं द्रव्य कंदं कंच ॥

बादाम, पिप्ता, छुहारा, जायफल, नारियल, दूध, धी, दाख, लौंग, कशूर, इलायची, शर्करा, नैवेद्य आदि वस्तुओं को साकल्य कहते हैं साकल्य यजमान को शक्त्यानुसार और धी सन वस्तुओं से दूना होना चाहिये । हवन सामग्री में धान्य, जव, और तिल ये तीन वस्तुएं भी परम आवश्यक हैं । इनमें थोड़ा घा मिलाकर होमना चाहिये इसके अलावा खीर, मावा, लासी तथा और भी भक्ष्य पदार्थ एवं केले दाड़िम, जामफल गन्ना आदि पके फल भी टुकड़े करके साकल्य में मिलाये जाते हैं

॥ होम के भेद ॥

होम तीन प्रकार से किया जाता है । जलहोम, बालुका होम, कुण्डहोम ।

जल होम-धोये हुये शुद्ध चावलों के पुंज पर सिद्धी या तान्बे का बोल कुण्डा जोकि उत्तम जल से भरा हो रखकर उसे चंदन, अबत, माला, धूप आदि से सुशोभित करे उस जल कुण्ड में सात धान्यों से, दिवपालों को तथा ३ धान्यों से नवग्रहों को आहुति देवे । अन्त में नारियल

अथवा किसी पके फल से पूर्णाहुति देने ।

सात धान्य-चना, उड़द, मूंग, गेहूँ, धान (शालि,) तिल, जौ
तीन धान्य-तिल, धान्य, जौ, ।

॥ बालुका होम ॥

भूमि को गोबर से लीपकर उसपर गन्धोदक का छिड़काव देकर एक हाथ लम्बी व एक हाथ चौड़ी भूमि में नदी की बालू बिछाकर उसपर पीपल आदि की लकड़ियों को शिखर के आकार रखकर उसमें अग्नि प्रज्वलित कर नवग्रह, तिथि देवता, दिक्पाल एवं शेष देवताओं को आहुति देवे ।

कुण्ड होम-वेदीपर कुण्ड बनाकर उनमें समिधा जलाकर सावल्य तथा धी आदि होमना चाहिये ।

होम की आद्य विधि

होम की सब सामग्री यथा स्थान रख कर होम कराने वाला प्रतिमा के सम्मुख मुख कर बैठे । होम की समाप्ति पर्यंत मौन व्रत धारण करे । पश्चात् चांदी पत्र पर सुगंधित द्रव्य से अग्नि मंडल लिखकर बीच के तीर्थकर कुंड में स्थापित करे ।

संस्थाप्य ह्ययः सममाह्वनीयो, सत्कार्यं शांतौ विधिना हुतीराः ।

ॐ ही द्वितीये वृत्ते गणधर कुण्डे आह्वनीयाग्नयेऽध्यं निर्वपामीति स्माहा ।

श्री दक्षिणाग्नि पर केवलि स्व शरीर निर्वाण नुताग्नि देव ।

तिरीट संस्फुर दसौमयापि, संस्थाप्य पूजामिसुकार्यं शान्त्यै ॥

ॐ हीं त्रिकोणे सामान्य केवलि कुण्डे दक्षिणाग्नयेऽध्यं निर्वपामीति स्माहा ।

इसके बाद निराकुलता से आचार्य मंत्रों का उच्चारण करे एवं यजमान (होम करने वाला) प्रत्येक मंत्र के बाद स्माहा शब्द का उच्चारण करते हुए होम करे ।

॥ अथ पीठिका मंत्र ॥

- ॐ सत्यजाताय नमः ॥ १ ॥ ॐ अहंजजाताय नमः ॥ २ ॥ ॐ परम जाताय नमः ॥ ३ ॥
ॐ अनुपम जाताय नमः ॥ ४ ॥ ॐ स्व प्रधानाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ अचलाय नमः ॥ ६ ॥
ॐ अक्षयाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ अय्यावाधाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ अनंत ज्ञानाय नमः ॥ ९ ॥
ॐ अनंत दर्शनाय नमः ॥ १० ॥ ॐ अनंत वीर्याय नमः ॥ ११ ॥ ॐ अनंत सुखाय नमः ॥ १२ ॥
ॐ नीरजसे नमः ॥ १३ ॥ ॐ निर्मलाय नमः ॥ १४ ॥ ॐ अछेद्याय नमः ॥ १५ ॥
ॐ अभेदाय नमः ॥ १६ ॥ ॐ अजराय नमः ॥ १७ ॥ ॐ अमराय नमः ॥ १८ ॥
ॐ अप्रमेयाय नमः ॥ १९ ॥ ॐ अगर्भभासाय नमः ॥ २० ॥ ॐ अदोभ्याय नमः ॥ २१ ॥
ॐ अविलीनाय नमः ॥ २२ ॥ ॐ परमधनाय नमः ॥ २३ ॥ ॐ परम काष्ठयोग रूपाय नमः ॥ २४ ॥

ॐ लोकाग्र निवासिने नमः ॥ २५ ॥ ॐ परम सिद्धेभ्यो नमः ॥ २६ ॥ ॐ अहसिद्धेभ्यो नमः ॥ २७ ॥
 ॐ केशलि सिद्धेभ्यो नमः ॥ २८ ॥ ॐ अन्त कृत्सिद्धेभ्यो नमः ॥ २९ ॥ ॐ परंपर सिद्धेभ्यो नमः ॥ ३० ॥
 ॐ अनादि परमसिद्धेभ्यो नमः ॥ ३१ ॥ ॐ अनाद्यन्त मसिद्धेभ्यो नमः ॥ ३२ ॥ ॐ सम्पगृष्टे
 आसन भव्य निर्वाण वृजार्ह अग्नीन्द्राय नमः स्वाहा ॥ ३३ ॥

इस प्रकार ३३ आहुतियां देने के पश्चात् निम्न काग्य मंत्र पढ़कर श्री की ३
 आहुति देवे ।

सेवाफलं पट् परमस्थानं भवतु अयमृत्यु विनाशनं भवतु ॥
 क्षिर नीचे लिखे पांच मंत्रों को पढ़कर तर्पण करे ।

ॐ ही अर्हत्परमेष्ठिनस्तः पर्यामि त्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ही सिद्धपरमेष्ठिनस्तर्पयामि त्वाहा ॥ २ ॥
 ॐ हीं आचार्य परमेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ हीं उपाध्याय परमेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ॥ ४ ॥
 ॐ हीं सर्वसाधु परमेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ॥ ५ ॥ (अत्रान्तरे पंच तर्पणानि)

इसके वाद्य निम्न मंत्र पढ़कर कुण्ड के चारों कोनों में दूध, दही इक्षुरस और सुगंधित जल
 की धारा देनी चाहिये । धारा थोड़ी २ और पतली ही देना चाहिये जिससे अग्नि न
 बुझने पावे । इस को पयुञ्जण कहते हैं ।

ॐ हीं अग्नि परिषेवयामि स्वाहा (इति पयुञ्जणं) ।

इसके अनंतर नीचे लिखे मंत्रों से २३ आहुतियां देवे ।

ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं सरिभ्यः स्वाहा ॥ ३ ॥
 ,, ह्रीं पाठकेभ्यः स्वाहा ॥ ४ ॥ ,, ह्रीं सर्व साधुभ्यः स्वाहा ॥ ५ ॥ ,, ह्रीं जिन धर्मेभ्यः स्वाहा ॥ ६ ॥
 ,, ह्रीं जिनागमेभ्यः स्वाहा ॥ ७ ॥ ,, ह्रीं जिनालयेभ्यः स्वाहा ॥ ८ ॥ ,, ह्रीं सम्यग्दर्शनाय स्वाहा ॥ ९ ॥
 ,, ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय स्वाहा ॥ १० ॥ ,, ह्रीं सम्यक्चारित्राय स्वाहा ॥ ११ ॥ ,, ह्रीं चतुर्विंशति यज्ञेभ्यः स्वाहा ॥ १२ ॥ ,, ह्रीं चतुर्विंशति यज्ञीभ्यः स्वाहा ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं चतुर्दश भवनवासिभ्यः स्वाहा ॥ १४ ॥
 ॐ ह्रीं अष्ट विध व्यन्तरेभ्य स्वाहा ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं चतुर्विध ज्योति रिन्द्रेभ्यः स्वाहा ॥ १६ ॥
 ,, द्वादश विध कल्पवासिभ्यः स्वाहा ॥ १७ ॥ ,, अस्मद् गुरुभ्यः स्वाहा ॥ १८ ॥
 ,, अस्मद् विद्या गुरुभ्यः स्वाहा ॥ १९ ॥ ,, स्वाहा ॥ २० ॥ भूः स्वाहा ॥ २१ ॥
 भुवः स्वाहा ॥ २२ ॥ स्वः स्वाहा ॥ २३ ॥

इस प्रकार २३ आहुतियां देकर निम्न काम्य मंत्र से धी की ३ आहुतियां देवे ।

सेवा फलं पट् परमस्थानं भवतु । अप मृत्यु विनाशनं भवतु ।

इसके पश्चात् ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिनस्तर्पयामि । इत्यादि पांच मंत्रों से तर्पण करे । और ॐ ह्रीं अग्निं परि सेचयामि इसमंत्र से कुंड के चारों कोनों में दूध दही आदि की धारा देकर पयुंचण करे ।

❀ निस्तारक मंत्र ❀

ॐ षट् कर्मणो स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ग्राम पतये स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ अनादि श्रोत्रियाय स्वाहा ॥ ३ ॥
 ॥ स्नात काय स्वाहा ॥ ४ ॥ ॥ आत्रेकाय स्वाहा ॥ ५ ॥ ॥ देवनाहिणाय स्वाहा ॥ ६ ॥
 ॥ सुब्राह्मिणाय स्वाहा ॥ ७ ॥ ॥ अनुपमाय स्वाहा ॥ ८ ॥ ॥ सम्यग्दृष्टे । सम्यग्दृष्टे ।
 निधिपते वैश्रवण ! वैश्रवण ! स्वाहा ॥ ९ ॥

पूर्ववत् काम्य मंत्र पढ़कर वी की ३ आहृतियां दे एवं तर्पण मंत्र से ५ बार तर्पण कर पर्युक्षण करे ।

❀ शोडश विद्या देवी मंत्र ❀

ॐ ह्रीं रोहिण्यै नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं प्रज्ञप्स्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं वज्रश्रुंखलायै नमः ॥ ३ ॥
 ॥ बजांकुशायै नमः ॥ ४ ॥ ॥ जाम्बूनद्यै नमः ॥ ५ ॥ ॥ पुरुषदत्तायै नमः ॥ ६ ॥
 ॥ काली देव्यै नमः ॥ ७ ॥ ॥ महाकाली देव्यै नमः ॥ ८ ॥ ॥ गौरी देव्यै नमः ॥ ९ ॥
 ॥ गांधारी देव्यै नमः ॥ १० ॥ ॥ ज्वाला भास्विनी देव्यै नमः ॥ ११ ॥ ॥ मानवी देव्यै नमः ॥ १२ ॥
 ॥ वैशंटी देव्यै नमः ॥ १३ ॥ ॥ अच्युतायै नमः ॥ १४ ॥ ॥ मानसी देव्यै नमः ॥ १५ ॥
 ॥ महामागसी देव्यै नमः ॥ १६ ॥

पूर्ववत् काम्य मंत्र पढ़कर वी की तीन आहृतियां दे पश्चात् ५ बार तर्पण करे ।

❀ जयादि अष्ट देवी मंत्र ❀

ॐ ह्रीं जयायै नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं भिजयायै नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अजितायै नमः ॥ ३ ॥
 ॥ अपराजितायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं कुंभायै नमः ॥ ५ ॥ ॥ मोहायै नमः ॥ ६ ॥
 ॥ स्तंभायै नमः ॥ ७ ॥ ॥ ॐ ह्रीं स्तंभिन्यै नमः ॥ ८ ॥

पूर्ववत् काम्य मंत्र से धी की ३ आहूतियां चकर तर्पण व पयुर्बण करे ।

॥ नवग्रह मंत्र ॥

ॐ ह्रीं हँः आदित्याय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं हँः सोमाय नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं हँः भौमाय नमः ॥ ३ ॥
 ॥ बुधाय ॥ नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं हँः शुक्राय नमः ॥ ५ ॥ ॥ शुक्राय नमः ॥ ६ ॥
 ॥ शनिश्चाराय नमः ॥ ७ ॥ ॥ राहवे नमः ॥ ८ ॥ ॥ केतवे नमः ॥ ९ ॥
 पश्चात् पूर्ववत् काम्य मंत्र पढ़ कर धी की ३ आहूतियां देवे । एवं ५ तर्पण कर

पयुर्बण करे ।

॥ दश दिग्पाल मंत्र ॥

ॐ आँ कौं ही इन्द्राय स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ आँ कौं ही अग्नये स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ आँ कौं ही यमाय स्वाहा ॥ ३ ॥
 ॐ आँ कौं ही नैऋत्याय स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ आँ कौं ही वरुणाय स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ आँ कौं ही
 पवनाय स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ आँ कौं ही कुबेराय स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ आँ कौं ही ईशानाय स्वाहा

ॐ आं क्रौं ह्रीं धरणीन्द्राय स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं श्रीमाय स्वाहा ॥ १० ॥

इस प्रकार ३३+२३+६+१६+८+६+१० कुल १०८ आहुतियां देकर पूर्ववत् काम्य मंत्र पढ़कर धी की ३ आहुतियां देकर तर्पण व पर्युत्थण करे ।

इसके बाद निम्न मंत्र पढ़ कर पूर्णाहुति देवे । पूर्णाहुति मंत्र आरंभ करते ही अन्तर्पर्यंत जब तक मंत्र पूरा न हो तब तक अग्नि में धी की धारा करते रहना चाहिये । पूर्णाहुति में पूजन के अष्ट द्रव्य धान, जल, श्रीफल या सुपारी अथवा होना चाहिये ।

॥ पूर्णाहुति मंत्र ॥

ॐ विधि देवाः पंच दशधा प्रसीदन्तु ।

नव ग्रहदेवाः प्रत्यवायहरा भवन्तु ।

भास्वनादयो द्वात्रिंशद्देवा इन्द्राः प्रयोदन्तु ।

इन्द्रादयो विश्वे विश्वे दिक्पाला पालयन्तु ।

अग्नीन्द्र मौल्युद्भवाप्यग्निदेवता प्रसन्ना भवतु ।

शेषाः सर्वेऽपि देवा एते राजानं विराजयन्तु ।

वातारं तर्पयन्तु । संघं श्लाघयन्तु ।

शुद्धि वर्षं यन्तु । विघ्न विघात यन्तु ।

मारीं विचारयन्तु ।

ॐ श्री नमोऽहंते भगवते पूर्णं ज्वलित ज्ञानाय सम्पूर्णं फलाध्यां पूर्णाहुति विदधमहे ।

(इति पूर्णाहुति)

पूर्णाहुति देने के बाद हाथ जोड़ कर निम्न शान्ति प्रार्थना का मंत्र पढ़े

ॐ दर्पणोद्योत ज्ञान प्रज्वलित सर्वलोक प्रकाशक भगवन्नर्हन् श्रद्धां मेधां प्रज्ञां बुद्धि
श्रियं बलं आयुष्यां तेजः आरोग्यं सर्वं शान्तिं विधेहि वाहा पश्वात् शान्ति धारा देकर
भगवान् के चरणों में गुष्पांजलि चढ़ाकर चतुर्विध शान्ति कर पंचाग नमस्कार
करे तथा अग्नि कुण्ड में से उत्तम भस्म लेकर याजक (आचार्य) स्वयं अपने ललाट पर
लगावे और अन्य सबको लगाने देवे । पश्वात् प्रतिमाजी व यंत्रादिको यथास्थान विराजित
कर देवों को विसर्जन करे ॥

❀ समाप्त ❀

